CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

7·1

ममलपाहुड़
या
अमलपाहुड़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्या..........................

धि) संस्थान

अमलपाहुड़.................

स्वामी.........................

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया इस ग्रन्थको निम्नांकित तिथि पर या उसके पूर्व लौटा दें। विलम्बसे लौटानेपर ५ पैसे प्रतिदिन दण्ड देना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

श्री तारणतरणस्वामीविरचित—

ममलपाहुड़ या अमलपाहुड़

तृतीय भाग ।

हि० ७३३

अनुवादकः—

श्रीमान् जैनधर्मभूषण धर्मदिवाकर ब्रह्मचारी सीतलप्रसादजी

जिसको—

श्री समैया समाज–सागरकी ओरसे

मथुराप्रसाद जैन बजाज–सागरकी मारफत श्रीमान् सेठ मन्नूलालजी जैन–आगासौद,
(सागर सी. पी.) ने छपवाकर प्रकाशित किया ।

प्रथमावृत्ति]   वीर सम्वत २४६७   [प्रति १०००

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, गांधीचौक–सूरतमें मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया ।

मूल्य—रु. २–१२–०

१४७४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमिका

भूमिका।

यह ममलपाहुड़ या अमलपाहुड़ या शुद्धसार ग्रन्थ श्री कुन्दकुन्दाचार्य रचित समयपाहुड़ या समयसारके अनुसार अध्यात्म अमृत-रसका अमूल्य सागर है। इसको इसके कर्ता परम अध्यात्म-विशारद तत्वसारके अनुभवी श्रीतारणतरणस्वामीने ३२०० गाथाओंके १६४ छन्दोंमें या फूलनाओंमें या अध्यात्म भजनोंमें रचा हैं। मानो १६४ बड़े और छोटे नानाप्रकारके अमृतके घड़े भर दिये हैं। हरएक घड़ेमें ऐसा अमृत है कि इसका पान वरवार सहस्रों पियासु करें तौभी किसी घड़ेका रस कभी कम न होगा, क्योंकि इन घड़ोंमें अनादि जिनवाणीका ध्रुवसार है। अमिट आत्मज्योतिका प्रकाश है। इनको अध्यात्मीक कल्पवृक्ष भी कह सक्ते हैं। यह ग्रन्थ १६४ कल्पवृक्षोंका अविनाशी उपवन है। इसकी भाषा प्राकृत संस्कृत मिश्र उस समयकी प्रचलित देशभाषा है। प्राचीन हिन्दीके भी छन्द अन्तमें दिये हैं, जिनको पढ़नेसे पाठकोंको विदित होगा कि विक्रमकी सोलहवीं शताब्दीमें ग्वालियर राज्यके आसपास कैसी हिन्दी बोली जाती थी।

नीचे हमने कुछ गाथाओंके व हिन्दी छन्दोंके नमूने पाठकोंके ज्ञान हेतु दिये हैं, उनसे विदित होगा कि ग्रन्थकर्ता बहुत बड़े सूक्ष्म गुप्त तत्वके अनुभवी थे।

इस ममलपाहुड़ ग्रन्थकी करीब १००० गाथाओंकी टीका सन् १९३५ के वर्षाकालमें लखनऊमें की गई थी, करीब १२०० की हिसार (पंजाब) में इस वर्षके वर्षाकालमें की गई। आयुकायकी थिरता अल्प विचार कर इसे पूर्ण करनेका ही संकल्प करके शेष गाथाओंकी टीका यहां सागर (सी० पी०) में इस मगसर मास सन् १९३६ दिसम्बरमें ठहरकर श्री जिनेन्द्रके प्रसादसे और श्री तारणस्वामीकी वाणीके अनुग्रहसे २१ दिनमें पूर्ण की गई। इस ग्रन्थका समझना बहुत दुर्लभ था। मेरी बुद्धि नहीं थी जो मैं इस समुद्रके पार पहुंच जाता, परन्तु यह जिन भक्तिका ही महात्म्य है जो शक्तिहीनको भी शक्ति प्रदान कर देती है। आज मैं इस कार्यको पूर्ण करके अपने जन्मको कृतार्थ मानता हूं। मैंने जो इन कल्पवृक्षोंके मिष्ट अध्यात्मरसपूर्ण फल खाए हैं और उनसे आनन्द पाया है, इसके लिये मैं श्री तारणस्वामीका वारवार गुण स्मरण करता हूं। तथा **सागर** निवासी धर्मप्रेमी भाई **मथुराप्रसाद बजाज**को आशीर्वादके साथ धन्यवाद भी देता हूं कि श्री तारणस्वामीके ग्रन्थोंमें अनुवाद करनेकी प्रेरणा उक्त सज्जन महोदयने करके मेरा बड़ा उपकार किया है। मैं सेठ **मन्नूलाल आगासोद** निवासीका भी आभारी हूं जिनके कारण इन ग्रन्थोंके प्रकाशमें द्रव्यकी सहायता मिली है, उनके द्वारा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवश्य इन टीकाओंका प्रकाश होगा, इस भावने भी मुझे अनुवाद लिखनेमें उत्साहित किया है। सागर तथा इटारसीके समैया दिगम्बर जैन तारणपन्थी सर्व भाइयोंका आभारी हूं, जिन्होंने इस कार्यमें मुझे और भी उत्साहित किया है।

इसके पहले अमरावतीमें सन् १९३४ में श्री उपदेश शुद्धसारकी, इटारसीमें सन् १९३३ में श्री ज्ञान समुच्चयसारकी तथा सागरमें सन् १९३२ में श्री तारणतरण श्रावकाचारकी टीकाएं मेरे द्वारा हुई व वे छपकर प्रकाश कर रही हैं, सर्व जैन कौमके अध्यात्मरसिक पढ़कर प्रसन्न हो रहे हैं, यह देखकर मैं हर्षित हूं। श्री तारणस्वामीका साहित्य अध्यात्मरस प्रदानकी अपेक्षा सर्वत्र प्रचारयोग्य है।

भाई मथुराप्रसादजीके द्वारा श्री ममलपाहुड़की तीन लिखित प्रतियें हमको मिलीं:—

(१) जीर्ण व पूर्ण। अन्तमें है—"इति मय षिय निक्र ममलपाहुडु ग्रंथु जिन तारन तरन विरचित समउत्पन्निता" संवत् १६३७ वर्षे वैशाख वदी अमावस्या मंगलवारको सास्त्र प्रति पुर्नभौ। सास्त्र लेषिउ विन्यानी सिंघई ज्गोग्य लिखितं गमनु पांडे लिपि दीयो॥

(२) जीर्ण व खण्डित। अन्तमें हैं—"इति मय षिपनिकु ममलपाहुडु ग्रंथु जिन तारनतरन विरचित सम उत्पन्नित। संवत् १६८१ वर्षे आषाढ़... १३ बृहस्पति सास्त्र सम्पूर्ण लिखितं भट श्री रा... श्री पांडे सुमतिको... असहटीनिके चिताले लिखो... मानि ६ गोला राडेने लिखायो।

(३) इति श्री मय षिपनिक ममल पाहुड़ ग्रन्थ जिन तारनतरन विरचित सम उत्पन्निता। मिती पूस वदी १३ संवत् १९७० गुरुवार मुकाम श्री निसईजी लिखितं मंगलजीत श्री सागर चित्यालयको उतारो।

पहली दोनों प्रति बहुत शुद्ध हैं। उनमेंसे बहुत सहायता मिली है, इनको सम्हालके रखना चाहिये।

इस ग्रन्थके कर्ताका सामान्य परिचय यह है कि उनका जन्म विक्रम संवत् १५०५ अगहन सुदी ७ को पुष्पावतीमें हुआ था। पिता गढ़ासाहुजी परवार जातिके सेठ थे तथा यह टोंक राज्यके सेमरखेड़ीमें व ग्वालियर राज्यके मल्हारगढ़में विशेष ध्यान सामायिक करते थे, उनका समाधिमरण मल्हारगढ़में विक्रम संवत् १५७२ ज्येष्ठ सुदी ६ को हुआ था।

(११४) कमल कलन जिन।

जय जयो जयो जय जिनवर उत्ते, जै जयं जयं जै जयं जिनुत्ते।
पय कमल कदल गमअगम स उत्ते, पै अगम समय जिन सिद्ध संपत्ते॥ ७॥
सुइ कदल कमल कलि भाव स उत्ते, सुइ पुलिन सहाव जिन जम्रा जनुत्ते।
सुइ जान जान रिजु विपुल स उत्ते, सुइ अलप समय जिन सिद्ध संपत्ते॥ ८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइ पुलिन सुयं जय गगन जयवंते, सुइ गगन कमल चर कलन जिनुत्ते।
मय उवन गगन गम अगम गमंते, जै गगन कमल जिन सिद्ध सँपत्ते ॥ ९ ॥
सुइ गगन सहाव चर कलन जिनुत्ते, सुइ कलन कमल जिन कलन कलत्ते।
सुइ कलस कमल कलि कलन अनंते, सुइ गहिर अनंत जिन सिद्ध संपत्ते ॥ १० ॥
सह कलन सहज जिन ससि जिनुत्ते, ससि सिद्धि रमन जिन जिनय स उत्ते।
ससि कलन रमन जिन कलन जिनुत्ते, ससि रमन समय जिन सिद्धि संपत्ते ॥ ११ ॥

अर्थ—ऐसे ही जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो, जय हो, वे कर्मविजयी हैं, ऐसा कहा गया है। उनकी सदा जय वनी रहती है फिर कर्म उनको गिरा नहीं सकते। वही तीर्थंकर जिन सुवर्ण कमलोंके पत्तोंपर चलते हैं अथवा वे ही जिन अपने आत्मारूपी कमलमें गुणरूपी पत्तोंपर चलते हैं तथा निश्चयसे वे अगम हैं, अतीन्द्रिय हैं, स्वानुभवगम्य हैं। वे अतीन्द्रियपदके धारी परमात्मा जिन सिद्धगतिको पालेते हैं। उन्हीं जिनेन्द्रको गुणरूपी पत्तोंके धारी आत्मारूपी कमलमें मगन चारित्ररूप कहा गया है। उन्हींको कमलके धारी जल स्थल समान स्वभावको रखनेवाले परमात्मा कहा गया है। अर्थात् कमल भी वही आत्मा है। कमलकी उत्पत्तिका स्थान भी वही आत्मा है। उसी परमात्मारूपी जल स्थलको परम सरल अर्थात् ऋजु जानों तथा उसको महान् विशाल अर्थात् विपुल जानों। ऐसे ही अतीन्द्रिय अलख जिनेन्द्र परमात्मा सिद्धगतिको पाते हैं। वही आत्मारूपी जल स्थल स्वयं आत्माका आकाश समान ज्ञान है, इसी आकाश समान ज्ञानसे कमल समान आत्मा विकसित होता है, इसीमें स्वाद लेनेको कलन करते हैं। यह आकाश समान केवलज्ञान स्थूल सूक्ष्म सर्वको जानता है। ऐसे केवलज्ञानकी जय हो, उसके प्रतापसे जिनके कमल सिद्धगतिको पाते हैं। उसी ज्ञान स्वभावमें रमनेको आत्माका कलन कहा है। वही आत्मारूपी कमलका अनुभव जिनेन्द्रका अनुभव करता है। वही परमात्मा कलशके समान है, जिसके भीतर आप ही आत्मारूपी कमल है। इसको अनंत गुणरूपी कलियें हैं, उसको यह अनुभव कर रहा है। ऐसे गंभीर अनंत वीर्यधारी जिनेन्द्र सिद्धगतिको पाते हैं। वही परमात्मारूपी कलश स्वभावमें रमनेवाले जिनेन्द्रने उनको चन्द्रमा कहा है। यह चन्द्रमाके समान परमात्मा सिद्ध स्वभावमें लीन है। इसीको स्वानुभवी व सिद्धगतिको जानेवाला कहा गया है। भावार्थ—आत्मा ही आत्माका अनुभव करता है।

(११७) बन्ध विलाई।

वास वास समय उव वास रलि वास समाई, उव उवन वास।
मलियागिरि वसि मुक्ति वसाई ॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ—आत्मारूपी सुगंधको लेता हुआ यह आत्मारूपी सुगंधमें मिलकर उसीमें समा जाता है, आत्मानन्दी हो जाता है। जहां आत्मा आत्मानन्दकी सुगंधसे सदा वासित मलयागिरिके समान निज आत्माहीमें बसकर मोक्षके भीतर वास करता है।

(१२०) उवन विंद स्वभाव।

दिपि आदि कमल सु हौस सुमनह, हौस तार विगास।
तर तार धुव सुइ कमल विलसित, आसतार सुइ मुक्ति विलास ॥ १६ ॥

भावार्थ—जब अनंतज्ञानादि गुण सहित आत्मारूपी कमलके परिणमनकी उमंग जगती है यह भी उमंग होती है कि अपनेको व परको तारूँ तब तारण तरण कमल सम आत्मा ध्रुवरूपसे परमात्मापदके आनंदको पाता है तब आशा सफल होजाती है। वह स्वपरको तारकर मोक्षके आनन्दको भोगता है। यहां हौस शब्दका व्यवहार है जो ठेठ हिंदी है।

(१२३) उवन मिलन बतीसी।

असम असम जिन असम रमन जिन, असम समय सम साहा रे ॥ ९ ॥

भावार्थ—वे अनुपम जिन अपने अनुपम स्वभावमें रमण करते हैं, उस अनुपम आत्माने स्वभावको साध लिया है।

चमर चरन जिन करना रे—११—भावार्थ—इस जिनेन्द्रके भावरूपी चारित्रमें आचरण किया जाता है। मानों उनके चरणोंपर चमर ढारे जाते हैं।

१४४ हिय उवन समय।

मध्य रमन कलन षट्रमन रमै, मध्य उवन कमल सुइ मुक्ति रमै ॥ १७ ॥

अर्थ—जो कमलरूप परमात्माके गुणोंके भीतर प्रवेश करता है वह छः गुणोंके भीतर रमण करता है—अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत वीर्य, अनंतसुख, क्षायिक सम्यक्त, क्षायिक चारित्र। वह स्वयं अपने आत्मा कमलमें विराजित गुणोंको प्रगट कर उनमें रमण करता हुआ मोक्ष पाता है।

(१५२) सून्य रमन चौतीसी।

सै पंच बहत्तर सुन्न समेई, सुइ सुन्न कलन जिन जिनवर सोई।

भावार्थ—१७७ से सूक्ष्म होकर आपमें रमता है वह आत्मा निर्विकल्प ध्यानसे जिनेन्द्र हो जाता है। १७७=१२० बन्ध प्रकृति+५७ आस्रव द्वार। यहां सिद्धांत ज्ञानका महत्व झलकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१५८) मिलन समरथ ।

जं सूर उदय सुइ रमन गलाई, तं उवन उदय सुई सरनि विलाई ॥ ३ ॥

भावार्थ—जैसे सूर्यके उदय होने पर रात्रि विला जाती है वैसे आत्मज्ञानके प्रकाशसे अनुभव मई संसार नाश होजाता है।

(१६२) जै जै नंदिनी ।

आदि अनादि सुयं सिध उवने, नंत प्रवेस समाई ।

सुयं सुबंध लाप अलोपसु, उव उवन सहज सुविलाई ॥ १३ ॥

भावार्थ—सिद्ध कर्मोंके क्षयकी अपेक्षा सादि हैं, प्रवाह संततिकी अपेक्षा अनादि हैं। जितने सिद्ध होजाते हैं वे अनंतसिद्धोंकी अवगाहनामें समा जाते हैं। सिद्ध होते ही सर्व बंध जो स्वरूपको छिपानेवाला है स्वयं ही विला जाता है।

(१५८) मिलन समयके भजनमें, उस समय प्रचलित पुरानी हिंदीका नमूना है—

विलस रमन जिन मो ले जाई, उव उवन स्वाद रस मिलन मिलाई ।

जिन हो साही जिनय जिना, जिन उवन समय सुइ सिधि रमना ॥ ११ ॥

यह ग्रन्थ ध्यानसे मनन करने योग्य है। मुझे अर्थके विचारमें बहुत कठिनता पड़ी है। कहीं भूलचूक होगई हो विद्वज्जन शुद्ध करलें और क्षमा करें। श्री तारणस्वामीके ग्रन्थोंका भाव समझनेके लिये तत्त्वार्थसूत्र, गोम्मटसार तथा समयसारका ज्ञान होना जरूरी है। इनके ग्रन्थ आत्ममननके व वैराग्यके लिये बहुत उपयोगी हैं।

मंगलसैन सुपौत्र यह, मंगल करत महान, मंगल मगसिर नौम सुदि, पूर्ण कियो निज ध्यान।

मंगल श्री अरहंत है, मंगल सिद्ध महान, मंगल सूर सुगुरु यती, करहु भव्य कल्याण॥

पढ़ो पढ़ाओ मनन कर, उपजे आतमज्ञान, वीतरागता हो प्रगट, हो आनन्द महान।

तारणस्वामी भक्त जिन, स्वात्मरमी गुणवान, उसके गुणको स्मरण कर, लहूं सु आतमज्ञान॥

॥ शुभं भूयात् ॥

सागर,
मगसिर सुदी ९ मंगल
वीर सं० २४६३
ता० २२ दिसम्बर १९३६

—ब्रह्मचारी सीतलप्रसाद।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषयसूची ।

नं०	विषय	गाथाएं	पृष्ठ
(१०७)	उवन मिलन प्रिय चौवीसी	२२०९–२२३४	१
(१०८)	अन्मोय गाथा	२२३५–२२४७	१५
(१०९)	विन्यान रमन फूलना गाथा	२२४८–२२७५	२०
(११०)	दोहा वसंत गाथा	२२७६–२३००	३४
(१११)	जिनबत्तीसी गाथा	२३०१–२३३२	३९
(११२)	उवन इष्ट समयसार गाथा	२३३३–२३७३	४७
(११३)	अंक चौतीसी गाथा	२३७४–२४०७	५९
(११४)	कमल कलन गाथा	२४०८–२४२०	६८
(११५)	चौवीस अर्करली गाथा	२४५१–२४५९	७४
(११६)	उपयोगसार फूलना गाथा	२४६०–२४७७	८२
(११७)	बंधत्रिलय फूलना गाथा	२४७८–२४९०	८६
(११८)	जोगी जोग फूलना गाथा	२४९१–२५०३	९१
(११९)	उत्पन्न रली गाथा	२५०४–२५१९	९६
(१२०)	उवन विंद स्वभाव गाथा	२५२०–२५३६	१०२
(१२१)	चिंताकारो फूलना गाथा	२५३७–२५४९	१०८
(१२२)	कीतडी फूलना गाथा	२५५०–२५५९	१११
(१२३)	उवन मिलन पचीसी गाथा	२५६०–२५८४	११५
(१२४)	जिनवर फूलना गाथा	२५८५–२६००	१२३
(१२५)	धुव्र केवल वनजारा गाथा	२६०१–२६१७	१२७
(१२६)	जय रंजसी अर्क गाथा	२६१८–२६५०	१३३

नं०	विषय	गाथाएं	पृष्ठ
(१२७)	रंजरमननन्द फूलना गाथा	२६५१–२६६२	१४३
(१२८)	सुरमन या स्वामन चिंतामनी	२६६३–२७०७	१४८
(१२९)	स्वामी तारण जिनदेव फूलना	२७०८–२७१८	१६२
(१३०)	अर्क उवन फूलना गाथा	२७१९–२७४१	१६६
(१३१)	गद्य गाथा	२७४१–२७४३	१७५
(१३२)	उवन कमल बत्तीसी गाथा	२७४४–२७६६	१७७
(१३३)	तार कमल फूलना गाथा	२७७७–२७८९	१८८
(१३४)	न्यान वनजारा गाथा	२७८९–२७९४	१९३
(१३५)	उपयोग बत्तीसी गाथा	२७९५–२८२७	२००
(१३६)	ज्ञानाष्टक गाथा	२८२८–२८३६	२११
(१३७)	कमल चतुर्दशी गाथा	२८३७–२८५१	२१५
(१३८)	उवन अर्क सोलही	२८५२–२८६८	२२१
(१३९)	जै जै मेल समय गाथा	२८६९–२८८७	२२७
(१४०)	दिसि अंग फूलना गाथा	२८८८–२९०४	२३४
(१४१)	समय उवन गाथा	२९०५–२९४१	२४०
(१४२)	उवन पिय रमन गाथा	२९४२–२९५०	२४६
(१४३)	उवन जिनपयोग गाथा	२९५१–२९६४	२५०
(१४४)	हिय उवन समय गाथा	२९६५–२९८६	२५५
(१४५)	अर्क पिय गाथा	२९८६–३००२	२५९
(१४६)	साध्यशुद्ध गाथा	३००३–३००९	२६४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नं०	विषय	गाथाएं	पृष्ठ
(१४७)	मिलनरमन चौतीसी गाणा	३०१०–३०२८	२६७
(१४८)	जिनय रली गाथा	३०२९–३०३२	२७२
(१४९)	व्रर उवन लडी गाथा	३०३३–३०५२	२७४
(१५०)	समय उवन मिलन गाथा	३०५३–३०६३	२७९
(१५१)	जिनेली गाथा	३०६४–३०७६	२८३
(१५२)	शून्य रमन चौतीसी गाथा	३०७७–३१११	२८७
(१५३)	जयनाले गाथा	३११२–३११५	२९३
(१५४)	परमानन्द विलासी फूलना	३११६–३१२१	२९५
(१५५)	मुक्ति विलासी गाथा	३१२२–३१२७	२९७
(१५६)	रमन प्रवेस गाथा	३१२८–३१३५	२९९
(१५७)	अर्क फूलना गाथा	३१३६–३१३८	३०१
(१५८)	मिलन समय गाथा	३१३९–३१५३	३०२
(१५९)	तार कमल गाथा	३१५४–३१५८	३०५
(१६०)	जिन तार फूलना गाथा	३१५९–३१६५	३०६
(१६१)	जै जै नंदिनी गाथा	३१६६–३१७४	३०८
(१६२)	शून्य उवन फूलना गाथा	३१७५–३१८१	३११
(१६३)	शून्य प्रवेश गाथा	३१८२–३१९४	३१२
(१६४)	तारनतरन फूलना गाथा	३१९५–३२००	३१५
....	अनुवादककी प्रशस्ति	....	३१८

विषयसूची

॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

—: श्री तारणतरण स्वामी विरचित मूल गाथा :—

और

श्रीमान् जैनधर्मभूषण, धर्मदिवाकर, ब्रह्मचारी सीतलप्रसादजी कृत, अन्वयार्थ, भावार्थ, विशेषार्थ सहित प्रकाशित शास्त्र—

१—श्री तारणतरण श्रावकाचार....	३)
२—श्री ज्ञानानन्द श्रावकाचार....	४)
३ श्री उपदेश शुद्धसार	२॥)
४ श्री ममल पाहुड टीका प्रथम भाग	३)
५--श्री ममल पाहुड टीका दूसरा भाग	३।)
६--श्री त्रिभंगीसार टीका	१)
७--श्री आध्यात्मिक चौबीस ठाणा टीका	१)
८--श्री ममल पाहुड टीका तीसरा भाग	२॥।)

मिलनेका पता—

(१) माणिकलाल मथुराप्रसाद बजाज, बडा बाजार--सागर (सी. पी.)।

(२) श्री० सेठ मन्नूलाल जैन--आगासौद (सागर) सी० पी०।

(३) मैनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय, गांधीचौक—सूरत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

श्री तारणतरण स्वामी विरचित-

ममलपाहुड़ या अमलपाहुड़ ।

तृतीय भाग ।*

मंगलाचरण दोहा—परम शुद्ध परमातमा, आतमरूपी जिनराज ।
सुख समुद्रमें नित मगन, नमहु आतमहित काज ॥

(१०७) उवन मिलन प्रिय चौबीसी गाथा २२०९ से २२३४ ।

जय जयवंतु जयं जय उवनं, जय जय जय जयो जिनेंदु ।
जय समय जयं जय उवन जयं जिनु, जय उवन पियं सिद्धि रत्तु ॥ १ ॥
स्वामी हो बलिहारी तरन जिन केरी, जिनु जिनय जिनय जिनु पाए ।
स्वामी हो बलिहारी परम जिनकेरी, मुक्ति रमनि जिन पाए ॥
स्वामी हो बलिहारी अलष जिनकेरी, जिन अगम अगम दरसाए ।
अमर परम पय परम रमन जिनु, परम मुक्ति रमि राए ॥ २ ॥ आचरी ॥

* प्रारंभ-सागर ता० २-१२-१९३६ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन गन उत्तु पियं, पिय रमनं, पुहुव वास सम समयं ।
किं प्रियो दुरवास जु वसियं, तेल घृत पिय विलय सुयं ॥
स्वामी हो बलिहारी अगम जिन केरी, सरनि रमनि जं विलय सुयं ।
स्वामी हो बलिहारी तरन जिन केरी, मुक्ति रमनि जं मिलियं ॥
स्वामी हो बलिहारी कलन कमल जिन केरी, अध्रुव बिलय ध्रुव उवनं ॥ ३ ॥ स्वामी०

जन गन उत्तु पियं पिय उवनं, पानी प्यास जल जल मिलियं ।
किं जल षार प्यास डह उवनं, स्वाद रंग जल नहु मिलियं ॥
स्वामी हो बलिहारी समय जिन केरी, समय रमन जिन पाए ॥ ४ ॥ स्वामी०

जन गन उत्तु पियं पिय समयं, हरद चून मिलि रक्त जयं ।
किं पिय नाम रूव गुन विलयं, मृतक जीवन किं पिय समयं ॥
स्वामी हो बलिहारी रमन जिन केरी, अमिय रमन विष विलयं ॥ ५ ॥ स्वामी०

जिनय जिन उत्तु पियं पिय उवनं, चिंतामनि पिय मिली रमनं ।
जं पिय दिप्ति दिस्टि सुइ मिलियं, चिंतामनि चित मिलि गमनं ॥
स्वामी हो बलिहारी सुवन जिन केरी, ध्रुव समय उवनु सिधि राए ॥ ६ ॥ स्वामी०

पिय मिलन जिनय जिन उत्तं, अमिय पियं विष विलय सुयं ।
जं पिय उवन समय पिय उवनं, सब्दापियं असब्द विलयं ॥
स्वामी हो बलिहारी पिय जिन केरी, दुष्ट विलय पिय मिलन सुयं ॥ ७ ॥ स्वामी०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन जिनवर उत्तु पिय समय सुई, मलय गिरिवन वास सुयं ।
दिष्टि कर्न उव उवन हियं उव, अवयास अर्क नंत अर्क समं ॥
स्वामी हो बलिहारी उवन जिन केरी, उवन उवन सम सम साहं ॥ ८ ॥ स्वामी०

मिलन पियं जिन जिनवर उत्तं, इष्ट मिलन इष्ट उवन पियं ।
इष्ट मिलन पिय सुवन मिलियं, डाह छेदक सब्भाव मिलं ॥
स्वामी हो बलिहारी दिप्ति जिन केरी, दिप्ति दिष्टि रमि मिलियं ॥ ९ ॥ स्वामी०

इष्ट मिलन पिय सुवन सु रमियं, सुयं रमन इष्ट रमियं ।
किं पिय मिलन सुयं रमि रमनं, सम समय उवन नहु समयं ॥
स्वामी हो बलिहारी सुयं जिन केरी, सुयं उवन सम रमियं ॥१०॥ स्वामी०

इष्ट मिलन पिय जिनवर उत्तं, अप्प स्वाद रस रंग रमियं ।
समय सुहावन स्वाद रंग रस, मिलनं पियं तं किं उवनं ॥
स्वामी हो बलिहारी जिनय जिन केरी, जं जिनियो कम्म समय सुवनं ॥११॥ स्वामी०

इष्ट उवन मिलन पिय उत्तं, चंद तारागन रयनि मिलं ।
उवन उवन सुर उवन सु दिनपर, चन्द तार पिय छन्न सुयं ॥
स्वामी हो बलिहारा रुदय जिन केरी, रुइ उवन उवन रुइ उवन जिनं ॥१२॥ स्वामी०

मिलन पियं जिन जिनवर उत्तं, उवन मिलन पिय पिय उवनं ।
नंत दिस्टि जं मिलनु पियं जिनु, दिप्ति समय सम मुक्ति जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी कलन जिन केरी, कलन कलिय सम समय रमं ॥१३॥ स्वामी०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिलनु रमन जिनय जिन उवनं, सब्द पियं मिलि रमि रमियं ।
सब्द सहाइ नंत पिय रमनं, उवन मिलन पिय सिद्धि जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी पियं जिन केरी, जं सब्द पियं पिय मुक्ति जयं ॥१४॥ स्वामी०

उवन पियं पिय उवन सुवन सुइ, उवन अनंतानंत समं ।
नंत उवन हिय हुवं सुयं जिनु, उवन समय सुइ सिद्धि जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी पियं जिन केरी, चरन कमल सम सिद्धि जयं ॥१५॥ स्वामी०

उव उवन उवन धुव उवनं, उवन पियं धुव कर्न समं ।
उवन मिलन सम समय सुवं धुवं, उव उवन सब्द धुव सिद्धि जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी सब्द जिन केरी, सब्द समय सुइ सिद्धि जयं ॥१६॥ स्वामी०

उवन मिलन पिय पियं सुयं जिन, अवयास अनन्तानन्त पियं ।
जं जं अर्क नन्त सुइ उवनं, अवयास अर्क सम समय सुई ॥
स्वामी हो बलिहारी सुयं जिन केरी, उवन समय सुइ मुक्ति जयं ॥१७॥ स्वामी०

उवन मिलन पियं जिन उवने, सह साह समय हिय हुव रमनं ।
गुप्ति गुप्ति सुइ अलष अगम जिनु, गुप्ति समय सम सिद्धि जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी गुप्ति जिन केरी, गुप्ति समय रमि मुक्ति जयं ॥१८॥ स्वामी०

उवन मिलनु कलन जिन उवने, कलन अलष गम अगम कलं ।
कलन कलिय जं नंत समय सुइ, उवन कलन सम सिद्धि जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी कलन जिन केरी, कलन रमन सम सिद्धि जयं ॥१९॥ स्वामी०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवन रमन चरन पिय उवनं, चरन चरिय जिन चरन चरं ।
चरन कलन सम समय सुयं जयं, जै जै जैवंत सु सिद्धि जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी कलन जिन केरी, चरन कलन सम सिद्धि जयं ॥२०॥ स्वामी०
उवन मिलन पिय उवन उव उवनं, सह पय विरन आयरन सुयं ।
आयरनं उवन हिय सहै कलन जिनु, कलन कमल उव मुक्ति जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी कमल जिन केरी, कमल उवन सम सिद्धि जयं ॥२१॥ स्वामी०
उवन हियार उवन जिन उत्तं, उवन पियं पिय मिलन सुयं ।
विवान अर्क सोइ सहज अर्क जिनु, सह समय मुक्ति मिलि सिद्धि धुवं ॥
स्वामी हो बलिहारी अर्क जिन केरी, अर्क समय सिद्धि राए ॥२२॥ स्वामी०
जिन स्रेनि उवन सुइ कलन समय जिनु, कलन कमल उव उत्तु जिनं ।
कमल उवन सुइ अलष धुवं जिन, धुव उवन कर्न सम सिद्धि जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी धुवं जिन केरी, धुव समय समय सिद्धि राए ॥२३॥ स्वामी०
जं तारन तरन कलि कमल रमन जिन, रम रमिय समय उव उवनं ।
उवन समय उव उवन हियं जिनु, सम समय उवन सिधि गमनं ॥
स्वामी हो बलिहारी समय जिन केरी, सम समय विवान सिद्धि गमनं ॥२४॥ स्वामी०
नन्त चतुष्टै रमन नन्त जिनु, परमेष्टि इष्टि जिन रमनं ।
वीर्य विन्यान वीर्य सुइ रमनं, रमन उवन सुइ सिद्धि जयं ॥
स्वामी हो बलिहारी अयं जिन केरी, आइ नन्त सम सिद्धि जयं ॥२५॥ स्वामी०

अन्वय सहित अर्थ—(जय जयवंतु जयं जय उवनं) जय हो जय हो कर्मविजयीका उदय हुआ है (जय जय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जयो जिनेंदु) जै हो जै हो श्री जिनेन्द्रकी जय हो। (जय समय जयं जय उवन जयं जिनु) जीतने वाले आत्माकी जय हो। प्रकाशरूप जिन भगवानकी जय हो (जय उवन पियं सिद्धि रत्तु) सिद्ध स्वभावमें लीन परम इष्ट अरहन्तका उदय हुआ है। जय हो ॥ १ ॥

(स्वामी हो बलिहारी तरन जिन केरी) भवसागरसे तरने वाले श्री जिनेन्द्र भगवानकी बलिहारी है अर्थात् उनकी अद्भुत महिमा है (जिनु जिनय जिनय जिनु पाए) श्री जिनने कर्मोंको व रागादिको जीतते हुए अपना जिन स्वभाव प्राप्त कर लिया है (स्वामी हो बलिहारी परम जिन केरीं) उत्कृष्ट जिन भगवानकी बलिहारी है (मुक्ति रमनि जिन पाए) श्री जिनेन्द्रने मुक्तिरूपी स्त्रीको प्राप्त कर लिया है (स्वामी हो बलिहारी अलष जिन केरी) अतीन्द्रिय स्वभावधारी, इंद्रियोंसे अगोचर श्री जिनेन्द्रकी बलिहारी है (जिन अगम अगम दरसाए) श्री जिनेन्द्रने अतीन्द्रिय आत्मतत्वको दिखलाया है (अपर परम पय परम रमन जिनु) श्री जिनेन्द्र परसे भिन्न परम पदके धारो हैं व अपने उत्कृष्ट स्वभावमें रमण करते हैं (परम मुक्ति रमि राए) वे ही उत्तम मुक्तिमें रमण करनेवाले मुक्ति-राजा हैं ॥ २ ॥

(जन गन उत्तु पियं पिय रमनं) श्री जिनेन्द्र भगवान जन समुदायको उपदेश करते हैं कि परम प्रिय परमात्मामें रमण करना ही हितकारी है (पुहुव वास सम समयं) आत्मामें कमल समान समभावकी सुगन्ध आती है-जैसे कमलमें सुगन्ध होती है वैसे आत्मामें समभावकी सुगन्ध है (किं प्रियो दुरवास जु वसियं) आत्माके सिवाय किसी भी वस्तुके साथ राग न करनेकी खोटी दुर्गंध थी (तेल घृत पिय विलय सुयं) वह दुर्गंध समभावकी गन्धसे स्वयं विला गई है जैसे तेल व घी पीनेसे मुखकी दुर्गंध मिट जावे (स्वामी हो बलिहारी अगम जिन केरी) अतीन्द्रिय स्वरूप श्री जिनेन्द्रकी बलिहारी है (सरनि रमनि जं विलय सुयं) जिनके संसारका भ्रमण स्वयं विला गया है (स्वामी हो बलिहारी तरन जिन केरी) भवसागरसे तरनेवाले जिनेन्द्रकी बलिहारी है (मुक्ति रमनि जं मिलियं) जो मुक्तिरूपी स्त्रीसे जाकर मिल गए है (स्वामी हो बलिहारी कलन कमल जिन केरी) कमल समान आत्माके अनुभव करनेवाले जिनेन्द्रकी बलिहारी है (अधुव विलय धुव उवनं) जिनके अनित्य संसार नाश होगया है व ध्रुव मोक्षका उदय होगया है ॥ ३ ॥

(जन गन उत्तु पियं पिय उवनं) जनसमुदायको भगवान कहते हैं कि परम इष्ट हितकारी पदका प्रकाश हुआ है (पानि प्यास जल जल मिलियं) जिस शांत जलकी प्यास थी उसको बुझानेवाला शांतामृत जल मिल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ७ ॥ गया है (किं जल षार प्यासं डह उवनं) विषय सुख खारे पानीके पीनेसे प्यासकी दाह पैदा होती थी (स्वाद रंग जल नहु मिलियं) स्वादसे भरा हुआ सुन्दर समभावरूपी जल नहीं मिला था (स्वामी हो बलिहारी समय जिन केरी) कर्मविजई आत्माकी बलिहारी है (समय रमन जिन पाए) आत्मामें रमण करनेसे जिन्होंने जिन पदको प्राप्त किया है ॥ ४ ॥

(जनगन उत्तु पियं पिय समयं) जनसमुदायको भगवान कहते हैं कि परमप्रिय आत्मा ही हितकारी हैं (हरद चून मिलि रक्त जयं) जिन्होंने रागभावको जीत लिया है, जो आत्मा और पुद्गल दोनोंके संयोगसे उसी तरह उत्पन्न होता है, जैसे हलदी और चूना मिलानेसे लाल रंग पैदा होता है (किं पिय नाम रुव गुन विलयं) संसार सम्बन्धी जितने भी इष्ट नाम और रूप हैं—चार गति सम्बन्धी जितनी विभाव पर्यायें हैं वे सब विला गई हैं (मृतक जीवन किं पिय समयं) अब आत्माके मरण जन्म सम्बन्धी कोई भी विकल्प नहीं है (स्वामी हो बलिहारी रमन जिन केरी) आत्मामें रमण करनेवाले जिनेन्द्रकी जय हो (अमिय रमन विष विलयं) आत्मानन्द-रूपी अमृतमें रमण करनेसे इंद्रिय विषयकी इच्छाका विष दूर होजाता है ॥ ५ ॥

(जिनय जिन उत्तु पियं पिय वयनं) श्री जिनेन्द्रने परमप्रिय हितकारी उपदेश दिया है (चिंतामनि पिय मिलि रमनं) जब परमात्माको चिंतामणिके समान हितकारी आत्मामें रमणरूप स्वात्मानुभव प्राप्त होजाता है (जं पिय दिप्ति दिष्टि सुइ मिलियं) तब ही परमप्रिय अनन्त ज्ञान व अनन्त दर्शन भी मिल जाता है (चिंतामनि चित मिलि गमनं) चिंतामणिके समान आत्मा अपने स्वरूपमें परिणमन करता है (स्वामी हो बलिहारी सुवन जिन केरी) आत्मामें परिणमन करनेवाले जिनेन्द्रकी बलिहारी (धुव समय उवनु सिधि राए) जब आत्मा ध्रुवरूपसे प्रकाशमान होजाता है तब वह सिद्धगतिका राजा होजाता है ॥ ६ ॥

(पिय मिलन जिनय जिन उत्तं) इष्टपदके मिलनेके सम्बन्धमें श्री जिनेन्द्र भगवानने कहा है (अमिय पियं विष विलय सुयं) जब आत्मानन्दरूपी अमृतका पान होता है तब विषयोंका विष स्वयं उतर जाता है (जं पिय उवन समय पिय उवनं) इष्ट भावका प्रकाश सो ही इष्ट आत्माका प्रकाश है (सब्द पियं असब्द विलयं) आत्मानु-भवके सहायक शब्दोंका प्रेम करनेसे-पदस्थ ध्यान करनेसे शब्द रहित कर्म नाश होने लगते हैं (स्वामी हो बलिहारी पिय जिन केरी) परमेष्ठी जिनकी बलिहारी है (दुष्टु विलय विय मिलन सुयं) जब चार घातीय इष्टकर्म नाश होजाते हैं तब स्वयं इष्ट अरहंतपद मिल जाता है ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जिनु जिनवर उत्तु पिय समय सुई) श्री जिनेन्द्रने कहा है सो ही परमेष्ठी परमात्मा है (मलय गिरि वनवास सुयं) जैसे मलयगिरिमें चन्दनके बनकी स्वयं वास होती है ऐसे ही उनमें साम्यभावकी वास स्वयं फैल रही है (दिष्टि कर्न उव उवन हियं उव) उनमें हितकारी प्रकाशका साधक क्षायिक सम्यग्दर्शन विद्यमान है अर्थात् क्षायिक सम्यग्दर्शनके द्वारा ही केवलज्ञान होता है (अवयास अर्क नंत अर्क समं) वहां समभावके साथ अनन्त शक्तिका धारी केवलज्ञान सूर्यका प्रकाश है (स्वामी हो वलिहारी उवन जिन केरी) प्रकाशमान केवल ज्ञानी जिनेन्द्रकी बलिहारी है (उवन उवन सम सम साहं) जिन्होंने समताभावके प्रकाशसे पूर्ण साम्यभावका साधन कर लिया है ॥ ८ ॥

(मिलन पियं जिन जिनवर उत्तं) श्री जिनेन्द्रने परमेष्ठी पदके लाभकी बात बताई है (इष्ट मिलन इष्ट उवन पियं) जब परम इष्ट स्वात्मानुभवका लाभ होजाता है तब परम प्रिय स्वभावका प्रकाश होजाता है (इष्ट मिलन पिय सुवर्न मिलियं) प्रिय आत्मानुभवके लाभसे सुवर्णके समान प्रिय परमात्माके पदका लाभ होजाता है (डाह छेदक सब्भाव मिलं) तब सर्व दाहका छेदक शुद्ध भाव मिल जाता है (स्वामी हो वलिहारी दिप्ति जिन केरी) अनन्त ज्ञानी जिनेन्द्रकी बलिहारी (दिप्ति दिष्टि रमि मिलियं) उनके अनन्त ज्ञान व अनन्तदर्शन भावोंमें रमणता प्राप्त होरही है ॥ ९ ॥

(इष्ट मिलन पिय सुवन सु रमियं) हितकारी आत्मानुभवके लाभसे शुद्धात्माके वनमें भलेप्रकार रमण होरहा है ((सुयं रमन इष्ट रमियं) जब स्वयं आपमें रमण होता है तब ही हितकारी शुद्ध भावमें रमण होता है (किं पिय मिलन सुयं रमि रमनं) जब स्वानुभवगोचर कुछ मिल जाता है तब यह स्वयं ही आपमें रमण करके रम जाता है (सम समय उवनं नहु समयं) जब आत्मामें समभावका उदय होजाता है तब केवल मात्र खाली आत्मा ही रह जाता है, सर्व परका क्षय या त्याग होजाता है (स्वामी हो वलिहारी सुयं जिन केरी) स्वयं प्रकाशमान जिनेन्द्रकी बलिहारी (सुयं उवन सम रमियं) वे स्वयं उदयरूप होकर समभावमें रमण कर रहे हैं ॥ १० ॥

(इष्ट मिलन पिय जिनवर उत्तं) श्री जिनेन्द्रने प्रिय परमेष्ठी पदके लाभकी बात कही है (अप्प स्वाद रस रंग रमियं) तब आत्मा अपने ही आत्माके स्वादके रसमें व आत्माके रंगमें रम जाता है (समय सुहावन स्वाद रंग रस)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्माका स्वभावमें शोभना हो उसके स्वादके रसका व आत्मीक रंगका लाभ है (मिलिंन पियं तं किं उवनं) अपने प्रिय स्वभावका मिलना ही आत्माका पूर्ण उदय होना है कोई परका लाभ नहीं होता है (स्वामी हो बलिहारी जिनय जिन केरी) श्री जिनेन्द्रकी बलिहारी हो (जं जिनियो कम्म समय सुवनं) जिन्होंने कर्मोंको जीतकर आत्मामें परिणमन किया है ॥ ११ ॥

(इष्ट उवन मिलन पिय उत्तं) जब हितकारी आत्मानुभवका लाभ होता है तब उसके सम्बन्धमें कहा है (चंद तारागन रयनि मिलं) कि जैसे रात्रिको तारेगण व चन्द्रका प्रकाश होता है वैसे मिथ्यात्वकी रात्रिके जानेसे स्वात्मानुभवका मन्द मन्द प्रकाश होते होते अधिक अधिक प्रकाश चन्द्रमाके समान होता जाता है । चौथे गुणस्थानसे लेकर आगे आगे स्वात्मानुभवका प्रकाश बढ़ता जाता है (उवन उवन सुर उवन सु दिन पर) बढ़ते बढ़ते जब केवलज्ञान रूपी सूर्यका प्रकाश होता है तब स्वात्मानुभव भी सूयके समान परम तेजस्वी झलक जाता है (चंद तार पिय छन्न सुयं) तब क्षयोपशम स्वभावसे होनेवाला तारा व चन्द्रमाके समान स्वात्मानुभव स्वयं छिप जाता है-केवलज्ञानके होनेके पहले परोक्ष श्रुतज्ञानके द्वारा स्वात्मानुभव था केवलज्ञानके होते ही प्रत्यक्ष रूपसे आत्माका साक्षात्कार होजाता है-केवलज्ञानी ही प्रत्यक्ष रूपसे विना श्रुतकी सहायताके निज आत्माको देख सक्ते हैं (स्वामी हो बलिहारी रुइय जिन केरी) शुद्ध रुचि धारी जिनेन्द्रकी बलिहारी (रुइ उवन उवन रुइ उवन जिंनं) जिनमें क्षायिक सम्यग्दर्शन बढते बढते परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन होजाता है ॥ १२ ॥

(मिलन पियं जिन जिनवर उत्तं) श्री जिनेन्द्रने इष्टपदके लाभकी बात कही है (उवन मिलन पिय पिय उवनं) जब ज्ञानका प्रकाश होजाता है तब परम प्रिय परमात्मापद झलक जाता है (नंत दिष्टि जं मिलनु पियं जिनु) तब प्रिय अनन्तदर्शनका लाभ होजाता है (दिष्टि समय सम मुक्ति जयं) वे प्रभु आत्मीक ज्ञानसे व समभावसे मुक्तिको जीत लेते हैं (स्वामी हो बलिहारी कलन जिन केरी) आत्मानुभव करनेवाले जिनेन्द्रकी बलिहारी (कलन कलिय सम समय रमं) वे समभावमें रमण करते हुए आत्मामें रमण कर रहे हैं ॥ १३ ॥

(मिलन रमनु जिनय जिन उवनं) जब आत्मामें रमणता होजाती है तब वीतराग जिन भगवानका प्रकाश होजाता है (सब्द पियं मिलि रमि रमियं) आत्मानुभवके सहायक प्रिय शब्दोंकी सहायतासे आत्मामें रमण होता है (सब्द सहाइ नंत पिय रमनं) शब्दोंकी सहायतासे अनन्त शक्तिधारी प्रिय स्वभावमें रमण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता है। केवलज्ञानके पहले तक शुक्लध्यानमें भी शब्दोंकी सहायता होती है (उवन मिलन पिय सिद्धि जयं) जब केवलज्ञान होजाता है तब प्रिय सिद्धपदको जीत लिया जाता है (स्वामी हो वलिहारी पियं जिन केरी) परम हितकारी जिनेन्द्रकी बलिहारी (जं सव्द पियं पिय मुक्ति जयं) जिनके प्रिय शब्दोंके द्वारा शुक्लध्यान व धर्मध्यान करते करते मुक्तिको जीत लिया जाता है ॥ १४ ॥

(उवन पियं पिय उवन सुवन सुइ) जब प्रिय शुद्ध ज्ञानका प्रकाश होता है तब उस ज्ञानमें यह आत्मा स्वयं परिणमन करता है (उवन अनंतानंत समं) वह ज्ञान अनन्तानन्तशक्तिका धारी है व समभाव सहित है (नंत उवन हिय हुवं सुयं जिनु) अनन्त हितकारी ज्ञानमें वे जिनेन्द्र स्वयं परिणमन करते हैं (उवन समय सुइ सिद्धि जयं) जब आत्माका स्वभाव प्रगट होजाता है तब सिद्धगतिका स्वयं विजय होजाता है (स्वामी हो वलिहारी पियं जिन केरी) परम प्रिय जिनेन्द्रकी बलिहारी (चरन कमल सम सिद्धि जयं) जो आत्मारूपी कमलमें समतासे आचरण करते हुए सिद्धिको जीत लेते हैं ॥ १५ ॥

(उव उवन उवन धुव उवनं) प्रगट होते होते ध्रुव अविनाशी ज्ञानका प्रकाश होगया है (उवन पियं धुव कर्न समं) यही हितकारी ध्रुव प्रकाश है जो समभाव या वीतरागभावका साधन है। जहां केवलज्ञान होजाता है वहां पूर्ण वीतरागताका प्रकाश होजाता है (उवन मिलन सम समय सुयं धुवं) जब अनन्तज्ञानका लाभ होजाता है तब समभाव सहित आत्मा स्वयं ध्रुव रूपसे स्वभावमें स्थिर होजाता है (उव उवन सव्द धुव सिद्धि जयं) ज्ञानका प्रकाश होना ही ये शब्द बताते हैं कि अरहन्त परमात्माने ध्रुवरूपसे सिद्धिपदको जीत लिया है (स्वामी हो वलिहारी सव्द जिन केरी) श्री जिन शब्दके धारक भगवानकी बलिहारी है (सव्द समय सुइ सिद्धि जयं) समय शब्द ही बताता है कि आत्माने सिद्धपदको जीत लिया है, सिद्धपद ही साक्षात आत्मा है ॥ १६ ॥

(उवन मिलन पिय पियं सुयं जिन) ज्ञानके प्रकाशके साथ ही स्वयं परमेष्टी जिनेन्द्रपद झलक जाता है (अवयास अनंतानंत पियं) तब हितकारी अनन्तज्ञान शोभता है (जं जं अर्क नंत सुइ उवनं) सूर्यके समान अनन्त शक्तिका धारी ज्ञान प्रगट होता है (अवयास अर्क सम समय सुई) ज्ञान सूर्यका प्रकाश होना ही समभाव सहित आत्माका उद्योत है (स्वामी हो बलिहारी सुयं जिन केरी) स्वयं प्रकाशित जिनेन्द्रकी बलिहारी (उवन समय सुइ मुक्ति जयं) आत्माके पूर्ण [illegible] मुक्तिको जीत लिया जाता है ॥ १७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(उवन मिलन पिंयं जिन उवनं) ज्ञानके प्रकाशके साथ ही परमप्रिय वीतराग जिनेन्द्रका प्रकाश होता है (सहसाह समय हिय हुव रमनं) उस ज्ञानके साथ साधनेयोग्य निज आत्मा हितकारी स्वभावमें रमण करता है (गुप्ति गुप्ति सुइ अलष अगम जिनु) वे जिनेन्द्र अपने ही आत्माके किलेमें गुप्त हैं—परम संवररूप हैं- वे मन व इंद्रियोंसे अगोचर हैं। आपसे ही आपका ज्ञान रखनेवाले हैं (गुप्ति समय सम सिद्धि जयं) स्वरूपमें लीन आत्मा समताभावसे सिद्धपदको जीत लेना है (स्वामी हो वलिहारी गुप्ति जिन केरी) स्वरूप गुप्त जिनेन्द्रकी बलिहारी (गुप्ति समय रमि मुक्ति जयं) वे आत्मामें गुप्त आत्मा आपमें रमण करते हुए मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ १८ ॥

(उवन मिलन कलन जिन उवने) अनन्तज्ञानके लाभके साथ साथ श्री जिनेन्द्र अपने स्वभावमें परिणमन कर रहे हैं (कलन अलष गम अगम कलं) अतीन्द्रिय आत्माका अनुभव करते हुए वे स्थूल सूक्ष्म सब जान रहे हैं (कलन कलिय जं नन्त समय सुइ) आत्मानुभवके भीतर रमते हुए वे स्वयं अनन्त शक्तिके धारी आत्मा हो रहे हैं (उवन कलन सम सिद्धि जयं) ज्ञानमें रमण करते हुए वे समभावसे सिद्धपदको जीत लेते हैं (स्वामी हो बलिहारी कलन जिन केरी) आत्मरमी जिनेन्द्रकी बलिहारी हो (कलन रमन सम सिद्धि जयं) आप आपमें रमण करते हुए वे समभावसे सिद्धपदको जीत लेते हैं ॥ १९ ॥

(उवन रमन चरन पिय उवनं) शुद्ध ज्ञानमें रमण करना ही उत्तम चारित्रका प्रकाश है (चरन चरिय जिन चरन चरं) स्वचारित्रमें चलते हुए श्री वीतराग भगवान यथाख्यात चारित्रमें चलते हैं (चरन कलन सम समय सुयं जयं) स्वचारित्रमें रमण करते हुए समभावके द्वारा आत्मा स्वयं कर्मोंपर विजय पाता है (जै जै जैवंत सुसिद्धि जयं) वे सिद्धगतिको जीत लेते हैं, उनकी जय हो जय हो (स्वामी हो बलिहारी कलन जिन केरी) आत्मा-नुभवी जिनेन्द्रकी बलिहारी (चरन कलन सम सिद्धि जयं) वे आपमें चारित्र धारते हुए समभावसे सिद्धिको जीत लेते हैं ॥ २० ॥

(उवन मिलन पिंय उवन उव उवनं) आत्मीक ज्ञानके लाभसे इष्ट केवलज्ञानका उदय होता है (सह पय विपन आयरन सुयं) क्षायिक पदके साथ वे अरहन्त स्वयं निजमें ही आचरण करते हैं (आयरन उवन हिय सहै कलन जिनु) स्वचारित्रका प्रकाश हितकारी है, उसीसे वीतराग भगवान आपसे आपका अनुभव करते हैं (कलन कमल उव मुक्ति जयं) कमल समान आत्माका अनुभव करते हुए वे मुक्तिको जीत लेते हैं (स्वामी हो बलिहारीं कमल जिन केरी) कमल समान जिनेन्द्रकी बलिहारी (कमल उवन सम सिद्धि जयं) जब कमलके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समान आत्माका प्रकाश होता है तब समभावसे सिद्ध भावको जीत लिया जाता है ॥ २१ ॥

(उवन हियार उवन जिन उत्तं) हितकारी ज्ञानसे प्रकाशमान जिनेन्द्र कहे गए हैं (उवन पियं पिय मिलन सुयं) उस ज्ञानके प्रकाशसे स्वयं अपने आत्मीक पदका लाभ होता है। (विवान अर्क सोइ सहज अर्क जिनु) जहाजके समान तारण तरण अरहंत स्वभावमें स्थित सूर्यके समान सूर्य हैं (सह समय मुक्ति मिलि सिद्धि जयं) आत्मीक चारित्रके साथ कर्मोंसे छूटकर वे सिद्धपदको जीत लेते हैं (स्वामी हो बलिहारी अर्क जिन केरी) सूर्यके समान जिनेन्द्रकी बलिहारी (अर्क समय सिद्ध राए) सूर्य समान आत्मा ही सिद्ध पदका राजा होजाता है ॥ २२ ॥

(जिनसेनि उवन सुइ कलन समय जिनु) क्षपकश्रेणी पर चढ़ कर स्वयं वीतराग जिनेन्द्र होजाते हैं। (कलन कमल उव उत्तु जिनं) कमल समान प्रफुल्लित आत्माके रमण करनेवालोंको ही जिन कहा जाता है (कमल उवन सुइ अलष धुवं जिनु) कमल समान आत्माका प्रकाश होना सो ही अतीन्द्रिय वीतराग आत्माका ध्रुव रूपसे प्रगट होना है (धुव उवन कर्म सम सिद्धि जयं) ध्रुव रूपसे आत्माका प्रकाश होना ही वह साधन है जिससे समभावसे सिद्धभावको जीत लिया जाता है (स्वामी हो बलिहारी धुवं जिन केरी) ध्रुव जिनेन्द्रकी बलिहारी हो (ध्रुवं समय समय सिद्धि राए) ध्रुव आत्मा ही सिद्धगतिका राजा परमात्मा है ॥ २३ ॥

(जं तारन तरन कलि कमल रमन जिनु) यह तारण तरण अरहंत परमात्मा आत्मा रूपी कमलमें रमण करते हैं (रम रमिय समय उव उवनं) आत्मामें रमण करते हुए ही वे सदा प्रकाशित हैं (उवन समय उव उवन हियं जिनु) जहां आत्माका प्रकाश है वहीं हितकारी जिनेन्द्रका प्रकाश है (सम समय उवन सिधि गमनं) जब वीतराग मई आत्मा होजाता है तब वह सिद्ध गतिको जाता है। (स्वामी हो बलिहारी समय जिन केरी) आत्मामें अनुभव करनेवाले जिनेन्द्रकी बलिहारी (सम समय विवान सिद्धि गमनं) वे तारण तरण जहाजके समान समभावधारी अरहंत सिद्ध गतिको चले जाते हैं ॥ २४ ॥

(नन्त चतुष्टै रमन नन्त जिनु) वे अनंत गुणधारी जिनेन्द्र अनंतदर्शन, अनंतज्ञान, अनंतसुख व अनंतवीर्य चार अनंतचतुष्टयके धारी हैं (परमेष्टि इष्टि जिन रमनं) वे ही परमेष्टी हैं वे ही इष्ट हैं वे ही वीतरागभावमें रमण करते हैं (वीर्य विन्यान वीर्य सुइ रमनं) वे अनंत वीर्य सहित ज्ञान स्वरूपी अपने वीर्यसे ही आपमें रमण करते हैं (रमन उवन सुइ सिद्धि जयं) वे आत्मामें रमण करते हुए स्वयं सिद्ध गतिको जीत लेते हैं (स्वामी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो बल्हिारी अयं जिन केरी) ऐसे जिनेन्द्रको बलिहारी हो (आइ नन्त सम सिद्धि जय) वे सिद्धपदको जीत लेते हैं जो आदि सहित हैं तथापि अनंत हैं ॥ २५ ॥

भावार्थ—इस चौवीसीमें सिद्धपद प्राप्तिका साधन बताते हुए श्री अरहन्त परमात्माकी गुणावली गाई है। तथा यह बताया है कि यह आत्मा स्वयं अपने स्वभावसे सिद्ध परमात्मारूप है। कर्मोंको जीतनेके लिये भव्य जीवको उचित है कि सम्यग्दर्शनका उदय प्राप्त करे-आत्मज्ञानी होजाये, क्योंकि निश्चय मोक्षमार्ग एक आत्मानुभवरूप ही है। आत्मानुभवका उदय होना वही मिथ्यादर्शनकी अंधेरी रात्रिका मिटना है तथा तारा व चन्द्रके समान प्रकाशका होना है। अविरत—सम्यग्दृष्टी चौथे गुणस्थानसे पांचवें फिर सातवेंमें इसतरह धर्मध्यानको बढ़ाता हुआ बढ़ता है तब चंद्रमाके समान आत्मानुभव बढ़ता जाता है। क्षपकश्रेणीपर आरूढ़ होनेसे शुक्लध्यान पूर्ण चन्द्रमाके समान प्रगट होजाता है। जब मोहनीय कर्मका नाश करके फिर ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्मका नाश करता है तब श्री अरहन्त परमात्माके भीतर सूर्यके समान प्रतापशाली स्वात्मानुभव प्रकाशमान होजाता है। श्री अरहन्तपरमात्मा परम वीतराग या समताभावमें लीन रहते हैं, सिद्ध सुखका साक्षात् आनन्द लेते हैं, जली हुई रस्सीके समान रहे हुए चार अघातीय कर्म जब छूट जाते हैं तब वही सिद्ध होजाते हैं।

आत्मज्ञान सहित सम्यग्दर्शनका होना ही मानो समताकी सुगन्ध फूलना है। तब मिथ्यादर्शनकी वासना बिलकुल मिट जाती है। विषयोंके सुखोंका भोग खारी पानी पीनेके समान था। उससे तृष्णाकी दाह कभी मिटती नहीं थी। आत्मानुभवके द्वारा आत्मीक आनन्दके लाभसे वह प्यास मिट जाती है। अमृतमई जलका पान होता है, आत्मानुभवी जीवकी मन, वचन, कायकी क्रियाओंसे समताभावकी वैसी ही सुगन्ध आती है जैसी सुगन्ध चन्दनवनकी आती है। वह भी इस चन्दनवनकी जो मलयगिरिपर हो। वास्तवमें अरहन्त परमात्माके अन्तरंग गुणोंको व उनके यथार्थ स्वरूपको पहचानना चाहिये। यह स्वभाव यथार्थमें तब ही जाना जाता है जब जाननेवाला भी स्वात्मानुभव करता है।

इसीसे कहा है कि परमात्माका स्वभाव अगम है, अलख है। मन व इंद्रियोंका विषय नहीं है। हलदी और चूनाके मिलनेसे जैसे लाल रंग होता है वैसे आत्मा और मोहनीय कर्मके उदयसे रागादि विभाव होते हैं। यह मोटा उपमा है, इससे दिखलाया गया है कि रागभाव न केवल आत्माका स्वभाव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है, और न केवल पुद्गलका स्वभाव है। संयोगिक विभाव भाव उसी तरहका है जैसे लाल, हरे, पीले, डाकके संयोगसे स्फटिक पाषाणका रंग लाल, हरा, पीला होजाता है। वीतरागमई आत्मानुभवके अभ्याससे रागभावका मूल मोहनीय कर्म शक्तिहीन होता जाता है। नामरूप वाक्य बौद्ध ग्रन्थोंमें भी आता है। सांसारिक अवस्था सब नामरूपमें गर्भित है। रूपसे प्रयोजन जड़ शरीरसे है, नामके भीतर सर्व अशुद्ध ज्ञानादि व रागादि गर्भित हैं। जब आत्मा स्वात्मानुभव करता है तब नामरूपसे व जीवन मरणसे अपनेको भिन्न जानता है। निश्चयसे आत्मामें न नामरूप है न जन्म तथा मरण है। शरीरके आश्रय ही जन्म मरण है। शुद्धात्माका अनुभवमें लाभ होना या साक्षात् लाभ होना मलरहित शुद्ध सुवर्णके लाभके समान है। आत्मा जब परमात्मा होजाता है तब ध्रुव अविनाशी पदमें सदा लीन रहता है, मोक्षका कभी अभाव नहीं होता है। सिद्ध पद आदि सहित होकर भी अनंत है। यह भी बताया है कि केवलज्ञानका कारण श्रुतज्ञान है। श्रुतज्ञानमें द्रव्यश्रुतके उन शब्दोंका आलम्बन लेना होता है जिनसे आत्माके द्रव्य, गुण व पर्यायोंका बोध हो। श्रुतके शब्दोंका आलम्बन दूसरे शुक्लध्यान तकमें है। परमात्माके वाचक शब्द बड़े उपकारी होते हैं। आत्मरमणता निश्चयसे सम्यग्दर्शन है, निश्चयसे सम्यग्ज्ञान है व निश्चयसे सम्यक्चारित्र है, यही स्वात्मरमणरूप चारित्र ध्यानकी अग्नि है जिससे कर्मोंका नाश किया जाता है। इस चौबीसीका तात्पर्य यही है कि जो सिद्धपदका आनन्द लेना चाहें उन्हें श्री जिनवाणीके सहारेसे तत्वज्ञान प्राप्त कर आत्माका मनन करके आत्मानुभव करनेकी शक्ति पैदा करनी चाहिये, यही मोक्षका साक्षात् उपाय है। श्री नियमसारमें श्री कुन्दकुन्दाचार्य कहते हैं—

केवलणाण सहावो केवल दंसण सहाव सुह मईओ। केवल सत्ति सहावो सोहं इदि चितए णाणी ॥ ९६ ॥
णियभावं ण वि मुंचइ परभावं णेव गिराहदे केइं। जाणदि पस्सदि सव्वं सोहं इदि चितए णाणी ॥ ९७ ॥
पयडिट्ठिदि अणुभागप्पदेसबंधे हिं वज्जिदो अप्पा। सोहं इदि चिंतिज्जो तत्थेव य कुणदि थिरभावं ॥ ९८ ॥

भावार्थ—ज्ञानी ऐसा विचार करे–जो कोई केवलज्ञान स्वभाव, केवलदर्शन स्वभावधारी है, जो कोई आनन्दमई है व जो केवल वीर्य स्वभावधारी है, वही मैं हूँ। जो कोई आत्मा अपने भावोंको छोड़ता नहीं है। परभावोंको कभी गृहस्थ नहीं करता है, परंतु सर्वको एक साथ देखता व जानता है वही मैं हूँ। ऐसा ज्ञानी विचारता है। जो कोई आत्मा प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेश इन चार प्रकारके बन्धोंसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहित है वही मैं हूँ ऐसा ज्ञानीको विचारना चाहिये। तथा इसी शुद्ध भावमें अपना स्थिर भाव करना चाहिये। स्वात्मानुभव प्राप्तिका यही उपाय है।

(१०८) अन्मोय गाथा नं० २२३६ से २२४७ तक।

उव उवन उवन उव उवन सुयं जिनु, उव उवन समय सम उत्तं।
उव उवन सहावै समय उवन जिनु, उव उवन समय सिधि रत्तं ॥ १ ॥
जिनु आपने रंग मंदिरमें रे, कोउ उवन जिन स्वामी।
कमल कर्न हंस पूछन लागे, जन काहे अकुलाने ॥
सेनि जूको का सिहु लागे, स्वामी जूको कासै रागै।
पदमनाभि को का सिहु जागे, तीर्थंकरको का सिहु बूझे ॥
केवली को का सिहु मांगे, उवन जिन उवन रमन पावे।
सुयं जिन उवन रमन पावे ॥ २ ॥ आचरी०
जै जयो जयं जै जयं जयो जिनु, जय समय जयं जै उत्तं।
जै उवन जयं जै उवन जयं जिनु, जै उवन समय सिधि रत्तं ॥ ३ ॥ जिनु०
रम रमन रमन उव उवन रमन जिनु, रम रमन समय रमि रत्तं।
उव उवन रमन सम समय उवन जिनु, उव उवन गमय सिधि रत्तं ॥ ४ ॥ जिनु०
सुवन सुवन सुव उवन सुवन जिनु, सुव सुयं समय सुव सुवनं।
सुवक पवि अयं सुयं सुइ विलयं, सुव उवन समय सिधि रमनं ॥ ५ ॥ जिनु०
सब्द सब्द उव उवन सब्द जिनु, उवन सब्द सम समयं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय सब्द सम समय रमन जिनु, सब्द समय सिधि रमियं ॥ ६ ॥ जिनु०
हियं हियं हिय उवन रमन जिनु, हिय उवन समय सम रमनं ।
हिय उवन उवन हिय हियं उवन जिनु, हिय उवन समय सिधि गमनं ॥ ७ ॥ जिनु०
हुवं हुवं हुव उवन रमन जिनु, हुव समय नंत हुव रमनं ।
हुव उवन सहावे उवन हुवन जिनु, हुव उवन समय सिधि गमनं ॥ ८ ॥ जिनु०
षिप षिपन उवन षिपि षिपन रमन जिनु, षिपि रमन विवान सु उवनं ।
विवान रमन जिनु जिनय जयं जिनु, षिपि उवन समय सिधि गमनं ॥ ९ ॥ जिनु०
पियं पियं पिय उवन पियं जिनु, अन्मोय वियं जिन उवने ।
अन्मोय रंजु तं रमन समय जिनु, उव उवन नंद सिधि रमनं ॥ १० ॥ जिनु०
मुक्ति मुक्ति जिन उवनु मुक्ति जिनु, मुक्ति समय जिनु उवनं ।
मुक्ति सुभावे उवन मुक्तिं जिनु, उव उवन मुक्ति सिधि रमनं ॥ ११ ॥ जिनु०
सेनि सेनिं उव कलन सेनि जिन, उव कलन समय सम उवनं ।
उव उवन सेनि जिन सेनि कलन जिनु, कलि सेनि समय सिधि गमनं ॥ १२ ॥ जिनु०
तारन तरन सु तरन कमल जिनु, कमल समय सुइ उवनं ।
उवन कमल सुइ कर्न समय जिनु, सुइ उवन समय सिधि गमनं ॥ १३ ॥ जिनु०

अन्वयसहित अर्थ—(उव उवन उवन उव उवन सुयं जिनु) अब तो उदय होते होते स्वयं श्री जिनेन्द्रका उदय हुआ है (उव उवन समय सम उत्तं) इसीको प्रकाशमान आत्माका समभाव कहते हैं (उव उवन सहावे समय उवन जिनु) अपने प्रकाशक स्वभावसे ही आत्माने जिनेन्द्र पदको प्रकाश किया है (उव उवन समय सिधि रत्तं) यह प्रकाशमान आत्मा सिद्ध भावमें रत है ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जिनु आपने रंग मंदिरमें रे कोउ उवन जिन स्वामी) श्री जिनेन्द्रके अपने ही आत्माके घरमें श्री जिनेन्द्रका कोई अद्भुत पद प्रगट हुआ है (कमल कर्न हंसि पूछन लागे जन काहे अकुलाने) जो मोक्षसाधक कमल समान मुनिगण थे वे प्रसन्न होकर पूछने लगे कि जनसमुदायमें क्षोभ क्यों है? उत्तर मिला कि श्री अरहंत केवली भगवान तीर्थंकरका शुभागमन हुआ है (सेनि जूको का सिहु लागे स्वामी जूको कासै रागै) श्रेणिक महाराजको महावीरस्वामीका समोसरण देखकर बड़ी प्रीति पैदा हुई। परन्तु श्री महावीर भगवानको किसीके साथ राग नहीं था—वे वीतराग थे (पदमनाभि को का सिहु जागे, तीर्थंकरको कासिहु बूझे) तीर्थंकर महावीरसे पूछनेपर विदित हुआ कि श्रेणिक महाराजके भीतर पद्मनाभि आगामी प्रथम तीर्थंकर होनेयोग्य भाव या पुण्य जग उठा है (केवली को का सिहु मांगे उवन जिन उवन रमन रमन पावे सुयं जिन उवन रमन पावे) अब श्रेणिक महाराजको कोई मांगनेकी इच्छा केवली भगवानसे न रही, उन्होंने अपने भीतर क्षायिक सम्यग्दर्शनके साथ आत्मज्ञानमें रमणता पाली है। वे स्वयं वीतरागभावके प्रकाशकी रमणताको पाचुके हैं॥ २॥

(जै जयो जयं जै जयं जयो जिनु) श्री जिनेन्द्र भगवान कर्मविजयी वीरकी जय हो (जय समय जयं जै उत्तं) उन्होंकी आत्माने कर्मोंपर विजय प्राप्त करली है। ऐसा कहा गया है (जै उवन जयं जै उवन जयं जिनु) प्रकाशमान वीर जिनेन्द्रकी जय हो जय हो (जै उवन समय सिधि रत्तं) उदय प्राप्त आत्मा प्रभु सिद्धभावमें रत हैं, तन्मय हैं उनकी जय हो॥ ३॥

(रम रमन रमन उव उवन रमन जिनु) वे जिनेन्द्र अपने परिणमन स्वभावमें रमण करते हुए प्रकाशमान ज्ञानमें रमण कर रहे हैं (रम रमन समय रमि रत्तं) वे रमण स्वभावी आत्मा अपनेमें ही रमण करते हुए लीन हैं (उव उवन रमन सम समय उवन जिनु) वे ज्ञानमें रमण करते हुए समभाव सहित आत्मा वीतराग प्रकाशमान हैं (उव उवन समय सिधि रत्तं) वे उदय प्राप्त आत्मा सिद्धभावमें रत हैं॥ ४॥

(सुवन सुवन सुव उवन सुवन जिनु) परिणमनशील जिनेन्द्रका आत्मा परिणमन करते हुए ज्ञानमें परिणमन कर रहा है (सुव सुयं समय सुव सुवनं) आत्मा स्वयं अपने स्वभावसे परिणमन करता हुआ जिनेन्द्र हुआ है (सुवक पवि अयं सुयं सुइ विलयं) हलन चलनरूप संकल्प विकल्प स्वयं विला गए हैं। जब आत्मा आपसे आपमें रमण करता है तब सर्व तर्क वितर्क विचार स्वयं नष्ट होजाते हैं, मन थिर होजाता है (सुव उवन समय सिधि रमनं) परिणमनशील और प्रकाशमान आत्मा सिद्धभावमें रमण कर रहा है॥ ५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सब्द सब्द उव उवन सब्द जिनु) आत्माको प्रगट करनेवाले शब्दोंके प्रकाशसे-अर्थात् श्रुत द्वारा ध्यान करनेसे आत्मा अरहन्त होजाता है तब उसको जिन शब्दसे कहते हैं (उवन सब्द सम समयं) प्रकाशमान शब्दोंके द्वारा आत्मामें समभाव होजाता है (समय सब्द सम समय रमन जिनु) समय शब्द ही बताता है कि वे जिनेन्द्र समभावधारी आत्मामें रमण कर रहे हैं (सब्द समय सिधि रमियं) समय शब्द कहता है कि वे सिद्ध भावमें रमण कर रहे हैं ॥ ६ ॥

(हियं हियं हिय उवन रमन जिनु) परम हितकारी ज्ञानमें श्री जिनेन्द्र रमण कर रहे हैं (हिय उवन समय सम रमनं) आत्माका हित उदय होगया है, आत्मा समभावमें रमण कर रहा है (हिय उवन उवन हिय हियं उवन जिनु) सम्यग्दर्शनके होते ही आत्महितका उदय होजाता है, वही बढ़ते बढ़ते परमेष्ठी जिनपदको प्रकाश कर देता है (हिय उवन समय सिधि गमनं) जब परम हितकारी शुद्ध भाव प्रगट होजाता है तब आत्मा सिद्धगतिको प्रस्थान कर जाता है ॥ ७ ॥

(हुवं हुवं हुव उवन रमन जिनु) कर्मोंको भस्म करनेका ध्यानरूपी होम होरहा है उसी ध्यानके प्रकाशमें श्री जिनेन्द्र रमण कर रहे हैं या ध्यानके द्वारा कर्मोंको भस्म करके जिनेन्द्र हुए हैं (हुव समय नंत हुव रमनं) ध्यानमई आत्मा अनन्तकालके लिये अपने ही स्वभावमें रमण करता है (हुव उवन सहावे उवन हुवन जिनु) श्री जिनेन्द्र ध्यानमई स्वभावमें प्रकाश करते हुए सर्व कर्मोंको हवन कर रहे हैं (हुव उवन समय सिधि गमनं) होम करते करते जब सब कर्म जल जाते हैं तब आत्मा सिद्धगतिको चला जाता है ॥ ८ ॥

(षिप षिपन उवन षिपि षिपन रमन जिनु) क्षय करनेयोग्य घातीय कर्मोंको क्षय करके प्रगट क्षायिक भावमें श्री जिनेन्द्र रमण करते हैं (षिपि रमन विवान सु उवनं) क्षायिक भावमें रमण करते हुए तारण तरण जहाजके समान श्री अरहन्त परमात्मा प्रकाशित हैं (विवान रमन जिनु जिनय जयं जिनु) वे अरहन्त स्वात्मरमी हैं, वीतराग हैं, कर्मविजयी वीर जिनेन्द्र हैं (षिपि उवन समय सिधि रमनं) क्षायिक भावको प्रकाश करते हुए अरहन्तका आत्मा सिद्ध भावमें रमण कर रहा है ॥ ९ ॥

(पियं पियं पिय उवन पियं जिनु) परमप्रिय प्रकाशमें शोभायमान जिनेन्द्र हैं (अन्मोय पियं जिन उवने) श्री जिनेन्द्र ज्ञानमें रमण करके [illegible] कर रहे हैं ([illegible]तं रमन समय जिनु) स्वात्मानन्दमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रंजायमान होते हुए रमणशील श्री जिनेन्द्र परमात्मा हैं (उव उवन नंद सिधि गमनं) वे ही परमानन्दको प्रकाश करते हुए सिद्धगतिमें चले जाते हैं ॥ १० ॥

(मुक्ति मुक्ति जिन उवनु मुक्ति जिनु) कर्मोंसे छूटकर वे जिनेन्द्र अपनेमें मुक्तिके भावको प्रगट कर चुके हैं (मुक्ति समय जिनु उवनं) जिनेन्द्रकी आत्मामें मुक्तिका प्रकाश है (मुक्ति सुभावे उवन मुक्ति जिनु) आत्माके मुक्तिमई स्वभावमें रमण करनेसे ही जिनेन्द्रमें मुक्ति प्रगट हुई है (उव उवन मुक्ति सिधि गमनं) वे मुक्तिको प्रकाश करके शुद्ध हो सिद्ध गतिमें चले जाते हैं ॥ ११ ॥

(स्रेनि स्रेनि उव कलन स्रेनि जिनु) क्षपकश्रेणीके गुणस्थानोंपर चढ़ करके ही तेरहवें गुणस्थानमें जिन अरहन्त केवली होते हैं (उव कलन समय सम उवनं) आत्माके अनुभवसे ही वीतरागतापूर्ण समभाव प्रगट होता है (उव उवन स्रेनि जिन स्रेनि कलन जिनु) तेरहवें चौदहवें गुणस्थानके ऊपर बिराजित श्री जिनेन्द्र शुद्ध भावका अनुभव करते हैं (कलि स्रेनि समय सिधि गमनं) अरहन्तका आत्मा इन दोनों श्रेणियोंको अनुभव करके फिर सर्व कर्म रहित हो, सिद्धगतिको गमन कर जाता है ॥ १२ ॥

(तारन तरन सु तरन कमल जिनु) श्री जिनेन्द्र कमल समान प्रफुल्लित तारणतरण हैं (कमल समय सुइ उवनं) कमल समान आत्माका विकाश हुआ है उवन कमल सुइ कर्न समय जिनु) कमल समान विकाश होना ही वह साधन है जिससे आत्मा जिनेन्द्र होता है (सुइ उवन समय सिधि गमनं) जब आत्मा पूर्णरूपसे प्रगट होजाता है तब वह सिद्धगतिको गमन कर जाता है ॥ १३ ॥

भावार्थ—इन गाथाओंमें भी श्री तारणस्वामीने सिद्धगति पानेका उपाय झलकाया है। मुख्य उपाय सम्यग्दर्शन है। आत्माकी दृढ़ प्रतीति होना ही सम्यक्त है। बन्धनसे छूटनेकी रुचि होना ही सम्यक्त है। इंद्रिय विषयोंकी चाहको आत्मघातक समझना ही सम्यक्त है। अतीन्द्रिय आनन्दका प्रेम पैदा होना ही सम्यक्त है। मैं कर्मजनित भावोंका धारी निश्चयसे नहीं हूँ। निश्चयसे मैं सिद्धसम शुद्ध हूँ, यह प्रतीति होना ही सम्यक्त है। संसार कर्मका नाटक है, रमण करनेयोग्य नहीं है। मैं स्वभावसे इस नाटकका कर्ता व भोक्ता नहीं, यह रुचि होना ही सम्यक्त है। मेरेमें निश्चयसे न आस्रव है न बन्ध है न संवर है न निर्जरा है न मोक्ष है, मैं सात तत्वोंके विकल्पोंसे रहित निर्विकल्प एक अभेद स्वानुभवगम्य कोई अपूर्व पदार्थ हूँ, यह रुचि होना ही सम्यक्त है। इस निश्चय सम्यग्दर्शनका भाव निक्षेपरूप वर्तन तब ही होता है जब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मा आत्मानुभवमें रमण करता है तब ही ध्यानकी अग्नि प्रगट होती है, जिससे कर्मोंकी स्थिति कटती है। पाप कर्मोंका अग्रभाग जलता है। इसी स्वात्मानुभवकी सीढ़ीपर चढ़कर जब यह निर्ग्रंथ होजाता है, क्षायिक सम्यग्दृष्टि होता है, तद्भव मोक्षगामी होता है, तब साधु सातवें अप्रमत्त विरत गुणस्थानमें सातिशय अप्रमत्त हो अधःकरणके चढ़ते हुए शुद्ध परिणामोंको प्राप्त करता है। फिर क्षपकश्रेणीपर जाकर अपूर्वकरण व अनिवृत्तिकरणके शुद्ध परिणामोंसे यह सर्व मोहका क्षयकर देता है, केवल सूक्ष्म लोभ रह जाता है तब दशवां गुणस्थान होता है। वहां सूक्ष्मसांपराय संयम द्वारा इस लोभकी वर्गणाओंको भी क्षय करके बारहवें क्षीणमोह गुणस्थानमें चला जाता है। प्रथम शुक्लध्यानसे जिसमें श्रुतके शब्दोंका आलम्बन था मोहनीय कर्मका क्षय होता है। क्षीणमोहमें दूसरे शुक्लध्यानके प्रभावसे ज्ञानावरण, दर्शनावरण व अन्तराय कर्मोंका भी क्षय होजाता है तब सयोगकेवली गुणस्थानमें जाकर अरहन्त परमात्मा जिनेन्द्र होजाता है। वे परम वीतरागी प्रभु समभावमें लीन रहते हैं। निर्मोही प्रभुके स्वयं ही शेष कर्म गल जाते हैं और वे सिद्धगतिको पालेते हैं। स्वात्मरमण ही साधक है, स्वात्मरमणरूप सिद्ध भाव ही साध्य है। स्वात्मरमणमें अतीन्द्रिय आनन्दका स्वाद सदा आता है। जो सच्चे सुखके अभिलाषी हैं उनको स्वात्मरमण करना योग्य है। नियमसारमें कहा है—

उत्तम अट्ठं आदा तम्हि ठिदा हणदि मुणिवरा कम्मं। तम्हादु झाणमेव हि उत्तमअठस्स पडिकमणं ॥ ९२ ॥
झाणणिलीणो साहू परिचागं कुणइ सव्वदोसाणं। तम्हादु झाणमेव हि सव्वदिचारस्स पडिकमणं ॥ ९३ ॥

भावार्थ—सर्व पदार्थोंमें श्रेष्ठ पदार्थ आत्मा है, उसी आत्मामें ठहरकर साधुगण कर्मोंका क्षय करते हैं, इसलिये ध्यान ही उत्तम प्रतिक्रमण है। ध्यानमें लीन साधु सर्व दोषोंका त्याग कर देते हैं। इसलिये ध्यान ही सर्व दोषोंको उड़ानेके लिये प्रतिक्रमण है। पिछले कर्मोंका अभाव करना सो ही प्रतिक्रमण है।

(१०९) विन्यान रमन फूलना गाथा २२४८ से २२७५ तक।

जिन जिनपति जिनय जिनय पौ, जिन जिनियो कम्म नंतु।
जिन जिनियो कमल सब्द पिओ, जिन कर्न समय सुव नंतु ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनु असह सहनु सुइ साहिओ, जिन दिप्ति दिस्टि सुइ नं तु ।
गहन विलय जिन गहन पौ, जिन उवन कम्मु विलगंतु ॥ २ ॥
जिन ढलन विलय जिन ढलन पौ, जिन उवन उवन विलसंतु ।
जिन उवन समय सुइ रमन पौ, जिन समय सिद्धि संपत्तु ॥ ३ ॥
जिनु अर्क अर्क सुइ अर्क पौ, जिन अर्क विंद सम उत्तु ।
जिन उवन सहावे समय मौ, जिन समय दिप्ति दरसंतु ॥ ४ ॥
जिन अलष लषिउ सुइ अगम पौ, जिन अगम अगम दरसंतु ।
जिन इस्ट उवन सुइ उवन पौ, जिन उवन इष्टि इष्टंतु ॥ ५ ॥
जिन समय समय सुइ उवन पौ, जिन दिस्टि इस्टि रस उत्तु ।
जिन समय सब्द सुइ सब्द मौ, जिन सुवन सिद्धि संपत्तु ॥ ६ ॥
जिन उवन सब्द सुइ सुवन मौ, जिन सुवन उवन इष्टंतु ।
जिन उवन उवन सम साहियउ, हिय दिप्ति सिद्धि संपत्तु ॥ ७ ॥
जिन उवन सुवन हिय साहियउ, जिन जय जय जै सुइ उत्तु ।
जिन उवन उवन रस रमियो, जिन रमन सिद्धि संपत्तु ॥ ८ ॥
जिन उवन समय सुइ उवन पौ, जिन उवन उवन अवयास ।
अवयास समय जिन नंत पौ, जिन समय नंत सिधि रत्तु ॥ ९ ॥
अवयास समय सुइ नंत पौ, नंत चरन चरनंतु ।
चरन चरिय जिन चरन मौ, जिन चरन गर्भ जिन नंतु ॥ १० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन ओतु गर्भ जिन समय मौ, जिन कलन कलिय जिन नंतु ।
जिन जिनय गर्भ जिन ऊवने, जिन सुवन समय सिधि रत्तु ॥ ११ ॥
जिन कलन कलिय ध्रुव कलन पौ, जिन उवन नंत जिन उत्तु ।
जिन उवन उवन ध्रुव नंत जिनु, ध्रुव समय सिद्धि संपत्तु ॥ १२ ॥
दिप्ति दिष्टि सुइ समय मौ, सब्द प्रिये सुइ नंतु ।
अवयास नंत सुइ अवहिनिहि, मन रिज विपुल अरुह सुवनंतु ॥ १३ ॥
उवन उवन सुइ सुवन पौ, सुवन उवन इष्टंतु ।
उवन इष्टि सुइ कमल पौ, उव कमल सिद्धि संपत्तु ॥ १४ ॥
उव कमल कलन सुइ कमल पौ, कमल कर्न सम उत्तु ।
कमल सुवन जिन जिनय पौ, जिन समय सिद्धि संपत्तु ॥ १५ ॥
जिन कलन चरन चर चरन पौ, जिन रमन सुवन जिन उत्तु ।
तत्काल रमन सुइ सुवन पौ, सुव उवन सिद्धि संपत्तु ॥ १६ ॥
सुइ सुयं सुयं जिन जिनय मौ, जिन उवन सुवन सुइ उत्तु ।
जिन उवन सुवन सुइ दर्सिउ, जिन दर्स समय सिधि रत्तु ॥ १७ ॥
जिन कलन उवन उव उवन पौ, जिन चरन चरिय चारित्तु ।
जिन समय समय सम दीय जिनु, जिन समिदि सिद्धि संपत्तु ॥ १८ ॥
जिन उवन चरन चर उवन पौ, जिन चरन कलन कलयंतु ।
जिन कलन अगम गम अगम पौ, जिन अगम सिद्धि संपत्तु ॥ १९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन अगम अलष लष अलष मौ, जिन अलष उवन अलषंतु ।
जिन रमन रयन सुइ रमन पौ, जिन रमन कलन जिन उत्तु ॥ २० ॥
जिन भेय भेय मै उवन मौ, मै न्यान रमन मय उत्तु ।
भेय भेय मै सहकार मै, सह उवन सिद्धि संपत्तु ॥ २१ ॥
रुह सहन सहन जिन साह मौ, जिन साह समय सम उत्तु ।
जिन समय साह अवयास मौ, अवयास जिनय जिन उत्तु ॥ २२ ॥
अवयास अर्क जिन अर्क मौ, जिन अर्क विंद सम उत्तु ।
जिन समय उवन कलि कमल मौ, कलि कमल सिद्धि संपत्तु ॥ २३ ॥
कलि कलिय कलन सु कमल पौ, जिन कमल उवन उव उत्तु ।
जिन कमल उवन सम समय मौ, सम उवन सिद्धि संपत्तु ॥ २४ ॥
जिन कमल कमल सम कमल मौ, जिन कमल उवन कलयंतु ।
जिन कमल समय सुइ साहिओ, जिन उवन कमल सिधिरत्तु ॥ २५ ॥
जिन तारन तरन सह समय मौ, जिन उवन कमल सम उत्तु ।
जिन कलन कमल उव उवन मौ, जिन समय सिद्धि संपत्तु ॥ २६ ॥
जिन जिनय जिनय जिन सेनि मौ, जिन कलन समय सम उत्तु ।
विन्यान वीर्थ चौ उवन मौ, जिन विनय पयं पय उत्तु ॥ २७ ॥
जिन तारन तरन सु तरन पौ, जिन कमल कलन कलयंतु ।
जिन उवन कमल सुइ सुवन मौ, जिन समय सिद्धि संपत्तु ॥ २८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्वय सहित अर्थ—(जिन जिनपति जिनय जिनय पौ) जो जीतनेवाला है, जिसने जिनपदको पाया है वही जिन है (जिन जिनियो कम्म नंतु) श्री जिनने अनन्त कर्मोंको जीत लिया है, क्षय कर दिया है (जिन जिनियो कमल सब्द पिओ) इसीलिये जीतनेवालेको जिन व प्रफुल्लित कमल ऐसे प्रिय शब्दोंका व्यवहार किया जाता है (जिन कर्म समय सुव नंतु) श्री जिन प्रभु ही अनन्त गुणोंमें परिणमन करनेवाले आत्माके स्वभावके साधक हैं ॥ १ ॥

(जिन असह सहन सुइ साहिओ) श्री जिनने उस साध्यको साधन कर लिया है जिसका साधना बहुत ही कठिन था (जिन दिप्ति दिष्टि सुइ नंतु) श्री जिनमें अनन्तज्ञान व अनन्तदर्शन प्रगट है (गहन विलय जिन गहन पौ) श्री जिनने कठिनसे कठिन कर्मोंको अर्थात घातीय कर्मोंको क्षय करके परमात्माके दुर्लभ पदको प्राप्त किया है (जिन उवन कम्मु विलयंतु) कर्मोंके क्षयसे ही जिनपद प्रगट होता है ॥ २ ॥

(जिन ढलन विलय जिन ढलन पौ) श्री जिनने रागादि पर परिणतिको क्षय करके वीतराग परिणतिको पाया है (जिन उवन उवन विलसंतु) श्री जिन ज्ञानके प्रकाशमें मगन हैं (जिन उवन समय सुइ रमन पौ) श्री जिनका प्रकाशमान आत्मा है वही उनके रमणका स्थान है। वे अपनेसे ही आपमें रमण करते हैं (जिन समय सिद्धि संपत्तु) यही वीतराग आत्मा सिद्धगतिको पाता है ॥ ३ ॥

(जिन अर्क अर्क सुइ अर्क पौ) श्री जिनेन्द्र ही सूर्यके समान तेजस्वी ज्ञानपदमें शोभायमान हैं (जिन अर्क विंद सम उत्तु) श्री जिनको ही समभावका अनुभव करनेवाला सूर्य कहा गया है (जिन उवन सहावे समय मौ) श्री जिन ही अपने प्रगट स्वभावमें रहते हुए आत्मामई है। आप आप स्वरूप है (जिन समय दिप्ति दरसंतु) श्री वीतराग अरहन्त परमात्मा ही आत्म-ज्ञानका प्रकाश करते हैं—भव्यजीवोंको आत्म-ज्ञानका उपदेश देते हैं ॥ ४ ॥

(जिन अलष लषिउ सुइ अगम पौ) श्री जिनने अतीन्द्रिय आत्माका अनुभव किया है। वे ही मनसे अगोचर पदमें बिराजमान हैं (जिन अगम अगम दरसंतु) श्री जिन ही स्वयं अतीन्द्रिय आत्माका स्वरूप दर्शाते हैं (जिन इष्ट उवन सुइ उवन पौ) श्री जिनने इष्टपदको प्रगट किया है वे ही प्रकाशमई पदमें हैं (जिन उवन इष्टि इष्टंतु) श्री जिन ही इस इष्ट प्रकाशरूप पदमें मगन हैं ॥ ५ ॥

(जिन समय समय सुइ उवन पौ) श्री जिन ... हैं वही प्रकाशरूप पद है (जिन

Ganesh Vani Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिष्टि इष्टि रस उत्तु) श्री जिनने अनुभव करनेयोग्य हितकारी आत्मीक रसके स्वादका उपदेश किया है, वे ही परमात्मा स्वरूप हैं उनमें कोई परभाव नहीं है (जिन सुवन सिद्धि संपत्तु) श्री जिनेन्द्र आपमें ही परिणमन करते हुए सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ ६ ॥

(जिन उवन सव्द सुइ सुवन मौ) श्री जिनका प्रगट शब्द बताता है कि वे आपमें ही मगन हैं स्वाधीन हैं (जिन सुवन उवन इष्टंतु) श्री जिनको परिणमनशील ज्ञानका उदय इष्ट है। अर्थात् उनमें अनन्तज्ञान अपने स्वभावमें परिणमन कर रहा है (जिन उवन उवन सुइ साहियउ) श्री जिनने आत्मानुभवके प्रकाशसे ही अनंत ज्ञानके प्रकाशका साधन किया है (हिय दिप्ति सिद्धि संपत्तु) जब हितकारी आत्मीक प्रकाश होजाता है, सर्व कर्म क्षय होते हैं तब आत्मा सिद्धगतिको पाता है ॥ ७ ॥

(जिन उवन सुवन हिय साहियउ) श्री जिनने आत्मानुभवके द्वारा ही आत्महितका साधन किया है (जिन जय जय जय सुर उत्तु) इसीलिये श्री जिनकी जय हो जय हो जय हो ऐसा कहते हैं (जिन उवन उवन रस रमियो) श्री जिन आत्मानुभवसे प्रगट आनन्दरसमें रमण करते हैं (जिन रमन सिद्धि संपत्तु) श्री जिनेन्द्रने आत्मरमणतासे सिद्धगतिको पाया है ॥ ८ ॥

(जिन उवन समय सुइ उवन पौ) श्री जिनेन्द्रने प्रगट आत्माको पाया है वही प्रकाशरूप पद है (जिन उवन उवन अवयासु) श्री जिनेन्द्रमें आकाशके समान अनन्त ज्ञानका उदय है (अवयास समय जिन नंत पौ) ज्ञानमई आत्मा ही अनन्त शक्तिधारी जिन पद है (जिन समय नंत सिधि रतु) श्री जिनेन्द्र अनन्त गुणधारी आत्मा हैं और सिद्धभावमें रत हैं तल्लीन हैं ॥ ९ ॥

(अवयास समय सुइ नंत पौ) ज्ञानमई आत्मा ही अनन्त अविनाशी पदका धारी है (नंत चरन चरनंतु) जो अनन्तकाल तक अपने स्वरूपके आचरणमें आचरते रहते हैं-स्वरूपमें ही मगन रहते हैं (चरन चरिय जिन चरन मौ) वे स्वरूपमें आचरण करते हुए वीतराग चारित्र पदमें विराजित हैं (जिन चरन गर्भ जिन नंतु) वीतराग चारित्रके गर्भमें ही अनन्त जिनपद रहता है। अर्थात् जहां वीतराग चारित्र है वहीं अविनाशी जिनपद है ॥ १० ॥

(जिन ओतु गर्भ जिन समय मौ) श्री जिनके भीतर गर्भमें वीतराग परमात्मा स्वरूप है। अर्थात् अरहन्तमें सिद्धपद गर्भरूप है जो शीघ्र ही प्रगट होगा (जिन कलन कलियं जिन नंतु) श्री जिनेन्द्र ही अनन्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीतराग जिन स्वभावका अनुभव कर रहे हैं (जिन जिनय गर्भ जिन उववने) श्री जिनेन्द्रके गर्भमें ही जिनपद था-सो ही प्रगट हुआ है। आत्मा ही घातीय कर्मके दूर होनेसे अरहन्त रूप प्रगट होजाता है (जिन सुवन समय सिधि रत्तु) श्री जिनेन्द्र आत्मामें परिणमन करते हुए सिद्धभावमें लवलीन हैं ॥ ११ ॥

(जिन कलन कलिय धुव कलन पौ) श्री जिनेन्द्र स्वात्मानुभवको करते करते अविनाशी स्वानुभवरूप पदको पालेते हैं (जिन उवन नंत जिन रत्त) श्री जिनके प्रगट पदको ही अनन्त अविनाशी वीतराग परमात्मा कहा गया है (जिन उवन उवन धुव नंत जिनु) श्री जिनेन्द्र ही प्रकाश करते हुए अविनाशी अनन्त वीतराग जिन होजाते हैं (धुव समय सिद्धि संपत्तु) यही ध्रुव अविनाशी आत्मा सिद्धगतिको पालेता है ॥ १२ ॥

(दिप्ति दिष्टि सुइ समय मौ) ज्ञान व दर्शन गुण आत्मा स्वरूप ही हैं, आत्माके स्वभाव हैं (सब्द प्रिये सुइ नंतु) उन्हींमें अनन्तका प्रिय शब्द लगा है। अर्थात् वे ज्ञान दर्शन अनन्त अविनाशी हैं (अवयास नंत सुइ अवहिनिहि) उस अनन्त केवलज्ञानमें ही अवधिज्ञानकी रिद्धि गर्भित है। जो बात अवधिज्ञानी जानते हैं उसे केवलज्ञानी जानते ही हैं (मन रिज विपुल अरुह सुव नंतु) उस अनन्तज्ञानमें रिजुमति विपुलमति मनःपर्यय ज्ञान भी गर्भित है। जो बात मनःपर्ययज्ञानी जानते हैं केवलज्ञानी सब जानते हैं॥ १३ ॥

(उवन उवन सुइ सुवन पौ) उदय होते होते वह स्वरूपमें परिणमनमई पद प्रगट होता है (सुवन उवन इष्टंतु) स्वात्मपरिणमनमें ज्ञानका प्रकाश ही इष्ट है। श्री जिनेन्द्र शुद्ध आत्मज्ञानमें ही परिणमन करते हैं (उवन इष्टि सुइ कमलं पौ) जहां आत्म प्रकाश इष्ट होता है वहीं कमल समान प्रफुल्लित पद प्रगट होता है (उव कमल सिद्धि संपत्तु) कमल समान आत्मा ही सिद्धगतिको पाता है ॥ १४ ॥

(उव कमल कलन सुइ कमल पौ) कमल समान शुद्ध आत्माका अनुभव करना ही कमल समान प्रफुल्लित पद है (कमल कर्न सम उत्तु) इसी कमलको समभावका साधक कहा गया है (कमल सुवन जिन जिनय पौ) कमल समान आत्मामें रमनेसे कर्मविजयी जिनपद प्रगट होता है (जिन समय सिद्धि संपत्तु) वीतराग आत्मा ही सिद्धगतिको पाता है ॥ १५ ॥

(जिन कलन चरन चर चरन पौ) जिन स्वभावके अनुभवमें आचरण करनेसे ही स्वचारित्रपद होता है (जिन रमन सुवन जिन उत्तु) जिन स्वभावमें रमण करना ही जिन भावमें परिणमन है ऐसा जिनेंन्द्रने कहा है (तत्काल रमन सुइ सुवन पौ) जिस काल आत्मामें रमण होता है तब ही आत्मामें परिणमन पद प्रगट होता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सुत्र उवन सिद्धि संपत्तु) अपने प्रकाशमें आपका परिणमन होनेसे ही सिद्धगतिका लाभ होता है ॥ १६ ॥

(सुइ सुयं जिन जिनय मौ) वे जिनेन्द्र स्वयं ही अपने पुरुषार्थसे जिन हुए हैं (जिन उवन सुवन सुइ उत्तु) उन्हींको ही वीतरागमय प्रकाश तथा वीतराग परिणमन कहते हैं (जिन उवन सुवन सुइ दर्सिउ) जिनेन्द्रने उसी ज्ञानके प्रकाशको या ज्ञानके परिणमनको दिखलाया है (जिन दर्स समय सिधि रत्तु) श्री जिनेन्द्र आत्माका दर्शन करते हुए सिद्धभावमें लीन हैं ॥ १७ ॥

(जिन कलन उवन उव उवन पौ) श्री जिनेन्द्रने आत्मानुभवके प्रकाशसे ही अपने प्रकाशरूप पदको पाया है (जिन चरन चरिय चारित्तु) वीतराग चारित्रमें आचरण करना ही चारित्र है (जिन समय समय समि दीय जितु) जैसे स्वरूपमें आचरण करना महाव्रत है वैसे ही वीतराग आत्माका आत्मामें भलेप्रकार चलना समिति है (जिन समिदि सिद्धि संपत्तु) इसी वीतराग समितिसे आत्मा सिद्धपदको पाता है ॥ १८ ॥

(जिन उवन चरन चर उवन पौ) वीतरागता सहित ज्ञानके आचारमें चलनेसे ही परमात्म पदका प्रकाश होता है (जिन चरन कलन कलयंतु) श्री जिनेन्द्र वीतराग चारित्रकी रमणताका अनुभव कर रहे हैं (जिन कलन अगम गम अगम पौ) वीतरागताके साथ अतीन्द्रिय आत्माका अनुभव करनेसे परमात्मपद प्रगट होता है जो स्वानुभवगम्य है, यद्यपि इन्द्रिय व मनसे गम्य नहीं है (जिन अगम सिद्धि संपत्तु) अतीन्द्रिय वीतराग आत्मा ही सिद्धगतिको पाता है ॥ १९ ॥

(जिन अगम अलष लष अलष मौ) श्री जिनेन्द्रने अगम्य व अलक्ष्य मन वचन कायसे अगोचर आत्मतत्वको अतीन्द्रिय स्वभावरूप होकर अनुभव किया है (जिन अलष उवन अलषंतु) श्री जिनेन्द्रमें अतीन्द्रिय स्वभावका प्रकाश हुआ है। वह प्रकाश इन्द्रिय व मनगोचर नहीं है (जिन रमन रयन सुइ रमन पौ) श्री जिनेन्द्रने सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र स्वरूप रत्नत्रयमें रमण करके स्वात्मरमण पदको पाया है (जिन रमन कमल जिन उत्तु) श्री जिनेन्द्रको ही प्रफुल्लित कमल समान आत्मामें रमण करनेवाला जिन कहा गया है ॥ २० ॥

(जिन मेय मेय मै उवन मौ) श्री जिनेन्द्र ज्ञानमई प्रकाश हैं। ज्ञानके द्वारा ही जाननेयोग्य व अनुभव करनेयोग्य हैं (मै न्यान रमन मय उत्तु) उनको शुद्ध ज्ञानमें रमण करनेवाला ज्ञानी कहा गया है (मेय मेय मै सहकार मै) आत्मज्ञानका अनुभव करनेसे ही उसकी सहायतासे केवलज्ञान होता है (सह उवन सिद्धि संपत्तु) ज्ञानके प्रकाशके साथ ही आत्मा सिद्धगतिको पाता है ॥ २१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सह सहन सहन जिन साह मौ) वीतराग भावको अनुभव करते ही करते जिनपदका साधन होता है (जिन साह समय सम उत्तु) जिनपदके साध लेनेसे आत्माको समभाव वाला कहा जाता है (जिन समय साह अवयास मौ) वीतरागी आत्मज्ञानमई स्वभावको साध लेना है (अवयास जिनय जिन उत्तु) श्री जिनेन्द्रको ज्ञानमई जिन कहा गया है ॥ २२ ॥

(अवयास अर्क जिन अर्क मौ) ज्ञानमई सूर्य होनेसे श्री जिनेन्द्र सूयरूप हैं (जिन अर्क विंद सम उत्तु) श्री जिनेन्द्रको समभाव सहित ज्ञानमई सूर्यका अनुभव करनेवाला कहा गया है (जिन समय उवन कलि कमल मौ) श्री जिनेन्द्रका आत्मा प्रकाशरूप होकर अपने ही प्रफुल्लित कमल समान आत्माका अनुभव करता है (कलि कमल सिद्धि संपत्तु) आत्मारूपी कमलका अनुभव करता हुआ आत्मा सिद्धगतिको पाता है ॥ २३ ॥

(कलि कलिय कलन सु कमल पौ) अपनी ज्ञानरूपी कलाका अनुभव करनेवाला यह आत्मा कमल समान है (जिन कमल उवन उव उत्तु) श्री जिनेन्द्रको ही उदयरूप विकसित कमल कहा गया है (जिन कमल उवन सम समय मौ) श्री जिनेन्द्रका आत्मा प्रकाशरूप कमल समान समभावका धारी है (सम उवन सिद्धि संपत्तु) समभावके प्रकाशसे ही आत्मा सिद्धगतिको पाता है ॥ २४ ॥

(जिन कमल कमल सम कमल मौ) वीतराग भाव धारी कमल समान आत्मा कमल रूप रहता हुआ समभावका धारी पूर्ण कमल समान होजाता है (जिन कमल उवन कलयंतु) श्री जिनेन्द्र प्रफुल्लित कमलका ही अनुभव कर रहे हैं (जिन कमल समय सुइ साहिओ) श्री जिनेन्द्रने कमल समान शुद्ध आत्माका साधन किया है (जिन उवन कमल सिधि रत्तु) श्री जिनेन्द्र कमल समान विकसित हो सिद्धभावमें लीन हैं ॥ २५ ॥

(जिन तारन तरन सह समय मौ) श्री जिनेन्द्र तारण तरण हैं साथमें परमात्मा रूप हैं (जिन उवन कमल सम उत्तु) श्री जिनेन्द्रको प्रफुल्लित कमल समान स्वभावधारी कहा गया है (जिन कलन कमल उव उवन मौ) श्री जिनेन्द्र प्रकाशमान सूर्यके समान आत्माका अनुभव कर रहे हैं (जिन समय सिद्धि संपत्तु) ऐसा वीतराग आत्मा सिद्धगतिको पाता है ॥ २६ ॥

(जिन जिनय जिनय जिन स्नेनि मौ) कर्मविजयी वीतराग भगवान तेरहवें सयोगकेवली जिन गुणस्थानमें हैं (जिन कलन समय सम उत्तु) उनही जिनेन्द्रको समभावधारी व आत्मानुभवी कहा गया है (विन्यान वीर्य पौ उवन मौ) भेद ज्ञान द्वारा प्राप्त आत्मानुभवकी शक्तिसे उन्होंने [illegible]
[illegible] कर लिया है (जिन [illegible]) [illegible] कहा गया है ॥ २७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर लिया है (जिन विनय पर्य पय उत्तु) उन्हींको ही श्री वीतरागमई मार्दव पदधारी कहा गया है ॥ २७ ॥

(जिन तारन तरन सु तरन पौ) श्री जिनेन्द्र तारण तरण उत्तम जहाज हैं (जिन कमल कलन कलयंतु) वे जिनेन्द्र प्रफुल्लित कमलके समान शुद्धात्माका अनुभव करते हैं (जिन उवन कमल सुइ सुवन पौ) वे जिनेन्द्र प्रकाशमान कमल हैं व स्वय परिणमनशील हैं (जिन समय सिद्धि संपत्तु) वे ही जिनेन्द्र परमात्मा सिद्धगतिको पाते हैं ॥ २८ ॥

भावार्थ—इस विज्ञान रमन फूलनामें यही झलकाया है कि भेदविज्ञान द्वारा प्राप्त आत्मानुभवके द्वारा ही ज्ञानमें रमण करनेसे श्री अरहन्त परमात्माका पद प्रगट होता है। अरहन्त पदका साधन कहीं आत्मासे बाहर नहीं है। जब आत्मा अपने यथार्थ द्रव्य स्वरूपका श्रद्धान, ज्ञान, व चारित्र करता है तब ही शुद्धात्मानुभव पगट होता है, इसीसे गुणस्थान द्वारा चढ़कर अरहन्त होजाता है। अरहन्त प्रभुकी महिमा इस छन्दमें भलेप्रकार गाई गई है। वे परम समभावमें-वीतरागभावमें लीन रहते हैं। अपने ही ज्ञानस्वभावमें रमण करते हैं। उनमें अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्तसुख व अनन्तवीर्य प्रगट हैं। वे चार घातीय कर्मोंको नाश कर चुके हैं। उनके केवलज्ञानमें अवधि व मनःपर्ययका विषय भी गर्भित है। वे सूर्यके समान वीतरागता सहित स्वपर प्रकाशक हैं। कमलके समान बड़े आनन्दसे स्वभावमें प्रफुल्लित हैं। सिद्धभाव उनके भीतर झलक रहा है। वे सिद्ध स्वभावका अनुभव कर रहे हैं। उनमें रागादि विभाव नहीं है। परमात्मपदका पाना बहुत दुर्लभ है, उसको उन्होंने पालिया है। अरहन्तपद यद्यपि शरीराश्रित प्रत्यक्ष है, इंद्रियगोचर है, परन्तु आत्माश्रित पद तो अतीन्द्रिय है। जो कोई अतीन्द्रिय ज्ञान दृष्टिसे देखता है उसीको यह पद दिखलाई पड़ता है। अरहन्तका आत्मा द्रव्य है। अतएव सदा स्वभावमें परिणमनशील है, उत्पाद व्यय ध्रौव्यरूप है। अरहन्त परमात्मा स्वात्मानन्द रसका निरन्तर पान करते हैं। साक्षात् यथाख्यात चारित्रका वहां प्रकाश है। संसारी भव्य आत्माके गर्भमें अरहन्तपद रहता है, अरहन्त पदके गर्भमें सिद्धपद रहता है। आत्माकी शुद्ध पर्यायको ही अरहन्त व सिद्धपद कहते हैं। सिद्धपद ध्रुव है, कभी उसका अन्त व नाश नहीं होगा। अरहन्त स्नातक जातिके मुनि हैं। उनका स्वरूपमें रमण करना ही महाव्रत है। समिति पालन है, व गुप्ति धारण है। अरहन्त शरीर सहित होनेसे वाणी द्वारा आत्मज्ञानका उपदेश देते हैं। उनके उपदेशसे अनेक भव्यजीव भवसागरसे तर जाते हैं। इसलिये श्री अरहन्त परमात्मा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तारणतरण जहाजके समान हैं। तात्पर्य यह है कि मुमुक्षु जीवको भेदविज्ञान प्राप्त करके स्वात्मानुभवमें रमण करना चाहिये। यही साधन हितकारी है।

भेदविज्ञानका प्रकार नियमसारमें बताया है—

ममत्तिं परिवज्जामि णिम्ममत्तिमुवट्ठिदो। आलंवणं च मे आदा अवसेसं (च) वोसरे ॥ ९९ ॥
आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य। आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोगे ॥ १०० ॥
एको मे सासदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो। सेसा मे बहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा ॥ १०२ ॥

भावार्थ—मैं ममता त्यागता हूँ, निर्ममत्व भावमें तिष्ठता हूँ, मैं सर्व परका आलम्बन त्यागकर एक अपने आत्माका आलम्बन लेता हूँ। मेरे ज्ञानमें भी आत्मा है। मेरे दर्शन व चारित्रमें भी आत्मा है, मेरे प्रत्याख्यान या त्यागमें भी आत्मा है, मेरे संवर व योगमें भी आत्मा है, मेरा आत्मा एक है, अविनाशी है, ज्ञानदर्शन लक्षणका धारी है। मुझसे बाहर जितने रागादिभाव हैं या अवस्थाएँ हैं वे सब कर्मके संयोगसे हैं, मेरा स्वभाव नहीं है।

(११०) दोहा बसंत गाथा नं० २२७६ से २३०० तक।

उव उवन उवन दसंतु, दसंतु रे, उव उवन सहावे समय मौ।
उव उवन समय विलसंतु, विलसंतु रे, उव उवन सहावे मुक्ति पौ ॥ १ ॥
दिप्ति दिष्टि जिन उत्तु, जिन उत्तु रे, दिस्टि दिप्ति सुइ रमन पौ।
सब्द प्रिये जिन उत्तु, जिन उत्तु रे, प्रिये सब्द सुइ मुक्ति पौ ॥ २ ॥
भै उवन सुइ उत्तु, सुइ उत्तु रे, सुइ भै य सुयं जिन उवन मौ।
अढल ढलनु जिन दिट्ठु, जिन दिट्ठु रे, जिन जिनय ढलन सुइ मुक्ति पौ ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवयास ढलन सुइ नंतु, सुइ नंतु रे, मैं उवन उवन जिन समय मौ।
सम समय समय सम उत्तु, सम उत्तु रे, उव उवन समय सुइ मुक्ति पौ ॥ ४ ॥
इष्ट उवन इष्टंतु, इष्टंतु रे, उवन इष्ट इष्ट ममल पौ।
जं दिप्ति दिष्टि इष्टंतु, इष्टंतु रे, उवन इष्टि उव मुक्ति पौ ॥ ५ ॥
इष्ट उवन दसतु, दसंतु रे, इष्ट उवन सुइ समय मौ।
उवन इष्टि दसतु, दसंतु रे, उव उवन दिष्टि सुइ मुक्ति पौ ॥ ६ ॥
इष्ट उवन रमनन्तु, रमनन्तु रे, उवन इष्टि इष्ट समय मौ।
उव उवन रमन इष्टंतु, इष्टंतु रे, उव इष्ट रमन जिन मुक्ति पौ ॥ ७ ॥
तत्काल रमन जिन उत्तु, जिन उत्तु रे, दिप्ति दिष्टि जिन रमन मौ।
जं तारागन अवयास, अवयास रे, दिष्टि दिष्टि जिन रमन मौ ॥ ८ ॥
नन्त दिप्ति सुइ उत्तु, सुइ उत्तु रे, एय दिप्ति नन्त छत्र मौ।
तं इष्ट दिप्ति सुइ नन्तु, सुइ नंतु रे, उव उवन दिप्ति नंत छत्र मौ ॥ ९ ॥
जं तारा चन्द्र दिपि नतु, दिपि नंतु रे, रतिहि सहावे दिप्ति मौ।
जं सुर दिप्ति दिपियंतु, दिपियंतु रे, तारा चन्द्र नन्त छन्न सुई ॥ १० ॥
दिप्ति नन्त दिपिनन्तु, दिपिनन्तु रे, रमन दिप्ति नन्त छन्न मौ।
तं इष्ट दिप्ति दिपि नंतु दिपि नंतु रे, दिप्ति चिंतामनि उवन मौ ॥ ११ ॥
जं नंत दिप्ति फल उत्तु, फल उत्तु रे, उवन रमन दिपि अमिय फल।
जं नंत पयह संसार, संसार रे, उवन पयह जिन मुक्ति पौ ॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्काल रमन जिन उत्तु, जिन उत्तु रे, जं सुर दिप्ति रति विलय मौ।
कमल नन्द पिउ उत्त पिउ उत्तु रे, दिस्टि दिप्ति सुइ रमन मौ ॥ १३ ॥
सहकार रमन सुइ उत्तु सुइ उत्तु रे, दिप्ति सहावे दिष्टि जिन।
उवन दिप्ति दिपियन्तु, दिपियंतु रे, समय दिष्टि रमि मुक्ति पौ ॥ १४ ॥
दिप्ति दिपिय सुइ नन्तु सुइ नन्तु रे, एय दिप्ति सुइ सम रमन।
तं समय दिप्ति सुइ नन्तु, सुइ नन्तु रे, उवन दिष्टि सम मुक्ति पौ ॥ १५ ॥
सब्द नन्त सुइ उत्तु सुइ उत्तु रे, अवयास सब्द सुइ नन्त मौ।
तं समय सब्द पिउ नन्तु पिउ नंतु रे, उव उवन सब्द पिउ मुक्ति पौ ॥ १६ ॥
साह रमन सुइ उत्तु, सुइ उत्तु रे, आद सहावे उवन उववनु।
तं असम समय सहनंतु, सहनंतु रे, उवन साह सम मुक्ति पौ ॥ १७ ॥
जं अर्क नंत सुइ उत्तु, सुइ उत्तु रे, उवन अर्क विन विलय पौ।
तं असम समय सुइ नंतु, सुइ नंतु रे, उवन उवन विन सरनि पौ ॥ १८ ॥
तं उवन अर्क अवयास, अवयास रे, अर्क समय सुइ विलसियो।
तं उवन कमल अवयास, अवयास रे, कर्न समय सम मुक्ति पौ ॥ १९ ॥
जं अर्क समय सम उत्तु, सम उत्तु रे, कलन कलिय सुइ उवन पौ।
जं चरन चरन सुइ उत्तु, सुइ उत्तु रे, उवन कलन समय मुक्ति पौ ॥ २० ॥
जं चरन कलन कलयंतु, कलयंतु रे, कलन कमल उव उवन पौ।
उव उवन कर्न साहंत, साहंत रे, उवन कमल सम मुक्ति पौ ॥ २१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ३२ ॥ जं तारन तरन उवन्न, उवन्न रे, उवन समय सम विउ रमन ।
तं उवन कमल कलयंतु, कलयंतु रे, उवन दिप्ति दिष्टि मुक्ति पौ ॥ २२ ॥
जं उवन स्रेनि जिन स्रेनि, जिन स्रेनि रे, कमल सहावे कलन मौ ।
जं तारन तरन जिनुत्तु, जिनुत्तु रे, तार कमल सुइ मुक्ति पौ ॥ २३ ॥
जं उवन जिनय जिन उत्तु, जिन उत्तु रे, समय साह सम नंत मौ ।
भय विलय भेउ सिय मच्चु, सिय मच्चु रे, उवन समय मति मुक्ति पौ ॥ २४ ॥
उव उवन साहि सम उत्तु, सम उत्तु रे, सम समय साहि जिन जिनय पौ ।
उव उवन समय सम उत्तु, सम उत्तु रे, सिद्ध समय सम मुक्ति पौ ॥ २५ ॥

अन्वयसहित अर्थ—(उव उवन उवन दसँतु, दसँतु रे) सम्यग्ज्ञानका प्रकाश दिख रहा है (उव उवन सहावे समय मौ) जब आत्मा अपने प्रकाश स्वभावमें होता है तब आत्मामई निज रूपमें होता है (उव उवन समय विलसंतु, विलसंतु रे) जब प्रकाशमई आत्माके स्वरूपका आनन्द लेना है (उव उवन सहावे मुक्ति पौ) इसी प्रकाशमय स्वभावमें रहकर यह आत्मा मुक्तिपदको पालेता है ॥ १ ॥

(दिप्ति दिष्टि जिन उत्तु, जिन उत्तु रे) श्री जिनेन्द्रने ज्ञान व दर्शनको आत्माका स्वभाव कहा है (दिष्टि दिप्ति सुइ रमन पौ) यह ज्ञान दर्शन ही आत्माके रमण करनेका स्थानक है (सब्द प्रिये जिन उत्तु, जिन उत्तु रे) श्री जिनेन्द्रने जिस प्रिय शब्दको कहा है (प्रिये सब्द सुइ मुक्ति पौ) वह प्रिय शब्द मुक्तिपद है । अर्थात् मुक्तिकी प्राप्तिका प्रेम रखना उचित है ॥ २ ॥

(भै उवन सुइ उत्तु, सुइ उत्तु रे) ज्ञानका प्रकाश वही कहा गया है (सुइ मैय सुयं जिन उवन मौ) जहां जिनेन्द्र ज्ञानमई प्रकाशमें स्वयं रहते हैं (अढल ढलन जिन दिट्ठु, जिन दिट्ठु रे) श्री जिनेन्द्रने उस आत्म-पदार्थको देखा है जो द्रव्यापेक्षा ध्रुव है, पर्याय अपेक्षा परिणमनशील है (जिन जिनय ढलन सुइ मुक्ति पौ) जब जिनेन्द्र वीतराग भावमें परिणमन करते हैं सो ही मुक्तिका पद है ॥ ३ ॥

(अवयासं ढलन सुइ नंतु, सुइ नंतु रे) जिनेन्द्र जिस ज्ञानमें परिणमन करते हैं वह अनन्त है (मै उवन ॥ ३३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवन जिन समय मौ) **आत्मज्ञान बढ़ते हुए आत्माको जिनेन्द्र परमात्मा कर देता है** (सम समय समय सम उत्तु, सम उत्तु रे) **जिनेन्द्र पदमें समभावी आत्माको समभाव रूप ही कहा गया है** (उव उवन समय सुइ मुक्ति पौ) **जब आत्माका प्रकाश होजाता है तब ही मुक्तिपद होता है ॥ ४ ॥**

(इष्ट उवन इष्टंतु, इष्टंतु रे) **आत्माका प्रकाश ही हितकारी है इसीको जिनेन्द्र स्वीकार करते हैं** (उवन इष्ट इष्ट ममल पौ) **आत्माका हितकारी प्रकाशका होना सो ही हितरूप निर्मल पद है** (जं दिप्ति दिष्टि इष्टंतु, इष्टंतु रे) **जहां ज्ञान दर्शनका उत्तम प्रकाश होरहा है** (उवन इष्टि उव मुक्ति पौ) **हितकारी आत्माका प्रकाश ही मुक्तिपद है ॥ ५ ॥**

(इष्ट उवन दर्सतु, दर्सतु रे) **सम्यग्ज्ञानका प्रकाश दिख रहा है** (इष्ट उवन सुइ समय मौ) **यही ज्ञान हितरूप है यही आत्माका स्वभाव है** (उवन इष्टि दर्सतु, दर्सतु रे) **ज्ञानमें ज्ञानका प्रेम दिख रहा है** (उव उवन दिष्टि सुइ मुक्ति मौ) **यही ज्ञानका अनुभव है सो ही मोक्ष स्वरूप है ॥ ६ ॥**

(इष्ट उवन रमनन्तु, रमनन्तु रे) **हितकारी ज्ञानके प्रकाशमें श्री जिनेन्द्र रमण कर रहे हैं** (उवन इष्टि इष्ट समय मौ) **यही ज्ञानका प्रेम या ज्ञानका अनुभव हितकारी आत्माका स्वरूप है** (उव उवन रमन इष्टंतु, इष्टंतु रे) **वे अरहन्त इसी ज्ञानमें रमणको ही स्वीकार कर रहे हैं** (उव इष्ट रमन जिन मुक्ति पौ) **इसी हितकारी ज्ञान स्वभावमें रमनेसे जिनेन्द्रको मुक्तिपदका लाभ होता है । ७ ॥**

(तत्काल रमन जिन उत्तु, जिन उत्तु रे) **सदाकाल जो ज्ञानमें रमण करते हैं उन्हींको जिन कहा गया है** (दिप्ति दिष्टि जिन रमन मौ) **श्री जिनेन्द्र ज्ञान व दर्शनमें रमण स्वरूप ही हैं** (जं तारागण अवयास, अवयास रे) **जैसे तारागण आकाशमें रमण करते हैं** (दिप्ति दिप्ति जिन रमन मौ) **उसी तरह श्री जिनेन्द्र ज्ञान दर्शनमें रमण स्वरूप हैं ॥ ८ ॥**

(नन्त दिप्ति सुइ उत्तु सुइ उत्तु रे) **अनन्त ज्ञान उसे ही कहा गया है** (रोय दिप्ति नन्त छन्न मौ) **अनादि बन्धमें आए हुए कर्मोंके उदयसे व क्षयोपशमसे जो अनन्त अशुद्ध प्रकाश होरहा था उसको केवलज्ञानने नाश कर दिया है** (तं इष्ट दिप्ति तं नन्तु तं नन्तु रे) **वह हितकारी ज्ञान अनन्त है** (उव उवन दिप्ति नंत छत्र मौ) **वह अनन्त ज्ञानका प्रकाश क्षायिक है, ज्ञानावरण कर्मके क्षयसे हुआ है ॥ ९ ॥**

(जं तारा चन्द दिपि नंत, दिपि नंत रे रवि हि सदाये दिमि मौ) **जैसे तारोंकी व चन्द्रमाकी अनन्त चमक रात्रिके**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समयमें चमकती है (जं सुर दिप्ति दिपियंतु दिपियंतु रे तारा चन्द्र नन्त छत्र सुइ) परन्तु जब सूर्यका प्रकाश दिनमें होता है तब तारोंका व चन्द्रमाका प्रकाश छिप जाता है—इसी तरह जबतक ज्ञानावरणका उदय या सर्वथा क्षय न था तबतक तारोंकी व चन्द्रमाकी चमकके समान मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्ययज्ञानका प्रकाश था, केवल ज्ञानरूपी सूर्यका प्रकाश होते ही वह सब विला गया ॥ १० ॥

(दिप्तिनन्तु दिपिनन्तु दिपिनन्तु रे) अनन्त ज्ञानमें अनन्त प्रकाश रहता है (रमन दिप्ति नन्त छत्र मौ) रात्रिमें होनेवाला अनन्त प्रकाशके समान क्षयोपशम या अल्पज्ञान सर्व क्षय होगया है (तं इष्ट दिप्ति दिपि नंतु दिपि नंतु रे) यह हितकारी ज्ञान अनन्त शक्तिके साथ प्रगट है (दिप्ति चिंतामनि उवन मौ) यह ज्ञानका प्रकाश चिंतामणि रत्नके समान आत्माका परम उपकारी है व आनन्दका दाता है ॥ ११ ॥

(जं नंत दिप्ति फल उत्तुरे फल उत्तु रे) अनंतज्ञानका फल ऐसा कहा गया है (उवन रमन दिपि अमिय फल) कि यह आत्मा ज्ञानके प्रकाशमें रमण करता हुआ आनन्दामृतके फलको भोगता है (जं नंत पयह संसार संसार रे) तथा अनंत पर्यायोंमें भ्रमणरूप संसार नष्ट होजाता है (उवन पयह जिन मुक्ति पौ) तथा श्री जिनेन्द्रको मुक्तिका पद प्राप्त होजाता है ॥ १२ ॥

(तत्काल रमन जिन उत्तु जिन उत्तु रे) अनंत ज्ञानके प्रकाशके होते ही उसी ज्ञानमें जिनेन्द्र रमण करते हैं ऐसा कहा गया है (जं सुर दिप्ति रति विलय पौ) जैसे सूर्यके प्रकाशसे रात्रिका विलय होता है वैसे सर्व अज्ञान मिट जाता है (कमल नन्द पिउ उत्तुरे पिउ उत्तु रे) तथा प्रफुल्लित कमल समान आत्मामें परम प्रिय आनंद प्राप्त होजाता है ऐसा कहा गया है (दिस्टि दिप्ति सुइ रमन मौ) वे जिनेन्द्र अनंत ज्ञान व अनंत दर्शनमें रमण करते हैं ॥ १३ ॥

(सहकार रमन सुइ उत्तु सुइ उत्तु रे) ज्ञानकी सहायतासे आत्मामें रमणता होती है ऐसा कहा गया है (दिप्ति सहावे दिष्टि जिन) श्री जिनेन्द्र स्वभावसे ही दर्शन व ज्ञान स्वरूप हैं (उवन दिप्ति दिपियन्तु दिपियंतु रे) उनके भीतर केवलज्ञानका प्रकाश चमक रहा है (समय दिष्टि रमि मुक्ति पौ) वे आत्माका अनुभव करते हुए व उसीमें रमण करते हुए मुक्तिके पदको पालेते हैं ॥ १४ ॥

(दिप्ति दिपिय सुइ नन्तु सुइ नन्तु रे) श्री अरहंतमें अनंतज्ञानका प्रकाश होरहा है (एय दिप्ति सुइ सम रमन) इस ज्ञानके प्रकाशमें समताभावमें रमण होता है (तं समय दिप्ति सुइ नन्तु सुइ नन्तु रे) यह आत्माका ज्ञान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंत शक्तिधारी है (उवन दिप्ति सम मुक्ति पौ) जब समदृष्टि झलक जाती है, पूर्ण वीतरागता हो जाती है तब आत्मा मुक्तिपदको पालेता है ॥ १५ ॥

(सब्द नंत सुइ उत्तु, सुइ उत्तु रे) अनन्त शब्द इसीलिये ज्ञानके साथ कहा गया है कि वह अनन्त शक्तिधारी है (अवयास सब्द सुइ नंत मौ) आकाश शब्द भी ज्ञानको इसीलिये कहा गया है कि वह अनन्त है (तं समय सब्द पिउ नंतु, पिउ नंतु रे) आत्माको समय शब्द इसलिये कहा गया है कि वह अनन्त शक्तिका धारी है (उव उवन सब्द पिउ मुक्ति पौ) तथा उवन शब्द यह बताता है कि आत्माका पूर्ण प्रकाश मुक्तिपदमें होजाता है ॥ १६ ॥

(साह रमन सुइ उत्तु, सुइ उत्तु रे) साध्य जो मोक्ष है उसमें रमण उसीको कहा गया है (आद सहावे उवन उववन्तु) जो आत्मीक स्वभावमें पूर्णरूपसे उदयरूप है तं असम समय सह नन्तु, सह नन्तु रे) आत्माके समान कोई पदार्थ नहीं है वह स्वपर ज्ञाता है व अनन्त वीर्यका धारी है (उवन साह सम मुक्ति पौ) जब साधनेयोग्य पूर्ण समभाव झलक जाता है तब आत्माको मुक्तिपद प्राप्त होजाता है ॥ १७ ॥

(जं अर्क नंतु सुइ उत्तु, सुइ उत्तु रे) उसी परमात्माको अनन्त बलधारी सूर्य कहा गया है (उवन अर्क विन विलय पौ) सूर्य समान केवलज्ञानधारी आत्माके प्रकाशके होते हुए नाशवंत सर्व सांसारिक क्षयोपशम ज्ञान सहित पद नहीं रहते हैं (तं असम समय सुइ नंतु सुइ नंतु रे) यह अनंत गुणधारी अनुपम आत्मा है (उवन उवन विन सरनि पौ) सो अपने पूर्णज्ञानके प्रकाश होते हुए संसारीक पदोंसे छूट जाता है ॥ १८ ॥

(तं उवन अर्क अवयास अवयास रे) वह प्रकाशमान सूर्य सम आत्मा आकाशके समान अनंत ज्ञानधारी है (अर्क समय सुइ विलसियो) वह ज्ञानमई सूर्य समान आत्मा आनन्द मगन रहता है (तं उवन कमल अवयास अवयास रे) वह प्रकाशमान कमलके समान शुद्ध ज्ञानधारी है (कर्न समय सम मुक्ति पौ वही आत्मा समभावके साधनसे मुक्तिपदको पहुंच जाता है ॥ १९ ॥

(जं अर्क समय सम उत्तु सम उत्तु रे) उस सूर्य समान आत्माको समभाव धारी वीतराग कहा गया है (कलन कलन सुइ उवन पौ) वह स्वानुभवमें मगन सदा प्रकाशित है (जं चरन चरन सुइ उत्तु सुइ उत्तु रे) वही यथाख्यात चारित्रमें आचरण कर रहा है (उवन कलन सुइ मुक्ति पौ) वही आत्मा स्वानुभवके प्रकाशको धारता हुआ मुक्तिपदको पालेता है ॥ २० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जं चरन कलन कलयंतु कलयंतु रे) **जिस निश्चय चारित्रमें लीन हो वह स्वानुभव करता है** (कलन कमल उव उवन पौ) **उसीमें तल्लीन कमलके समान वह प्रकाशित है** (उव उवन कर्न साहन्तु, साहन्तु रे) **उसका प्रकाश ही साधन है जिसको वह साध रहा है** (सुवन कमल सम मुक्ति पौ) **वही आत्मा कमल समान आत्मीक समता सहित शुद्ध भावमें परिणमन करता हुआ मुक्तिपदको पालेता है ॥ २१ ॥**

(जं तारन तरन उवन्न, उवन्न रे) **वे अरहन्त तारण तरण जहाज समान प्रगट हैं** (उवन समय सम पिउ रमन) **वह प्रकाशमान आत्मा प्रिय समभावमें रमण करता है** (तं उवन कमल कलयंतु, कलयंतु रे) **वह प्रकाशमान कमल सम आत्मामें मगन है** (उवन दिप्ति दिष्टि मुक्ति पौ) **वही अनन्तज्ञान व अनन्तदर्शनके प्रकाश सहित मुक्तिपदको पालेता है ॥ २२ ॥**

(जं उवन स्रेनि जिन स्रेनि, जिन स्रेनि रे) **क्षपकश्रेणीपर चढ़कर वह तेरहवें सयोग केवली जिनकी श्रेणी या गुणस्थानपर आरूढ़ हुए हैं** (कमल सहावे कलन मौ) **वह अपने कमलके समान विकसित स्वभावमें मगन हैं** (जं तारन तरन जिनुतु, जिनुतु रे) **वे ही तारणतरण हैं ऐसा जिनेन्द्रने कहा है** (तार कमल सुइ मुक्ति पौ) **वह कमल समान आत्मा भवसागरसे अपनेको तारकर मुक्तिपदको पहुँच जाता है ॥ २३ ॥**

(जं उवन जिनय जिन उत्तु, जिन उत्तु रे) **वे ही प्रकाशमान जिनेन्द्र हैं ऐसा जिन भगवानने कहा है** (समय साह सम नंत मौ) **उस आत्माने अनन्त समभावको साध लिया है** (भय विलय भेउ सिय भव्व, सिय भव्व रे) **उनका सर्व भय विला गया है, वे ही शुक्ल लेश्याधारी या शुद्धोपयोगी भव्यके भेदमें हैं** (उवन समय मति मुक्ति पौ) **वे ही आत्मीक ज्ञानको प्रकाश करके मुक्तिपदको पालेते हैं ॥ २४ ॥**

(उव उवन साहि सम उत्तु; सम उत्तु रे) **वे ही प्रकाशमान आत्मा समभावके साधक कहे गये हैं** (सम समय साह जिन जिनय पौ) **उस आत्माने समभावके द्वारा ही श्री जिनेन्द्र पदको साध लिया है** (उव उवन समय सम उत्तु सम उत्तु रे) **उस प्रकाशमान आत्माको ही समभाव धारी कहा गया है** (सिद्ध समय सम मुक्ति पौ) **वही सर्व कर्म क्षय करके सिद्ध आत्मा होकर समभाव सहित मुक्तिपदको पहुँच जाता है ॥ २५ ॥**

भावार्थ—**इस वसंत दोहावलीमें ज्ञानका महात्म्य वर्णन किया है। ज्ञान आत्माका स्वभाव है। जबतक मिथ्यात्व रहता है तबतक यह कुज्ञान है। सम्यग्दर्शनके होनेपर व आत्माकी यथार्थ रुचि होनेपर वह ज्ञान सम्यग्ज्ञान कहाता है। यह सम्यग्ज्ञान आत्मीक शुद्ध जो मोक्षका पद है उसका यथार्थ ज्ञाता**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होजाता है तब ज्ञानकी परिणति संसारसे विरक्त होकर मोक्षकी तरफ प्रेमालु होजाती है। परिणामोंमें वीतरागता व समभावका भी प्रारम्भ होजाता है। ऐसा आत्मा आत्मानुभवका अभ्यास करके गुणस्थानोंकी श्रेणीपर चढ़ता है तब ज्ञान व चारित्र निर्मल होता जाता है, कषायभाव घटता जाता है, समभाव बढ़ता जाता है, उस समय ज्ञानका प्रकाश मति श्रुत अवधि या मनःपर्ययरूप चार ज्ञानरूप या तीन ज्ञानरूप या मति श्रुत दो ज्ञानरूप रहता है, तब उस ज्ञानमई क्षयोपशम ज्ञानकी शोभा तारा व चन्द्रमाकी ज्योतिके समान है। जब साधन करते २ केवलज्ञानका प्रकाश होजाता है तब सूर्यके समान ज्ञान प्रगट होजाता है तब क्षयोपशम ज्ञान जो तारा व चन्द्र समान था छिप जाता है। केवलज्ञानी अरहन्त भगवान अनन्तदर्शन व अनन्तज्ञान व यथाख्यात चारित्रमें लीन होकर समभाव सहित स्वात्मानुभवमें मगन रहते हुए परमानन्दका स्वाद लेते हैं। उनका सर्व संसार-भ्रमण मिट जाता है। वे क्षुधा, तृषा, रोग, शोक, जन्म, मरण, क्रोधादि अठारह दोषोंसे मुक्त होजाते हैं वे ही परमात्मा जिनेन्द्र हैं। वे आयु पर्यंत धर्मोपदेश देकर भव्यजीवोंको भवसागरसे पार करनेका मार्ग बताते हैं। वे परको तारकर आप तरते हैं इसलिये उनको तारण तरण कहा गया है। सम्यग्ज्ञानके प्रकाशको रखते हुए उनको सूर्य व कमलकी उपमा दी है। वे ही सर्व कर्म क्षय करके मुक्तिपदमें पहुंच जाते हैं।

सम्यग्ज्ञानीको आत्मा कैसा दिखता है, नियमसारमें कहा है—

णिद्दंडो णिद्वंद्वो णिम्ममो णिक्कलो णिरालंबो। णीरागो णिद्दोसो णिम्मूढो णिब्भयो अप्पा ॥ ४३ ॥
णिग्गंथो णीरागो णिस्सल्लो सयलदोसणिम्मुक्को। णिक्कामो णिक्कोहो णिम्माणो णिम्मदो अप्पा ॥ ४४ ॥

भावार्थ—यह आत्मा मन, वचन, काय दंडसे रहित है, सर्व औपाधिक भाव रहित निराकुल है, परकी ममता रहित है, सर्व शरीरोंसे रहित है, परके आलम्बनसे रहित स्वाधीन है, राग रहित है, दोष रहित है, मूढ़ता रहित है, भय रहित है, परिग्रह रहित है, वीतराग है, माया मिथ्या निदान शल्य रहित है, सर्व दोष रहित है, कामभाव रहित है, न क्रोधी है, न मानी है, न किसी प्रकारके मदका धारी है, यह तो एक शुद्ध पदार्थ है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१११) जिनबत्तीसी गाथा नं० २३०१ से २३३२ तक।

॥ ३९ ॥

जिन जिनपति जिनय सु जिनय पौ, सुनि न्यानी हो।
जिन समय कम्मु विलयंतु, पर्म जिन स्वामी हो ॥ १ ॥
जिन दिप्ति दिस्टि सोइ नंत पौ, सुनि न्यानी हो।
जिन दिस्टि दिप्ति प्रवेसु नंत, जिन स्वामी हो ॥ २ ॥
जिन दिस्टि दिप्ति सुइ नन्त मौ, सुनि न्यानी हो।
जिन दिप्ति दिष्टि जिन नाहु सुयं, जिन स्वामी हो ॥ ३ ॥
जिन मेय उवन सुइ नन्त मौ, सुनि न्यानी हो।
भै उवन जिनय जिन नाह, अलष जिन स्वामी हो ॥ ४ ॥
अन्मोय मेय जिन जिनय मौ, सुनि न्यानी हो।
जिन मेय उवन अन्मोय समय, जिन स्वामी हो ॥ ५ ॥
जिन दिप्ति सुयं सुइ दिप्ति मौ, सुनि न्यानी हो।
अन्मोह दिष्टि सिधि रत्तु, नन्त जिन स्वामी हो ॥ ६ ॥
जिन नन्त दिप्ति दिष्टि दस मौ, सुनि न्यानी हो।
अन्मोय दिष्टि सिधि रत्तु, उवन जिन स्वामी हो ॥ ७ ॥
जिन सब्द प्रिये जिन समय मौ, सुनि न्यानी हो।
जिन सब्द समय सिधि रत्तु, नन्द जिन स्वामी हो ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन सब्द प्रिये सम समय मौ, सुनि न्यानी हो ।
पिय उवन सिद्धि संपत्तु, निलय जिन स्वामी हो ॥ ९ ॥

जिन दिष्टि दिप्ति दिपि दिस्टि मौ, सुनि न्यानी हो ।
मैं उवन सिद्धि संपत्तु, अगम जिन स्वामी हो ॥ १० ॥

जिन सब्द प्रिये पिय सब्द मौ, सुनि न्यानी हो ।
अन्मोय सब्द सिधि रत्तु, सहज जिन स्वामी हो ॥ ११ ॥

जिन मेय उवन उव उवन मौ, सुनि न्यानी हो ।
जिन उवन साहि सिधि रत्तु, सुवन जिन स्वामी हो ॥ १२ ॥

अवयास उवन जिन उवन मौ, सुनि न्यानी हो ।
अवयास उवन सुइ नंतु, नंतु जिन स्वामी हो ॥ १३ ॥

जिन उवन साहि सम साहि मौ, सुनि न्यानी हो ।
जिन समय उवन जिन नंतु, उवन जिन स्वामी हो ॥ १४ ॥

अवयास उवन सुइ कलन मौ, सुनि न्यानी हो ।
जिन कलन कमल ध्रुव नंतु, कलन जिन स्वामी हो ॥ १५ ॥

जिन कलन चरन चर चरन मौ, सुनि न्यानी हो ।
जिन कमल सब्द ध्रुव नंतु, कमल जिन स्वामी हो ॥ १६ ॥

जिन कमल कलन ध्रुव नंतु जिनु, सुनि न्यानी हो ।
उव उवन सुवन सुइ साहि, साहि जिन स्वामी हो ॥ १७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुवन साहि जिन रमन मौ, सुनि न्यानी हो।
सुइ रमन उवन जिन नंतु, रमन जिन स्वामी हो ॥ १८ ॥
जिन रयन रमन उव उवन मौ, सुनि न्यानी हो।
जिन रमन रयन जिन नाह रयन जिन स्वामी हो ॥ १९ ॥
सुयं सु लिषियो अलष मौ, सुनि न्यानी हो।
जिन अलष अगोचर नंतु, चरन जिन स्वामी हो ॥ २० ॥
जिन इस्ट उवन पौ उवन दिपि सुनि न्यानी हो।
जिन उवन इस्टि दर्सतु, दर्स जिन स्वामी हो ॥ २१ ॥
पथ कमल कलन जिन नंत मौ, सुनि न्यानी हो।
जिन कदल कमल कलयंतु, कमल जिन न्यानी हो ॥ २२ ॥
जिन कदल कमल पुलि पुलिन मौ, सुनि न्यानी हो।
जिन पुलिन कमल कलयंतु, कर्न जिन स्वामी हो ॥ २३ ॥
जिन पुलिन मगन जिन नंत मौ, जिन स्वामी हो।
जिन मगन कमल कलयंतु, हर्ष जिन स्वामी हो ॥ २४ ॥
जिन गगन गमन सुइ कलस मौ, सुनि न्यानी हो।
जिन कमल कलस कलयंतु, गहिर जिन स्वामी हो ॥ २५ ॥
जिन कलस कमल उव उवन मौ, सुनि न्यानी हो।
ससि कमल कलन कलयंतु, कलन जिन स्वामी हो ॥ २६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ससि कमल कलन जिन साहि मौ, सुनि न्यानी हो ।
ससि साहि जिनय जिन उत्तु, उत्तु जिन स्वामी हो ॥ २७ ॥

जिन साहि सुयं सुइ उत्तु मौ, सुनि न्यानी हो ।
जिन भवन विंद सम साहि विंद, जिन स्वामी हो ॥ २८ ॥

जिन भवन कमल कलि कमल मौ, सुनि न्यानी हो ।
जिन कमल कमल सिधि रत्तु, दिप्ति जिन स्वामी हो ॥ २९ ॥

जिन अर्क अर्क जिन अर्क मौ, सुनि न्यानी हो ।
जिन अर्क विंद सम संतु, संतु जिन स्वामी हो ॥ ३० ॥

जिन तारन तरन सुअर्क जिनु, सुनि न्यानी हो ।
जिन समय सिद्धि सिव पंथ, पंथ जिन स्वामी हो ॥ ३१ ॥

जिन तारन तरन विवान मौ, सुनि न्यानी हो ।
जिन समय सिद्धि संपत्तु, सिद्ध जिन स्वामी हो ॥ ३२ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जिन जिनयति जिनय सु जिनय पौ सुनि न्यानी हो) हे ज्ञानी सुनो कर्मोंको व रागादिको जीतनेवाले जिनेन्द्रका जिनपद है (जिन समय कम्मु विलयंतु पर्म जिन स्वामी हो) श्री जिनेन्द्रने आत्मासे घातीय कर्मोंका क्षय कर दिया है. वे ही परमात्मा जिन हैं ॥ १ ॥

(जिन दिप्ति दिष्टि सोई नंत पौ) श्री जिनेन्द्रने अनन्त ज्ञान व अनन्त दर्शनको प्राप्त कर लिया है (जिन दिष्टि दिप्ति प्रवेस नंत जिन०) श्री जिनेन्द्रने अपनेको अनन्तदर्शन व अनन्त ज्ञानमें प्रवेश कर दिया है, वे अनन्त गुणधारी जिन हैं ॥ २ ॥

(जिन दिष्टि दिप्ति सुइ नंत मौ) श्री जिनेन्द्र अनन्त दर्शन तथा ज्ञानस्वरूप ही हैं (जिन दिप्ति दिष्टि जिननाह सयं जिन०) श्री जिनेन्द्र ज्ञान दर्शन तथा वीतराग भावके स्वामी हैं स्वयं ही जिन हुए हैं ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिननाहु सुयं जिन०) श्री जिनेन्द्र ज्ञान दर्शन तथा वीतराग भावके स्वामी हैं स्वयं ही जिन हुए हे ॥ ३ ॥

(जिन मेय उवन सुइ नंत मौ) श्री जिनेन्द्रके ज्ञानमें अनन्त ज्ञेय जाननेयोग्य पदार्थ झलक रहे हैं मै उवन अलष जिन नाह अलष जिन०) ज्ञान प्रकाशको रखते हुए भी वे इंद्रिय व मनसे अगोचर अतीन्द्रिय जिनेन्द्र हैं, इसीलिये उनको अलष या अलक्ष्य कहते हैं ॥ ४ ॥

(अन्मोय मेय जिन जिनय मौ०) वे जिनेन्द्र आनन्दका अनुभव कर रहे हैं, वे वीतराग स्वरूप हैं (जिन मेय उवन अन्मोय समय जिन०) वे जिनेन्द्र ज्ञानमई व आनन्दमई आत्मा जिन हैं ॥ ५ ॥

(जिन दिप्ति सुयं सुइ दिप्ति मौ०) श्री जिनेन्द्र स्वयं ज्ञान स्वरूप हैं, वे ज्ञानमई हैं (अन्मोय दिष्टि सिधि रतु नंत जिन०) वे आनन्दमई आत्माका दर्शन करते हुए सिद्धभावमें लीन हैं, अनन्त शक्तिधारी जिन हैं ॥६॥

(जिन नंत दिप्ति दिष्टि दर्स मौ०) श्री जिनेन्द्रने अनन्तज्ञान व अनन्तदर्शनको देख लिया है (अन्मोय दिप्ति सिधि रतु उवन जिन....) वे जिनेन्द्र आनन्दका अनुभव करते हुए सिद्ध स्वभावमें लीन हैं ॥ ७ ॥

(जिन सब्द प्रिये जिन समय मौ) जिन शब्द ही बड़ा प्यारा है। वे जिनेन्द्र शुद्धात्मा स्वरूप ही हैं (जिन सब्द समय सिधि रतु नंद जिन) श्री जिनेन्द्र समय शब्दके अनुसार परमात्मा हैं व सिद्धभावमें लीन होकर आनन्दमई जिन हैं ॥ ८ ॥

(जिन सब्द प्रिये सम समय मौ०) जिन शब्द भी बड़ा प्यारा है वे। रागद्वेषको जीतकर वीतराग भावमें लीन आत्मा हैं (पिय उवन सिधि संपत्तु मिलन जिन) वे जिनेन्द्र हितकारी प्रकाशमें झलकते हुए सिद्धिको प्राप्त करते हैं, वे सिद्ध स्थानको जीत चुके हैं ॥ ९ ॥

(जिन दिष्टि दिप्ति दिपि दिष्टि मौ०) जिनेन्द्र दर्शन ज्ञानको रखते हुए दर्शन ज्ञान स्वरूप हैं (मै उवन सिधि संपत्तु अगम जिन०) वे केवलज्ञानको प्रकाश करते हुए सिद्धगतिको पाते हैं, उनका स्वरूप अगम है, अनुभवगोचर है ॥ १० ॥

(जिन सब्द प्रिये पिय सब्द मौ०) जिन शब्द बहुत प्यारा है, वे इस प्रिय शब्दके अनुसार कर्मविजयी जिन हैं (अन्मोय सब्द सिधि रतु सहज जिन०) अन्मोय शब्दके अनुसार वे परमानन्दके लिये सिद्ध स्वभावमें लीन हैं, वे सहज स्वभावी जिन हैं ॥ ११ ॥

(जिन मेय उवन उव उवन मौ०) श्री जिनेन्द्र ज्ञानको प्रकाश करके निरन्तर प्रकाश स्वरूप रहते हैं ॥ ४३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

(जिन उवन साहि सिधि रतु सुवन जिन०) श्री जिनेन्द्रने इसी ज्ञानके प्रकाशके साधनसे सिद्ध स्वभावमें लीनता प्राप्त की है, वे जिनेन्द्र परिणमनशील हैं ॥ १२ ॥

(अवयास उवन जिन उवन मौ) अनन्तज्ञानको प्रगट करनेसे ही वे जिनेन्द्र प्रकाश स्वरूप है (अवयास उवन सुइ नंतु जिन) यह ज्ञानका प्रकाश अनन्त है, वे जिन अनन्त शक्तिधारी हैं ॥ १३ ॥

(जिन उवन साहि सम साहि मौ) श्री जिनेन्द्रने अपने प्रकाशसे समभावको साधनकर लिया है, इसलिये वे समभाव स्वरूप हैं (जिन समय उवन जिन नंतु उवन जिन०) वीतरागी परमात्मामें अनन्त प्रकाश है, वे जिन अनन्त प्रकाश स्वरूप हैं ॥ १४ ॥

(अवयास उवन सुइ कलन मौ०) ज्ञानके प्रकाशको रखते हुए वे उस ज्ञानका अनुभव करते हैं (जिन कलन कमल धुव नंतु कलन जिन०) वे जिनेन्द्र प्रफुल्लित कमल समान अनन्त शक्तिधारी अविनाशी आत्माका अनुभव करते हुए अनुभव स्वरूप हैं ॥ १५ ॥

(जिन कलन चरन चर चरन पौ०) वे जिनेन्द्र स्वरूपमें आचरण करते हुए यथाख्यात चारित्र स्वरूप हैं (जिन कमल सब्द धुव नंतु कमल जिन०) जिन कमल शब्दके अनुसार वे वीतरागी विकसित आत्मा अनन्तकाल तक ध्रुव रहते हैं इसलिये वे स्वानुभव रूप कलन जिन हैं ॥ १६ ॥

(जिन कमल कलन धुव नंतु जिन०) श्री जिनेन्द्र आत्मारूपी कमलका स्वाद लेते हुए ध्रुव रूपसे अनन्त काल रहते हैं (उन उवन सुवन सुइ साहि साहि जिन०) वे स्वप्रकाशमें परिणमन करते हुए स्वयं साधनरूप होकर जिनपदको साध लेते हैं ॥ १७ ॥

(सुवन साहि जिन रमन मौ०) स्वपरिणमनके द्वारा ही जिनराजने स्वात्मरमणको साध लिया है (सुइ रमन उवन जिन नंतु रमन जिन०) स्वात्मरमणके प्रकाशसे ही श्री जिनेन्द्र अनन्तकाल आपमें रमण करते रहते हैं ॥ १८ ॥

(जिन रयन रमन उव उवन मौ०) श्री जिनेन्द्र रत्नत्रयमें रमण करते हुए प्रकाश स्वरूप हैं (जिन रयन रमन उव उवन मौ) श्री जिनेन्द्र रत्नत्रयमें रमण करते हुए प्रकाश स्वरूप है (जिन रमन रमन जिननाह रमन जिन०) वे जिनेन्द्र रत्नत्रयमें रमण करते हुए रत्नोंके स्वामी जिननाथ कहलाते हैं ॥ १९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

प्रकार अनुभव कर रहे हैं (जिन अलष अगोचर नंतु चरन जिन०) इसी लिये श्री जिनेन्द्रको अलष अगोचर कहते हैं, वे अनन्त काल तक स्वरूपमें आचरण करते रहते हैं ॥ २० ॥

(जिन इस्ट उवन पौ उवन दिपि०) श्री जिनेन्द्रने परम इष्ट प्रकाशको पालिया है, वे प्रकाशनीय पदमें चमक रहे हैं (जिन उवन दृष्टि दर्संतु दर्स जिन०) श्री जिनेन्द्रने आत्मज्ञानकी दृष्टिको दर्शाया है वे स्वयं आत्माका दर्शन कर रहे हैं ॥ २१ ॥

(पय कमल कलन जिन नंत मौ०) श्री जिनेन्द्र आत्मारूपी कमलमें मगन रहते हुए अनन्तकाल तक बने रहते हैं (जिन कदल कमल कलयंतु कमल जिन०) श्री जिनेन्द्र कमलके पत्तेमें मग्न भ्रमरके समान आत्मारूपी कमलका स्वाद लेते हुए कमल जिन कहलाते हैं ॥ २२ ॥

(जिन कदल कमल पुलि पुलिन मौ०) श्री जिनेन्द्र कमलोंके पत्तोंसे पूर्ण जल स्थलके समान अपने आत्मीक गुणोंसे पूर्ण हैं (जिन पुलिन कमल कलयंतु कर्न जिन०) वे जिनेन्द्र स्वात्मानंद रूपी जलके भीतर आत्मारूपी कमलका अनुभव करते हुए मोक्ष साधक जिन हैं ॥ २३ ॥

(जिन पुलिन गगन जिन नंत मौ०) वे जिनेन्द्र अनन्त ज्ञानके द्वीप हैं व अनंत गुण सहित हैं (जिन गगन कमल कलनन्तु हर्ष जिन) वे जिनेन्द्र ज्ञानमई कमलका अनुभव करते हुए आनंदित होरहे हैं ॥ २४ ॥

(जिन गगन गमन सुइ कलस मौ०) वे जिनेन्द्र ज्ञानमें परिणमन करते हुए पूर्ण ज्ञानके कलश स्वरूप हैं (जिन कमल कलस कलयन्तु गहिर जिन०) वे जिनेन्द्र अपने ही आत्माके घटमें विराजित आत्मारूपी कमलका अनुभव करते हुए परम गम्भीर हैं ॥ २५ ॥

(जिन कलस कमल उव उवन मौ०) श्री जिनेन्द्र अपने ही आत्मीक कलशके भीतर आप ही कमल स्वरूप होकर प्रकाश स्वरूप हैं (ससि कमल कलन कलयंतु कलन जिन०) वे चन्द्रमा समान शुद्ध आत्मारूपी कमलका स्वाद लेते हुए मगन हैं। वे स्वानुभवी कलन जिन हैं ॥ २६ ॥

(ससि कमल कलन जिन साहि मौ०) श्री जिनेन्द्र शुद्ध चन्द्रमाके समान निर्मल कमल समान आत्माका स्वाद लेते हुए मोक्षको साधन कर रहे हैं (ससि साहि जिनय जिन उत्तु उत्तु जिन०) इसी साधनसे उन्होंने चन्द्रमा समान पूर्ण शुद्ध आत्माको साधन किया है। इसीसे उन्हें कर्मविजयी जिन कहा गया है ॥ २७ ॥

(जिन साहिं सुयं सुइ उत्तमौ०) श्री जिनने स्वयं ही आपको साधन किया है, इसलिये वे स्वयंभू कहलाते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं (जिन भवन विंद सम साहि विंद जिन०) श्री जिनेन्द्रने अपने आत्माके जिन मन्दिरमें सिद्ध भगवानको सम-भावसे साधन किया है, वे सिद्ध जिन हैं ॥ २८ ॥

(जिन भवन कमल कलि कमल मौ०) श्री जिनेन्द्र अपने ही आत्माके जिन मन्दिरमें विराजित आत्मारूपी कमलका आराधन करते हुए कमल स्वरूप है (जिन कमल कमल सिधि रतु दिप्ति जिन०) श्री जिनेन्द्ररूपी कमल सिद्ध भगवानरूपी कमलमें लीन होकर प्रकाश कर रहे हैं ॥ २९ ॥

(जिन अर्क अर्क जिन अर्क मौ०) श्री जिनेन्द्र सूर्यके समान प्रकाशित जिन हैं, इसलिये सूर्य स्वरूप हैं (जिन अर्क बिंद समसंतु संतु जिन०) श्री जिनेन्द्र सूर्य सिद्ध भगवानके समान परम शांत है इसलिये शान्त जिन हैं ॥ ३० ॥

(जिन तारन तरन सु अर्क जिन०) श्री जिनेन्द्र तारणतरण जहाजके समान उत्तम सूर्य हैं (जिन समय सिद्धि सिव पंथ पंथ जिन०) श्री जिनेन्द्र आत्माको सिद्धगतिमें पहुँचाते हुए स्वयं मोक्षमार्ग स्वरूप जिन हैं ॥ ३१ ॥

(जिन तारनतरन विवान मौ०) श्री जिनेन्द्र तारणतरण जहाज स्वरूप हैं (जिन समय सिद्धि संपत्तु सिद्ध जिन०) वे जिनेन्द्र आत्माको सिद्धगति प्राप्त कराके सिद्ध जिन होजाते हैं ॥ ३२ ॥

भावार्थ—इस जिन बत्तीसीमें श्री अरहन्त परमात्मा जिनेन्द्रकी स्तुति की गई है। यह स्तुति वास्तवमें निश्चय स्तुति है। यहां उनकी अंतरंग आत्माके स्वरूप पर दृष्टि है, बाहरी शरीरपर व समवसरण आदि विभूतिपर दृष्टि नहीं है। अरहन्तका आत्मा आत्माके गुणोंके घातक कर्मोंको क्षय कर चुका है। इसलिये वह अनन्तज्ञान व अनन्त दर्शनमई अपने स्वरूपमें मगन हैं। वे आपमें ही अपने आपको अनुभव कर रहे हैं। रागद्वेष रहित परम वीतराग हैं या समभावके समुद्र हैं। आप ही जिनमन्दिर हैं, आप ही देव हैं, आप ही आराधक हैं, आप ही कलश हैं, आप ही कलशके भीतरके कमल हैं, आप ही भ्रमरके समान उस कमलमें मगन हैं। अनन्त सुखको प्रगट करके वह आत्मीक ज्ञानमें मगन होकर उसीके रसका पान कर रहे हैं। स्वरूप रमण करते हुए साक्षात् आत्मरमी प्रभु हैं। जिन, समय, कमल, अर्क आठ शब्दोंसे उन्हींका बोध होता है कि वे कर्मविजयी जिन हैं, आपसे आपमें परिणमन करते हुए आत्मा हैं। कमल समान स्वभावमें प्रफुल्लित है, सूर्य समान वीतरागता सहित पूर्ण ज्ञान प्रकाशके धारी हैं, स्वात्मानुभवके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूसरे उन्हें नहीं जान सकते हैं। उनको वे ही जान सकते हैं जो उन्हीके समान वीतरागी होकर आत्मामें मगन होते हैं। साधनकी अवस्थामें अरहन्त परमात्माकी आत्माका ज्ञानपना परोक्ष श्रुतज्ञान द्वारा होता है। प्रत्यक्ष रूपसे केवलज्ञानी ही केवलज्ञानीको जान सकते हैं। अतींद्रिय आत्माका प्रत्यक्ष ज्ञान शुद्ध आत्माको ही होसकता है। श्री जिनेन्द्र अनन्त पदार्थोंको जानते हुए भी किसीसें रागद्वेष नहीं करते हैं। इसीसे उनको सूर्यकी उपमा दीजाती है। वे परमात्मा परम शांत हैं, परम सुखी हैं। आयुके अन्तमें सिद्धभावमें परिणमन कर जाते हैं। श्री जिनेन्द्रकी महिमा अपार है। मुमुक्षुको उचित है कि जिसतरह बने उद्यम करके स्वात्मानुभवके मार्गपर चलने लगे, यही एक मोक्षका मार्ग है।

शुद्धात्माका ध्यान ही मोक्षमार्ग है। ऐसा नियमसारमें कहा है—

अप्पसरूवालंवणभावेण दु सव्वभावपरिहाणं। सक्कदि कट्टुं जीवो तम्हा झाणं हवे सव्वं ॥ ११९ ॥

सुहअसुहवयणरयणं रायादीभाववारणं किच्चा। अप्पाणं जो झायदि तस्स दुणियमं हवे णियमा ॥ १२० ॥

भावार्थ— जो जीव अपने आत्माके स्वरूपका आलम्बन लेता है वह सर्व विभावोंका त्याग करनेके लिये समर्थ होता है, इसलिये सर्व कुछ मनोरथ सिद्ध करनेवाला एक आत्मध्यान है। जो कोई शुभ व अशुभ वचन-रचनाको छोड़कर तथा रागद्वेषादि भावोंको हटाकर आत्माको ध्याता है उसीके नियमसे रत्नत्रय स्वरूपका लाभ होता है, जो निश्चय मोक्षमार्ग है।

(११२) उवन इष्ट समयसार गाथा २३३३ से २३७३ तक।

जिन जिनय जयं जय जयो जयं, जिन उवन जयं जय समय जयं ॥ १ ॥
जिन तुव पय हम सरनं, अलष जिन तुव पै हम सरनं (आचरी) ॥ २ ॥
तारै तरै समय सुइ तारे, अवल बलि जिन जिनय जिनं।
जिन तुव पय हम सरनं, केवल जिन तुव पै हम सरनं ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by S... Trust/eGangotri

उव उवन जयं हिय उवन जयं, सह साह जयं उव समय जिन।
जिन तुव पय हम सरनं, सुयं जिन तुव पै हम सरनं ॥ ४ ॥
चर चरन जयं कलि कलन जयं, जिन कलन कमल जिन ध्रुव उवनं।
जिन तुव पय हम सरनं, जिनय जिनु तुव पै हम सरनं ॥ ५ ॥
सुव उवन सुयं सुइ उवन सुयं, ध्रुव उवन कर्न सम समय जिनं।
जिन तुव पय हम सरनं, सहज जिन तुव पद हम सरनं ॥ ६ ॥
सुव सुवन समं सम सुवन सुयं, अवयास उवन सम साहि जिनं।
जिन तुव पय हम सरनं, पर्म जिन तुव पय हम सरनं ॥ ७ ॥
अवयास सुयं सुर रमन रमं, सुइ अर्क उवन विंद समय जिनं।
जिन तुव पय हम सरनं, नन्द जिन तुव पय हम सरनं ॥ ८ ॥
इष्ट उवन जयं उव उवन जयं, उव उवन इष्टि उव समय जिनं।
जिन तुव पय हम सरनं, उवन जिन तुव पय हम सरनं ॥ ९ ॥
इष्ट उवन मयं उव उवन मयं, उव उवन मयं इष्ट मयं जयं।
जिन तुव पय हम सरनं, मयं जिन तुव पय हम सरनं ॥ १० ॥
इष्ट उवन पयं उव उवन पयं, उव उवन पयं इष्ट पम पयं।
जिन तुव पय हम सरनं, पयं जिन तुव पय हम सरनं ॥ ११ ॥
इष्ट उवन सुहं उव उवन सुहं, उव उवन सहन इष्ट सहइ जिनं।
जिन तुव पय हम सरनं, सहज जिन तुव पै हम सरनं ॥ १२ ॥
इष्ट उवन उव उव उवन सर्घ, उव उवन सर्घ इष्ट उवन पयं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0-In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इष्ट उवन उव उव उवन सुयं, उव उवन सुयं इष्ट उवन पयं ।
जिन तुव पय हम सरनं; उदय जिन तुव पै हम सरनं ॥ १३ ॥
इष्ट उवन ढलं उव उवन ढलं, उव उवन ढलन इष्ट जिन ढलनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, ढलन जिन तुव पै हम सरनं ॥ १४ ॥
इष्ट उवन लषं उव उवन लषं, उव उवन लषन इष्ट लषन जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, लषन जिन तुव पै हम सरनं ॥ १५ ॥
इष्ट उवन इष्टं उव उवन इष्टं, उव उवन दर्स इष्ट दर्स जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, दर्स जिन तुव पै हम सरनं ॥ १६ ॥
इष्ट उवन साहि उव उवन साहि, उव उवन साहि इष्ट साहि जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, साहि जिन तुव पै हम सरनं ॥ १७ ॥
इष्ट उवन रमं उव उवन रमं, उव उवन रमन इष्ट रमन जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, रमन जिन तुव पै हम सरनं ॥ १८ ॥
इष्ट तार रमं उव उवन तरं, उव उवन तार इष्ट तार जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, तार जिन तुव पै हम सरनं ॥ १९ ॥
इष्ट उवन तरं उव तरन तरं, उव उवन तरन इष्ट तरन जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, तरन जिन तुव पै हम सरनं ॥ २० ॥
तर तार जिनं उव तरन जिनं, उव तार तरन जिन जिनय जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, जिनय जिन तुव पै हम सरनं ॥ २१ ॥ ॥ ४९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इष्ट उवन समं उव समय सम, जिन तार तरन सम समय समं ।
जिन तुव पय हम सरनं, समय जिन तुव पै हम सरनं ॥ २२ ॥
तर तार उवन उव उवन समं, ध्रुव उवन समग्ग सुइ सिद्धि रमं ।
जिन तुव पय हम सरनं, सिद्ध जिन तुव पै हम सरनं ॥ २३ ॥
इष्ट लषन इष्टं उव उवन लषं, उव उवन लषन इष्ट लषन जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, लषन जिन तुव पै हम सरनं ॥ २४ ॥
इष्ट अलष इष्टं उव अलष उवं, उव उवन अलष इष्ट अलष जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, अलष जिन तुव पै हम सरनं ॥ २५ ॥
इष्ट गमन इष्टं उव उवन गमं, उव उवन गमन इष्ट गमन जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, गमन जिन तुव पै हम सरनं ॥ २६ ॥
इष्ट गमन इष्टं उव अगम गमं, उव उवन अगम इष्ट अगम जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, अगम जिन तुव पै हम सरनं ॥ २७ ॥
इष्ट आस इष्टं उव आस उवं, उव उवन आस इष्ट आस जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, आस जिन तुव पै हम सरनं ॥ २८ ॥
इष्ट स्नेह इष्टं उव स्नेह उवं, उव उवन स्नेह इष्ट स्नेह जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, स्नेह जिन तुव पय हम सरनं ॥ २९ ॥
इष्ट न्यान इष्टं उव न्यान उवं, उव उवन न्यान जिनं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इष्ट दर्स इष्टं उव दर्स उवं, उव उवन दर्स इष्ट दर्स जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, दर्स जिन तुव पय हम सरनं ॥ ३१ ॥
इष्ट दान इष्टं उव दान उवं, उव उवन दान इष्ट दान जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, दान जिन तुव पय हम सरनं ॥ ३२ ॥
इष्ट लाभ इष्टं उव लाभ उवं, उव उवन लाभ इष्ट लाभ जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, लाभ जिन तुव पय हम सरनं ॥ ३३ ॥
इष्ट भोग इष्टं उव भोग उवं, उव उवन भोग इष्ट भोग जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, भोग जिन तुव पै हम सरनं ॥ ३४ ॥
इष्ट उव भोग इष्टं उव उव भोग उवं, उव उवन भोग उव भोग जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, उव भोग जिन तुव पै हम सरनं ॥ ३५ ॥
इष्ट वीय इष्टं उव वीय उवं, उव उवन वीय इष्ट वीय जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, वीर्य जिन तुव पै हम सरनं ॥ ३६ ॥
इष्ट समत इष्टं उव समत उवं, उव उवन समत इष्ट समत जिनं ।
जिन तुव पय हम सरनं, समत जिन तुव पै हम सरनं ॥ ३७ ॥
इष्ट चरन इष्टं उव उवन चरं, उव उवन चरन इष्ट चरन जिनं ।
जिन तुव पै हम सरनं, चरन जिन तुव पै हम सरनं ॥ ३८ ॥
इष्ट लषि इस्टं उवलब्धि उवं, उव उवन लब्धि इस्ट लषि जिनं ।
जिन तुव पै हम सरनं, लब्धि जिन तुव पै हम सरनं ॥ ३९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham/eGangotri

इस्ट अलब्धि इस्टं उव अलब्धि उवं, उव उवन अलब्धि इस्ट अलब्धि जिनं।
जिन तुव पै हम सरनं, अलब्धि जिन तुव पै हम सरनं ॥ ४० ॥
सेनि कलन जयं तार कमल जयं, तर तार कमल सम सिद्धि जयं।
जिन तुव पै हम सरनं, सिद्ध जिन तुव पै हम सरनं ॥ ४१ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जिन जिनय जयं जय जयो जयं) कर्मविजयी वीतरागी जिनेन्द्रकी जय हो जय हो (जिन उवन जयं जय समय जयं) प्रकाशमान जिनकी जय हो जय हो, समयसार परमात्माकी जय हो ॥ १ ॥

(जिन तुव पय हम सरनं अलष जिन०) हे जिनेन्द्र ! हम आपके चरणोंकी शरणमें हैं। हे मन इंद्रियोंसे अगोचर अनुभवगम्य जिन ! हम आपकी शरणमें हैं ॥ २ ॥

(तारै तरै समय सुइ तारे) जो तारण तरण परमात्मा अरहन्त है वही भव्य जीवोंको तारने समर्थ है (अवल बलि जिन जिनय जिनं) श्री जिनेन्द्र अनन्त वीर्यके धारी हैं उनके समान किसीका बल नहीं है (जिन०) हे केवली जिन ! हम आपके चरणोंकी शरण लेते हैं ॥ ३ ॥

(उव उवन जयं हिय उवन जयं) हितकारी आत्मप्रकाशकी जय हो (सह साह जयं उव समय जिनं) इस आत्मज्ञानकी सहायतासे कर्म पर विजय की जाती है तब जिनेन्द्रका परमात्मपद प्रगट होता है (जिन०) हे स्वयं कर्मको जीतनेवाले जिनेंद्र ! हम तेरे चरणोंकी शरण हैं ॥ ४ ॥

(चर चरन जयं कलि कलन जयं) आत्माके भीतर चलनेसे चारित्र होता है-स्वात्मानुभव होता है, उससे कर्मोंपर विजय होती है उस चारित्रकी जय हो (जिन कलन कमल जिन ध्रुव उवनं) जब प्रफुल्लित कमल समान आत्माका वीतरागभावसे अनुभव किया जाता है तब जिनेन्द्रका ध्रुव स्वभाव प्रगट होजाता है (जिन०) हे कर्मविजयी जिन ! हम तेरे चरणोंकी शरणमें हैं ॥ ५ ॥

(ध्रुव उवन सुयं सुइ उवन सुयं) जब स्वयं ध्रुव अविनाशी आत्माका प्रकाश होता है तब यह आत्मा स्वयं उदयरूप रहता है (ध्रुव उवन कर्न सम समय जिनं) आत्माका ध्रुव रूपसे उदय होना ही वह साधन है जिससे यह आत्मा जिन समभावमें स्थिर रहता है (जिन०) सहज स्वभावसे प्रकाशित जिन ! हम तेरे चरणोंकी शरणमें हैं ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(धुव सुवन समं सम सुवन सुवं) यह आत्मा अपने समभावमें परिणमन करता है जिससे समभाव बढ़ता है (अवयास उवन सम साहि जिनं) जब जिनेन्द्रमें केवलज्ञानका प्रकाश होता है तब समभावको साध लिया जाता है (जिन०) हे परमात्मा जिन ! हम तेरी शरण हैं ॥ ७ ॥

(अवयास सुयं सुइ रमन रमं) केवलज्ञान स्वयं सूर्यके समान प्रकाशित रहता है तब आत्मा उसीके भीतर रमण करता है (सह अर्क उवन विंद समय जिनं) इसी सूर्य समान ज्ञानके प्रकाशको अनुभव करता हुआ यह परमात्मा जिन बना रहता है (जिन०) हे परमानन्दमई जिन ! हम तेरी शरण हैं ॥ ८ ॥

(इष्ट उवन जयं उव उवन जयं) इस हितकारी ज्ञानके प्रकाशकी जय हो जिससे प्रकाश विजयको पाता है (उव उवन इष्टि उव समय जिनं) इसी हितकारी ज्ञानके प्रकाशके साथ परमात्मा जिन शोभते हैं (जिन०) हे प्रकाशमान जिन ! हम तेरी शरण हैं ॥ ९ ॥

(इष्ट उवन मयं उव उवन मयं) ज्ञानका ज्ञानका ज्ञानमें परिणमन हितकारी है, इससे ज्ञान बढ़ता है (उव उवन मयं इष्ट मयं जयं) इसी ज्ञानके परिणमनसे हितकारी ज्ञानकी विजय होती है अर्थात् आत्मज्ञानके अनुभवसे केवलज्ञान होता है (जिन०) हे ज्ञानमें परिणमन करनेवाले जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ १० ॥

(इष्ट उवन पयं उव उवन पयं) यह ज्ञानके प्रकाशका पद हितकारी है जिससे प्रकाश बढ़ता है (उव उवन पयं इष्ट पर्म पयं इसी आत्मज्ञानके प्रकाशमान पदसे हितकारी परमात्माका पद होता है (जिन०) हे परमात्मपदधारी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ११ ॥

(इष्ट उवन सुहं उव उवन सहं) ज्ञानके प्रकाशका अनुभव करना हितकारी है जिससे अनुभव बढ़ता है (उव उवन सहन इष्ट सहइ जिनं) इसी ज्ञानके अनुभवकी थिरतासे हितकारी जिनेन्द्रका स्वानुभव होता है (जिन०) हे स्वभावमें रहनेवाले जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ १२ ॥

(इष्ट उवन उवं उव उवन सुयं) ज्ञानका प्रकाश स्वयं बढ़ता हुआ हितकारी है जिसका सेवन उन्नतिरूप है (उव उवन सुयं इष्ट उवन वयं) इसीके स्वयं बढ़नेसे हितकारी परमात्मपद प्रगट होता है (जिन०) हे उदयरूप जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ १३ ॥

(इष्ट उवन ढलं उव उवन ढलं) आत्माके उदयका बढ़ना हितकारी है जिससे उदय बढ़ता जाता है (उव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवन ढलन इष्ट जिन ढलनं) इसी उदयके बढ़नेसे हितकारी जिनेन्द्रकी वृद्धि होती है या अरहन्तपदका प्रकाश होता है (जिन०) हे वृद्धिप्राप्त जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ १४ ॥

(इष्ट उवन लषं उव उवन लषं । जब हितकारी आत्माके प्रकाशको पहचान लिया जाता है तब वह लक्ष्य बढ़ता जाता है (उव उवन लषन इष्ट लषन जिनं) तब इसी आत्मज्ञानके प्रकाशसे हितकारी जिनेन्द्रका लक्षण या जिनेन्द्र पद प्रगट होता है (जिन०) हे परमात्मा लक्षणके धारी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥१५॥

(इष्ट उवन दृष्टं उव उवन दृष्टं) आत्माके प्रकाशका प्रेम या श्रद्धान हितकारी है जिससे श्रद्धान बढ़ता जाता है (उव उवन दर्स इष्ट दर्स जिनं) इस आत्म प्रकाशकी श्रद्धासे श्री जिनेन्द्रमें हितकारी आत्मदर्शन या क्षायिक परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन प्रगट होता है (जिन०) हे आत्मदर्शी या क्षायिक सम्यग्दृष्टी जिन ! हम आपकी शरण हैं ॥ १६ ॥

(इष्ट उवन साहि उव उवन साहि) आत्मज्ञानका साधन हितकारी है जिससे साधन बढ़ता जाता है (उव उवन साहि इष्ट साहि जिनं) इसी आत्मज्ञानके साधनसे इष्ट जिनेन्द्रका पद साध लिया जाता है (जिन०) हे साधनेवाले जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ १७ ॥

(इष्ट उवन रमं उव उवन रमं) आत्मज्ञानमें रमण करना हितकारी है जिससे आत्मरमण बढ़ जाता है (उव उवन रमन इष्ट रमन जिनं) इस आत्मज्ञानके रमणसे जिनेन्द्रमें इष्ट स्वात्मरमण प्रगट होता है (जिन०) हे स्वात्मरमी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ १८ ॥

(इष्ट तार रमं उव उवन तरं) हितकारी भवसमुद्र तारक जिनेन्द्रमें रमण करना आत्माको तारनेवाला है इससे तरण शक्ति बढ़ती है (उव उवन तार इष्ट तार जिनं) इस तारनेवाले साधनके उदयसे भवसमुद्रसे तारनेवाला इष्ट जिनपद प्रगट होता है (जिन०) हे तारनेवाले जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ १९ ॥

(इष्ट उवन तरं उव उवन तरं) आत्माका भवसमुद्रसे तरनेका उपाय हितकारी है जिससे तारणशक्ति बढ़ती है (उव उवन तरन इष्ट तारन जिनं) इसी तरनेवाले साधनसे जिनेन्द्रका इष्ट भवसमुद्रसे तरनेवाला पद प्रगट होता है अर्थात रत्नत्रयकेअभ्याससे अरहन्तपद होता है (जिन०) हे संसारसे तरनेवाले जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ २० ॥

(तर तार जिनं उव तरन जिनं) तरण तारण जिनेन्द्रकीका आराधन भवसमुद्रसे तरनेका साधन है तथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

(तर तार जिन उव तरन जिनं) तरण तारण जिनेन्द्रोंकी आराधन भवसमुद्रसे तरनेका साधन है तथा ॥ ५४ ॥
वह वीतरागरूप है (उव तारं तरम जिन जिनय जिनं) उन्हीं तारण तरण जिनेन्द्रकी भक्तिसे व उनके स्वरूपके अनुभवसे जिनेन्द्रका जिनपद प्रगट होता है (जिन०) हे जीतनेवाले जिन ! हम तेरी शरण हैं ॥ २१ ॥

(इष्ट उवन समं उव समय समं) समताभावका उदय हितकारी है इसीसे आत्मा समभावी, वीतरागी होता जाता है (जिन तारन तरन सम समय समं) समताभावसे ही आत्मा वीतराग जिन तारण तरण अरहन्त होजाता है (जिन०) हे समयसार परमात्मा जिन ! हम तेरी शरण हैं ॥ २२ ॥

(तर तार उवन उव उवन समं) जिसमें समभावका उदय है वह आप भी तरता है व दूसरोंको भी तारता है (ध्रुव उवन समय सुइ सिद्धि रमं) उसमें ध्रुव रूपसे अविनाशी परमात्मापद प्रगट होता है वही सिद्ध स्वभावमें रमण करता है (जिन०) हे सिद्ध जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण है ॥ २३ ॥

इष्ट लषन इष्टं उव उवन लषं। आत्माके लक्षणका प्रेम या शुद्ध स्वभावका प्रेम हितकारी है यह ज्ञान जिसमें प्रगट होता है (उव उवन लषन इष्ट लषन जिनं) वह इस लक्षणके अनुभवसे इष्ट जिनेन्द्रके लक्षण या स्वरूपको प्राप्त कर लेता है (जिन०) हे जिनेन्द्रके लक्षणको धरनेवाले ! हम तेरी शरण हैं ॥ २४ ॥

(इष्ट अलष इष्टं उव अलष उवं) मन वचन कायसे अगोचर आत्माका प्रेम हितकारी है इसीसे अतीन्द्रिय आत्मानुभव होता है (उव उवन अलष इष्ट अलष जिनं) इसी अतीन्द्रिय स्वानुभवसे अतीन्द्रिय जिनेन्द्रका अरहन्तपद प्रगट होता है (जिन०) हे अतीन्द्रिय अलष जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ २५ ॥

(इष्ट गमन इष्टं उव उवन गमं) ज्ञानके भीतर अभ्यासका प्रेम हितकारी है इसीसे ज्ञानका प्रकाश होता है (उव उवन गमन इष्ट गमन जिनं) इसी ज्ञानके व मननसे प्रकाशसे जिनेन्द्रका इष्ट शुद्ध ज्ञान प्रगट होता है (जिन०) हे ज्ञानमें परिणमन करनेवाले जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ २६ ॥

(इष्ट अगम इष्टं उव अगम उवं) मन व इंद्रियोंसे अगोचर अनुभवगम्य तत्व हितकारी है इससे स्वानुभव बढ़ता है (उव उवन अगम इष्ट अगम जिनं) इस अतीन्द्रिय आत्मतत्वके अनुभवसे अनुभव योग्य जिनेन्द्रका इष्टपद प्रगट होता है (जिन०) हे अतीन्द्रिय अनुभवनेयोग्य जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ २७ ॥

(इष्ट आस इष्टं उव आस उवं) इष्ट पदार्थ जो मोक्ष है उसकी आशा करना हितकारी है इससे मोक्षकी आशा बढ़ती है (उव उवन आस इष्ट आस जिनं) इस आशाके उदयसे ही इष्ट जिनेन्द्रके पदमें विश्राम होता है (जिन०) हे स्वरूपमें विश्राम करनेवाले जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ २८ ॥

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(इष्ट स्नेह इष्टं उव स्नेह उवं) इष्ट पदार्थ जो मोक्ष है उससे स्नेह करना हितकारी है। इससे स्नेह बढ़ता है (उव उवन स्नेह इष्ट स्नेह जिनं) यह स्नेह बढ़ते बढ़ते इष्ट जिनेन्द्रके स्नेहयोग्य पदपर लेजाता है (जिन०) हे स्नेहयोग्य जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ २९ ॥

(इष्ट न्यान इष्टं उव न्यान उवं) इष्ट आत्मज्ञानमें हितकारी है इससे ज्ञान बढ़ता है (उव उवन न्यान इष्ट न्यान जिनं) इस आत्मज्ञानके बढ़नेसे श्री जिनेन्द्र पदमें इष्ट केवलज्ञान होजाता है (जिन०) हे अनन्तज्ञान-धारी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ३० ॥

(इष्ट दर्स इष्टं उव दर्स उवं) इष्ट आत्मदर्शन हितकारी है जिससे दर्शनोपयोग बढ़ता है (उव उवन दर्स इष्ट दर्स जिनं) यही दर्शनोपयोग बढ़ते हुए श्री जिनेन्द्रमें इष्ट अनन्तदर्शन होजाता है (जिन०) हे अनन्त दर्शनधारी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ३१ ॥

(इष्ट दान इष्टं उव दान उवं) इष्ट दान अर्थात् ज्ञानदान, अभयदानादि करना हितकारी है जिससे दानलब्धि बढ़ती है (उव उवन दान इष्ट दान जिनं) यही क्षयोपशम रूप दानलब्धि श्री जिनेन्द्रमें इष्ट अनन्त दान लब्धि होजाती है (जिन०) हे अनन्त दानलब्धिके धारी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ३२ ॥

(इष्ट लाभ इष्टं उव लाभ उवं) इष्ट लाभ अर्थात् ज्ञान लाभ–मन्द कषायका लाभ हितकारी है जिससे लाभकी लब्धि बढ़ती है (उव उवन लाभ इष्ट लाभ जिनं) यही क्षयोपशम रूप लाभ लब्धि बढ़ते हुए जिनेन्द्रमें क्षायिक अनन्त लाभ प्रगट कर देती है (जिन०) हे अनन्त लाभ लब्धिके धारी! हम तेरी शरण हैं ॥ ३३॥

(इष्ट भोग इष्टं उव भोग उवं) इष्ट भोग जो आत्माके स्वरूपका भोग है वह हितकारी है जिससे भोग-लब्धि बढ़ती है (उव उवन भोग इष्ट भोग जिनं) यह भोगकी लब्धि बढ़ते हुए जिनेन्द्रमें अनन्त क्षायिक भोगको उत्पन्न कर देती है (जिन०) हे क्षायिक भोगके धारी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ३४ ॥

(इष्ट उव भोग इष्टं उव उव भोग उवं) इष्ट उपभोग जो आत्माका स्वाद है वह हितकारी है जिससे आत्माका उपभोग बढ़ता है (उव उवन भोग उव भोग जिनं) यही आत्मीक उपभोग बढते हुए श्री जिनेन्द्रमें अनन्त उपभोग लब्धिको पैदा कर देता है (जिन०) हे अनन्त उपयोग लब्धिके धारी ! हम तेरी शरण हैं ॥ ३५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवन वीर्य इष्ट वीर्य जिनं) यह आत्मबल बढ़ते हुए जिनेन्द्रमें अनन्तवीर्यको पैदा कर देता है (जिन०) हे अनंत वीर्यके धारी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ३६ ॥

(इष्ट समत इष्ट उव समत उवं) इष्ट सम्यग्दर्शन हितकारी है जिससे सम्यक्त दृढ़ होता है (उव उवन समत इष्ट समत जिनं यही सम्यक्त दृढ़ होते होते जिनेन्द्रमें परमावगाढ़ क्षायिक सम्यक्त होजाता है (जिन०) हे क्षायिक सम्यक्ती जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ३७ ॥

(इष्ट चरन इष्टं उव उवन चरं) इष्ट सम्यक्चारित्र हितकारी है जिससे वीतराग चारित्र बढ़ता जाता है (उव उवन चरन इष्ट चरन जिनं) यही चारित्र बढ़ते बढ़ते श्री जिनेन्द्रमें यथाख्यात क्षायिक चारित्र होजाता है (जिन०) हे क्षायिक चारित्रके धारी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ३८ ॥

(इष्ट लब्धि इष्टं उव लब्धि जिनं) इस तरह इष्ट नौ प्रकार लब्धियें हितकारी हैं । इनके सेवनसे लब्धियें बढ़ती जाती हैं (उव उवन लब्धि इष्ट लब्धि जिनं) इन लब्धियोंके बढ़नेसे जिनेन्द्रमें नौ क्षायिक या केवल लब्धियें होजाती हैं (जिन०) हे नौ केवल लब्धिधारी जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ३९ ॥

(इष्ट अलब्धि इष्ट उव अलब्धि उवं) इष्ट अलब्धि भाव अर्थात् परके ग्रहणका त्यागभाव या स्वस्वरूपमें तृप्तभाव हितकारी है जिससे सन्तोष बढ़ता जाता है (उव उवन अलब्धि इष्ट अलब्धि जिनं) इस तृप्त स्वात्म मग्न भावके बढ़नेसे जिनेन्द्रमें पूर्ण अलब्धि या सन्तोष या स्वतृप्ति या कृतकृत्य भाव प्रगट होजाता है (जिन०) हे स्वरूपमग्न सन्तोषी जिन ! हम तेरी शरण हैं ॥ ४० ॥

(सेनि फलन जयं तार कमल जयं) गुणस्थानोंके द्वारा स्वात्मानुभवकी जय हो, तारनेवाले कमल समान शुद्धात्माकी जय हो, कारण समयसारकी जय हो (तर तार कमल सम सिद्धि जयं) कार्य समयसार रूप तारण तरण कमल समान अरहंत परमात्माकी तथा सिद्ध परमात्माकी जय हो (जिन०) हे सिद्ध जिनेन्द्र ! हम तेरी शरण हैं ॥ ४१ ॥

भावार्थ—इस छंदमें शुद्धात्माकी भक्ति करते हुए समयसार व शुद्धात्माका उत्तम प्रकारसे अनुभव कराया है । यह दिखलाया है कि एक दफे जिसको सम्यग्दर्शन या आत्माका साक्षात्कार या प्रकाश हो जाता है वही मोक्षमार्गको पालेता है । उसमें रत्नत्रय झलक जाते हैं, उसका ज्ञान सम्यग्ज्ञान होता है, उसके स्वरूपमें रमणता होती है । यही स्वरूपका प्रकाश जितना जितना किया जाता है उतना उतना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घातीय कर्मोंका अधिक २ क्षयोपशम होता जाता है। मोहनीय कर्मका जितना जितना क्षयोपशम बढ़ता जाता है यह आत्मा गुणस्थान मार्गसे श्रेणीपथपर चढ़ता जाता है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्-चारित्र, सम्यक् स्वरूपको स्वरूप दान, सम्यक् आत्म लाभ, सम्यक् आत्मभोग, सम्यक् आत्म उपभोग, सम्यक् आत्मवीर्य, सम्यक् आत्मदर्शन, इन नौ शक्तियोंका जितना जितना अभ्यास किया जाता है उतना उतना इनके बाधक चारों घातीय कर्मोंका क्षय होता जाता है, तब शुक्लध्यानके बलसे क्षपकश्रेणी द्वारा चारों घातीय कर्मोंका क्षय होकर नौ केवल लब्धियां क्षायिक सम्यग्दर्शन आदि प्रगट होजाती हैं।

तात्पर्य यह है कि परमात्मपद्की प्रगटताका यथार्थ उपाय अपने ही आत्माके शुद्ध स्वरूपका सेवन है। कारण समयसार रूप आत्मा ही कर्म समयसाररूप परमात्मा होता है। मोक्षका उपाय-मन, वचन, काय आश्रित नहीं है। किन्तु मन, वचन, कायसे अगोचर स्वानुभवगम्य है, अतीन्द्रिय है। मन, वचन, काय द्वारा बाहरी निमित्तोंका संयोग मिलाया जाता है। व्यवहार सम्यक्त, व्यवहार शास्त्रज्ञान व व्यवहार साधु चारित्र भाव बाहरी सहकारी है। इनके होते हुए ही निश्चय आत्मानुभव हो सकता है जब आत्मानुभव होता है तब मन, वचन, कायका विकल्प नहीं रहता है। साधकको उचित है कि संसार सम्बन्धी, विषयभोग सम्बन्धी श्रद्धा, स्नेह तथा आशा सब छोड़कर एक स्वरूप प्राप्तिरूप मोक्षकी श्रद्धा करे। उसीसे प्रेमभाव बढ़ाये, उसीकी आशा करे, मोक्षके लिये सच्ची उमंग पैदा करे, आप ही साधन है, आप ही साध्य है। जो स्वरूपमें रमण करके स्वात्मानन्द लेगा वही स्वरूपरमी अनन्त आनन्द भोगी परमात्मा अरहन्त या सिद्ध हो जायगा। आपसे ही आपकी उन्नति होती है। जो स्वाव-लम्बन ग्रहण करता है वही स्वाधीन होता है। नियमसारमें कहा है—

जो ण हवदि अण्णवसो तस्स दु कम्मं भणंति आवासं। कम्मविणासणजोगो णिव्वहिमग्गोत्ति पिज्जुत्तो ॥ १४१ ॥

वट्टदि जो सो समणो अण्णवसो होदि असुहभावेण। तम्हा तस्स दु कम्मं अवस्सयलक्खणं ण हवे ॥ १४३ ॥

जो चरदि संजदो खलु सुहभावे सो हवेइ अण्णवसो। तह्मा तस्स दु कम्मं आवासयलक्खणं ण हवे ॥ १४४ ॥

दव्वगुणपज्जयाणं चित्तं जो कुणइ सो वि अण्णवसो। मोहांधकारववगयसमणा कहयंति एरिसयम् ॥ १४५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ—जो कोई अपने आत्माके सिवाय और किसीके आधीन नहीं होता है उसीके आवश्यक स्वाधीन कर्म होता है, इसीको कर्मोंको नाश करनेके लिये समर्थ मोक्षमार्ग कहा गया है। जो कोई साधु अशुभ भावोंमें वर्तकर पराधीन होता है उसके यह स्वाधीन आवश्यक कर्म नहीं होता है। इसी तरह जो संयमी साधु शुभ भावोंमें आचरण करता है वह भी पराधीन है, उसके भी स्वाधीन आवश्यक कर्म नहीं होता है। जो कोई द्रव्य, गुण, पर्यायोंका भी विचार चित्तमें करता है वह भी पराधीन है, स्वाधीन नहीं है, ऐसे मोहांधकारसे रहित ज्ञानी आचार्य कहते हैं कि जो कोई साधु शुद्धात्मीक भावोंके सिवाय सर्व परभावोंको त्यागकर निर्मल शुद्ध स्वभावके धारी अपने आत्माको बारबार ध्याता है-आत्मानुभवमें मगन होता है वही स्वाधीन आत्मवशी होता है। उसीके ही आवश्यक या स्वाधीन कर्म कहा गया है। तात्पर्य यह है कि स्वाधीनताका अनुभव ही स्वाधीनताका साधन है।

(११३) अक्क चौतीसी गाथा २३७४ से २४०७ तक।

स्वामी उवन उवन जिनु उवन जिनु हो, उव उवन उवन दर्संतु हो।
जिन जिनय उवन जिनु ॥ १ ॥

स्वामी जयो जयो जय जयो जिनु हो, जयो जयो जयवंतु हो।
जिनु जयो जय जिनु ॥ २ ॥

स्वामी मयो मयो मयवंतु जिन हो, मयो उवन जिनु उत्तु हो।
जिन जिनय मयो जिनु ॥ ३ ॥

जिनु सुयं सुयं जिनु सुयं जिनु हो, जिन सुयं उवन जिन नाहु हो।
जिन जिनय सुयं जिनु ॥ ४ ॥

जिनु रमन रमन जिनु रमन जिनु हो, रमन उवन उव उत्तु हो।
जिन जिनय रमन जिनु ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन सहन सहन जिनु सहन जिनु हो, जिन उवन सहन सह मंतु हो ।
जिन जिनय सहन जिनु ॥ ६ ॥

जिनु साह साह सुइ साह जिनु हो, जिनु उवन साह साहंतु हो ।
जिन जिनय साह जिनु ॥ ७ ॥

जिनु राह राह जिनु राह जिनु हो, जिन राह उवन राहंतु हो ।
जिन जिनय राह जिनु ॥ ८ ॥

जिनु हिय हिय हिय उवन जिनु हो, जिनु हिय हिय जिन हिय उत्तु हो ।
जिन जिनय हिय जिनु ॥ ९ ॥

जिन हुव हुव हुव उवन जिनु हो, जिन हुव हुव जिन हुव उत्तु हो ।
जिन जिनय हुवन जिनु ॥ १० ॥

जिन गुप्ति गुप्ति गुप्ति तार जिनु हो, जिन गुप्ति गुप्ति जिन उत्तु हो ।
जिन जिनय गुप्ति जिनु ॥ ११ ॥

जिनु जान जान जिन जान मउ हो, जिन जान विवान स उत्तु हो ।
जिनु जिनय जान जिनु ॥ १२ ॥

जिनु पयह पयह पय रमन जिनु हो, जिन पय पय पय पय उत्तु हो ।
जिनु जिनय पयं जिनु ॥ १३ ॥

जिन अलष अलष गुप्ति तार जिनु हो, जिन अलष अलष दर्संतु हो ।
जिन जिनय अलष जिन ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनु अगम अगम गुप्ति तार अगम हो, जिन अगमु अगमु विलसंतु हो ।
जिन जिनय अगम जिनु ॥ १५ ॥

जिनु दिप्ति दिप्ति सु दिप्ति जिनु हो,जिनु दिप्ति दिप्ति दिपि उत्तु हो ।
जिन जिनय दिप्ति जिनु ॥ १६ ॥

जिन समय समय सम समय जिनु हो, जिन समय समय सिधि रत्तु हो ।
जिन जिनय समय जिनु ॥ १७ ॥

जिन कर्न कर्न अकिर्न जिन हो, जिन कर्न कर्न सम साहि हो ।
जिन जिनय कर्न जिनु ॥ १८ ॥

जिन सुवन सुवन सुव सुवन जिनु हो, जिनु सुवन सुवन सुइ उत्तु हो ।
जिन जिनय सुवन जिनु ॥ १९ ॥

जिन उवन उवन उव साहि जिनु हो, जिन साहि साहि सम साहि हो ।
जिन जिनय साहि जिनु ॥ २० ॥

जिन उवन उवन सम उवन जिनु हो, जिन उवन साह सम उत्तु हो ।
जिन जिनय उत्तु जिनु ॥ २१ ॥

जिन अर्क अर्क सम अर्क जिनु हो, जिन अर्क अर्क उदयंतु हो ।
जिन जिनय अर्क जिन ॥ २२ ॥

जिन अर्क अर्क सुइ अर्क जिन हो, जिन अर्क अर्क कलयंतु हो ।
जिन जिनय कलन जिनु ॥ २३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

जिन कलन कलन कलि कलन जिनु हो, जिन कलन अर्क कलयंतु हो।
जिन जिनय कलन जिनु ॥ २४ ॥
जिन रुइय रुइय जिन कलन जिन हो, जिन रुइय रुइय कलयंतु हो।
जिन जिनय रुई जिन ॥ २५ ॥
जिन चरन चरन चर कलन जिनु हो, जिन चरन चरन कलयंतु हो।
जिन चरन कलन जिन ॥ २६ ॥
जिन चरन कलन रुइ कलन जिन हो, जिन कलन कमल कलयंतु हो।
जिन चरन कमल जिन ॥ २७ ॥
जिन कलन चरन चर रुइय जिन हो, जिन कमल कलन कलयंतु हो।
जिन कलन कमल जिनु ॥ २८ ॥
जिन उवन रमन रुइ कलन जिन हो, जिनु कलन कमल कलयंतु हो।
जिन उवन कमल जिन ॥ २९ ॥
जिन कलन कमल सहु नंत जिन हो, जिन उवन कमल ध्रुव नंत हो।
जिन उवन कमल जिन ॥ ३० ॥
जिन उवन स्वेनि कलि कलन मउ हो, जिन कलन स्वेनि जिन उत्तु हो।
जिन उवन कमल जिनु ॥ ३१ ॥
जिन तारन तरन सु कमल मउ हो, जिन कमल सुवन सिधि रत्तु हो।
जिन सिद्ध कमल जिन ॥ ३२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन तारन तरन विवान मउ हो, विवान कमल सम उत्तु हो।
जिन कमल धुवं जिन ॥ ३३ ॥

जिन तारन तरन कलि कमल मउ हो, सम समय सिद्धि संपतु हो।
जिन जिनय सिद्ध जिन ॥ ३४ ॥

अन्वयसहित अर्थ—(स्वामी उवन उवन जिन उवन जिन हो) श्री जिनेन्द्र ज्ञानको प्रकाश करते हुए जिन हुए हैं (उव उवन उवन दर्सतु हो) तथा वे ज्ञानके प्रकाशको या स्वात्मानुभवको दरशाते हैं (जिन जिनय उवन जिनु) श्री जिनेन्द्र प्रकाशमय जिन हैं ॥ १ ॥

(स्वामी जयो जयो जय जयो जिनु हो) श्री जिनेन्द्रकी जय हो जय हो जय हो (जयो जयो जयवंत हो) वे जिनेन्द्र जयवन्त रहें, उनकी जय हो (जिन जयो जय जिन) श्री जिनेन्द्रने कर्मोंको जीत करके जय पाई है ॥ २ ॥

(स्वामी मयो मयो मयवंतु जिन हो) श्री जिनेन्द्र ज्ञान स्वरूप या परिणमनशील जिन हैं (मयो उवन जिन उत्तु हो) उनमें अनंतज्ञानका उदय है ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (जिन जिनय मयो जिन) वे ज्ञानमई जिनेन्द्र हैं ॥ ३ ॥

(जिन सुयं सुयं जिन सुयं जिनु हो) श्री जिनेन्द्र स्वयं अपने आत्मबलसे कर्मोंको जीतकर जिन हुए हैं (जिन सुयं उवन जिन नाह हो) श्री जिनेन्द्र स्वयं ही उदय होकर अरहन्त परमेष्टी हैं (जिन जिनय सुयं जिन) श्री जिनेन्द्र स्वयं ही जिन हुए हैं ॥ ४ ॥

(जिन रमन रमन जिन रमन जिन हो) श्री जिनेन्द्र अपने जिन स्वभावमें रमण करते हुए रमणशील जिन हैं (रमन उवन उव उत्तु हो) स्वात्मरमणका उदय उनमें कहा गया है (जिन जिनय रमन जिनु) वे जिनेन्द्र स्वात्मरमी जिन हैं ॥ ५ ॥

(जिन सहन सहन जिनु सहन जिनु हो) श्री जिनेन्द्र आत्मानुभव करते हुए आत्मानुभवरूप जिन हैं। वे अपने बलको आप सहन करते हैं, स्वरूपमें स्थिर है (जिन उवन सहन सह नंतु हो) वे अपने ज्ञानका अनुभव करते हुए अनन्त कालतक स्वरूपमें स्थिर रहनेवाले हैं (जिन जिनय सहन जिनु) वे जिनेन्द्र परम सामर्थ्ययुक्त जिन हैं ॥ ६ ॥

(जिन साह साह सुह साह जिनु हो) वे अपनेको साधन करते हुए जिनेन्द्र पदको साध चुके हैं (जिन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sara... eGangotri

उवन साह साहंतु हो) श्री जिनेन्द्र अपने आत्मज्ञानके बलसे अपने स्वरूपको साधन किये हुए हैं (जिन जिनय साह जिनु) श्री जिनेन्द्र साध्यको साधन करनेवाले जिन हैं ॥ ७ ॥

(जिनु राह राह जिनु राह जिनु हो) वे वीतराग मार्गपर चलकर जिनेन्द्र हुए हैं (जिन राह उवन राहंतु हो) श्री जिनेन्द्र वीतराग पथद्वारा अपने स्वरूपमें पहुँचे हैं (जिन जिनय राह जिनु) श्री जिनेन्द्र मोक्षमार्गी जिन हैं ॥ ८ ॥

(जिनु हिय हिय हिय उवन जिनु हो) श्री जिनेन्द्रने अपने हितको साधन करते हुए आत्महितका प्रकाश किया है (जिनु हिय हिय जिन हिय उत्तु हो) श्री जिनेन्द्रने अपना हित किया है ऐसी हितकारी बात जिन भगवानने कही है (जिन जिनय हिय जिनु) श्री जिनेन्द्र हितको प्राप्त जिन हैं ॥ ९ ॥

(जिन हुव हुव हुव उवन जिनु हो) श्री जिनेन्द्र कर्मोंको होम करके जिन हुए हैं (जिन हुव हुव जिन हुव उत्तु हो) श्री जिनेन्द्र कर्मोंको जलाकर जिन हुए हैं ऐसा कहा गया है (जिन जिनय हुवन जिनु) श्री जिनेन्द्र कर्म भस्म करनेको होम कर्ता जिन है ॥ १० ॥

(जिन गुप्ति गुप्ति गुप्ति तार जिनु हो) श्री जिनेन्द्र मन वचन कायकी गुप्तिसे ध्यान द्वारा भवसमुद्रसे अपनेको तारके जिन हुए हैं (जिन गुप्ति गुप्ति जिन उत्तु हो) श्री जिनेन्द्र अपने स्वरूपके भीतर गुप्त हैं—मगन हैं ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (जिन जिनय गुप्ति जिनु) श्री जिनेन्द्र स्वरूपगुप्त जिन हैं ॥ ११ ॥

(जिनु जान जान जिन जान मउ हो) श्री जिनेन्द्र अपने चलनेके लिये आप ही रथ हैं या जहाज हैं, वे जहाज स्वरूप ही हैं (जिन जान विवान स उत्तु हो) उसी यानको जहाज कहा गया है, जो वीतराग स्वरूप है (जिन जिनय जान जिनु) श्री जिनेन्द्र आप ही वीतरागमई जहाज हैं ॥ १२ ॥

(जिनु पयह पयह पय रमन जिनु हो) श्री जिनेन्द्र अपने जिनपदमें ही रमण करते हैं (जिन पय पय पय पय उत्तु हो) जिनेन्द्रने जिनपदको ही यथार्थ मोक्षमार्ग या मोक्ष कहा है (जिनु जिनय पयं जिनु) श्री जिनेन्द्र स्वयं जिन स्वरूप पद हैं ॥ १३ ॥

(जिन अलष अलष गुप्ति तार जिनु हो) जिनेन्द्र ही स्वयं अनुभवगोचर अतीन्द्रिय हैं अपनेमें गुप्त हैं, आप ही अपनेको तारनेवाले जिन हैं (जिन अलष अलष दर्सतु हो) वे जिनेन्द्र इस अनुभवगोचर आत्मतत्वको दिख-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जिनु अगम अगम गुप्ति तार अगम हो) श्री जिनेन्द्र अगम हैं—अनुभवगोचर हैं—स्वरूपगुप्त हैं व तारनेवाले हैं (जिन अगम अगम विलसंतु हो) वे जिनेन्द्र अपने आत्मानुभवसे प्राप्त अगम आनन्दका भोग करते हैं (जिन जिनय अगम जिनु) वे जिनेन्द्र मन वचन कायसे अगोचर जिन हैं ॥ १५ ॥

(जिनु दिप्ति दिप्ति सु दिप्ति जिनु हो) श्री जिनेन्द्र अपने ज्ञानमें प्रकाशमान जिन हैं (जिनु दिप्ति दिप्ति दिपि उत्तु हो) जिनेन्द्रके ही यथार्थ ज्ञान दीपका प्रकाश कहा गया है (जिन जिनय दिप्ति जिनु) श्री जिनेन्द्र अपने ज्ञानमें दीप्तमान जिन हैं ॥ १६ ॥

(जिन समय समय सम समय जिनु हो) श्री जिनेन्द्र ही समभावमें लीन परमात्मा समयसार जिन हैं (जिन समय समय सिधि रत्त हो) श्री जिनेन्द्र परमात्मारूप होकर हर समय सिद्धभावमें लवलीन हैं (जिन जिनय समय जिनु) श्री जिनेन्द्र ही वीतराग परमात्मा हैं ॥ १७ ॥

(जिन कर्न कर्न अकिर्न जिन हो) श्री जिनेन्द्र स्वयं ही साधनरूप होकर साधन कर रहे हैं (जिन कर्न कर्न सम साहि हो) श्री जिनेन्द्रने वीतरागभावके साधनसे समभावका साधन किया है (जिन जिनय कर्न जितु) श्री जिनेन्द्र ही वीतरागमय साधन हैं ॥ १८ ॥

(जिन सुवन सुवन सुव सुवन जिनु हो) श्री जिनेन्द्र परिणमनशील होकर अपने जिन स्वभावमें परिणमन कर रहे हैं (जिनु सुवन सुवन सुइ उत्तु हो) श्री जिनेन्द्र ही परिणमनशील कहे गये हैं (जिन जिनय सुवन जिनु) श्री जिनेन्द्र ही परिणमनशील जिन हैं ॥ १९ ॥

(जिन उवन उवन उव साहि जिनु हो) श्री जिनेन्द्र अपने ज्ञान प्रकाशके द्वारा आपको साधन कर चुके हैं (जिन साहि साहि सम साहि हो) श्री जिनेन्द्रने अपने ज्ञानके द्वारा साधन करके समभावको साधन किया है (जिन जिनय साहि जिनु) श्री जिनेन्द्र ही वीतरागतासे साधन करनेवाले जिन हैं ॥ २० ॥

(जिन उवन उवन सम उवन जिनु हो) श्री जिनेन्द्र ही प्रकाशरूप समभावको उदय रखते हुए जिन हैं (जिन उवन साह सम उत्तु हो) श्री जिनेन्द्रने अपने उदयसे समभावका साधन किया है ऐसा कहा गया है (जिन जिनय उत्त जिनु) श्री जिनेन्द्रको ही वीतराग जिन कहा गया है ॥ २१ ॥

(जिन अर्क अर्क सम अर्क जिनु हो) श्री जिनेन्द्र ही सूर्यके समान प्रतापशाली व समभावधारी सूर्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं (जिन अर्क भक उदयंतु हो) वे जिनेन्द्र सूर्यके समान सदा ही उदयरूप हैं (जिन जिनय अर्क जिन) श्री जिनेन्द्र ही वीतराग सूर्य हैं ॥ २२ ॥

(जिन अर्क अर्क सुइ अर्क जिन हो) श्री जिनेन्द्र ही सूर्यके समान ज्ञानमई सूर्य हैं (जिन अर्क अर्क कलयंतु हो) वे जिनेन्द्र सूर्यसमान अपने ज्ञानका अनुभव करते हैं (जिन जिनय कलन जिनु) वे स्वात्मानुभवी जिन हैं ॥ २३ ॥

(जिन कलन कलन कलि कलन जिनु हो) श्री जिनेन्द्र स्वरूपका अनुभव करनेवाले जिन हैं (जिन कलन अर्क कलयंतु हो) वे जिनेन्द्र अपने अनुभवमें ज्ञान सूर्यका अनुभव करते हैं (जिन जिनय कलन जिनु) श्री जिनेन्द्र ही स्वात्मानुभवी जिन हैं ॥ २४ ॥

(जिन रुइय रुइय जिन कलन जिन हो) श्री जिनेन्द्र अपने परमावगाढ़ सम्यक्तके द्वारा वीतरागभावका अनुभव करनेवाले हैं (जिन रुइय रुइय कलयंतु हो) वे जिनेन्द्र निर्मल सम्यग्दर्शनका अनुभव करते हैं (जिन जिनय रुई जिन) वे जिनेन्द्र सम्यग्दृष्टी जिन हैं ॥ २५ ॥

(जिन चरन चरन चर कलन जिनु हो) श्री जिनेन्द्र यथाख्यात चारित्रमें चलनेवाले स्वात्मरमी जिन हैं (जिन चरन चरन कलयंतु हो) वे जिनेन्द्र वीतराग चारित्रका अनुभव करते हैं (जिन चरन कलन जिन) वे जिनेन्द्र चारित्रका अनुभव करनेवाले हैं ॥ २६ ॥

(जिन चरन कलन रुइ कलन जिन हो) श्री जिनेन्द्र चारित्रमें लीन हो उसका अनुभव कर रहे हैं (जिन कलन कमल कलयंतु हो) श्री जिनेन्द्र स्वानुभवमें आत्मारूपी कमलका स्वाद लेते हैं (जिन चरन कलन जिन) श्री जिनेन्द्र चारित्रका अनुभव करनेवाले जिन हैं ॥ २७ ॥

(जिन कलन चरन चर रुइय जिन हो) श्री जिनेन्द्र चारित्रका अनुभव करते हुए व सम्यग्दर्शनमें चलते हुए जिन हैं (जिन कमल कलन कलयंतु हो) वे आत्मारूपी कमलमें लीन हो उसका अनुभव कर रहे हैं (जिन कलन कमल जिनु) श्री जिनेन्द्र आत्मारूपी कमलके स्वामी जिन हैं ॥ २८ ॥

(जिन उवन रमन रुई कलन जिन हो) श्री जिनेन्द्र ज्ञानके प्रकाशमें रमते हुए सम्यक्तका स्वाद लेरहे हैं (जिनु कलन कमल कलयंतु हो) श्री जिनेन्द्र कमल समान आत्माके भीतर लीन होकर मग्न हैं (जिन उवन [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जिन कलन कमल रुई नंत जिन हो) श्री जिनेंद्र आत्मारूपी कमलमें मग्न हो अनंतकाल तक सम्यक्त भावके धारी हैं (जिन उवन कमल धुव नंत हो) वे जिनेंद्र प्रकाशमान कमल समान अनंत काल तक ध्रुव रहते हैं (जिन उवन कमल जिन) श्री जिनेंद्र प्रकाशमान कमल समान हैं ॥ ३० ॥

(जिन उवन सेनि कलि कलन मउ हो) श्री जिनेंद्र तेरहवें गुणस्थानमें आरूढ होकर स्वानुभव कर रहे हैं (जिन कलन सेनि जिन उत्तु हो) उसीको जिनेंद्रने प्रफुल्लित कमल समान परमात्माकी श्रेणी कहा है (जिन उवन कमल जिनु) श्री जिनेन्द्र प्रकाशमान कमलके समान जिन हैं ॥ ३१ ॥

(जिन तारन तरन सु कमल मउ हो) श्री जिनेन्द्र तारणतरण उत्तम कमल समान प्रकाशित हैं (जिन कमल सुवन सिधि रत्तु हो) श्री जिनेन्द्र प्रफुल्लित कमल समान आत्मामें परिणमन करते हुए सिद्धभावमें लीन हैं (जिन सिद्ध कमल जिन) वे जिनेन्द्र सिद्ध हैं अविकसित कमल समान हैं ॥ ३२ ॥

(जिन तारन तरन विवान मउ हो) श्री जिनेन्द्र तारणतरण जहाज स्वरूप हैं (विवान कमल सम उत्तु हो) उस जहाजको कमलके समान शोभायमान कहा गया है (जिन कमल धुवं जिन) वे जिनेन्द्र ध्रुव अविनाशी कमल हैं ॥ ३३ ॥

(जिन तारन तरन कलि कमल मउ हो) श्री जिनेन्द्र तारणतरण स्वरूप गुप्त कमलके समान विकसित हैं (सम समय सिद्धि संपत्तु हो) वे जिनेन्द्र समभाव सहित परमात्मा हो सिद्धगतिको पाते हैं (जिन जिनय सिद्ध जिन) वे जिनेन्द्र सिद्ध भगवान हैं ॥ ३४ ॥

भावार्थ—इस अर्क चौतीसीमें श्री अरहन्त परमेष्ठीके अन्तरंग आत्मीक गुणोंकी स्तुति की है। इसको ध्यानपूर्वक पढ़नेसे अरहन्त परमात्माका अन्तरङ्ग स्वरूप अपने ध्यानमें आता है। आत्माकी आत्मारूप यथार्थ श्रद्धा सम्यग्दर्शन है, आत्माका यथार्थ ज्ञान सम्यग्ज्ञान है, आत्मामें लीन होना सम्यक्चारित्र है, तीनोंकी एकता ही स्वात्मानुभव है, यही मोक्षमार्ग है। इसी स्वात्मानुभवके द्वारा भव्यजीव उन्नति करता हुआ अरहन्त परमात्मा होजाता है, सूर्य समान केवलज्ञानी होजाता है, कमल समान प्रफुल्लित व शोभायमान तथा पूर्ण विकसित होजाता है। यह आत्मा भव-समुद्रसे पार होनेके लिये जब आत्मानुभव रूपी जहाज बनाता है, आप ही उसपर चढ़ता है तब आप ही संसार-समुद्रको पार कर परमात्मा होजाता है। मोहका नाश होनेसे जिनेन्द्र परमात्मामें कोई राग द्वेष मोहादि विकार नहीं होते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं, वे पूर्ण समभाव तथा वीतराग भावके धारी हैं। वे शुद्ध ज्ञान दर्शन स्वरूप हैं, परमावगाढ़ सम्यक्त-रूप हैं, यथाख्यात चारित्रके धारी हैं, निरन्तर स्वात्मरमी है, परमानन्दका रस पान करते हैं। वे अरहन्त सिद्धभावमें लीन होकर सिद्ध होजाते हैं। तात्पर्य कहनेका यह है कि भव्य जीवको अपने आत्मामें ही मोक्षमार्गको ढूंढ़ना चाहिये। भीतर ही मोक्षमार्ग है, भीतर ही मोक्ष है। जो स्वरूपका प्रेमी हो अपने आत्माको शुद्धात्मा रूप ध्याता है वही परमात्मा होजाता है। वास्तवमें सामायिक ही समताभाव देती है व आत्मानुभव जगाती है इसीलिये सामायिक करना योग्य है। नियमसारमें कहा है—

विरदो सव्वसावज्जे तिगुत्तो पिहिदिंदिओ। तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥ १२५ ॥

जो समो सव्वभूदेसु थावरेसु तसेसु वा। तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे ॥ १२६ ॥

जस्स सण्णिहिदो अप्पा संजमे णियमे तवे। तस्स सामाइगं ठाइ इदि केवलिसासणे ॥ १२७ ॥

भावार्थ—जो भव्य जीव सर्व पापकार्योंसे विरक्त होकर मन वचन कायकी गुप्तिको रखता है व इंद्रियोंके विषयोंका निरोध करता है उसीके स्थिर सामायिक होती है ऐसा केवलीके शासनमें कहा है। जो सर्व प्राणियोंपर स्थावर व त्रस जन्तुओंपर समभाव रखता है, राग द्वेष नहीं करता है, उसीके स्थिर सामायिक होती है ऐसा केवलीके शासनमें कहा है। जिसके संयममें, नियममें व तपमें आत्माकी ओर सम्मुखता होती है अर्थात जो संयम, नियम व तप धारकर आत्माका रमण करनेवाला होता है उसीके स्थिर सामायिक होती है ऐसा केवलीके शासनमें कहा है।

(११४) कमल कलन गाथा २४०८ से २४२० तक।

उव उवन उवन उव उवन सरत्ते, उव उवन पयं पय सिद्धि जिनुत्ते।
जिन जिनय जिनं जिन जिनवर जिनत्ते, जिन समय उवन जिन सिद्धि संपत्ते ॥ १ ॥
जिन जिन लडिया, जिन जिनवर पेषउ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पय पयं पयं पिय पिय जिन रत्ते, पिय पियं पियं पय समय संजुत्ते ।
सम समय समय सुइ समय जिनुत्ते, पिय सब्द समय जिन मुक्ति सरत्ते ॥ जिन० ॥ ३ ॥
हिय हियं हियं हुव रमन जिनुत्ते, हुव हुवं हुवं अवयास संजुत्ते ।
अवयास असह सुइ साह सहंत्ते, सुइ साह सुवन ध्रुव नन्त जिनुत्ते ॥ जिन० ॥ ४ ॥
अवयास उवन सुइ रमन जिनुत्ते, तं रमन पियं पिय परिनै उत्ते ।
प्रमान जिनय जिन चरन जिनुत्ते, सुइ कलन कमल सुइ सिद्धि संपत्ते ॥ जिन० ॥ ५ ॥
सुइ सुवन सुयं सुइ उवन जिनुत्ते, सुइ रमन जिनय जिनु समय स उत्ते ।
रुइ समय रमन जिन कमल स उत्ते, सुइ कलन कमल जिनु सिद्धि संपत्ते ॥ जिन० ॥ ६ ॥
जय जयो जयो जय जिनवर उत्ते, जै जयं जय जै जयं जिनुत्ते ।
पै कमल कदल गम अगम स उत्ते, पै अगम समय जिनु सिद्धि संपत्ते ॥ जिन० ॥ ७ ॥
सुइ कदल कमल कलि चरन स उत्ते, सुइ पुलिन सहाव जिन जान जिनुत्ते ।
सुइ जान जान रिजु विपुल स उत्ते, सुइ अलष समय जिनु सिद्धि संपत्ते ॥ जिन० ॥ ८ ॥
सुइ पुलिन सुयं जय गगन जयवंते, सुइ गगन कमल चर कलन जिनुत्ते ।
मै उवन गगन गम अगम गमंते, जै गगन कमल जिन सिद्धि संपत्ते ॥ जिन० ॥ ९ ॥
सुइ गगन सहाव चर कलन जिनुत्ते, सुइ कलन कमल जिन कमल कलंते ।
सुइ कलन कमल कलि कलिन अनंते, सुइ गहिर अनन्त जिन सिद्धि संपत्ते ॥ जिन० ॥ १० ॥
सुइ कलस सहज जिन ससि जिनुत्ते, ससि सिद्धि रमन जिनु जिनय स उत्ते ।
ससि कमल रमन जिन कलन जिनुत्ते, ससि रमन समय जिनु सिद्धि संपत्ते ॥ जिन० ॥ ११ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ससि रमन सुयं जिन भवन जिनुत्ते, सुइ भवन विंद जिनु कमल कलंते ।
सुइ नन्त विंद उव विंद स उत्ते, सुइ भवन विंद जिनु सिद्धि संपत्ते ॥ जिन० ॥ १२ ॥
जिन जिनय सेनि जिन कलन संजुत्ते, सुइ कलन सहज जिनु सेनि जिनुत्ते ।
सुइ तारन तरन कलि कमल स उत्ते, जय तार कमल सम सिद्धि संपत्ते ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(उव उवन उवन उव उवन मात्ते) ज्ञानका उदय होते होते ज्ञान केवलज्ञानमें परिणमन कर जाता है (उव उवन पयं पय सिद्धि जिनुत्ते) जब परमात्मपदका प्रकाश होता है तब सिद्धपद प्राप्त होजाता है ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (जिन जिनय जिनं जिन जिनवर जिनुत्ते) कर्मोंको तथा रागादिको जीतनेवाले श्री जिनेन्द्र ही परम वीतरागी जिन हैं (जिन समय उवन जिन सिद्धि संपत्ते) जब आत्माका पूर्ण प्रकाश होता है तब जिनेंद्र सिद्धपदको पालेते हैं ॥ १ ॥

(जिन जिन लड़िया जिन जिनवर पेषउ) जिसने श्री जिनेन्द्रसे लौ लगाई-प्रेम किया उसने ही जिनेन्द्रके स्वरूपको पहचाना है (मम समय रमन स्वामी मुक्ति पहुते) फिर वही जब समभावके साथ आत्मामें रमण करता है तब मोक्षको पहुंच जाता है ॥ २ ॥

(पय पयं पयं पिय पिय जिन रत्ते) जो प्रत्येक पदमें निरंतर अत्यन्त प्रिय श्री जिनेंद्रके स्वभावमें लीन होता है (पिय पियं पियं पिय समय संजुते) साथमें अपने परम प्यारे निज आत्माके पदके साथ प्रेम करता है-अर्थात् श्री जिनेंद्रके स्वरूपको पहचानकर उसीके समान अपने आत्माको ध्याता है-स्वात्मानुभव करता है (सम समय समय सुइ समय जिनुत्ते) वही समभावका धारी आत्मा आत्माके भावोंमें उन्नति करता हुआ परमात्मा होजाता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (पिय सब्द समय जिन मुक्ति सरत्ते) प्रिय शब्दके अनुसार शुद्धात्मा या समयसार होकर श्री जिनेन्द्र मुक्तिको प्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥

(हिय हियं हियं हुव रमन जिनुत्ते) जो बड़े हितसे हितकारी आत्मध्यानरूपी होममें रमण करता है उसी तरह जैसा जिनेन्द्रने कहा है (हुव हुवं हुव अवयास संजुत्ते) वह कर्मोंको होम करता हुआ आकाशके समान केवलज्ञानको पालेता है (अवयास अमह सुइ साह सहंते) तथा उसी अनन्त ज्ञानमई साध्यमें स्थिर रहता है, अर्थात् ज्ञान चेतनामय होता है (सुइ साह सुवन धुव नंत जिनुत्ते) वही जिनेन्द्र साध्यको पाकर ध्रुव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(अवयास उवन सुइ रमन जिनुत्ते) जब केवलज्ञान प्रगट होजाता है, तब वे जिनेन्द्र उसीमें रमण करते हैं, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (तं रमन पियं पिय परिनय उत्ते) उसी शुद्ध ज्ञानमें रमणको परम इष्ट शुद्ध परिणति कही गई है (प्रमान जिनय जिन चरन जिनुत्ते) वही केवलज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण है। श्री जिनेन्द्र वीतराग चारित्रके साथ उसीमें आचरण करते हैं, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (सुइ कलन कमल सुइ सिद्धि संपत्ते) केवलज्ञानमें रमण सो ही कमल समान प्रफुल्लित आत्माका अनुभव है, ऐसा ही स्वानुभवी परमात्मा सिद्धगतिको पाता है ॥ ५ ॥

(सुइ सुवन सुयं सुइ उवन जिनुत्ते) जो कोई स्वयं आपमें परिणमन करता है वही उन्नति करता है। ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (सुइ रमन जिनय जिनु समय स उत्ते) वही वीतराग भावमें रमण करता हुआ जिनेन्द्र परमात्मा होजाता है, ऐसा कहा गया है (सुइ समय रमन जिन कमल स उत्ते) स्वात्मरमण करनेवाले जिनेन्द्रको कमल समान कहा गया है (सुइ कलन कमल जिनु सिद्धि संपत्ते) वही आत्मारूपी कमलमें रमण करनेवाला जिन सिद्धगतिको पाता है ॥ ६ ॥

(जय जयो जयो जिय जिनवर उत्ते) ऐसे ही जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो, जय हो। वे कर्मविजयी हैं ऐसा कहा गया है (जै जयं जयं जे जयं जिनुत्ते) उनकी सदा जय बनी रहती है। फिर कर्म उनको गिरा नहीं सकते, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (पय कमल कदल गम अगम स उत्ते) वे ही तीर्थंकर जिन सुवर्ण कमलोंके पत्तोंपर चलते हैं अथवा वे ही जिन अपने आत्मारूपी कमलके गुणरूपी पत्तोंमें चलते हैं तथा निश्चयसे वे अगम हैं, अतीन्द्रिय हैं, स्वानुभवगम्य हैं ऐसा कहा गया है (पै अगम समय जिनु सिद्धि संपत्ते) वे अतीन्द्रिय पदके धारी परमात्मा जिनेन्द्र सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ ७ ॥

(सुइ कदल कमल कलि चरन स उत्ते) उन्हीं जिनेन्द्रको गुणरूपी पत्तोंके धारी आत्मारूपी कमलमें मगन चारित्ररूप कहा गया है (सुइ पुलिन सहाव जिन जान जिनुत्ते) उन्हींको कमलके धारी जलस्थल समान स्वभावको रखनेवाले परमात्मा जानो, ऐसा कहा गया है अर्थात् कमल भी वही आत्मा है व कमलकी उत्पत्तिका जल स्थान भी वही परमात्मा है (सुइ जान जान रिजु विपुल स उत्ते) उसी परमात्मारूपी जलस्थलको परम सरल अर्थात् रिजु जानो तथा उसीको महान् विशाल अर्थात् विपुल जानो, ऐसा कहा गया है। अर्थात् परमात्मारूपी जलस्थल सरल व विशाल है—वीतरागता सहित समभावमय है तथा अस-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूपातप्रदेशी है या गुणोंकी अपेक्षा अनन्त है (सुइ मलष समय जिनु सिद्धि संपत्ते) ऐसा ही अतीन्द्रिय अलष जिनेन्द्र परमात्मा सिद्धगतिको पाता है ॥ ८ ॥

(सुइ पुलिन सुयं जय गगन जयवंते) वही आत्मारूपी जलस्थल स्वयं आत्माका आकाश समान ज्ञान है उसकी जय हो। अर्थात् आत्माका मुख्य गुण ज्ञान है वही वीतराग व अनन्त है, उसी ज्ञानके द्वारा कमल समान आत्माका विकास होता है (सुइ गगन कमल चर कलन जिनुत्ते) उसी आकाश समान ज्ञानसे जो कमल समान आत्मा विकसित होता है उसीके स्वाद लेनेको कलन या स्वात्मरमण कहते हैं (मै उवन गगन गम अगम गमंते) यह आकाश समान केवलज्ञान स्थूल सूक्ष्म सर्व जानने योग्यको जानता है (जै गगन कमल जिन सिद्धि संपत्ते) ऐसे केवलज्ञानकी जय हो, जिसके प्रतापसे कमल समान श्री जिनेन्द्र सिद्धगतिको पाते हैं ॥ ९ ॥

(सुइ गगन महाव चर कलन जिनुत्ते) उसी आकाश समान ज्ञान स्वभावमें चलनेको या रमनेको जिनेन्द्रने आत्माका कलन कहा है (सुइ कलन कमल जिन कमल कलंते) वही आत्मारूपी कमलका अनुभव श्री जिनेन्द्ररूपी कमलका अनुभव करता है। आत्मा और परमात्मामें निश्चयसे कोई भेद नहीं है (सुइ कलस कमल कलि कलिन अनंते) वही परमात्मा कलशके समान हैं जिसके भीतर आप ही आत्मारूपी कमल हैं। जिस आत्मारूपी कमलमें अनन्त गुणरूपी कलियें हैं उनको वह अनुभव कर रहा है (सुइ गहिर अनंत जिन सिद्धि संपत्ते) ऐसे गम्भीर अनन्त वीर्यधारी जिनेन्द्र आत्मा सिद्धगतिको पाते हैं ॥ १० ॥

(सुइ कलस सहज जिन ससि जिनुत्ते) वह परमात्मारूपी कलश सो ही स्वभावमें रमनेवाले जिन हैं उनहीको चन्द्रमा भी जिनेन्द्रने कहा है। क्योंकि वे आत्मानन्दरूपी अमृतका स्वाद स्वपर प्रदान करते हैं व परम शांत हैं (ससि सिद्ध रमन जिनु जिनय स उत्ते) यह चन्द्रमाके समान परमात्मा जिनेन्द्र सिद्ध स्वभावमें रमण करते हैं, ऐसा कहा गया है (ससि कमल रमन जिन कलन जिनुत्ते) इसी चन्द्रमा समान शांत आत्माको आत्मारूपी कमलमें रमण करनेवाला जिनेन्द्र स्वानुभवी है ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (ससि रमन समय जिनु सिद्धि संपत्ते) यही चन्द्रमा समान आत्मा अपने वीतराग परमात्माके स्वभावमें रमण करता हुआ सिद्धगतिको पालेता है ॥ ११ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यही जिनभवन है–जिनमंदिर है ऐसा जिनेन्द्रने कहा है। आत्मा ही जिन मंदिर है, आत्मा ही चन्द्रमा है जो अपने आत्मारूपी भवनका आराधन कर रहा है (सुइ भवन विंद जिनु कलन कलंते) यह ज्ञानमई भवन वीतराग जिनेन्द्रकी रमणतामें रमण करता है–अर्थात् वह भवन समान आत्मा अपने शुद्ध परमात्म स्वभावमें तन्मय है (सुइ नन्त विंद उव विंद स उत्ते) उस अनन्त ज्ञानको स्वानुभव रूप कहा गया है (सुइ भवन विंद जिनु सिद्धि संपत्ते) उस अनन्त ज्ञानका भवन आत्मा जिनेन्द्र सिद्धगतिको प्राप्त करता है ॥ १२ ॥

(जिन जिनय स्रेनि जिन कलन संजुत्ते) श्री जिनेन्द्रका गुणस्थान सयोगकेवली जिन वीतराग भवनमें रमणता सहित है (सुइ कलन सहज जिनु स्रेनि जिनुत्ते) जहां स्वात्मरमणता है वही स्वाभाविक जिनेन्द्रकी श्रेणि है या पद है ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (सुइ तारन तरन कलि कमल स उत्ते) उन्हीं जिनेन्द्रको तारणतरण तथा आत्मारूपी कमलमें मगन कहा गया है(जय तार कमल सम सिद्धि संपत्ते) वही तारक कमल सम आत्मा समभाव सहित सिद्धगतिको प्राप्त कर लेता है ॥ १३ ॥

भावार्थ—इस स्तोत्रमें जिन भक्ति और स्वानुभवको उत्तम प्रकारसे बताया है। जो सम्यग्दृष्टी भलेप्रकार श्रद्धान करके श्री जिनेन्द्रकी भक्ति करता है–उनके गुणोंमें तन्मय होता है वह अपने आत्माके गुणोंमें तन्मय होता हुआ स्वात्मानुभव प्राप्त करता है क्योंकि निश्चय नयसे आत्मा और परमात्माके भीतर स्वभावकी दृष्टिसे कोई अन्तर नहीं है–यही स्वात्मानुभव ही मोक्षमार्ग है। जो इस स्वानुभवके मार्ग द्वारा अभ्यास करता है वही चढ़ता हुआ अरहन्त परमात्मा होजाता है। वह अनन्त केवलज्ञानका धारी होजाता है, वह उसी शुद्ध केवलज्ञानमें रमण करता हुआ ज्ञानचेतना रूप रहता है। अरहन्तमें कर्मचेतना व कर्मफलचेतना नहीं है, शुद्ध ज्ञानचेतना है। वे स्वात्मरमी जिनेन्द्र परमात्माका भोग करते रहते हैं। वे तारणतरण इसलिये कहलाते हैं कि उनकी दिव्यवाणीसे अनेकोंका उद्धार होता है, वे स्वयं वीतरागी रहते हुए समभावसे सिद्ध होजाते हैं।

इस स्तोत्रमें यह भी संकेत किया है कि तीर्थंकर भगवानका बिहार देव रचित सुवर्ण कमलोंपर आकाशमें होता है। इसीको निश्चयनयसे घटाया जावे तो वह अपने प्रफुल्लित आत्मारूपी कमलपर ही गमन करते हैं। स्तोत्रमें बड़ी उत्तमतासे आत्माको ही कमलकी उपमा दी है, आत्माको ही कमलका उत्पादक जलस्थल कहा है। आत्माको कमलके धरनेका घट कहा है। तथा आत्माको ही चन्द्रमाकी उपमा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दी है व आत्माको ही जिन भवन बताया है। इन सब उपमाओंका भावार्थ यही है कि आत्मा ही आत्मामें आत्मासे आत्माकी शुद्ध परिणति लेकर आत्माहीके लिये आत्माको रमण कराता है। व्यवहारसे षट्-कारक कार्यकल्प है। निश्चयसे एक स्वात्मानुभवकी दशा है, जो विकल्प रहित है, अतीन्द्रिय है, अलख है, अगम है। यही दशा यथार्थमें परमात्मा पदकी है। उस परमात्माके पदका अनुभव उसीको होता है, जो स्वयं अतीन्द्रिय स्वात्मानुभवमें लीन होता है। केवलज्ञानको प्रत्यक्ष प्रमाण कहा है, इसी ज्ञानके द्वारा प्रत्यक्ष स्पष्ट अनन्तगुण व पर्यायधारी आत्माका साक्षात् दर्शन होता है। वह परमात्मा कर्म रहित व शरीर रहित ही सिद्ध होजाता है। भाव यही है कि हे भव्यजीवो! श्री अरहन्त परमात्मारूपी कमलमें ऐसे मगन हो जैसे भ्रमर मगन होता है। उनकी निश्चय स्तुति व भक्ति करो, जिसके द्वारा स्वानुभव प्राप्त हो। तब वहां भी परम सुख शांति मिले व आगामी सिद्धपदका लाभ हो। स्वानुभव ही होमकी अग्नि है जिससे कर्म भस्म होते हैं। जिनेन्द्रने जो धर्म बताया है वह परम शांत व स्वानुभवरूप है। जो इसको साधेगा वही साध्य प्राप्त कर लेगा। वास्तवमें सामायिक या साम्यभाव परम कल्याणकारी है।

नियमसारमें कहा है—

जस्स रागो दु दोसो दु बिगडिं ण जणेति दु। तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे ॥ १२८ ॥
जो दु अट्टं च रुद्दं च झाणं वज्जेदि णिच्चसो। तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे ॥ १२९ ॥

भावार्थ—जिस वीतरागीके भावोंमें राग और द्वेष विकार नहीं पैदा करते हैं उसीके स्थिर सामायिक होती है ऐसा केवलीके शासनमें कहा है। जो कोई सदा ही आर्त व रौद्रध्यानको छोड़कर धर्मध्यान करता है उसीके स्थिर सामायिक होती है, ऐसा केवलीके शासनमें कहा है।

(११५) चौबीस अर्करली गाथा २४५१ से २४८९ तक।

उव उवन उवन उव उवन रली, उव उवन समय रलि मुक्ति मिली ॥ १ ॥
हम अपने उवन पै माडोगि रली, उव उवन समय रलि मुक्ति चली (आचरी) ॥ २ ॥
उव उवन उवन कलि कमल रली, उव कलन कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उव उवन चरन उव चरन रली, उव चरन कमल रलि सिद्धि मिली ॥ हम० ॥ ४ ॥
उव उवन रमन उव रमन रली, उव रमन कमल ध्रुव मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ ५ ॥
उव उवन कमल ध्रुव उवन रली, उव रमन ध्रुवं सम कर्न मिली ॥ हम० ॥ ६ ॥
उव कलन कमल ध्रुव रमन रली, अन्मोय कमल ध्रुव कर्न मिली ॥ हम० ॥ ७ ॥
उव चरन कमल ध्रुव रमन रली, उव कमल चरन ध्रुव कर्न मिली ॥ हम० ॥ ८ ॥
उव रमन कमल ध्रुव रमन रली, उव कमल रमन ध्रुव स्रवन मिली ॥ हम० ॥ ९ ॥
उव कलन चरन ध्रुव कमल रली, ध्रुव कमल कर्न रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ १० ॥
उव उवन दर्स रलि कमल रली, उव कमल कर्न दर्स मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ ११ ॥
उव उवन इष्ट उव रमन रली, उव रमन कमल कर्न मुक्ति चली ॥ हम० ॥ १२ ॥
उव उवन लषन रलि कमल रली, उव अलष कमल कर्न मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ १३ ॥
उव उवन गमन कलि कमल रली, उव अगम कमल कन मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ १४ ॥
उव उवन अर्क रलि कमल रली, उव कमल अर्क कर्न मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ १५ ॥
उव उवन समय कर्न सुवन रली, उव सुवन कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ १६ ॥
उव सुवन रमन रलि हंस रली, उव हंस कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ १७ ॥
उव उवन हंस अवयास रलि, अवयास कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ १८ ॥
उव उवन अवयास रलि दिप्ति रली, उव दिप्ति कमल दलि मुक्ति चली ॥ हम० ॥ १९ ॥
उव उवन दिप्ति सुइ दिप्ति रली, उव दिप्ति कमल रली मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २० ॥
उव उवन सुदिप्ति रलि अभय रली, सुइ अभय कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उव उवन अभय रलि सुर्क रली, उव सुर्क कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २२ ॥
उव उवन सुक रलि अर्थ रली, सर्वार्थ कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २३ ॥
उव उवन अर्क रली विंद रली, उव विंद कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २४ ॥
उव उवन विंद रलि नंद रली, जय नन्द कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २५ ॥
उव उवन नंद आनन्द रली, आनन्द कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २६ ॥
आनन्द उवन रलि समय रली, सुइ समय कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २७ ॥
उव उवन समय रलि हिय उवन रली, हिय कमल रमन रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २८ ॥
हिय उवन रमन रलि अलष रली, हिय अलष कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ २९ ॥
उव उवन अलष रलि अगम रली, उव अगम कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ ३० ॥
उव उवन अगम रलि सहयार रली, सहयार कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ ३१ ॥
उव उवन सहयार रलि रमन रली, उव कमल रमन रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ ३२ ॥
उव उवन रमन रलि रंज रली, सुइ रंज कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ ३३ ॥
उव सुयं रंज रलि उवन रली, सुइ उवन कमल रलि मुक्ति मिली ॥ हम० ॥ ३४ ॥
सुइ उवन उवन रलि षिपन रली, उव षिपन कमल रलि मुक्ति चली ॥ हम० ॥ ३५ ॥
उव उवन षिपन रलि ममल रली, उव ममल कमल रलि सिद्धि चली ॥ हम० ॥ ३६ ॥
उव उवन अर्क उव पट्ट रली, उव पट्ट कमल पय पर्म मिली ॥ हम० ॥ ३७ ॥
विन्यान वीय मउ उवन रली, सुइ अर्क कमल रलि सिद्धि चली ॥ हम० ॥ ३८ ॥
चौबीस अर्क रलि कमल रली, कलि कलन कमल रलि सिद्धि मिली ॥ हम० ॥ ३९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्वयसहित अर्थ—(उव उवन उवन उव उवन रली) आत्मज्ञानका प्रकाश होकर केवलज्ञान प्राप्त होगया है (उव उवन समय रलि मुक्ति मिली) जब आत्माको केवलज्ञान प्राप्त होजाता है तब उसे मुक्तिका लाभ होता है ॥१॥

(हम अपने उवन पै माडोगि रली) हमें अपने भीतर आत्मज्ञानके लाभसे मानो निधि मिल गई है (उव उवन समय रलि मुक्ति चली) आत्मा केवलज्ञानके लाभपर मुक्तिको पहुँचता है ॥ २ ॥

(उव उवन उवन कलि कमल रली) ज्ञानके प्रकाश होनेपर प्रफुल्लित कमल समान आत्मा होजाता है (उव कलन कमल रलि मुक्ति मिली) जब आत्मा कमल समान पूर्ण प्रफुल्लित हो जाता है, तब मुक्ति मिल जाती है ॥ ३ ॥

(उव उवन चरन उव चरन रली) स्वरूपाचरण चारित्रके द्वारा यथाख्यात वीतराग चारित्र होजाता है (उव चरन कमल रलि सिद्धि मिली) जब कमल सम आत्माको पूर्ण चारित्र प्राप्त होजाता है, तब उसे सिद्ध-गति मिल जाती है ॥ ४ ॥

(उव उवन रमन उव रमन रली) ज्ञानके भीतर रमण होनेसे पूर्ण रमणता या स्थिरतासे रमणता मिल जाती है (उव रमन कमल ध्रुव मुक्ति मिली) जब यह रमणता विकसित कमलके समान परमात्मामें होती है तब ध्रुव अविनाशी मुक्ति मिल जाती है ॥ ५ ॥

(उव उवन कमल ध्रुव उवन रली) जब प्रफुल्लित कमल समान आत्मा ध्रुवरूपसे स्वात्म ज्ञानमें तन्मय होजाता है (उव रमन ध्रुवं सम कर्न मिली) तब इस रमणतासे अविनाशी ध्रुव समता मिल जाती है, जो मोक्षका साधन है ॥ ६ ॥

(उव कलन कमल ध्रुव रमन रली) जब स्वात्मानुभव करते २ आत्मारूपी कमल ध्रुवरूपसे स्वात्मरमण-ताको पालेता है (अन्मोय कमल ध्रुव कर्न मिली) तब आत्मारूपी कमल आनन्दमई होजाता है और तब यह परमानन्दमई आत्मानुभव ध्रुवरूपसे मोक्षको साध लेता है ॥ ७ ॥

(उव चरन कमल ध्रुव रमन रली) कमल समान आत्मामें चलनेसे ध्रुवरूपसे आत्मामें रमणता प्राप्त होजाती है (उव कमल चरन ध्रुव कर्न मिली) इस कमलमई आत्मामें आचरण करनेसे ध्रुव मोक्षका साधन मिल जाता है ॥ ८ ॥

(उव रमन कमल ध्रुव रमन रली) आत्मारूपी कमलमें रमण करनेसे ध्रुवरूपसे रमणता प्राप्त होजाती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है (उव कमल रमन ध्रुव स्रवन मिली) इसी आत्म–कमलमें रमण करनेसे ध्रुवरूपसे आत्मानन्दका स्रोत या झरना मिल जाता है ॥ ९ ॥

(उव कलन चरन ध्रुव कमल रली) स्वचारित्रका अनुभव करनेसे कमल समान आत्मा पूर्ण विकसित हो जाता है (ध्रुव कमल कर्न रलि मुक्ति मिली) ध्रुवरूपसे आत्मारूपी कमलमें स्थिर रहना ही वह साधन है जिससे मोक्ष प्राप्त होजाती है ॥ १० ॥

(उव उवन दर्स रलि कमल रली) आत्मज्ञानके अनुभवको करते हुए यह आत्मा कमलके समान विकसित होजाता है (उव कमल कर्न दर्स मुक्ति मिली) कमल समान आत्माका अनुभव ही वह साधन है जिससे मोक्ष मिलती है ॥ ११ ॥.

(उव उवन इष्ट उवन रमन रली) आत्मज्ञानके प्रेमसे ही आत्मामें रमण होता है (उव उवन कमल कर्न मुक्ति चली) कमल समान आत्माका उदय ही वह साधन है जिससे मुक्ति आजाती है ॥ १२ ॥

(उव उवन लषन रलि कमल रली) जब आत्माका लक्षण ध्यानमें लिया जाता है तब ही कमल समान आत्माका लाभ होता है (उव अलष कमल कर्न मुक्ति मिली) जब अतीन्द्रिय आत्मारूपी कमलका अनुभव होता है तब ही वह साधन बनता है जिससे मुक्ति मिले ॥ १३ ॥

(उव उवन गमन कलि कमल रली) जब ज्ञानका ज्ञानमें परिणमन होता है तब ही प्रफुल्लित कमल समान आत्माका लाभ होता है (उव अगम कमल कर्न मुक्ति मिली) अनुभवगोचर अतीन्द्रिय आत्मारूपी कमलका अनुभव ही वह साधन है जिससे मुक्ति मिलती है ॥ १४ ॥

(उव उवन अर्क रलि कमल रली) जब आत्मारूपी सूर्यका उदय होता है तब ही कमलसमान आत्माका लाभ होता है (उव कमल अर्क कर्न मुक्ति मिली) जब कमल तथा सूर्यके समान आत्माका अनुभव होता है तब ही मुक्ति मिलती है ॥ १५ ॥

(उव उवन समय कर्न सुवन रली) सम्यग्ज्ञानी आत्मा ही आत्मीक परिणतिमें रमणका साधन है (उव उवन कमल रलि मुक्ति मिली) जब आत्मा कमल समान अपने विकसित स्वभावमें परिणमन करता है तब ही मुक्तिका लाभ होता है ॥ १६ ॥

(उव सवन रमन रलि हंस रली) जब आत्मा स्वाभाविक परिणतिमें रमण करता है तब हंसके समान

निर्मल आत्माका लाभ होता है (उव हंस कमल रलि मुक्ति मिली) ...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्मल आत्माका लाभ होता है (उव हंस कमल रलि मुक्ति मिली) हंसके समान शुद्धोपयोगी आत्मारूपी कमल मुक्तिका लाभ करता है ॥ १७ ॥

(उव उवन हंस अवयास रली) जब शुद्धोपयोगी आत्माका उदय होता है तब केवलज्ञानका लाभ होता है (अवयास कमल रलि मुक्ति मिली) केवलज्ञानधारी आत्मारूपी कमल मुक्तिको प्राप्त करता है ॥ १८ ॥

(उव उवन अवयास रलि दिप्ति रली) आकाशके समान अनन्त ज्ञानके प्रकाशसे आत्माका प्रकाश होजाता है (उव दिप्ति कमल रलि मुक्ति मिली) प्रकाशमान कमल समान आत्मा ही मुक्तिको पहुंच जाता है ॥१९॥

(उव उवन दिप्ति सुइ दिप्ति रली) आत्मज्ञानकी ज्योतिसे ही केवलज्ञानकी ज्योति मिलती है (उव दिप्ति कमल रलि मुक्ति मिली) केवलज्ञानसे प्रकाशमान कमल समान आत्माको ही मुक्तिका लाभ होता है ॥ २० ॥

(उव उवन सुदिप्ति रलि अभय मिली) सम्यग्ज्ञानकी ज्योतिके प्रगट होनेसे आत्मा अभय होजाता है, सर्व भय जाता रहता है (सुइ अभय कमल रलि मुक्ति मिली) सर्व भय रहित कमल समान आत्मा ही मुक्तिको पाता है ॥ २१ ॥

(उव उवन अभय रलि सुर्क रली) अभय भावमें रमण करनेसे शान्त व प्रभावशाली सूर्यसम आत्माका लाभ होता है (उव सुर्क कमल रलि मुक्ति मिली) इसी ही सूर्य व कमल सम आत्माका होना मुक्तिको प्राप्त करता है ॥ २२ ॥

(उव उवन सुर्क रलि अर्क रली) सूर्य समान आत्माका उदय सोही आत्मीक पदार्थका परिणमन है (सर्वार्थ कमल रलि मुक्ति मिली) सर्व प्रकार आत्मीक पदार्थका कमल समान पूर्ण विकसित होना मुक्तिका लाभ कराता है ॥ २३ ॥

(उव उवन अर्क रलि विंद रली) सूर्य समान आत्माका प्रकाश होनेपर आत्मज्ञानमें रमण करता है (उव विंद कमल रलि मुक्ति मिली) कमल समान आत्माका अनुभव होनेपर मुक्तिका लाभ होता है ॥ २४ ॥

(उव उवन विंद रलि नंद रली) आत्मानुभवके होनेपर आत्मीक आनन्द होता है (जय नन्द कमल रलि मुक्ति चली) कमल समान आत्मामें आनन्दकी जब विजय होती है तब मुक्तिकी तरफ गमन होता है। अर्थात् अनन्त सुखका अनुभव मुक्तिको देता है ॥ २५ ॥

(उव उवन नंद आनन्द रली) आत्मीक आनन्दके अनुभवसे ही अनन्त सुख प्रगट होता है (आनन्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमल रलि मुक्ति मिली) **जब कमल समान आत्मामें अनन्त सुख प्रगट होता है तब मुक्तिका लाभ होता है ॥ २६ ॥**

(आनन्द उवन रलि समय रली) **अनन्त सुखके लाभसे परमात्मा पद प्रगट होता है** (सुइ समय कमल रलि मुक्ति मिली) **वही कमल समान परमात्मा मुक्तिको प्राप्त करता है ॥ २७ ॥**

(उव उवन समय रलि हिय उवन रली) **परमात्माके प्रकाशके द्वारा हितकारी ज्ञानका प्रकाश होता है** (हिय कमल रमन रलि मुक्ति मिली) **हितकारी कमल समान आत्मामें रमण होनेसे मुक्तिका लाभ होता है ॥२८॥**

(हिय उवन रमन रली अलष रली) **जब हितकारी ज्ञानमें रमण होता है, तब अतीन्द्रिय आत्मामें परिणमन होता है** (हिय अलष कमल रलि मुक्ति मिली) **जब अतींद्रिय कमल समान आत्माका पूर्ण अनुभव होता है, तब मुक्तिका लाभ होता है ॥ २९ ॥**

(उव उवन अलष रलि अगम रली) **जब अतीन्द्रिय ज्ञानका प्रकाश होता है तब ही मन, वचन, कायसे अगोचर आत्माका ध्यान होता है** (उव अगम कमल रलि मुक्ति मिली) **अनुभवगोचर कमल समान आत्माके लाभसे ही मोक्ष होती है ॥ ३० ॥**

(उव उवन अगम रलि सहयार रली) **अतीन्द्रिय ज्ञानमें रमण करनेसे मोक्षका साधन मिलता है** (सहयार कमल रलि मुक्ति मिली) **इस कमल समान आत्मामें रमणरूप साधनसे मुक्तिका लाभ होता है ॥ ३१ ॥**

(उव उवन सहयार रलि रमन रली) **आत्मानुभवकी सहायतासे आत्मामें रमण होता है** (उव कमल रमन रलि मुक्ति मिली) **आत्मारूपी कमलमें रमण करनेसे मोक्ष मिलती है ॥ ३२ ॥**

(उव उवन रमन रलि रंज रली) **स्वात्म रमणके द्वारा आत्मामें मग्नता होती है** (सुइ रंज कमल रलि मुक्ति मिली) **जब कमल समान आत्मामें पूर्णपने रंजायमानपना होता है तब मुक्ति मिलती है ॥ ३३ ॥**

(उव सुयं रंज रलि उवन रली) **जो आत्मा स्वयं अपनेमें मगन होता है उसीके ज्ञानका प्रकाश होता है** (सुइ उवन कमल रलि मुक्ति मिली) **जब आत्मारूपी कमल पूर्ण प्रकाश होता है तब मुक्ति मिलती है ॥ ३४ ॥**

(सुइ उवन उवन रलि षिपन रली) **आत्मानुभव करते करते कर्मोंका नाश होता है** (उव षिपन कमल रलि मुक्ति मिली) **जब कर्मोंके क्षयसे आत्मारूपी कमलमें क्षायिक भाव प्रगट होता है, तब मोक्ष मिलती है ॥ ३५ ॥**

Ganesh Varni Digamber Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(उव उवन षिपन रलि ममल रली) क्षायिक भावोंके प्रकाशसे आत्माकी शुद्धता होती है (उव ममल कमल रलि सिद्धि चली) जब कमल सम आत्मा शुद्ध होजाता है तब सिद्धगतिको चला जाता है ॥ ३६ ॥

(उव उवन अर्क उव पद रली) आत्मारूपी सूर्यके प्रकाशसे निर्वाणका पद मिलता है (उव पद कमल पय पर्म मिली) जब निर्वाण पदपर कमलरूप आत्मा पहुंचता है तब सिद्ध परमात्माका पद मिलता है ॥ ३७ ॥

(विन्यान वीर्य चउ उवन रली) आत्मज्ञानकी शक्तिसे ही अनन्तज्ञानादि चार अनन्त चतुष्टयकी प्राप्ति होती है (सुइ अर्क कमल रलि सिद्धि चली) वही सूर्य या कमल समान आत्मा सिद्धगतिको जाता है ॥ ३८ ॥

(चौवीस अर्क रलि कमल रली) चौवीस सूर्योंके समान चौवीस ऋषभादि महावीर पर्यंत तीर्थंकरोंके लाभसे एक चौवीस पत्रोंका सुन्दर कमल बन जाता है। अर्थात् मनके भीतर २४ तीर्थंकरोंका ध्यान २४ कमलके द्वारा किया जाता है (कलि कलन कमल रलि सिद्धि मिली) इसी चौवीस कमलके द्वारा आत्मध्यान करनेसे सिद्धगतिकी प्राप्ति होती है ॥ ३९ ॥

भावार्थ—इस चौवीस अर्क रलीका भाव यह है कि सूर्य समान समदर्शी वीतराग केवलज्ञानी चौवीस तीर्थंकरोंके गुणोंका मनन व ध्यान करनेसे अपने आत्माके गुणोंका स्मरण होता है। परमात्माकी भक्तिसे आत्मामें रमणताके लिये सहारा मिलता है। शुद्ध निश्चयनयसे आत्माका स्वभाव शुद्ध है। इसीपर दृष्टि रखकर साधकको योग्य है कि अपना उपयोग सर्व परपदार्थोंसे हटाकर इसी आत्माके ज्ञानमें रोके। आत्मानुभव ही मोक्षमार्ग है। इसीके द्वारा कर्मोंका क्षय होने लगता है। आत्मानुभव करनेसे ही क्षायिक सम्यग्दर्शन होता है। आत्मानुभवसे ही क्षायिक चारित्र होता है। आत्मानुभवरूपी शुक्लध्यानसे ही केवलज्ञान होता है, तब अनन्त चतुष्टय प्रगट होजाते हैं। आत्मानुभवके साधनमें ही अतींद्रियपना होता है, तब अतींद्रिय आनन्दका लाभ होता है। यही लाभ आनन्दके लाभको बढ़ाते बढ़ाते अनन्त सुखके रूपमें होजाता है। आत्माका स्वभाव मन, वचन, कायसे अगोचर अनुभवगम्य है। जब उपयोगको मन, वचन, कायसे हटाया जाता है, तब ही उसका अनुभव होता है। स्वानुभव ही मोक्षमार्ग है, पूर्ण स्वानुभव ही मोक्ष है। स्वानुभवमें सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तीनों गर्भित हैं।

आत्माको कमलकी उपमा विकाश भावके कारणसे दी है। सूर्यकी उपमा अनन्त ज्ञानके प्रकाशके कारण दी है। जब आत्मा स्वानुभव करता है, तब सर्व भय रहित होता है। इसी अभय भावसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्ण अभय भाव प्राप्त होजाता है। भय नोकषायका नाश होजाता है। आत्मा ही परम ज्ञानानन्द अमृतका भण्डार है। इसीके पूर्ण लाभसे सर्व कर्म क्षय होते हैं व आत्माको मुक्तिका लाभ होता है। मुमुक्षुको सामायिकका अभ्यास करना योग्य है। नियमसारमें कहा है—

जो दु पुण्णं च पावं च भावं वज्जेदि णिच्चसा। तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे ॥ १३० ॥
जो दु हस्सं रई सोगं अरतिं वज्जेदि णिच्चसा। तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे ॥ १३१ ॥
जो दुगंछा भयं वेदं सव्वं वज्जेदि णिच्चसा। तस्स सामाइगं ठाई इदि केवलिसासणे ॥ १३२ ॥

भावार्थ—जो सदा पुण्य या पापरूप शुभ अशुभ भावोंको हटाता है उसीके स्थिर सामायिक होती है, ऐसा केवलीके शासनमें कहा है। जो कोई हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, तथा वेद इन नौ नोकषायोंको भावोंसे हटाता है उसीके स्थिर सामायिक होती है, ऐसा केवलीके शासनमें कहा है।

(११६) उपयोगसार फूलना गाथा २४६० से २४७७ तक।

पय पयह पयं रमि पयह जै रैया, पय उवन पयोग सिय मुक्ति रमैया ॥ १ ॥
उव उवन उवन सारो उवन जिनैया, जिन जिनय समय रमि मुक्ति मिलैया (आचरी) ॥ २ ॥
पय पयह पयोग मइ पयोग सजैया, उव उवन पयोग सिय पयोग मिलैया ॥ उव० ॥ ३ ॥
उव उवन विंद रै विंद विन्यान समैया, विंद उवन कमल विंद कर्न रमैया ॥ उव० ॥ ४ ॥
सम समय समय सिय उवन समैया, सुइ कलन कमल अन्मोए उवन जिनैया ॥ उव० ॥ ५ ॥
सुइ नंद नंद सिय उवन नंदैया, सुइ नंद कमल नंद मुक्ति मिलया ॥ उव० ॥ ६ ॥
हिय हियं हियं हिय उवन हिय रैया, हिय कमल कलन कलि हियन जिनैया ॥ उव० ॥ ७ ॥
जान जान सिय उव विवान रमैया, सोइ जान कमल जिन मुक्ति मिलैया ॥ उव० ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लष लषण लषन लषि उव अलष लषैया, उव लषन कमल लषि अलष जिनैया ॥ उव० ॥१०॥
निल निलय निलय निल निलय सरैया, जिन निलय कमल उव मुक्ति रमैया ॥ उव० ॥११॥
भद्र भद्र उव भद्र उवन जिनैया, जय भद्र कमल कलि मुक्ति मिलैया ॥ उव० ॥१२॥
मै उवन उवन उव उवन सरैया, मै उवन कमल कलि सिद्धि रमैया ॥ उव० ॥१३॥
सुइ सहज सहज उव सहज सरैया, सुइ सहज कमल जय जयो जिनैया ॥ उव० ॥१४॥
पय उवन उवन उव उवन सरैया, पय उवन कमल कलि मुक्ति मिलैया ॥ उव० ॥१५॥
पय पयं पयं पय रमन रमैया, रम रमन पयोग सिय मुक्ति मिलैया ॥ उव० ॥१६॥
उव उवन स्वनि जिन स्वेनि जिनैया, कलि कलन कमल उव मुक्ति रमैया ॥ उव० ॥१७॥
सुइ तार तरन तर तार तरैया, तर तार कमल कर्न मुक्ति मिलैया ॥ उव० ॥१८॥

अन्वय सहित अर्थ—(पय पयह पयं रमि पयह जै रैया) आत्माके पदमें रमण करते हुए परमात्मपदमें रमण होता है उस रमणकी जय हो (पय उवन पयोग सिय मुक्ति रमैया) आत्मीक पदमें रमनेसे जो शुद्धोपयोग होता है वही परम शुद्ध होता हुआ मुक्तिके भावमें रमण करता है ॥ १ ॥

(उव उवन उवन सारो उवन जिनैया) ज्ञानका उदय होते होते सार ज्ञान कर्मोंको जीतनेवाला प्रगट होता है (जिन जिनय समय रमि मुक्ति मिलैया) जब कर्मविजयी आत्मा आत्मामें रमण करता है तब मुक्तिको प्राप्त करता है ॥ २ ॥

(पय पयह पयोग मइ पयोग सजैया) आत्माके पदमें रहनेवाला उपयोग शोभायमान ज्ञानमई शुद्धोपयोग होजाता है (उव उवन पयोग सिय पयोग मिलैया) यही उपयोगका प्रकाश होते होते परम शुद्ध उपयोग होता है ॥ ३ ॥

(उव उवन विंद रै विंद विन्यान समैया) जब ज्ञानका अनुभव होता है तब उसके वेगसे ज्ञानका अनुभव समभाव रूप होजाता है (विंद उवन कमल विंद कर्न रमैया) आत्मज्ञानका अनुभवी आत्मारूपी कमलका अनुभव करता हुआ मोक्षके साधनमें रमण करता है ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सम समय समय सिय उवन समैया) समभाव सहित आत्मा समभावके अभ्याससे शुद्ध समभावको प्रकाश कर देता है (सुइ कलन कमल अन्मोए उवन जिनैया) सो ही समभाव सहित आत्मा कमल समान शुद्धात्माका अनुभव करता हुआ परमानन्दको पाता हुआ जिनराज होजाता है ॥ ५ ॥

(सुइ नंद नंद सिव उवन नंदैया) वही आत्मा स्वात्मानन्दको पाता हुआ शुद्ध अनन्तसुखको प्रगट कर देता है (सुइ नंद कमल नंद मुक्ति मिलैया) वही आत्मानन्दी शुद्ध कमल समान आत्मामें आनन्द पाता हुआ मोक्षको पालेता है ॥ ६ ॥

(हिय हियं हियं हिय उवन हियैया) आत्माके हितसे प्रेम करता हुआ आत्मा अपने हितमें लगा हुआ परम हितका प्रकाश कर देता है (हिय कमल कलन कलि हियन जिनैया) हितकारी आत्मारूपी कमलका अनुभव करता हुआ परम हितकारी जिनराज होजाता है ॥ ७ ॥

(जान जान सिय उव विवान रमैया) मोक्षमार्गपर चलता हुआ यह आत्मा शुद्ध होकर तारणतरण श्री अरहन्तके भावमें रम जाता है (सोई जान कमल जिन मुक्ति मिलैया) वही मोक्षमार्गी कमल समान प्रफुल्लित जिनेन्द्र होता हुआ मोक्षका लाभ कर लेता है ॥ ८ ॥

(जय जयन उवन जय जयन रमैया) जैनधर्मकी जय हो। जिसमें यह धर्म उदय होता है वह वीतराग भावमें रम जाता है (जै जैन कमल कलि मुक्ति मिलैया) जैनधर्मकी जय हो। इसके द्वारा जो कमल समान शुद्धात्माका अनुभव करता है वह मुक्तिको पालेता है ॥ ९ ॥

(लष लषन लषन लषि उव अलष लषैया) जो आत्माके लक्षणको पहचान कर उसके द्वारा आत्माका मनन करता है वह अतीन्द्रिय आत्माका अनुभव पाजाता है (उव लषन कमल लषि अलष जिनैया) वही कमल समान शुद्धात्माका लक्षण पहचान कर अतीन्द्रिय जिन होजाता है ॥ १० ॥

(निल निलय निलय निल निलय सैया) जो आत्माके भीतर आत्मारूपी घरमें विश्राम करता है वह मोक्षके घरमें चला जाता है (जिन निलय कमल उव मुक्ति रमैया) जो श्री जिनेन्द्ररूपी कमलमें लीन होता है, सो ही मोक्षमें रमण करता है ॥ ११ ॥

(भद्र भद्र उव भद्र जिनैया) श्री जिनेन्द्र भगवान परम भद्र हैं। परम शुद्ध हैं, परमोत्तम हैं (जय भद्र कमल कलि मुक्ति मिलैया) वे शुद्ध आत्मारूपी कमलका अनुभव करते हुए मुक्तिका लाभ करते हैं ॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(मै उवन उवन उव उवन सैरेया) ज्ञानका प्रकाश बढ़ते बढ़ते केवलज्ञानमय होजाता है (मै उवन कमल कलि सिद्धि रमैया) केवलज्ञानी जिनेन्द्र शुद्धात्मारूपी कमलका स्वाद लेते हुए सिद्धगतिमें रमण करते हैं॥ १३

(सुइ सहज सहज उव सहज सैरेया) सहज स्वभावमें रमण करनेसे सहज स्वभाव पूर्ण प्रगट होजाता है (सुइ सहज कमल जय जयो जिनैया) वही सहज स्वभावी कमल समान आत्मा कर्मोंको जीतकर जिनेन्द्र हो जाता है ॥ १४ ॥

(पय उवन उवन उव उवन सैरेया) आत्मीक पद प्रगट होते होते परमात्मपद होजाता है (पय उवन कमल कलि मुक्ति मिलैया) परमात्मा विकसित कमल समान आत्माका अनुभव करते हुए मोक्षको प्राप्त करलेते हैं ॥१५॥

(पय पयं पयं पय रमन रमैया) आत्मा प्रत्येक पदमें या श्रेणीमें श्रावक हो या मुनि हो निज पदमें ही रमण करता हुआ रमणशील होजाता है (रम रमन पयोग सिय मुक्ति मिलैया) आत्माराममें रमण करते हुए जब उपयोग परम शुद्ध होजाता है तब वे मुक्तिका लाभ करते हैं ॥ १६ ॥

(उव उवन सेनि जिन सेनि जिनैया) गुणस्थानोंकी श्रेणीपर चढ़कर श्री जिनेन्द्र सयोगकेवली जिनकी श्रेणीपर आजाते हैं (कलि कलन कमल उव मुक्ति रमैया) तब कमल समान प्रफुल्लित आत्मामें रमते हुए मोक्ष-पदमें रमण करते हैं ॥ १७ ॥

(सुइ तार तरन तर तार तरैया) वे ही जिनेन्द्र तारण तरण अनेकोंको भवसागरसे तारकर स्वयं तर जाते हैं (तर तार कमल कर्न मुक्ति मिलैया) वे तरण तारण आत्मारूपी कमलके साधनसे मुक्तिको प्राप्त करलेते हैं ॥१८॥

भावार्थ—इस उपयोगसार फूलनामें आत्माके ज्ञानोपयोगकी महिमा बताई है। आत्मा जब यह पहचानता है कि शुभ व अशुभ दोनों ही उपयोग अशुद्ध हैं, एक शुद्धोपयोग शुद्ध है तथा शुद्धोपयोग ही मोक्षमार्ग है, शुद्धोपयोगमें श्रद्धापूर्वक रमण करनेसे उपयोग कषायोंका दमन करता हुआ शुद्ध होजाता है। जब मोहका बिलकुल क्षय होजाता है, तब उपयोग वीतरागमय शुद्ध होजाता है। जब केवलज्ञानका प्रकाश होता है तब स्पष्ट प्रत्यक्ष आत्माको व सर्व जानने योग्यको देखता हुआ उपयोग परम शुद्ध होजाता है। स्वात्माके शुद्ध स्वभावमें रमण करनेसे ही शुद्धोपयोग झलकता है। यह आत्माका एक सहज स्वाभाविक भाव है, यही वास्तवमें सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रकी एकतारूप मोक्षमार्ग है, यही जैनधर्म है, इसीके प्रतापसे यह आत्मा शुद्ध होता है, अरहन्त होकर सिद्ध होजाता है,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्धोपयोगके रमणसे ही समभाव प्रगट होता है तथा अतीन्द्रिय आनन्दका स्वाद आता है। शुद्धोपयोग होसे आत्माका सच्चा हित होता है। आत्माका लक्षण ज्ञानचेतना रूप है। वीतरागता सहित ज्ञान दर्शन स्वरूप है, ऐसा जो जानता है वही शुद्धोपयोगको पाता है। तात्पर्य यह है कि जिसको मोक्षलाभ करना हो वह सहज ही आत्मामें विराजित कषाय रहित शुद्धोपयोगका अभ्यास करे, आत्माके शुद्ध स्वभावमें रमै, आत्मानन्द पावे, कर्ममल काटकर परमात्मा होजावे और निरन्तर मोक्षके अनुपम सुखको भोगे। वास्तवमें साधकको सामायिकमें रमना चाहिये। जैसा नियमसारमें कहा है—

सम्मं मे सव्वभूदेसु वैरं मज्झं ण केणवि। आसाए वासरित्ता णं समाहि पडिवज्जए ॥ १०४ ॥
णिक्कसायस्स दांतस्स सूरस्स ववसायिणो। संसारभयभीदस्स पच्चक्खाणं सुहं हवे ॥ १०५ ॥
एवं भेदब्भासं जो कुव्वइ जीवकम्मणो णिच्चं। पच्चक्खाणं सक्कदि धरिदें सो संजदो णियमा ॥ १०६ ॥

भावार्थ—ऐसा विचारना चाहिये कि मेरा सर्व प्राणियोंपर समभाव है, मेरा वैर किसीके साथ नहीं है। मैं सर्व आशा तृष्णाको छोड़कर समाधिभावको प्राप्त करता हूँ। जो कषाय रहित है, इंद्रियविजयी है, वीर भावधारी है, पुरुषार्थी है, संसारके पतनसे भयभीत है, उसीके परवस्तुका त्याग सुखसे होता है। इस प्रकार जो जीव और कर्मोंके भेदका अभ्यास सदा करता रहता है, वही संयमी शुद्धात्माको ध्याता हुआ परके त्याग करनेको समर्थ है, वही प्रत्याख्यान कर सकता है।

(११७) बंधविलय फूलना गाथा २४७८ से २४९० तक।

उव उवन उवन उव मिलन है, सुइ बंध जिनाई।
उव उवन रमन रस परिणामो सुइ बंध विलाई ॥ १ ॥
जय जयो जयो जय रमन सुई, सुइ उवन रमाई।
उव उवन सहावे समय जिन जे मुक्ति मिलाई (आचरी) ॥ २ ॥
दिसि दिसि सुइ दिसि जिन, दिसि उवन दिखाई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust, eGangotri

सुइ दिष्टि इष्टि रमि समय सुइ, रमि मुक्ति मिलाई ।। जै० ।। ३ ।।
दिपि दिप्ति दिप्ति नंत समय दिपि, दिपि समय दिपाई ।
सुइ दिष्टि इष्टि रमि उवन रिस्टि रमि मुक्ति रमाई ।। जै० ।। ४ ।।
जै सब्द सब्द सुइ सब्द पिऊ उव सब्द समाई ।
सुइ सब्द समय नंत रमन पिऊ रमि मुक्ति मिलाई ।। जै० ।। ५ ।।
सुइ सब्द समय नंता सब्द पिऊ उव सब्द समाई ।
उवन सब्द रस ध्रुव रमन ध्रुव मुक्ति मिलाई ।। जै० ।। ६ ।।
हिय हियं हियं हिय समय हिय समय रमाई ।
हिय उवन उवन ध्रुव उवन हियं रलि मुक्ति मिलाई ।। जै० ।। ७ ।।
हुव हुवन हुवन नंता हुव समय हुव समय रमाई ।
हुव हुवन उवन ध्रुव हिय उवन हुव मुक्ति मिलाई ।। जै० ।। ८ ।।
सहन समय नंता सहन रलि रलि समय सहाई ।
सुइ उवन सहल सम समय मौ सह मुक्ति मिलाई ।। जै० ।। ९ ।।
साह समय नंत समय साह रलि साह समाई ।
उवन साह ध्रुव रमन रमि सह मुक्ति मिलाई ।। जै० ।। १० ।।
स उव रमन उव उवन पौ पिय उवन रमाई ।
उवन रमन सुइ अमिय रस रमि मुक्ति मिलाई ।। जै० ।। ११ ।।
समय गमन नंता उव गमन रमि गमन रमाई ।
उव उवन गमन चिंतामनि चिति मुक्ति मिलाई ।। जै० ।। १२ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वास वास समय उववास रलि वास संभाई ।
उव उवन वास मलयागिरि वलि मुक्ति वसाई ॥ जै० ॥ १३ ॥

अन्वयसहित अर्थ—(उव उवन उवन उव उवन मिलन हैं सुइ वंच जिनाई) जब आत्मज्ञान प्रगट होकर ज्ञानमें मिल जाता है अर्थात् ज्ञानचेतनामई भाव होता है तब कर्मोंके बन्धको जीत लिया जाता है (उव उवन रमन रस परिणमो सुइ वंध विलाई) जब ज्ञानमें रमण करके आत्मीक रसका स्वाद आता है तब कर्मबन्धका क्षय होता है ॥ १ ॥

(जय जयो जयो जय रमंन सुई सुइ उवन रमाई) आत्मीक ज्ञानमें रमणकी जय हो, जय हो, जय हो, यही स्वरूपमें रमण है (उव उवन सहावे समय जिन जै मुक्ति मिलाई) इसी स्वात्मरमणसे यह आत्मा स्वाभाविक केवल-ज्ञानको पाकर व जिनराज होकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥ २ ॥

(दिप्ति दिप्ति सुइ दिप्ति जिन दिपि उवन दिपाई) सम्यग्ज्ञानकी ज्योतिमें जगते हुए सम्यग्दृष्टी ज्ञानको बढ़ाता हुआ केवलज्ञानको प्रगट कर देता है (सुइ दिष्टि इष्टि रमि समय सुइ रमि मुक्ति मिलाई) वही केवलज्ञानी अनन्तदर्शन सहित इष्ट परमात्माके पदमें रमण करता हुआ उसी रमणसे मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ ३ ॥

(दिपि दिप्ति दिप्ति नंता समय दिपि दिपि समय दिपाई) ज्ञानकी ज्योति प्रगट होती हुई अनन्त शक्ति सहित आत्माको प्रगट करती हुई आत्माको अनन्तज्ञानी बना देती है (दिष्टि इष्टि रमि उवन दिस्टि रमि मुक्ति रमाई) वही आत्मा अनन्तदर्शन सहित इष्ट परमात्मपदमें रमण करके केवलज्ञानकी खड्गको चमकाता हुआ मुक्तिमें रमण करता है ॥ ४ ॥

(जै सब्द सब्द सुइ सब्द विऊ ऊव सब्द समाई) ध्यानमें हितकारी शब्दोंकी जय हो, उन प्रिय ॐ ह्रीं आदि शब्दोंकी सहायतासे यह शब्दके वाच्य आत्मामें समा जाता है (सुइ सब्द समय नंत रमन पिऊ रमि मुक्ति मिलाई) वही आत्मा शब्दोंके द्वारा शुक्लध्यानको ध्यायकर फिर अनन्त ज्ञानादिमें रमण करता हुआ इस हितकारी रमणसे मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ ५ ॥

(सुइ सब्द समय नंता सह पिऊ उव सब्द समाई) वही आत्मा अनन्त शक्ति धारी हितकारी शब्दोंकी सहा-

Gyaneshwar Digambar Jain Institute, Noria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिलाई) ज्ञान शब्दसे वाच्य शुद्ध ज्ञानके रसमें ध्रुव रूपसे रमण करता हुआ यह आत्मा ध्रुव मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ ६ ॥

(हियं हियं हिय हियं समय हिय समय रमाई) हितकारी आत्माके स्वभावमें हित करता हुआ यह हितकारी आत्मामें रमण करता है (हिय उवन उवन ध्रुव उवन हियं रलि मुक्ति मिलाई) आत्महित स्वरूप ज्ञानको प्रगट करते हुए यह ध्रुव अविनाशी केवलज्ञानको पाकर स्वात्महितमें समाता हुवा मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ ७ ॥

(हुव हुवन हुवन नता हुव समय हुव समय रमाई) यह आत्मा आत्मध्यानका होम करता हुआ अनन्त कर्मोंको जलाकर शुद्धात्मा होकर आत्मा हीमें रम जाता है (हुव उवन उवन ध्रुव हिय उवन हुव मुक्ति मिलाई) आत्मध्यानका होना ज्ञानको प्रगट करता हुआ ध्रुव हितकारी केवलज्ञानको प्रगट कर मोक्षमें पहुंचा देता है ॥ ८ ॥

(सहन समय नंता सहन रलि रलि समय सहाई) आत्मानुभव करता हुआ आत्मा अनन्त गुणोंके समुदाय आत्माका अनुभव पाकर आत्मानुभवी आत्मा होजाता है (सुइ उवन सहज सम समय मौ सह मुक्ति रमाई) वही आत्मा उन्नति करके सहज समभाव रूप होकर अनन्तज्ञानके साथ मोक्षमें रमण करता है ॥ ९ ॥

(साह समय नंता समय सह रलि साह समाई) साधन करनेवाला आत्मा अनन्त शक्तिधारी आत्माके साधनमें मिलकर साध्य स्वरूप शुद्धात्मामें समा जाता है (उवन साह ध्रुव रमन रमि सह मुक्ति मिलाई) वही आत्मा केवलज्ञानको साधन कर उसमें ध्रुवरूपसे रमण करता हुआ इस रमणके साथ मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ १० ॥

(समय रमन उव उवन मौ पिय उवन रमाई) आत्मामें रमण करता हुआ ज्ञानके पदको बढ़ाकर हितकारी आत्मज्ञानमें रमण करता है (उवन रमन सुइ अमिय रस रमि मुक्ति मिलाई) शुद्ध केवलज्ञानमें रमण करता हुआ वही आत्मा आनन्दामृत रससे मगन होता हुआ मोक्षको पालेता है ॥ ११ ॥

(समय गमन नंता उव गमन रमि गमन रमाई) आत्माके भीतर रमण करता हुआ अनन्तज्ञानको पाकर उसी ज्ञानमें रम रहता है (उव उवन गमन चिंतामनि चित मुक्ति मिलाई) उसी चिंतामणिके समान केवलज्ञानको अनुभव करता हुआ यह मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ १२ ॥

(वास वास समय उववास रलि वास समाई) आत्मानन्दकी सुगन्धको लेता हुआ यह आत्मा उसी सुगंधमें ॥ ८९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिलकर उसीमें समा जाता है, आत्मानन्दी होजाता है (उव उवन वास मलयागिरि वसि मुक्ति नसाई) वही आत्मा आत्मानन्दकी सुगन्धसे सदा वासित मलयागिरिके समान निज आत्माहीमें बसकर मोक्षके भीतर वास करता है ॥ १३ ॥

भावार्थ—इस बन्ध विलय स्तोत्रको वारवार पढ़नेसे व मनन करनेसे अवश्य कर्मबन्धका क्षय होगा। कर्मोंका बन्ध आत्माके साथ सागरोंकी स्थितिका होता है। ऐसा बन्ध भी आत्मध्यानकी तीव्रतम अग्निके द्वारा क्षणमात्रमें भस्म होजाता है। आत्माके सच्चे स्वभावकी–द्रव्य स्वभावकी श्रद्धा ही सम्यक्त है। इस सम्यक्त सहित ज्ञानको सम्यग्ज्ञान या आत्मज्ञान कहते हैं। इस आत्मज्ञानमें वीतरागता सहित उपयोगको रमानेसे आत्मध्यानकी अग्नि जलती है, यही अग्नि बढ़ते हुए पहले मोहनीय कर्मको फिर शेष घातीय कर्मोंको जला देती है, तब केवलज्ञान प्रगट होता है तब भी अरहन्त परमेष्ठी ज्ञानचेतनामई ही रहते हैं, ज्ञानके भीतर ही रमते हैं। आत्मज्ञान द्वारा ध्यान करते हुए ध्यानीको सदा आत्मानन्दकी सुगन्ध आती है। वह इसी सुगन्धमें मगन होकर केवलज्ञानके समय अनन्त सुखकी उत्तम सुगन्ध लेता है। यही आत्मानन्दी जीव अघातीय कर्मोंके क्षय होनेपर सिद्ध होजाता है, तब भी मलयागिरके समान शुद्धात्मामें रमण करता हुआ आत्मानन्दकी वासमें मगन रहता है।

आत्मध्यानके साधनमें श्रुतज्ञानकी व श्रुतकेवलीकी सहायता बड़ा काम करती है। शब्द किसी अर्थके वाचक होते हैं। शुद्धात्माके वाचक शब्दोंके द्वारा ही धर्मध्यान तथा शुक्लध्यान होता है। वास्तवमें शब्दब्रह्म ही परब्रह्मका प्रकाशक है–बन्धका नाश वीतराग भावसे होता है। वीतराग भाव साध्य आत्माके भीतर रमणसे होता है। अतएव बन्धके क्षयके लिये शुद्धात्मामें ही उपयोगको रमाकर समभाव प्राप्त करना चाहिये। नियमसारमें कहा है—

वयणोच्चारणकिरियं परिचत्ता वीयरायभावेण। जो झायदि अप्पाणं परमसमाही हवे तस्स ॥ १२२ ॥

संजयणियमतवेण दु धम्मज्झाणेण सुक्कझाणेण। जो झायइ अप्पाणं परमसमाही हवे तस्स ॥ १२३ ॥

भावार्थ—वचनका बोलना व कायकी क्रियाको छोड़कर जो वीतराग भावसे आत्माको ध्याता है उसके परम समाधि प्राप्त होती है। जो कोई संजय, नियम या तपके द्वारा धर्मध्यान तथा शुक्लध्यानको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

(११८) जोगीजोग फूलना गाथा २४९१ से २५०३ तक।

॥ ९१ ॥ जय जयं जयं जय जय रमन सुइ, सुइ सुयं उवन जयवंतु।
उव उवन सहावे जय समय सुइ, जय समय सिद्धि संपत्तु ॥ १ ॥

उव उवन मुक्ति दर्संतु, जिनय जिन जोगी सिधि सहिओ,
उव उवनो है दाता देउ रमन जिन जोगी मुक्ति रलियो।
सुइ समय रमन जिन देउ अगम जिन जोगी सिधि सहिओ (आचरी) ॥ २ ॥

उव उवन दिप्ति सुदिप्ति मउ, उव उवन दिष्टि इष्टंतु।
उव उवन साष छती समो, उव उवन साष सिधि रत्तु,
जिनय जिन योगी साष सहिओ ॥ ३ ॥

उव उवन साष रमन जिन जोगी, पात उवन ढलकंतु।
सुइ पुहुव उवन सम समय विलय जिनु, फल उवन समय सुइ सिद्धि,
जैवंत जोगी मुक्ति सहिओ ॥ ४ ॥

उव उवन सब्द सुइ सब्द मौ, सुइ उवन सब्द पिउ उत्तु।
पिय पिय पियं पिय उवन पियं जिन, पिय सब्द समय सिधि रत्तु,
सिधि रत्त जोगी मुक्ति रलियो ॥ ५ ॥

सुइ सब्द समय सम कन मौ, सुइ कर्न सुवन सुइ उत्तु।
सुइ सुयं सुयं सुइ हिय सहिओ, सुइ सुवन हुवन सिधि रत्तु,
रत जिन जोगी सिधि सहिओ ॥ ६ ॥ ॥ ९१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुव उवन सुवन सुइ सुवन पौ, अवयास नत विगसंतु ।
अवयास विगस सुइ कलन मौ, कलि समय कलन सिधि रत्तु,
कलन जिन जोगी सिधि सहिओ ॥ ७ ॥

कलन कलन कलि कलिय कलन जिन, कलन चरन चरयंतु ।
चर चरिय चरन चर कलन मौ, कलि चरन कलन सिधि रत्तु,
उवन जिन जोगी सिधि सहिओ ॥ ८ ॥

कलन चरन सुइ उवन पौ, उव उवन चरन कलयंतु ।
उव उवन दर्स ढल कलन मौ, उव उवन ढलन सिधि रत्तु,
सुयं जिन जोगी सिधि सहिओ ॥ ९ ॥

कलि कलन चरन चर उवन पौ, उव उवन दर्स ढलनंतु ।
अर्क सुअर्क सुअर्क अक मौ, सम अर्क कमल उवनंतु,
कलन जिन जोगी सिधि सहिओ ॥ १० ॥

कलि कलन कमल उव उवन पौ, उव उवन कमल सिधि रत्तु ।
कलि कलन कमल चरि कमल मौ, उव कमल समय सिधि रत्तु,
कमल जिन जोगी मुक्ति सहिओ ॥ ११ ॥

जिन जिनय सेनि कलि कलन मौ, कलन सेनि जयवंतु ।
जय जयं जयं जय सेनि जय, सुइ कलन सेनि सिधि रत्तु,
सेनि जिन जोगी सिधि सहिओ ॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तारनतरन सु तरन कमल जिन, कलि कमल कर्न समसंतु ।
कलि कमल कर्न उत्र समय पौ, उव समय सिद्धि संपत्तु,
सिद्धि जिन जोगी मुक्ति सहिओ ॥ १३ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जयं जयं जय जय रमन सुइ) जो आत्माके स्वरूपमें रमण करता है उसकी जय हो जय हो जय हो जय हो (सुइ सुयं उवन जयवंतु) वह स्वयं ज्ञानमें बढ़ता है, उसकी जय हो (उव उवन सहावे जय समय सुइ) इस प्रकाशित ज्ञान स्वभावमें लीन होनेसे आत्माकी विजय कर्मोंपर होजाती है (जय समय सिद्धि संपत्तु) विजय प्राप्त आत्मा सिद्धगतिको पालेता है ॥ १ ॥

(उव उवन मुक्ति दर्सेतु जिनय जिन जोगी सिधि सहिओ) ज्ञानके द्वारा मोक्षको देखनेवाले वीतरागी सयोगी जिन सिद्धभाव सहित हैं (उव उवनो है दाता देउ रमन जिन जोगी मुक्ति रलियो) वे परमात्मा देव ज्ञानके दातार प्रकाशमान हैं, वे स्वात्मरमण करनेवाले जिनेन्द्र मोक्षको पालेते हैं (सुइ समय रमन जिन देउ अगम जिन जोगी सिधि सहिओ) वे आत्मामें रमण करनेवाले जिनदेव अतीन्द्रिय जिनराज सिद्धभाव सहित हैं ॥ २ ॥

(उव उवन दिसि सु दिसि मउ) ज्ञान उदय होते होते केवलज्ञान स्वरूप होगया है (उव उवन दिष्टि इष्टंतु) अनन्त दर्शनका प्रकाश भी वहां इष्ट है (उव उवन साष छत्तीस मौ) समभावसे पूर्ण शाखाएँ उस परमात्मा-रूपी वृक्षमें हैं (उव उवन साष सिधि रतु) समभावकी शाखाओंसे शोभायमान हो सिद्धभावमें वे लीन हैं (जिनय जिन योगी साष सहिओ) श्री जिनेन्द्र परम योगी समभावकी शाखाओंको धारनेवाले हैं ॥ ३ ॥

(उव उवन साष रमन जिन जोगी) वे जिनेन्द्र योगी प्रकाशमान वीतरागतामय शाखाओंमें रमण कर रहे हैं (वात उवन ढलकंतु) उन शाखाओंमें ज्ञानके पत्ते हिल रहे हैं । सम्यग्ज्ञानका प्रकाश होरहा है (सुइ सुइय उवन सम समय निलय जिन) श्री जिनेन्द्र समभाव सहित आत्माके घरमें विराजित हैं । यही पुष्पोंका प्रकाश है (कल उवन समय सुइ सिधि) सिद्धगतिका होना सो ही आत्मारूपी वृक्षके फल लगना है (जैवंत जोगी मुक्ति सहिओ) मोक्ष प्राप्त योगीकी जय हो ॥ ४ ॥

(उव उवन सब्द सुइ सब्द मौ) वही शब्द यथार्थ शब्द है जिसके मननसे ज्ञानका प्रकाश हो (सुइ उवन सब्द पिउ उत्तु) ज्ञान प्रकाशक शब्दोंको ही प्रिय शब्द कहा गया है (पिय पियं पियं पिय उवन पियं जिन)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन शब्दोंके द्वारा आत्माका अत्यन्त प्रेम सहित आराधन करनेसे जिनेन्द्रका परम इष्टपद प्रगट होजाता है (पिय सब्द. समय. सिधि रत्तु) उन प्रिय शब्दोंके द्वारा ध्यान करता हुआ यह आत्मा सिद्धभावमें रत होता है (सिधि रत जोगी मुक्ति रलियो) सिद्धभावमें लीन योगी मोक्ष पाता है ॥ ५ ॥

(सुइ सब्द समय सम कर्न मौ) जो कोई शब्द आत्माके भीतर समभाव उत्पन्न करनेमें साधन है (सुइ कर्न सुवन सुइ उत्तु) वही साधन आत्माके शुद्ध परिणमनके लिये कहा गया है (सुइ सुयं सुयं सुइ हिय सहियो) वही साधन स्वयं ही आत्माका हित करता हुआ (सुइ सुवन उवन सिधि रत्तु) उसी साधनसे कर्मोंका होम होता हुआ आत्मा सिद्धभावमें रत होता है (रति जिन जोगी सिधि सहिओ) आत्मामें लीन जिनराज योगी सिद्धगतिको पाते हैं ॥ ६ ॥

(हुव उवन सुवन सुइ सुवन पौ) कर्मोंका होम करते हुए ज्ञान परिणमन करता हुआ अपने शुद्ध परिणमनमें होजाता है (अवयास नंत विगसंतु) तब अनन्त ज्ञानका विकास होजाता है (अवयास विगस सुइ कलन मौ) ज्ञान विकासको पाकर आत्माके अनुभवमें लीन रहता है (कलि समय कलन सिधि रत्तु) ज्ञान आत्माके भीतर रमण करता हुआ सिद्धभावमें रत रहता है (कलन जिन जोगी सिधि सहिओ) आत्मानुभव करते हुए जिनराज योगी सिद्धगतिको पाते हैं ॥ ७ ॥

(कलन कलन कलि कलिय कलन जिन) आत्माका अनुभव करते हुए वीतरागी आत्मा (कलन चरन चरयंतु) स्वभावके आचरणमें आचरण करता है (चर चरिय चरन चर कलन मौ) स्वचारित्रमें आचरण करता हुआ स्वानुभवरूप रहता है (कलि चरन कलन सिधिं रत्तु) इसी चारित्रके अनुभवमें सिद्धभावमें लीन रहता है (उवन जिन जोग सिधि सहिओ) तब प्रकाशमान जिनराज योगी सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ ८ ॥

(कलन चरन सुइ उवन पौ) स्वचारित्रके अभ्याससे परमात्मपद प्रगट होजाता है (उव उवन चरन कलयंतु) परमात्मा प्रगट होकर अपने चारित्रमें ही आचरण करते हैं (उव उवन दर्स ढल कलन मौ) अपने प्रकाशका दर्शन करते हुए वे स्वानुभव रूपमें ही परिणमन करते हैं (उव उवन ढलन सिधि रत्तु) ज्ञान प्रकाशमें परिणमन करते हुए वे सिद्धभावमें रत रहते हैं (सुयं जिन जोगी सिधि सहिओ) वे जिनराज योगी स्वयं सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(कालि कलन चरन चर उवन मौ) स्वचारित्रके अभ्यासके परमात्मपद प्रगट होता है (उव उवन दस ढलनंतु) तब अनन्तदर्शनका प्रकाश होजाता है (अर्क सुअर्क सुअर्क अर्क मौ) तथा परम प्रतापशाली केवलज्ञान सूर्यका प्रकाश होजाता है (सम अर्क कमल उव नंतु) तब आत्मा समताभाव सहित अनेक काल तक सूर्य समान प्रकाशित कमल समान पूर्ण विकसित रहता है (कलन जिन जोग सिधि सहिओ) वे आत्मानुभवी जिनराज योगी मुक्तिको पालेते हैं ॥ १० ॥

(कलि कलन कमल उव उवन पौ) आत्मारूपी कमलके अनुभवसे परमात्मपद प्रगट होता है (उव उवन कमल सिधि रतु) वे कमल समान आत्मा प्रगट होकर सिद्धभावमें लीन रहते हैं (कलि कलन कमल चरि कमल मौ) कमल समान आत्मामें आचरण करते हुए वे कमल स्वरूप ही होजाते हैं (उव कमल समय सिधि रतु) कमल स्वरूपी आत्मा सिद्धभावमें लीन रहता है (कमल जिन जोगी मुक्ति सहिओ) कमल समान जिनराज योगी मुक्तिको पालेते हैं ॥ ११ ॥

(जिन जिनय सेनि कलि कलन पौ) वीतराग जिनेन्द्रका गुणस्थान सयोगकेवली जिन स्वानुभव रूप है (कलन सेनि जयवंतु) वह आत्मानुभवी गुणस्थान जयवन्त रहो (जय जयं जयं जय सेनि जय) इस अरहन्तके पदकी जय हो जय हो जय हो जय हो (सुइ कलन सेनिं सिधि रतु) वे इसी गुणस्थानमें रहते हुए सिद्धभावमें लीन हैं (सेनि जिन जोगी सिधि सहिओ) गुणस्थानपर आरूढ़ जिनराज योगी सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ १२ ॥

(तारन तरन सु तरन कमल जिन) श्री जिनराज जहाजके समान तारण तरण हैं—कमलके समान प्रफुल्लित हैं (कलि कमल कर्न सम नंतु) आत्मारूपी कमलमें मगनता ही अनन्त समभावका साधन है (कलि कमल कर्न उव समय पौ) आत्मारूपी कमलका अनुभव ही परमात्मपदका साधन है (उव समय सिद्धि संपतु) अरहन्त परमात्मा ही सिद्धगतिको पालेते हैं (सिद्ध जिन जोगी मुक्ति सहिओ) आत्माको सिद्ध करनेवाले वीतरागी जिनराज मुक्तिको पालेते हैं ॥ १३ ॥

भावार्थ—इस जोगी जोग फूलनामें यही दरशाया है कि अपने शुद्धात्माका आराधन ही योग है। आत्मानुभव ही ध्यानकी आग है, इसीसे कर्म जलते हैं व आत्माका विकास होता है। ज्ञानका शुद्ध ज्ञानमें परिणमन करना योग है, इसी योगके अभ्याससे केवलज्ञान होता है। जैसे केवलज्ञान होनेके लिये स्वानुभव साधन है वैसे केवलज्ञान होनेपर भी वह शुद्ध स्वानुभव बना रहता है। जब अरहन्त सिद्ध होते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं वहांपर भी वही स्वानुभव है। आत्मारूपी वृक्षका सेवन करनेसे समभावकी शाखाएँ निकलती हैं। सम्यग्ज्ञानके पत्ते लहराते हैं, आत्माका केवलज्ञानरूप होना व वीतरागरूप होना ही द्राप्य है। मोक्ष प्राप्त कर लेना फल है। ध्यानमें सहकारी ॐ ह्रीं आदि शब्दोंका बड़ा भारी सहारा है। शब्दोंके द्वारा आत्माके द्रव्य, गुण, पर्यायका मनन होता है, शब्दोंके पहले पदस्थ ध्यान होता है व शब्दके सहारे शुक्लध्यान भी होता है। शब्दोंके द्वारा केवलज्ञानका प्रकाश होता है। श्रुतज्ञान ही केवलज्ञानका साधन है। यह चारित्र गुण सिद्धोंमें भी प्रकाशित रहता है। इसका तात्पर्य यही है कि स्वानुभवरूपी योगका साधन करे। इसीके साधकको योगी कहते हैं। परमात्मा अरहन्त परम योगी हैं, स्नातक नामके निर्ग्रंथ हैं। वे तरण-तारण हैं, परम हितकारी हैं, परम ज्ञानके दातार परमात्मा देव हैं, उन्हींके गुणोंके सहारेसे हमें अपने आत्माका मनन व अनुभव प्राप्त कर लेना चाहिये।

योगके सम्बन्धमें नियमसारमें कहा है—

रायादीपरिहारे अप्पाणं जो दु जुंजदे साहू। सो जोगभत्तिजुत्तो इदरस्स य कहं हवे जोगो ॥ १३७ ॥
सव्ववियप्पाभावे अप्पाणं जो दु जुंजदे साहू। सो जोगभत्तिजुत्तो इदरस्स य कहं हवे जोगो ॥ १३८ ॥
विवरीयाभिणिवेसं परिचत्ता जेण्हकहियतच्चेसु। जो जुंजदि अप्पाणं णियभावे सो हवे जोगो ॥ १३९ ॥

भावार्थ—जो कोई रागादि भावोंके त्यागमें अपने आत्माको जोड़ता है वही योग भक्ति करता है, दूसरेको योग नहीं होसक्ता। जो सर्व विकल्पोंको छोड़कर निर्विकल्प भावमें अपने आत्माको जोड़ता है वही योग भक्ति सहित है। दूसरेको योग नहीं होसक्ता। जो मिथ्या अभिप्राय छोड़कर जिनेन्द्र भगवान द्वारा कहे गये तत्वोंमें ज्ञान प्राप्त करके अपने ही शुद्ध भावमें अपनेको जोड़ता है वही योग है।

(११९) उत्पन्नरल्ली गाथा २५०४ से २५१९ तक।

जय जैन जैन जै जै मिलो, जै जयो जिनंदे।
जै जयो जयो जय समय जयो उव समय आनंदे ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहु उवन उवन दसंतु दर्स जिन रलि मिलि।
अहु उवन विगसंतु विगरु जिन रलि मिली॥
उवन उवन विलसंतु विलसि जिन रलि मिली।
उव उवन उवन साहंतु साह जिन रलि मिली (आत्वरी)॥ २॥

जय रमन रमन उव रमन रली, जै रमन सनंदे।
ज मिलन मिलन उव मिलन रली जै मिलन जिनंदे॥ अहु०॥ ३॥
जय चरन चरन उव चरन रली, चरि चरन आनंदे।
जै कलन कलन उव कलन रली, जै कलिय जिनंदे॥ अहु०॥ ४॥
जय लषन लषन उव लषन रली, लषि लषन जिनंदे।
जै अलष अलष उव अलष रली, रलि अलष सुनंदे॥ अहु०॥ ५॥
जय गमन गमन उव गमन रली, गम गमन आनंदे।
जै अगम अगम उव अगम रली, जै अगम जिनंदे॥ अहु०॥ ६॥
जय सहन सहन उव सहन रली, जै सहन सनंदे।
जै रहन रहन उव रहन रली, जै रहन जिनंदे॥ अहु०॥ ७॥
जय गहन गहन उव गहन रली, जै गहन आनंदे।
जै लहन लहन उव लहन रली, जै लहन जिनंदे॥ अहु०॥ ८॥
जय इच्छ इच्छ उव इच्छ रली, जै इच्छ सकल नंदे।
जै चेय चेय उव चेय रली, जै चेय जिनंदे॥ अहु०॥ ९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय वेय वेय उव वेय रली, जै वेय आनन्दे ।
जै भेय भेय उव भेय रली, जै भेय जिनन्दे ॥ अहु० ॥ १० ॥

जय नन्द नन्द उव नन्द रली, जै नन्द सनन्दे ।
जै विंद विंद उव विंद रली, ज विंद जिनन्दे ॥ अहु० ॥ ११ ॥

जै षिपन षिपन उव षिपन रली, जै षिपन सनन्दे ।
जै मुक्ति मुक्ति उव मुक्ति रली, जै मुक्ति जिनन्दे ॥ अहु० ॥ १२ ॥

जै स्रेनि स्रेनि जिन स्रेनि रली, जै कलन सनन्दे ।
जै तारन तरन तर तरन रली, जै कलन आनन्दे ॥ अहु० ॥ १३ ॥

जै कमल कमल उव कमल रली, जै कमल सनन्दे ।
जै कर्न कर्न उव कर्न रली, जै खत्रन जिनन्दे ॥ अहु० ॥ १४ ॥

जै स्रेनि कलन उव कलन रली, जै स्रेनि सनन्दे ।
जै तारन तरन सु कमल रली, उव कमल आनन्दे ॥ अहु० ॥ १५ ॥

जै स्रेनि तरन कलि कमल रली, जै कर्न सनन्दे ।
जै तरन कमल उव कर्न रली, जै मुक्ति जिनन्दे ॥ अहु० ॥ १६ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जैन जैन जै जै मिलो जै जयो जिनंदे) जैनधर्म मिल गया है, जैनधर्मकी जय हो, जैनधर्मके बतानेवाले जैनेन्द्रकी जय हो (जै जयो जयो जय समय जयो उव समय आनंदे) आत्माकी जय हो जय हो जिस आत्मामें रमणसे आनन्द आता है ॥ १ ॥

(अहु अपने उवन पै रलि रली) अहो ! अब हम तो अपने ही ज्ञानके भीतर तन्मय हुए हैं (रलि रलन

मिलती है (अह उवन उवन दसन्तु दसे जिम रलि मिलि) अहो ! आत्मज्ञानके अनुभव करनेसे वीतराग जिनेन्द्रका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिलती है (अहु उवन उवन दसंन्तु दसे जिन रलि मिली) अहो ! आत्मज्ञानके अनुभव करनेसे वीतराग जिनेन्द्रका दर्शन मिलता है (अहु उवन उवन विगसंतु विगस जिन रलि मिली) अहो ! ज्ञानका जैसे जैसे प्रकाश होता है वैसे २ जिनेन्द्रका स्वभाव स्पष्ट प्रगट होता है (उवन उवन विलसंतु विलसि जिन रलि मिली) जैसा जैसा ज्ञानमें आनन्द आता है वैसा वैसा जिनराजके स्वभावका आनन्द मिलता है (उव उवन साहन्तु साह जिन रलि मिली) ज्ञानके ही साधनसे श्री जिनराजका स्वभाव साध लिया जाता है ॥ २ ॥

(जय रमन रमन उव रमन मिली जै रमन सनन्दे) आत्मज्ञानमें रमण करनेसे रमणता बढ़ती जाती है, यह रमण आनन्द सहित है इसकी जय हो (जै मिलन मिलन उव मिलन रली, जै मिलन जिनंदे) जैसा जैसा ज्ञान स्वभावमें मिलना होता है वैसा २ श्री जिनेन्द्रके साथ मिलना होता है ॥ ३ ॥

(जय चरन चरन उव चरन रली, चरि चरन आनंदे) आत्माके भीतर चलते चलते चारित्र बढ़ जाता है। इस चारित्रमें चलनेसे आनन्द आता है (जै कलन कलन उव कलन रली जै कलिय जिनंदे) स्वात्माका अनुभव करते२ आत्मानुभव बढ़ता जाता है तब जिनेन्द्रके स्वभावका अनुभव होजाता है ॥ ४ ॥

(जय लषन लषन उव लषन रली, लषि लषन जिनंदे) आत्माका लक्षण पहचानकर जैसे २ उसका मनन किया जाता है वैसे वैसे जिनेन्द्रका लक्षण प्रगट होता है (जै अलष अलष उव अलष रली, रलि अलष सुनंदे) अतीन्द्रिय आत्माके स्वभावका जैसे जैसे अनुभव किया जाता है अतीन्द्रिय स्वभाव अधिक २ स्पष्ट होता है तथा इस अतीन्द्रिय स्वभावके अनुभवमें आनन्द आता है ॥ ५ ॥

(जय गमन गमन उव गमन रली, गम गमन आनंदे) ज्ञानके परिणमनमें जैसा २ प्रवेश किया जाता है वैसा वैसा ज्ञानका परिणमन निर्मल होता जाता है तथा इस ज्ञानके परिणमनमें आनन्द आता है (जै अगम अगम उव अगम रली, जै अगम जिनंदे) मन वचन कायसे अगोचर अनुभवगोचर आत्माके भीतर जैसे २ अनुभव किया जाता है वैसे वैसे अतीन्द्रिय आत्माका अनुभव बढ़ता जाता है तथा जिनेन्द्रका अनुभवगोचर स्वभाव प्रगट होता है ॥ ६ ॥

(जय सहन सहन उव सहन रली, जै सहन सनंदे) जैसे जैसे मन व इंद्रियोंको रोककर आत्माके भीतर जमा जाता है वैसे २ स्थिरता बढ़ती जाती है, इस स्थिरतामें आनन्द आता है (जय रहन रहन उव रहन रली,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जै रहन जिनंदे) जैसे जैसे आत्माके भीतर रहा जाता है-तिष्ठा जाता है वैसे २ स्थिरता बढ़ती जाती है तथा जिनेन्द्रके स्वभावमें स्थिति होती जाती है ॥ ७ ॥

(जय गहन गहन उव गहन रली, जै गहन आनंदे) जैसे २ आत्माके भीतर प्रवेश किया जाता है प्रवेश बढ़ता जाता है, इस प्रवेशमें आनन्द आता है । जै लहन लहन उव लहन रली, जै लहन जिनंदे) जैसे जैसे आत्माके स्वभावको प्राप्त किया जाता है आत्माका लाभ बढ़ता जाता है तथा जिनेन्द्रके स्वरूपका लाभ हो जाता है ॥८॥

(जै इच्छ इच्छ उव इच्छ रली, जै इच्छ सकल नंदे) जैसे २ आत्माकी ओर उत्साह किया जाता है, तब स्वानुभवकी उमंग होजाती है (जै चेय चेय उव चेय रली, जै चेय जिनंदे) जैसे २ अपनी ज्ञानचेतनामें रमा जाता है; ज्ञानकी चेतना बढ़ती जाती है । इस ज्ञानचेतनामें आनन्द आता है ॥ ९ ॥

(जय वेय वेय उव वेय रली, जै वेय आनंदे) जैसे २ आत्माके स्वरूपका वेदन या जानपना किया जाता है, वैसे २ ज्ञान बढ़ता जाता है । इस ज्ञानमें आनन्द आता है (जै भेय भेय उव भेय रली, जै भेय जिनंदे) जैसे २ परसे भिन्न करके आत्माको भाया जाता है, वैसे २ भेद ज्ञान बढ़ता जाता है । तथा श्री जिनेन्द्रका स्वरूप भेदज्ञानमें आता है ॥ १० ॥

(जय नंद नंद उव नंद रली, जय नंद सनंदे) जैसे २ ज्ञानानन्दका स्वाद आता है वैसे २ आनन्द बढ़ता जाता है । इस परमानन्दकी जय हो (जै विंद विंद उव विंद रली, जै विंद जिनंदे) आत्माका अनुभव करते २ आत्मानुभव बढ़ता जाता है, तब जिनेन्द्रके स्वरूपका अनुभव होजाता है ॥ ११ ॥

(जय षिपन षिपन उव षिपन रली, जै षिपन सनंदे) आत्माके ध्यानसे जैसे २ कर्म क्षय होते हैं (जै मुक्ति मुक्ति उव मुक्ति रली, जै मुक्ति जिनंदे) कर्मोंके पूर्ण क्षय होनेसे आत्माको मोक्ष होजाती है, तब जिनेन्द्र मुक्त सिद्ध कहलाते हैं उनकी जय हो ॥ १२ ॥

(जय सेनि सेनि उव सेनि रली, जय कलन सनंदे) गुणस्थानपर चढ़ते चढ़ते परमात्माका गुणस्थान मिल जाता है, इस गुणस्थानके आरोहणमें आनन्द आता है (जै तारन तरन तर तरन रली, जै कलन आनंदे) तब तारनतरन अरहन्त भवसागरसे पार होजाते हैं । सदा ही आनन्दमें मगन रहते हैं उनकी जय हो ॥१३॥

(जै कमल कमल उव कमल रली, जै कमल सनंदे) कमल समान शुद्धात्माके ध्यानसे कमलका रमण बढ़ता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे २ किया जाता है, साधन बढ़ता जाता है तब श्री जिनेन्द्र पदकी प्राप्ति होजाती है ॥ १४ ॥

(जयं सेनि कलन उव कर्न रली जै सेनि सनंदे) जैसे जैसे गुणस्थानोंमें आत्माका अभ्यास किया जाता है, अभ्यास बढ़ता जाता है तथा आनन्द भी आता है (जै तारन तरन सु कमल रली, उव कमल आनंदे) तब यह आत्मा तारणतरण अरहन्त होकर कमल समान आत्मामें मिल जाता है। तब अनन्तसुखको भोगता है ॥ १५ ॥

(जय सेनि तरन कलि कमल रली जै कर्न सनंदे) जब अरहन्त परमात्माके पदपर होते हैं तब आत्मारूपी कमलका अनुभव करते हुए परमानन्दका साधन करते हैं (जै तरन कमल उव कर्न रली, जै मुक्ति जिनंदे) जब तरनेवाले जिनेन्द्र कमल मोक्षके साधनको पूर्ण कर लेते हैं तब वे मुक्तिपदको पालेते हैं उनकी जय हो ॥ १६ ॥

भावार्थ—इस उत्पन्न रलोमें मोक्षमार्गको दिखाया है। जैनधर्म और जैनधर्मके बक्ता श्री जिनेन्द्रकी वारवार स्तुति जय शब्दके द्वारा करके यह बताया है कि जैनधर्म आत्माहीके भीतर है। आत्माका लक्षण और परमात्माका लक्षण एक समान है। निश्चयसे जैसे शुद्ध जलके भरे १००–२०० वर्तनोंमें जलकी सत्ता भिन्न होनेपर भी कोई परस्पर स्वभाव व लक्षणका भेद नहीं है वैसे २ अनन्त आत्माओंकी व परमात्माओंकी सत्ता भिन्न २ होनेपर भी लक्षणमें कोई भेद नहीं है। भेदविज्ञानकी दृष्टिसे कर्मोंसे मिले हुए आत्माको भी कर्मोंसे भिन्न परमात्माके समान देखना चाहिये। यह आत्मा स्वभावसे शुद्ध, अमूर्तीक, ज्ञाता, दृष्टा, आनन्दमय, निर्विकार, वीतराग, असंख्यातप्रदेशी है। अनन्त गुण पर्यायोंको रखते हुए भी उसमें तन्मय है। ऐसे ही आत्माका श्रद्धान व ज्ञान होना चाहिये, तब इसी आत्माका मनन व ध्यान करना चाहिये। आत्माका जैसे जैसे अनुभव किया जाता है, स्वानुभव बढ़ता जाता है। स्वात्मानुभवमें कोई कष्ट नहीं है, सदा ही आनन्द है। इसी साधनसे आत्मा गुणस्थान क्रमसे कर्मोंको क्षयकर अरहन्त परमात्मा होजाता है और मोक्षको प्राप्त कर लेता है। जैनधर्म एक शुद्धात्मानुभव है। यही कर्मोंको जीतनेका साधन है। इसके विना मोक्षका लाभ नहीं होसक्ता है।

मुमुक्षुको सदा ही श्रद्धा व उत्साहपूर्वक वीर्य प्रगट करके अपने ही भीतर रमणता प्राप्त करना चाहिये। आत्माका स्वभाव नियमसारमें कहा है—

जारिसिया सिद्धप्पा, भवमिल्लिय जीव तारिसा होंति। जरमरणम्मुक्का अट्ठगुणालंकिया जेण ॥ ४७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असरीरा अविणासा, अणिंदिया णिम्मला विसुद्धप्पा। जय लोयग्गे सिद्धा, तह जीवा संसिदी णेया ॥४८॥

भावार्थ—जैसे सिद्ध महाराज जन्म, जरा, मरण रहित सम्यक्तादि आठ गुणधारी हैं वैसे संसारी जीव भी निश्चयसे हैं। जैसे लोकके अग्रभागमें बिराजित सिद्ध भगवान शरीर रहित, अविनाशी, शुद्ध स्वरूपी, मल रहित, व अतोन्द्रिय हैं वैसे ही निश्चयसे संसारी जीवोंको भी जानना चाहिये।

(१२०) उवन विंद स्वभाव गाथा २५२० से २५३६ तक।

जय जयो जिनवर जै जयो, जै जयो उवन उल्हास।
जय जयो जिनवर विगस मौ, जिन विगसिउ मुक्ति विलास ॥ १ ॥
विंदिया जिन उवनकी, उव उवनो रे, चरन चरि चरना, विंदिया कलि देवकी।
कलि कलियो रे कमल विलास, विंदिया जिन उवनकी (आचरी) ॥ २ ॥
उव उवन उल्हसिऊ दिप्ति सुई, सुइ सब्द कर्न उल्हासु।
सुव सुवन उल्हसिऊ कमल मौ, धुव उल्हसिऊ रे कमल उल्हासु ॥ विंदि०॥ ३ ॥
उव उवन विगसिऊ दिप्ति रे, उव सब्द सुवन विगास।
उव उवन विगसिऊ कलन मौ, जिन विगसिऊ रे कलि कमल विलास ॥विंदिया०॥ ४ ॥
उव उवन विलसिऊ कर्न दिवि, उव सब्द सुवन विलास।
हुव हुवन विलसिऊ चरि कलन मौ, धुव कमल सुइ मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ ५ ॥
जिन दिप्ति उवनि हौस जिन दिपि, जिन दिप्ति हौस उल्हास।
जिन दिप्ति दिप्ति म उवन उल्हसिऊ, आस उल्हसिऊ है मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

सुइ सब्द उवन सु कर्न विलसिऊ, धुव्र हौस सुवन उल्हास ।
सुइ रंज रमन सुनंद नंदित, आस रंज है मुक्ति विलास ॥ विंदिया० ॥ ७ ॥
दिपि दिष्टि हौस सु सब्द कन हो, सुइ हौस हुवन विलास ।
सुइ हौस उवन हियार उवन सु, आस हुवन है मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ ८ ॥
दिपि दिष्टि सब्द सु उवन उल्हसिऊ, अवयास हौस उल्हास ।
अवयास हौस सु उवन समय हो, आस अवसि है मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ ९ ॥
दिपि दिष्टि सब्द सु हौस हिय हुव, सहयार उवन विलास ।
अवयास हौस सु कलन चरन हो, आस कलन है मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ १० ॥
दिपि दिष्टि सब्द सु हौस हुव हिय, अवयास साह अनन्त ।
कलि कलन चरन सु हौस कलन हो, आस कलियो है मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ ११ ॥
दिपि आदि कलन सु हौस उल्हसिऊ, चरन कलन उल्हास ।
कलि कलन कमल सु हौस धुव जिन, आस कमल धुव्र मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ १२ ॥
दिपि आदि कलन सु हौस कमलह, उव कमल उवन उल्हास ।
उव कमल धुव सुइ सुवन उवने, आस कमल धुव मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ १३ ॥
दिपि अदि कमल सु हौस सुवनह, सुव्र समय उवन उल्हास ।
उव कमल उवन सु हौस समय हो, आस कमल सुव मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ १४ ॥
जिन सेनि उवन सु कलन कलने, सुइ हौस कलन उल्हास ।
सुइ सेनि हौस सु कलन कलने, आस सेनि कल मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ १५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिपि आदि कमल सु सेनि सुवनह, हौस तार कमल विगास।
तर तार धुव सुइ कमल विलसित, आस तार सुइ मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ १६॥
तर तार कमल सु उवन धुव विहि, धुव उवन सुवन विलास।
धुव आस हौस सु उवन समय हो, सिहु समय सुइ मुक्ति विलास ॥विंदिया०॥ १७॥

अन्वय सहित अर्थ—(जै जयो जिनवर जय जयो) **श्री जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो** (जै जयो उवन उल्हास) **आत्माके प्रकाश करनेकी उमंग या प्रेमकी भी जय हो** (जय जयो जिनवर विगस मौ) **विकसित या स्वरूपमें प्रकाशमान शुद्ध जिनेन्द्रकी जय हो** (जिन विगसिऊ मुक्ति विलास) **श्री जिनेन्द्रने मुक्तिके आनन्दको प्रकाश कर दिया है ॥ १ ॥**

(विंदिया जिन उवनकी) **अब हमने वीतराग विज्ञान धर्मका अनुभव किया है** (उव उवनो रे चरन चरि चरना) **अब चारित्रमें चलना प्रगट होगया है। मैं स्वरूपाचरण चारित्रमें चल रहा हूँ** (विंदिया कलि देवकी) **मैंने स्वरूप मग्न जिनेन्द्रदेवका अनुभव किया है** (कलि कलियो रे कमल विलास) **शुद्धात्मारूपी कमलका आनंद मैंने लिया है ॥ २ ॥**

(उव उवन उल्हसिउ दिपि सुई) **अब ज्ञानका प्रकाश आनन्द देताहुआ हुआ है** (सुइ संव्द कर्न उल्हास) **आत्मज्ञानके शब्दको सुनने मात्रसे हर्ष होता है** (सुव सुवन उल्हसिउ कमल मौ) **शुद्धात्मारूपी कमलमें परिणमन आनन्द सहित हो रहा है** (धुव उल्हसिऊ रे कमल उल्हास) **शुद्धात्मारूपी कमलमें आनन्द ध्रुवरूपसे झलक रहा है ॥ ३ ॥**

(उव उवन विगसिऊ दिपि रे) **ज्ञान ज्योतिका प्रकाश हुआ है** (उव सब्द सुवन विगास) **ज्ञान ज्योतिका शब्द सुनने मात्रसे ज्ञानका प्रकाश होजाता है। शब्दोंका परिणामोंमें असर होता है** (उव उवन विगसिऊ कलन मौ) **ज्ञानका प्रकाश स्वात्मानुभवरूप हो गया है** (जिन विगसिऊ रे कलि कमल विलास) **श्री जिनराज शुद्धात्मारूपी कमलका आनन्द लेते हुए प्रकाशमान हैं ॥ ४ ॥**

(उव उवन विलसिऊ कर्न दिपि) **केवलज्ञानका साधक ज्ञान आनन्दमें मग्न हैं** (उव सब्द सुवन विलास)

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब आत्मध्यानका होम प्रगट होता है तथा स्वरूपाचरण चारित्रके अनुभवका आनन्द आता है (ध्रुव कमल सुइ मुक्ति विलास) तब कमल समान शुद्धात्मा ध्रुवरूपसे मोक्षमें आनन्द भोगता है ॥ ५ ॥

(जिन दिप्ति उवन हौस जिन दिपि) श्री जिनेन्द्रमें केवलज्ञान उत्पन्न होता है, ऐसे ज्ञानकी प्राप्तिकी उमंग वीतरागी भव्यमें जब प्रगट होती है (जिंन दिप्ति हौस उल्हास) जब वीतराग स्वभावके प्रकाशके उमंगमें उसे आनन्द आता है (जिन दिप्ति दिष्टि सु उवन उल्हसिऊ) तब ज्ञानानन्दके अभ्याससे श्री जिनेन्द्रमें अनन्तज्ञान और अनन्त दर्शनका प्रकाश होजाता है (आस उल्हसिऊ है मुक्ति विलास) उसकी भावना सफल होजाती है । वह मोक्षमें जाकर आनन्द भोगता है ॥ ६ ॥

(सु सब्द उवन सु कर्न विलसिऊ) आत्मध्यानको जागृत करनेवाले उन शब्दोंके द्वारा जब ज्ञानके साधनमें आनन्द प्राप्त किया जाता है (ध्रुव हौस सुवन उल्हास) और यह उत्साह होता है कि मैं ध्रुवरूपसे मोक्षलाभके उमंगमें परिणमन करूं (सुइ रंज रमन सुनंद नंदित) तब वही स्वात्मानन्दमें मगन होकर परमानन्दमें मगन होता है (आस रंज है मुक्ति विलास) मोक्षकी भावनामें रंजायमान होनेसे मोक्षका आनन्द प्राप्त हो जाता है ॥ ७ ॥

(दिपि दिष्टि हौस सु सब्द कर्न हो) ज्ञानदर्शनके प्रकाशकी उमंगसे जब उत्तम शब्दोंका मनन किया जाता है (सुइ हौस हुवन विलास) इसी उमंगसे ध्यानका प्रकाश होजाता है (सुइ हौस उवन हियार उवन सु) इसी उमंगके प्रकाशसे हितकारी उत्तम ज्ञान झलक जाता है (आस हुवन है मुक्ति विलास) जब भावनाकी सफलता होजाती है तब भव्यजीव मोक्षके आनन्दको भोगता है ॥ ८ ॥

(दिपि दिष्टि सब्द सु उवन उल्हसिऊ) ज्ञान दर्शनके प्रकाशक शब्दोंके द्वारा जब ज्ञानमें आनन्द आता है (अवयास हौस उल्हास) अनन्तज्ञानके प्रकाशकी उमंग जग जाती है (अवयासं हौस सु उवन समय हो) इस अनंत ज्ञानके प्रकाशकी उमंगसे शुद्धात्माका प्रकाश होजाता है (आस अवसि है मुक्ति विलास) तब आशा या भावना अवश्य सफल होजाती है, और वह भव्यजीव मोक्षका आनन्द भोगता है ॥ ९ ॥

(दिपि दिष्टि सब्द सु हौस हिय हुव) ज्ञान दर्शन प्रकाशक शब्दोंके द्वारा उत्तम भावनासे जब हितकारी ध्यानकी अग्नि जलती है (सहयार उवन विलास) साथमें ज्ञानमें आनन्द आता है (अवयास हौस सु कलन चरन हो) तब अनन्तज्ञानके पानेकी उमंगसे आत्मानुभूति स्वरूप चारित्रका भलेप्रकार अभ्यास किया जाता है ||१०५||

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(आस कलन है मुक्ति विलास) इस भावनाके अभ्याससे मोक्षका आनन्द प्राप्त होजाता है ॥ १० ॥

(दिपि दिष्टि सब्द सु हौस हुव हिय) ज्ञान दर्शन प्रकाशक शब्दोंके द्वारा उत्तम उत्साहके साथ ध्यानमें लीन हुआ जाता है (अवयास साह अनन्त) और अनन्त ज्ञानका साधन किया जाता है (कलि कलन चरन सु हौस कलन हो) तब स्वरूपाचरण चारित्रके साधनमें उमंग बढ़ती जाती है (आस कलियो है मुक्ति विलास) तब भावना सफल होजाती है। यह भव्य मोक्षका आनन्द प्राप्त करता है ॥ ११ ॥

(दिपि आदि कलन सु हौस उल्हसिऊ) जब ज्ञानादि आत्मीक गुणोंके प्रकाशकी उत्तम उमंग जागृत होती है (चरन कलन उल्हास) तब स्वचारित्रके अभ्यासका उत्साह बढ़ता है (कलि कलन कमल सु हौस ध्रुव जिन) शुद्धात्मारूपी कमलके स्वाद लेनेकी उत्तम उमंग वीतरागता सहित ध्रुवरूपसे होती है (आस कमल ध्रुव मुक्ति विलास) तब भावना सफल होजाती है और यह आत्मारूपी कमल ध्रुवरूपसे मोक्षमें आनन्द भोगता है ॥१२॥

(दिपि आदि कलन सु हौस कमल्ह) जब ज्ञानादि गुणोंके प्रकाशकी उमंग कमलरूप आत्मामें होजाती है (उव कमल उवन उल्हास) तथा आत्म कमलके प्रकाशकी भी उमंग होती है (उव कमल ध्रुव सुइ सुवन उवने) तब कमल सम आत्मा ध्रुवरूपसे अपनेमें परिणमनका प्रकाश कर लेता है (आस कमल ध्रुव मुक्ति विलास) तब भावना सफल होजाती है और यह आत्मारूपी कमल मोक्षमें आनन्द भोगता है ॥ १३ ॥

(दिपि आदि कमल सु हौस सुवनह) ज्ञानादि गुण सहित आत्मारूपी कमलके प्रकाशकी जब उमंग जागृत होती है (सुव समय उवन उल्हास) तथा आत्माके प्रकाशकी उमंग बढ़ती जाती है (उव कमल उवन सु हौस समय हो) तब यह आत्मारूपी कमलका प्रकाश करता हुआ उत्तम भावनासे परमात्मारूप होजाता है (आस कमल सुव मुक्ति विलास) तब आशा सफल होती है। यह आत्मारूपी कमल मोक्षका आनन्द भोगता जाता है ॥ १४ ॥

(जिन सेनि उवन सु कलन कलने) जिनराजका पद प्रगट हो ऐसे पदके अनुभवके अभ्यासमें (सुइ हौस कलन उल्हास) जब उमंगका मनन जागृत हो जाता है। अर्थात् परमात्मपदके लिये तीव्र उत्साह बढ़ जाता है (सुइ सेनि हौस सु कलन कलने) तब उस पदकी उमंगसे भलेप्रकार आत्मानुभवका अभ्यास हो जाता है (आस सेनि कल मुक्ति विलास) तब आशा सफल हो जाती है। जिनपदका लाभ लेकर यह भव्य मोक्षके आन-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दिपि आदि कमल सु सेनि सुवनह) जब ज्ञानादि गुण सहित आत्मारूपी कमलके परिणमनकी उमंग जगती है (हौस तार कमल विगास) यह भी उमंग होती है कि कमलरूप आत्माको प्रगट करके अर्थात् अरहंत परमात्मा होकर अपनेको व परको भवसागरसे पार करूँ (तर तार ध्रुव सुइ कमल विलसित) तब तारणतरण कमलसम आत्मा ध्रुवरूपसे परमात्मापदमें आनन्द पाता है (आस तार सुइ मुक्ति विलास) तब आशा सफल हो जाती है वह स्वपरको तारकर मोक्षमें आनन्द भोगता है ॥ १६ ॥

(तर तार कमल सु उवन ध्रुव निहि) तारणतरण अरहन्त कमलमें आत्माकी सम्पदा ध्रुवरूपसे प्रगट हो जाती है (ध्रुव उवन सुवन विलास) तथा ध्रुवरूपसे केवलज्ञानका परिणमन रहता है व आनन्दमय हो जाता है (ध्रुव आस हौस सु उवन समय हो) तब ध्रुवरूपसे आशा व उमंग पूरी होजाती है। यह अव्य परमात्मपदमें प्रगट रहता है (सिहु समय सुइ मुक्ति विलास) वही परमात्मा मोक्षका आनन्द भोगता है ॥ १७ ॥

भावार्थ—इस उवन विंद स्वभावमें बताया है कि आत्माके भीतर जो वीर्य है, या उमंग है या उत्साह है, या हौस है यह बड़ा काम करते हैं। आत्मवीर्यके प्रकाशसे ही आत्माकी उन्नति होती है। यह उमंग कि मुझे परमात्मा पद हो-मैं भवसागरसे पार होजाऊं, मैं अपने भीतर गुप्त स्वभावको प्रकाश करूं-मैं अनन्त ज्ञान दर्शन वीर्य सुखादि गुणोंका विकास करूं, मैं अविनाशी मोक्षपदमें तीष्ठकर सदा ही परमानन्द भोगूं, मैं जन्ममरणके चक्रसे छूट जाऊं, वास्तवमें तब ही होती है जब सम्यग्दर्शनका प्रकाश होजाता है। सम्यग्दृष्टी मोक्षकी प्राप्तिका तीव्र उत्साही होजाता है, इसी उत्साहके द्वारा वह अपने शुद्धात्माके स्वभावका मनन व ध्यान करता है, इस ध्यानमें भी आनन्द आता है। ध्यानकी प्राप्ति साधक अवस्थामें श्रुतज्ञानके द्वारा होती है तब बुद्धिपूर्वक व अबुद्धिपूर्वक शब्दोंका अवलम्बन लेना पड़ता है। कभी बाहर जल्प रहता है, कभी अन्तरंग आत्मजल्प रहता है, कभी जल्प या कथन भी रुक जाता है, केवल शब्दोंके द्वारा उनके भावोंका मनन होता है, भावना करते हुए शब्द बहुत बड़े सहायक होते हैं। भावना करते करते क्षणभरके लिये आत्मध्यान होजाता है जैसे दूधको विलाते हुए मक्खन निकल आता है। भावना बहुत दीर्घकाल तक करनी होती है, जहांतक क्षपकश्रेणीके चढ़ने योग्य न हो। क्षपकश्रेणीमें एक अंतर्मुहूर्तके भीतर तिष्ठकर शुक्लध्यानके द्वारा श्रुतज्ञानकी सहायतासे शब्दोंकी मददसे यह आत्मा चारों ही घातीय कर्मोंको क्षयकर अनन्तज्ञानादिका प्रकाश पाकर अरहन्त परमात्मा होजाता है तब अरहन्त पदमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकोंको उपदेश द्वारा तारता है, फिर चार अघातीय कर्मोंका भी क्षय करके मोक्षपदमें जाकर सिद्ध परमात्मा होजाता है और अनन्त कालतक मोक्षपदमें विलास करता है। आत्मवीर्यके प्रकाशको ही पुरुषार्थ कहते हैं। इस छन्दमें पुरुषार्थ करनेकी प्रेरणा की है। जो पुरुषार्थी होता है वह जिस कार्यके सफल करनेकी बुद्धिपूर्वक व अपनी शक्तिको देखकर दृढ़ उमंग अपनेमें पैदा कर लेता है वह उसको अवश्य सफल कर लेता है। मोक्ष पुरुषार्थीको सफलताकी भी दृढ़ उमंग जिस भव्यजीवमें जागृत होजाती है वह अवश्य मोक्ष लाभ कर लेता है। वास्तवमें हौंसे या उमंग या उत्साह ही भीतरसे प्रेरणा करनेवाला यंत्र है जिससे मोक्ष साधक ध्यान बढ़ता है, और वह गुणस्थानकी श्रेणी द्वारा चढ़कर परमात्मा होजाता है। इसीलिये इस उमंगकी जय मनाई गई है। आत्मबलका प्रकाश ही आत्माको अनन्तबली बनाता है।

नियमसारमें पुरुषार्थ करनेकी ही प्रेरणा की है—

आराहणाइ वट्टइ मोत्तूण विराहणं विसेसेण। सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ॥ ८४ ॥
मोत्तूण अणायारं आयारे जो दु कुणदि थिरभावं। सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ॥ ८५ ॥
उम्मग्गं परिचत्ता जिणमग्गे जो दु कुणदि थिरभावं। सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ॥ ८६ ॥

भावार्थ—जो कोई आत्माके ध्यानमें विराधक भावोंको छोड़कर सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र व तप चार आराधनाओंमें वर्तता है तथा अनाचारको छोड़कर मोक्ष साधक चारित्रमें स्थिर भाव करता है और मिथ्या मार्गको त्यागकर जिन मार्गमें स्थिर होता है। आत्माके ध्यानका पुरुषार्थ करता है वही पिछले दोषोंको हटाता हुआ प्रतिक्रमण करता हुआ प्रतिक्रमणमई होजाता है।

(१२१) चिंताकारो फूलना गाथा २५३७ से २५४९ तक।

चिंताकारो चिंतामनि जय रमना, अपर परम पय उवनु जिना ॥ १ ॥
जिन उवनु रमा तू रे, उव उवन रमा तू रे, जिन परमगति जिनवर मुक्ति रमा तू रे (आचरी) ॥२॥
जिन करो चिंतामनि जिन रमना, जिन स्कंध रमन ध्रुव घर रमना ॥ जिन उवन० ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हित रमनि चिंतामनि उव रमना, उव उवन मुक्ति विन विलय जिना ॥ जिन० ॥ ४ ॥
पै उवन चिंतामनि उव रमना, उव चेय चिंतामनि जिनय जिना ॥ जिन० ॥ ५ ॥
आयरन चिंतामनि रै रमन जिना, आयरन उवन इच्छ गुप्ति जिना ॥ जिन० ॥ ६ ॥
इच्छ गुपित चिंतामनि रमन जिना, पय ईर्ज चिंतामनि ईर्ज जिना ॥ जिन० ॥ ७ ॥
ति अर्थ चिंतामनि ईर्ज जिना, हिय मध्य रमन अर्क विंद जिना ॥ जिन० ॥ ८ ॥
हिय हुव चिंतामनि आगंतु जिना, रमि रमन उवन जिन जिनय जिना ॥ जिन० ॥ ९ ॥
उव उवन चिंतामनि उवन जिना, उव उवन रमन जिन सिधि रमना ॥ जिन० ॥ १० ॥
उव उवन चिंतामनि गुप्ति जिना, उव अधिगमन ठिदि मुक्ति जिना ॥ जिन० ॥ ११ ॥
सुयं लब्धि चिंतामनि चित रमना, अन्मोय उवन स्वामी सिधि रमना ॥ जिन० ॥ १२ ॥
तर तार चिंतामनि कमल जिना, सिह समय उवन जिन सिधि रमना ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(चिंताकारो चिन्तामनि जय रमना) **मनन करनेवाला भव्य जीव चिंतामणिके समान आत्माकी विजयमें रमण कर रहा है** (अपर परम पय उवन जिना) **अनुपम परमात्माके पदका प्रकाश श्री जिनेन्द्रके सहारेसे होता है ॥ १ ॥**

(जिनु उवन रमा तू रे) **हे भव्य जीव ! तू जिनेन्द्रके प्रकाशमें रमण कर** (उव उवन रमा तू रे) **केवलज्ञानमें रमण कर** (जिन परम गति जिनवर मुक्ति रमा तू रे) **परम गतिको प्राप्त श्री जिनेन्द्रकी मोक्षमें तू रमण कर–मोक्षभावकी भक्ति कर ॥ २ ॥**

(षिपकरो चिंतामनि षिप रमनां) **चिंतामणिके समान क्षायिक शुद्ध भावोंमें रमण कर कर्मोंका क्षय करो** (षिय स्कंध रमन धुव धुर रमना) **कर्मोंके स्कन्धोंको या वर्गणाओंको क्षय करके रमनेयोग्य ध्रुव मुख्य शुद्ध भावमें रमण कर ॥ ३ ॥**

(हित रमनि चिंतामनि उव रमना) **चिंतामनिके समान आत्महितके रमणमें तू रमण कर** (उव उवन मुक्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विन विलय जिना) जिससे उदययोग्य कर्म विना फल दिये नाश हो जांयगे, तू जिन हो जायगा ॥ ४ ॥

(पय उवन चिंतामनि उव रमना) चिंतामणिके समान परमात्माके पदमें रमण कर (उव चेय चिंतामनि जिनय जिना) चिंतामणिके समान अनुभव करनेयोग्य श्री वीतरागभावका अनुभव करके जिन हो ॥ ५ ॥

(आयरन चिंतामनि रै रमन जिना) चिंतामणिके समान आत्मीक चारित्रके साधनमें रमन करके जिन हो (आयरन उवन इच्छ गुप्ति जिना) चारित्रके प्रकाशसे श्री जिनेन्द्रके स्वभावमें इच्छानुसार लीन हो जायगा ॥६॥

(इच्छ गुपित चिंतामनि रमन जिना) चिंतामणिके समान इच्छनेयोग्य आत्माके गुप्त समाधिभावमें रमण करके जिन हो (पय ईर्जे चिंतामनि ईर्जे जिन) चिंतामणिके समान शुद्ध सरल परमात्म पदमें सरलतासे चलकर जिन हो ॥ ७ ॥

(ति अर्थ चिंतामनि ईर्जे जिना) चिंतामणिके समान रत्नत्रय धर्ममें सरलतासे चलकर जिन हो (हिय मध्य रमन अर्क विंद जिना) अपने हितके भीतर रमण करके या हृदयके भीतर रमण करके सूर्यके समान आत्माका अनुभव कर और जिन हो ॥ ८ ॥

(हिय हुव चिंतामनि आगंतु जिना) चिंतामणिके समान हितकारी ध्यानमें रमण करके भविष्यमें जिन होगा (रमि रमन उवन जिन जिनय जिना) ज्ञानके प्रकाशमें रमण कर वीतराग भावधारी जिन होगा ॥ ९ ॥

(उव उवन चिंतामनि उवन जिना) चिंतामणिके समान ज्ञानके प्रकाशके द्वारा जिन स्वभावका प्रकाश कर (उव उवन रमन जिन सिध रचना) ज्ञानके प्रकाशमें रमण करनेसे जिनराज होकर सिद्धभावमें रमेगा ॥१०॥

(उव उवन चिंतामनि गुप्ति जिना) चिंतामणिके समान गुप्ति समाधिमें रमण करके जिन हो (उव ऊर्ध गमन ठिदि मुक्ति जिन) फिर तू ऊपर जाकर सीधा गमन कर मुक्तिके सिद्धपदमें स्थिर रहेगा ॥ ११ ॥

(सुयं लब्धि चिंतामनि चित रमना) चिंतामणिके समान आत्माके स्वभावकी प्राप्तिमें चित्त रमा (अन्मोय उवन स्वामी सिधि रमना) तब आनन्द अनुभवमें आयगा तथा तू तीन लोकका स्वामी होकर सिद्धपदमें रमण करेगा ॥ १२ ॥

(तर तार चिंतामनि कमल जिना) तरण तारण चिंतामणिके समान कमलरूप श्री जिनराज हो (सिंहु समय उवन जिन सिधि रमनां) और परमात्मपदमें प्रगट होते हुए जिन सिद्धभावमें रमण करे ॥ १३ ॥

भावार्थ—इस चिंतामणि फूलमें यही बताया है कि भव्य जीवके लिये प्राप्त करने योग्य सिद्धपद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। उसकी प्राप्तिके लिये चिंतामणि रत्नके समान अपने ही आत्माके शुद्ध स्वभावका ध्यान है। इसी ध्यानको रत्नत्रय धर्मका आराधन, आत्मज्ञानका सेवन, आत्महितमें रमण, स्वचारित्रमें रमण, गुप्त समाधिमें रमण करते हैं। उपशम सम्यक्तके पीछे क्षयोपशम सम्यक्तके बाद क्षायिक सम्यग्दर्शन होता है। यह क्षायिक सम्यक्त ध्रुव रूपसे आत्मामें सच्चा प्रेम पैदा कर देता है। संसारसे परम वैराग्य होजाता है तब कषायका क्षय करके यह क्षायिक चारित्रको प्राप्त करा देता है। क्षायिक सम्यक्त और क्षायिक चारित्रके द्वारा आत्मा अरहन्त परमात्मा होकर नौ प्रकार क्षायिक भावोंका स्वामी होजाता है फिर सिद्ध हो जाता है। प्रयोजन यह है कि भव्य जीवको चिंतामणिके समान इच्छित मोक्षपदका देनेवाला एक आत्मानुभव है। उसका अभ्यास सदा करना योग्य है। मुमुक्षुको अन्तरात्मा होना जरूरी है। जैसा नियमसारमें कहा है—

अंतरबाहिरजप्पे जो वट्टइ सो हवेइ बहिरप्पा। जप्पसु जो ण वट्टइ सो उच्चइ अंतरंगप्पा॥ १५०॥

जो धम्मसुक्कझाणम्हि परिणदो सो विं अंतरंगप्पा। झाणविहीणो समणो बहिरप्पा इदि विजाणीहि॥ १५१॥

भावार्थ—जो मात्र अन्तरंग जल्प व बाहर जल्पमें वर्तता है अर्थात् संकल्प विकल्प करता है वह बहिरात्मा है परंतु जो इन विकल्पकारक जल्पोंमें नहीं वर्तता है वही अन्तरात्मा है। जो धर्मध्यान तथा शुक्लध्यानमें परिणमन करता है वह अन्तरात्मा है। जो इन दोनों ध्यानोंसे रहित श्रमण है वह बहिरात्मा है ऐसा जानो।

(१२२) कीतडी फूलना गाथा २५५० से २५५९ तक।

जिन इच्छ जिन इच्छ ति इच्छ चिंतामनि, ईर्ज चिंतामनि जिनय जिना।
गुप्ति जिन गुप्ति रे गुप्ति ध्रुव उवन पौ, गुप्ति जिन मुक्ति सुइ उवन जिना॥ १॥
स्वामी हो बलि कीतडि जिनय जिनाला, रमन दे मुक्ति जिन रे मझुला उमवारा हो,
हो वलि कीतडी जिनय जिनाला (आचरी)॥ २॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिस्टि जिन दिस्टि ति दिस्टि चिंतामनि, उवन सुइ दिस्टि सुइ उवन जिना ।
आयरन सुइ रमन जिन नंत नंत हिउ, नंत जिन जिनयति उवन जिना ॥स्वामी०॥ ३ ॥
उवन जिन उवन पौ उवन चिंतामनि, उवन हिय उवन हुव उवन जिना ।
उवन सह उवन सुइ धुव धुवं जिन, धुव उवन धुव साहि जिन जिनय जिना ॥स्वामी०॥ ४ ॥
दिप्ति सुइ दिष्टि सुइ दर्स चिंतामनि, सब्द सुइ उवन पिय न्यान जिना ।
चरन सुइ चरन सुइ उवन चिंतामनि, दिप्ति सुइ सब्द चर उवन जिना ॥स्वामी०॥ ५ ॥
इष्ट इष्टंतु उव इष्टि चिंतामनि, इष्ट उव उवन सुइ इष्ट जयं ।
उव इष्ट इष्टंतु सुइ उवन चिंतामनि, उव उवन इष्टंतु जिन जिनय जिना ॥स्वामी०॥ ६ ॥
ऊर्ध सुइ ऊर्ध सुइ ऊर्ध चिंतामनि, मध्य षट् रमन जिन रमन जिना ।
अर्ध अर्ध सह उवन चिंतामनि, ऊर्ध सुइ अर्ध महि रमन जिना ॥स्वामी०॥ ७ ॥
उवन ठिदि मुक्ति ठिदि उवन चिंतामनि, उवन हिय न्यान ठिदि जिनय जिना ।
उवन सह उवन ठिदि समय समय जिन, उवन हिय साह जिन सिद्ध जिना ॥स्वामी०॥ ८ ॥
इच्छ सुइ लब्धि सुइ गुप्ति चिंतामनि, अवयास सुइ उवन सुइ उवन जिना ।
अवयास मल विलय धुव उवन चिंतामनि, इच्छ सुइ गुप्ति जिन जिनय जिना ॥स्वामी०॥ ९ ॥
तार सुइ तरन सुइ तार चिंतामनि, कलन सुइ कमल धुव उवन जिना ।
समय सुइ समय सह समय चिंतामनि, समय सुइ सिद्धि सुइ मुक्ति जिना ॥स्वामी०॥१०॥

अन्वय सहित अर्थ—(जिन इच्छ जिन जिन इच्छ इच्छति चिंतामनि) हे भाई ! चिंतामणि रत्नके समान श्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनेन्द्रके सरल मार्गमें गमन कर (गुप्ति जिन गुप्ति [illegible] उवन पौ) श्री जिनेन्द्रके अतीन्द्रिय गुप्त स्वरूपमें गुप्त होजाना-इसीका अभ्यास करना ध्रुव अविनाशी गुप्त अतीन्द्रिय पदको प्रकाशका साधन है (गुप्ति जिन मुक्ति सुइ उवन जिन) अतीन्द्रिय जिनेन्द्र ही मोक्षमें प्रकाशमान रहते हैं ॥ १ ॥

(स्वामी हो वलि कीतनु जिनय जिनाला) स्वामी श्री जिनेन्द्र कितने बलवान हैं, या हे भाई ! श्री वीतराग जिनसे प्रेमका बन्धन कर (रमनदे मुक्ति जिनरे मझला उसवाराहो) उनके स्वरूपमें रमण कर, वे संसारसे मुक्त जिन हैं उनके स्वरूपके भीतर उत्साह करनेवाला हो । (नोट-यहां शब्दोंका भाव अनुमानसे लिखा है, ये देशी बोलीके शब्द हैं जो अब प्रचलित नहीं हैं २ ॥

(दिस्टि जिन रिस्टि ति रिस्टि चिंतामनि) श्री जिनेन्द्रके स्वरूपका दर्शन या वीतराग परमात्माका दर्शन कर्म काटनेको खड्ग है तथा रत्नत्रय धर्मरूपी खड्ग भी कर्म नाशक है व चिंतामणिके समान मोक्षदायक है (उवन सुइ दिस्टि सुइ उवन जिना) जिसके भीतर रत्नत्रय धर्मकी खड्ग चमकती है वह कर्मोंको जीतनेवाला होजाता है (आवरन सुइ रमन जिन नंत नंत हितु) हितकारी व अनन्तानन्त गुण व शक्तिधारी जिनेन्द्रके भीतर रमण करना ही चारित्र है (नंत जिन जिनपति उवन जिना) जिससे अनन्त कर्म जीत लिये जाते हैं और यह आत्मा परमात्मा होजाता है ॥ ३ ॥

(उवन जिन उवन पौ उवन चिंतामनि) श्री जिनेन्द्रके प्रकाशनीय पदका प्रकाश चिंतामणिके समान गुणकारी है (उवन हिय उवन हुव उवन जिन) जिसके भीतर यह हितकारी प्रकाश होजाता है वह ध्यानके बलसे स्वयं जिन होजाता है (उवन सह उवन सुइ ध्रुव ध्रुवं जिन) उसके भीतर ध्रुव अविनाशी ज्ञानका प्रकाश होजाता है तथा वह अविनाशी परमात्मा जिन होजाता है (ध्रुव उवन ध्रुव साहि जिन जिनय जिना) ध्रुव ज्ञानके द्वारा श्री जिनेन्द्रपद ध्रुव रूपसे साध लिया जाता है ॥ ४ ॥

(दिप्ति सुइ दिष्टि सुइ दर्स चिंतामनि) ज्ञान दर्शन स्वभावका अनुभव चिंतामणि रत्नके समान है (सब्द सुइ उवन पिय न्यान जिना) शब्द वे ही हितकारी हैं जिनके सहारेसे हितकारी परमात्मा जिनका ज्ञान उदय होजावे (चरन सुइ चरन सुइ उवन चिंतामनि) चारित्र वही है जिसपर चलनेसे चिंतामणि रूप केवलज्ञान प्रगट होजावे (दिप्ति सुइ सब्द चर उवन जिना) शब्दोंके द्वारा ध्यानके ऊपर चलनेसे वीतरागीके ज्ञानकी ज्योति प्रगट होजाती है ॥ ५ ॥ ॥११३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(इष्ट इष्टन्तु उव इष्टि चिंतामनि) उसीके साथ प्रेम करना चाहिये जो अपना इष्ट चिंतामणिके समान मोक्ष है (इष्ट उव उवन सुइ इष्ट जयं) जहां अपना इष्ट स्वभाव प्रगट होजाता है उसी इष्ट मोक्षकी जय हो (उव इष्ट इष्टंतु सुइ उवन चिंतामनि) जिससे चिन्तामणिके समान मोक्ष प्रगट हो उससे प्रेम करो (उव उवन इष्टंतु जिन जिनय जिना) उस प्रकाशसे प्रेम करो जिससे कर्मविजयी जिन होजाता है ॥ ६ ॥

(ऊर्ध सुइ ऊर्ध सुइ ऊर्ध चिंतामनि) तीन लोकके ऊपर विराजित श्रेष्ठ व उत्तम जिनपद है वही चिन्तामणि है (मध्य षट् रमन जिन रमन जिना) श्री जिनेन्द्र तीन लोकके मध्यमें जो जीवादि छः द्रव्य हैं उनके स्वरूपमें वीतरागके समान रमण करते हैं वे षट्द्रव्यमई लोकके ज्ञाता हैं (अर्ध अर्ध सह उवन चिंतामनि) (अर्धका भाव अन्तरात्मा समझमें आता है ।) अन्तरात्मा होकर जो आत्मामें रमण करता है उसके भीतर चिन्तामणिके समान परमात्मापद प्रगट होजाता है (ऊर्ध सुइ अर्ध महि रमन जिना) निश्चयसे जो परमात्मा है वही अन्तरात्मा है। श्री जिनेन्द्र आत्माकी ज्योतिमें रमण करते हैं ॥ ७ ॥

(उवन ठिदि मुक्ति ठिदि उवन चिंतामनि) आत्मज्ञानमें स्थिर होनेसे चिंतामणिके समान स्थिर मुक्तिका प्रकाश होजाता है (उवन हिय न्यान ठिदि जिनय जिना) श्री जिनेन्द्रके हितकारी ज्ञानका प्रकाश स्थायी होजाता है (उवन सह उवन ठिदि समय समय जिन) ज्ञानके प्रकाशके साथ आत्माका परमात्मा जिनरूप प्रकाश होकर स्थाई प्रकाश होजाता है (उवन हिय साह जिन सिद्ध जिना) हितकारी ज्ञानके प्रकाशसे श्री सिद्ध जिनराजका साधन कर लिया जाता है ॥ ८ ॥

(इच्छ सुइ लब्धि सुइ गुप्ति चिंतामनि) जिस परमात्माके पदकी भावना थी वह मिल जाता है, वह अतीन्द्रिय है व चिंतामणिके समान सुखदाई है (अवयास सुइ उवन सुइ उवन जिना) श्री जिनेन्द्रमें जब परमात्मपद प्रगट होता है तब ही अनन्तज्ञान प्रगट होजाता है (अवयास मल विलय धुव उवन चिंतामनि) जब ज्ञानावरण कर्म मल क्षय होजाता है तब चिंतामणि समान ज्ञानका ध्रुव प्रकाश होजाता है (इच्छ सुइ गुप्ति जिन जिनय जिना) जिसकी भावना थी वह अतीन्द्रिय जिनेन्द्र पद मिल जाता है ॥ ९ ॥

(तार सुइ तरन सुइ तार चिंतामनि) चिंतामणिके समान तरण तारण पद श्री अरहन्त भगवानका है (कलन सुइ कमल धुव उवन जिना) शुद्धात्मारूपी कमलके अनुभवसे वह ध्रुव जिनेन्द्र पद होता है (समय सुइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है (समय सुइ सिद्धि सुइ मुक्ति जिना) शुद्धात्मा है सो ही सिद्ध हैं, सो ही मुक्ति प्राप्त जिन हैं ॥ १० ॥

भावार्थ—इस फूलनामें यह बताया है कि भव्यजीवको एक मोक्षपदकी ही भावनासे रत्नत्रयका साधन करना चाहिये। आत्माके स्वरूप ज्ञानमें व ध्यानमें रत्नत्रय गर्भित हैं। आत्मध्यानरूपी खड्गसे कर्मोंका क्षय होता है और आत्माके गुणोंका प्रकाश होता है। जैसे जैसे आत्माका ध्यान किया जाता है कर्ममल कटता है और आत्माका तथा उसके ज्ञानादि गुणोंका प्रकाश होता है। ध्यानमें शब्दोंकी सहायता भी गुणकारी है। आत्मामें एकाग्र होनेसे अतीन्द्रिय भाव या स्वात्मानुभव प्रगट होता है। यही वास्तवमें ध्यानकी अग्नि है। शुद्धात्माके स्वरूपमें रमण करना ही चारित्र है। इस चारित्रमें वीतरागता होती है जिससे संवर होता है व निर्जरा होती है। स्वात्माके स्थिरतासे यथाख्यात चारित्र प्रगट होता है। जब कर्मोंके क्षयसे परमात्मपद प्रगट होता है तब वह ध्रुव रहता है, नाश नहीं होता है, क्योंकि वह आत्माका स्वभाव है। मुमुक्षुको सदा आत्मध्यानका अभ्यास करना चाहिये।

नियमसारमें कहा है—

कम्ममहीरुहमूलच्छेदसमत्थो सकीयपरिणामो। साहीणो समभावो आलुंछणमिदि समुद्दिट्ठं ॥ ११० ॥

कम्मादो अप्पाणं भिण्णं भावेइ विमणगुणणिलयं। मज्झत्थ भावणाए वियडीकरणं निविण्णेयं ॥ १११ ॥

भावार्थ—अपना ही आत्माका समभाव रूप शुद्ध भाव कर्मरूपी वृक्षके मूलको छेदनेको समर्थ है, इसीको कर्म काटनेका उपाय आलुंछन कहते हैं। जो द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्मसे भिन्न शुद्ध गुणधारी अपने आत्माको वीतराग भावनाके साथ ध्याता है वही सर्व विकारोंसे रहित होजाता है।

(१२३) उवन मिलन पचीसी गाथा २५६० से २५८४ तक।

जिन जिनयति जिनय उवन जिन उवने, उव उवन उवन उवए सारे।
जय जयवन्त जयं जय उवने, जय समय मुक्ति प्रवेसारे ॥ १ ॥
जिन जय मिलि हो, जिन जय मिलि हो, अपने उवन जिन पासारे।
जिन जय मिलि हो, जिन जय मिलि हो, दिप्ति दृष्टि प्रवेसारे ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन जय मिलि हौ, जिन जय मिलि हौ, सब्द प्रिये जिन आसारे ।
जिन जय मिलि हौ, जिन जय मिलि हौ, हिय हुव उवन उवएसारे ॥ ३ ॥
रमन रमन जिन उवन रमन जिन, रमन जय जयो जिनेसारे ।
रंज रमन सुइ नंद रमन जिन, तिहु समय मुक्ति प्रवेसारे ॥ ४ ॥
जिन जे मिलि हौ, जिन ज मिलि हौ, अपने उवन जिनेसारे ।
जिन जै मिलि हौ, जिन जै मिलि हौ, अवयास साह जिन साहारे ॥ ५ ॥
अलष अलष जिन उवन अलष जिन, अलष अर्क जिन अर्कारे ।
अलष समय सुइ अलष रमन जिन, अलष विंद अवगाहारे ॥ ६ ॥
जिन जै मिलि हो जिन ज मिलि हौ, आसन उवन सिंघासारे ।
जिन जै मिलि हो जिन जै मिलि हो, अवयास कलन चर कलसारे ॥ ७ ॥
अगम अगम जिन अगम रमन जिन, अलष लषन जिन कलसारे ।
अगम सुयं सुइ उवन अगम जिन, आयरन अगम जिन सहसारे ॥ ८ ॥
जिन जै मिलि हो जिन जय मिलि हौ, सिंघासन उवन सिंधासारे ।
जिन जै मिलि हो जिन जै मिलि हौ, कलन कमल धुव आसारे ॥ ९ ॥
असम असम जिन असम रमन जिन, असम समय सम साहारे ।
असम असम सुइ उवन असम जिन, सिद्ध समय मुक्ति जिन साहारे ॥ १० ॥
जिन जै मिलि हो जिन जै मिलि हौ, चमर चरन जिन चरना रे ।
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उवन कमल धुव उवना रे ॥ ११ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असह सहन सुई असह सहन जिनु, असह साह जिन साहारे ।
अगह गहन जिन अगह रमन जिन, अगम समय सिधि साहारे ॥ १२ ॥
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, धुव उवन कमल कर्न साहारे ।
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उवन छत्र सम सेजारे ॥ १३ ॥
अलह अलह जिन अलह रमन जिन, अलह लब्धि अवगाहा रे ।
बंध बंध जिन अबंध रमन जिन, अबंध मुक्ति सम साहारे ॥ १४ ॥
जिन जै मिलि हौ, जिन जै मिलि हौ, छत्र मुक्ति उव लाहा रे ।
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, धुव उवन सुवन सिधि हाहारे ॥ १५ ॥
दिप्ति चिंतामनि दिष्टि चिंतामनि, दिप्ति दिष्टि उव उवनारे ।
सब्द चिंतामनि प्रिय चिंतामनि, पियं सब्द पिय सुवनारे ॥ १६ ॥
जिन जै मिलि हौ जिन ज मिलि हौ, अपने चिंतामनि उवना रे ।
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उवन चिंतामनि गमना रे ॥ १७ ॥
हिय चिंतामनि गहिर चिंतामनि, साह चिंतामनि रमना रे ।
हुवन चिंतामनि उवएस चिंतामनि, उवएस उवन उव उवना रे ॥ १८ ॥
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उवन चिंतामनि वयना रे ।
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उवन चिंतामनि रमना रे ॥ १९ ॥
कलन चिंतामनि जान चिंतामनि, पय उवन चिंतामनि उवना रे ।
कलि उवन चिंतामनि चरन चिंतामनि, कमल चिंतामनि धुवना रे ॥ २० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उवन चिंतामनि सुवना रे।
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उवन चिंतामनि मिलना रे ॥ २१ ॥
कमल चिंतामनि ध्रुव उवन चिंतामनि, सुवन चिंतामनि सुवना रे।
कलि कमल चिंतामनि सुवन चिंतामनि, उव समय मुक्ति जिन रमना रे ॥ २२ ॥
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलियो, उवन चिंतामनि उल्हसा रे।
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उवन चिंतामनि विगसा रे ॥ २३ ॥
जिन सेनि चिंतामनि कलन चिंतामनि, सेनि कलन जिन सुवना रे।
तर तार चिंतामनि कलन चिंतामनि, सम समय सिद्धि सुइ गमना रे ॥ २४ ॥
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उवन चिंतामनि विलसा रे।
जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ, उव उवन समय सिधि सहसा रे ॥ २५ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जिन जिनयति जिनय उवन जिन उवने) श्री जिनेन्द्रकी जय हो, श्री जिनेन्द्रका प्रकाश हुआ है (उव उवन उवन उवएसा रे) उन्होंने सम्यग्ज्ञानकी प्रगटनाका उपदेश दिया है (जय जयवंत जय जय उवने) कर्मविजयी श्री जिनेन्द्र प्रगट हुए हैं उनकी जय हो (जय समय मुक्ति प्रवेसा रे) मोक्षमें पधारनेवाले आत्माकी जय हो ॥ १ ॥

(जिन जै मिलि हौ जिन जै मिलि हौ—अपने उवन जिन पासा रे) श्री जिनेन्द्र मिल गये हैं, तो अपने वीतराग विज्ञानके धाम हो हैं (जिन जै०, दिप्ति दिष्टि प्रवेसा रे) श्री जिनेन्द्र मिल गए हैं। मैंने अपने स्वाभाविक ज्ञान-दर्शनमें प्रवेश किया है, आत्मानुभव प्राप्त किया है ॥ २ ॥

(जिन जै० सब्दे प्रिये जिन आसा रे) जहां जिनेन्द्र वाचक शब्दोंसे प्रेम किया जाता है तथा जिनेन्द्रसे मिलनेका उत्साह किया जाता है वहां ही जिनेन्द्र मिल जाते हैं (जिन जै० हिय हुव उवन उवएसा रे) श्री जिनेन्द्रने हितकारी आत्मदयारूपी धर्म करनेका उपदेश किया है। श्री जिनेन्द्र ध्यानमें मिल गए हैं ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(रमन रमन जिन उवन रमन जिन) जिनेन्द्रके गुणोंमें रमण करते करते वीतरागता सहित स्वात्मरमणता बढ़ती जाती है (रमन जय जयों जिनेसारे) स्वात्मरमी जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो (रंज रमन सुइ नंद रमन जिन) स्वरूपानन्दमें रमण करनेवाले जिनेन्द्र अनन्त आनन्दमें रमणकर्ता हैं (सिहु समय मुक्ति प्रवेसा रे) वे ही परमात्मा मुक्तिमें प्रवेश करते हैं ॥ ४ ॥

(जिन जै० अपने उवन जिनेसा रे) अपने ही सम्यग्ज्ञानके भीतर जिनेन्द्र हैं। वही हमें श्री जिन मिल गए हैं (जिन जै० अवयास साह जिन साहा रे) आत्मज्ञानके साधनसे मैंने जिनपदको साधा है वही मुझे जिनेन्द्र मिल गए हैं ॥ ५ ॥

(अलष अलष जिन उवन अलष जिन) अतीन्द्रिय जिन स्वभावी आत्माका अनुभव करते करते श्री जिनेन्द्रका अतीन्द्रिय शुद्ध स्वभाव प्रगट होजाता है (अलष अर्क जिन अर्कारे) श्री जिनेन्द्र अतीन्द्रिय ज्ञानमई सूर्य हैं। वे कर्मविजयी सूर्य हैं (अलष समय सुइ अलष रमन जिन) अतीन्द्रिय आत्मा है, सो ही अतींद्रिय स्वभावमें रमण करनेवाले जिन हैं (अलष विंद अवगाहा रे) उन्होंने अपनेको अतींद्रिय ज्ञानमें ही प्रवेश कराया है ॥ ६ ॥

(जिन जै० आसन उवन सिंघासा रे) जब हम ध्यानमई आसन जमाते हैं तब सिंघासन बन जाता है, वहां हमें श्री जिनेन्द्र मिल जाते हैं (जिन जै० कलन कमल धुव आसा रे) जहां शुद्धात्मारूपी कमलमें तन्मय रहनेकी ध्रुवरूपसे उमंग होती है वहीं श्री जिनेन्द्र मिल जाते हैं ॥ ७ ॥

(अगम अगम जिन अगम रमन जिन) श्री जिनेन्द्र मनके अगोचर हैं, अतींद्रिय ज्ञान द्वारा ही वे अपने अतींद्रिय स्वभावमें रमण कर रहे हैं (अलष लषन जिन कलसा रे) श्री जिनेन्द्र कलशके समान हैं उनका दर्शन अतींद्रिय ज्ञानसे ही होता है (अगम सुयं सुइ उवन अगम जिन) श्री जिनेन्द्र स्वयं अतींद्रिय हैं, अतीन्द्रिय ज्ञानमें ही उनके स्वरूपका प्रकाश होता है (आयरन अगम जिन सहसा रे) अतीन्द्रिय स्वभावमें आचरण करनेसे श्री जिनेन्द्रका लाभ एकदम होजाता है ॥ ८ ॥

(जिन जै० सिंघासन उवन सिंघासा रे) जहां आत्मज्ञानका सिंघासन बन जाता है उस सिंघासन पर श्री जिनेन्द्र हमें मिल जाते हैं (जिन जै० कलन कमल धुव आसा रे) जब शुद्धात्मारूपी कमलमें रमनेकी ध्रुव उमंग की जाती है तब श्री जिनेन्द्र वहीं मिल जाते हैं ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(असम असम जिन असम रमन जिन) श्री जिनेन्द्रके समान कोई अन्य पदार्थ नहीं है जिसकी उपमा दी जावे। वे अनुपम जिन अपने ही अनुपम स्वभावमें रमण करते हैं (असम समय सम साहारे) उस अनुपम आत्माने समभावको साधन कर लिया है (असम असम सुइ उवन असम जिन) उस अनुपम आत्माके द्वारा ही अनुपम जिनेन्द्रका प्रकाश होता है (सिहु समय मुक्ति जिन साहारे) उसी परमात्मा जिनेन्द्रने मोक्षको साधन किया है ॥ १० ॥

(जिन० चमर चरन जिन चरना रे) जब जिनेन्द्रके भावरूपी चारित्रमें आचरण किया जाता है, मानों उनके चरणोंपर चमर ढारे जाते हैं, तब श्री जिनेन्द्र मिल जाते हैं (जिन० उवन कमल धुव उवना रे) मेरे ज्ञान-स्वरूपी कमलमें ध्रुव रूपसे परमात्मा जिन प्रगट हैं, मुझे वहां श्री जिनेन्द्र मिल गए हैं ॥ ११ ॥

(असह सहन सुइ असह सहन जिनु) कठिनतासे साधनेयोग्य जिनराजका स्वरूप है (असह साह जिन साहारे) अत्यन्त कठिन साधनसे जिनराजने जिनपदका साधन कर लिया है (अगह गहन जिन अगह रमन जिन) कठि-तासे ग्रहण करनेयोग्य जिनका स्वरूप है उसी अनुभव योग्य स्वरूपमें जिन रमण कर रहे हैं (अगम समय सिधि साहारे) अतीन्द्रिय आत्माने सिद्धपदको साध लिया है ॥ १२ ॥

(जिन० धुव उवन कमल कर्न साहारे) ध्रुव कमल समान आत्माके प्रकाशरूपी साधनसे उनको मैंने साध लिया है। मुझे मेरे आत्मामें जिनेन्द्र मिल गए हैं (जिन० उवन छत्र सम सेजारे) समभावका छत्र मैंने शोभित किया है वहीं मुझे जिनेन्द्र मिल गए हैं ॥ १३ ॥

(अलह अलह जिन अलह रमन जिन) कठिनतासे प्राप्त योग्य जिनका स्वरूप हैं, वे जिनराज उसी अनु-भवनेयोग्य स्वरूपमें रमण कर रहे हैं (अलह लब्धि अवगाहा रे) वे अपूर्व ज्ञानादि लब्धियोंको प्राप्त किये हुए हैं (बंध बंध जिन अबंध रमन जिन) कर्मोंके नवीन व पुराने बन्धनोंको जान करके जिनेन्द्र बन्ध रहित शुद्धा-त्मामें रमण कर रहे हैं (अबंध मुक्ति सम साहारे) बन्ध रहित होकर समभावसे उन्होंने मोक्षको साधन किया है ॥ १४ ॥

(जिन० छत्र मुक्ति उव लाहारे) मैंने छत्र समान मुक्तिके पदका अनुभव अपनेमें किया है वहीं मुझे श्री जिनेन्द्र मिल गए हैं (जिन० धुव उवन सुवन सिधि हाहारे) मैंने ध्रुव ज्ञानमें परिणमन करके मोक्षमार्गको ग्रहण किया है वहीं मुझे जिनेन्द्र मिल गये हैं ॥ १५ ॥

Ganesha Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दिप्ति चिंतामनि दिष्टि चिंतामनि) ज्ञान चिंतामणी है दर्शन भी चिंतामणी है (दिप्ति दिष्टि उव उवनारे) ज्ञान दर्शनमें रमण करनेसे अनन्त ज्ञान व अनन्त दर्शनका प्रकाश हुआ है (सव्द चिंतामनि प्रिय चिंतामनि) ध्यानके साधक शब्द चिंतामणि हैं व ध्यानका प्रेमी भी चिंतामणि है (पियं सव्द पिय सुवनारे) हितकारी शब्दोंके द्वारा हितकारी आत्मीक स्वभावमें परिणमन होता है ॥ १६ ॥

(जिन० अपने चिंतामनि उवनारे) अपना स्वभाव चिंतामणि रत्नके समान प्रगट हुआ है, उसमें मुझे जिनेन्द्र मिल गए हैं (जिन० उवन चिंतामनि गमनारे) चिंतामणिके समान ज्ञानमें मेरा परिणमन होरहा है, वहीं जिनेन्द्र मिल गए हैं ॥ १७ ॥

(हिय चिंतामनि गहिर चिंतामनि) आत्मप्रेम चिंतामणि है, गंभीर आत्मामें प्रवेश चिंतामणि है (साह चिंतामनि रमना रे) इस साधनसे चिंतामणि समान शुद्ध स्वभावमें रमण होता है (हुवन चिंतामनि उवएस चिंतामनि) ध्यानका होम चिंतामणि है-ध्यानका उपदेश चिंतामणि है (उवएस उवन उव उवना रे) उपदेशके अनुसार ज्ञानमें रमणसे ज्ञान प्रगट हुआ है ॥ १८ ॥

(जिन० उवन चिंतामनि वयना रे) चिंतामणिके समान वचनोंके भाव मेरे भीतर प्रगट हैं, उन्हींमें जिनेन्द्र मिल गए हैं (जिन० उवन चिंतामनि रमना रे) मैं चिंतामणिके समान आत्मज्ञानमें रमण कर रहा हूँ, वहीं जिनेन्द्र मिल गए हैं ॥ १९ ॥

(कलन चिंतामनि जान चिंतामनि) आत्मानुभव चिन्तामणि है, मोक्षमार्ग चिंतामणि है (पय उवन चिंतामनि उवना रे) इससे चिंतामणिके समान परमात्माका पद या केवलज्ञानका पद प्रगट हुआ है (कलि उवन चिंतामनि चरन चिंतामनि) ज्ञानाभ्यास चिंतामणि है, चारित्र चिंतामणि है (कमल चिंतामनि धुवना रे) इसीसे चिंतामणिके समान शुद्धात्मारूपी कमल ध्रुवपदमें पहुंच गया है ॥ २० ॥

(जिन० उवन चिंतामनि सुवना रे) मैं चिंतामणिके समान आत्मज्ञानमें परिणमन कर रहा हूं, मुझे वहीं जिनेन्द्र मिल गए हैं (जिन० उवन चिंतामनि मिलना रे) मुझे ज्ञान प्रकाशरूपी चिंतामणि मिल गया है, वहीं मैंने जिनेन्द्रको पा लिया है ॥ २१ ॥

(कमल चिंतामनि धुव उवन चिंतामनि) चिंतामणिके समान शुद्धात्मारूपी कमल है, ध्रुव व अविनाशी ज्ञान भी चिंतामणि है (सुवन चिंतामनि सुवना रे) चिंतामणिके समान स्वरूपमें परिणमन है, उसमें परिण- ॥१२२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन हुआ है (कलि कमल चिंतामनि सुवन चिंतामनि) आत्मारूपी कमलका अनुभव चिंतामणि है, उसमें परिणमन चिंतामणि है (उव समय मुक्ति जिन रमना रे) इसीके अभ्याससे परमात्मा जिन होकर भव्य जीव मोक्षमें रमण करता है ॥ २२ ॥

(जिन० उवन चिंतामनि उल्हसा रे) मेरे भीतर चिंतामणिके समान आत्मज्ञानका उल्लास है या आत्मज्ञानकी उमंग है, इसी उमंगमें जिनेन्द्र मिल गए हैं (जिन० उवन चिंतामनि विगसा रे) मेरे भीतर ज्ञानरूपी चिंतामणि प्रगट हुआ है, उसीमें मुझे जिनेन्द्र मिल गए हैं ॥ २३ ॥

(जिन स्रेनि चिंतामनि कलन चिंतामनि) वीतराग क्षपकश्रेणि चिंतामणिके समान है, उसमें आत्मानुभव चिंतामणिके समान है (स्रेनि कलन जिन सुवना रे) इस श्रेणिपर चढ़नेसे ही जिनेन्द्रपदका प्रकाश हुआ है तर तार चिंतामनि कलि कलन चिंतामनि) तारण तरण अरहन्त भगवान चिंतामणिके समान हैं तथा शुद्धात्मारूपी कमलका वास चिंतामणिके समान है (सम समय सिद्धि सुइ गमना रे) ऐसे परमात्मा अरहन्त समभावसे सिद्धगतिमें पधार जाते हैं ॥ २४ ॥

(जिन० उवन चिंतामनि विलसा रे) मैंने ज्ञानरूपी चिंतामणि रत्नका आनन्द लिया है, वहीं मुझे जिनेन्द्र मिल गए हैं (जिन० उव उवन समय सिधि सहसा रे) मेरे ज्ञानी आत्मामें सिद्धभाव यकायक प्रगट हैं उसीमें श्री जिनेन्द्र मिल गए हैं ॥ २५ ॥

भावार्थ—इस उवन मिलन पचीसीमें शुद्धात्माके अनुभवकी उत्तम रीति बताई है। तथा यह झलकाया है कि जिनेन्द्र भगवानका लाभ व जिनेन्द्रका दर्शन उसीको होता है जो अपने आत्माको पहचान कर उसके शुद्ध स्वरूपका निश्चय करके भेदविज्ञानपूर्वक उसी शुद्ध आत्माके ज्ञानमें रमण करता है। ज्ञानकी दृष्टिसे निश्चयनयके सहारेसे जो अपने यथार्थ स्वरूपको देखता है वहीं परमात्मा दिखजाता है। आत्मामें और जिनेन्द्र परमात्मामें स्वभावकी दृष्टिसे कोई अन्तर नहीं है। जो आत्माको ध्याता है वही परमात्माको आत्मध्यानमें पाता है। श्री जिनेन्द्रका उपदेश उत्तम प्रकार ग्रहण करके संसारसे वैराग्यवान होकर ॐ ह्रीं आदि मन्त्रोंके द्वारा आत्मध्यानका अभ्यास करना चाहिये-आत्मध्यानमें रमण चिंतामणि रत्नके समान है। बड़े २ पापी जीव भी आत्मध्यानकी अग्नि जलाकर कर्मोंको भस्म करके उसी भवसे सिद्धगतिको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

यहां सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तीनों हैं। यहां निश्चयनयसे बताया है कि जैसे जिनेन्द्र भगवान सिंहासनपर बिराजित, चमरोंसे सुशोभित, छत्रके नीचे समवसरणमें मिलते हैं वैसे मेरे ही आत्मज्ञानका सिंहासन है, चारित्रका आराधन चमर है, समभाव या मोक्ष तत्वका अनुभव छत्र है। ऐसे मेरे ही भीतर मेरे सिंहासन, चमर, छत्रके मध्यमें श्री जिनेन्द्र मुझे मिल जाते हैं। अभिप्राय यही है कि जो कोई सम्यग्दर्शन सहित शुद्धात्माका ज्ञान प्राप्त करके समता सहित उसीके भीतर चलनेका या ध्यानका या सामायिक करनेका-रमण करनेका अभ्यास करता है वही परमात्माके स्वभावका अनुभव करता है, फिर संवर व निर्जराको प्रगट कर गुणस्थानकी श्रेणी द्वारा चढ़कर स्वयं अरहन्त परमात्मा होकर फिर सिद्ध होजाता है। जो आपको आपरूप ध्याता है वही आपको पाता है और परमात्मा होजाता है।

नियमसारमें कहा है—

मोत्तूण सल्लभावं णिस्सल्ले जो दु साहु परिणमदि। सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ॥ ८७ ॥

चत्ता ह्यगुत्तिभावं तिगुत्तिगुत्तो हवेइ जो साहू। सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ॥ ८८ ॥

मोत्तूण अट्टरुद्दं झाणं जो झादि धम्मसुक्कं वा। सो पडिकमणं उच्चइ जिणवरणिद्दिट्ठसुत्तेसु ॥ ८९ ॥

भावार्थ—जो कोई साधु माया, मिथ्या, निदान इन तीन शल्योंको त्यागकर शल्य रहित शुद्ध भावमें ठहरता है वही पुराने कर्मोंको हटाता हुआ प्रतिक्रमण करता है। उसे ही प्रतिक्रमण स्वरूप कहा गया है। जो साधु मन, वचन, कायकी चंचलताको छोड़कर तीन गुप्तिमई समाधिमें गुप्त होता है वही प्रतिक्रमण करता है। उसे प्रतिक्रमण स्वरूप कहा गया है। जो साधु आर्तध्यान व रौद्रध्यानको छोड़कर धर्मध्यान व शुक्लध्यानको ध्याता है वहीं श्री जिनेन्द्रके सूत्रोंमें प्रतिक्रमण कहा गया है।

(१२४) जिनवर फूलना गाथा २५८५ से २६०० तक।

उव उवने उवन उवन सुइ उवनं, उव उवन समय सुइ सिधि गमनं ॥ १ ॥

जिन जूरे जिन जिनया जिनवर, जय जयो जयो जय मुक्ति मेरे (आचरी) ॥ २ ॥

छुटि गइ सरनि, टूटिगो गारव, रमि रमन समय जिन मुक्ति पियारो ॥ जिन० ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जयन जयन जैन जे जयनं, जय उवन समय सुइ मुक्ति सु गमनं ॥ जिन० ॥ ४ ॥
रमि रमन रमन उवन सुइ रमनं, उव उवन रमन सम सिधि सु गमनं ॥ जिन० ॥ ५ ॥
दिपि दिप्ति दिप्ति उवन सुइ दिपियं, सुइ उवन दिप्ति कलअंतर षिपियं ॥ जिन० ॥ ६ ॥
इस्ट दिप्ति इस्ट उवन दिपि उवनं, उव उवन दिप्ति इस्ट दिप्ति सुइ विलयं ॥ जिन० ॥ ७ ॥
इस्ट सब्द इस्ट उव उवन सुइ उवनं, उव उवन दिप्ति कल अंतर विलयं ॥ जिन० ॥ ८ ॥
इस्ट उवन इस्ट उव उवन सु उवनं, उव उवन सुवन सुई सिधि सु गमनं ॥ जिन० ॥ ९ ॥
इस्ट हियन इस्ट उव हियन उव उवनं, उव उवन हियं मम सिधि सु गमनं ॥ जिन० ॥ १० ॥
इस्ट साह इस्ट उवन सह उवनं, उव उवन साह सम सिधि सु गमनं ॥ जिन० ॥ ११ ॥
अवयास इस्ट उवन इस्ट उवनं, उव उवन इस्ट सम सिधि सु गमनं ॥ जिन० ॥ १२ ॥
इस्ट कलन इस्ट उव कलन सु उवनं, उव उवन कलन सम सिधि सु गमनं ॥ जिन० ॥ १३ ॥
इस्ट कमल इस्ट उव कमल सु उवनं, उव उवन कमल सम सिधि सु गमनं ॥ जिन० ॥ १४ ॥
उव उवन स्रेनि कलन उव उवनं, तारन तरन कमल सुइ उवनं ॥ जिन० ॥ १५ ॥
तारन तरन कमल सुइ रमनं, उव तार कमल सम सिधि सु गमनं ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(उव उवने उवन उवन सुइ उवनं) **ज्ञानमें ज्ञानको रमानेसे केवलज्ञानका प्रकाश हो जाता है** (उव उवन समय सुइ सिधि गमनं) **जब आत्मा परमात्मा होजाता है, तब वह सिद्धगतिको प्राप्त हो जाता है ॥ १ ॥**

(जिन जूरे जिन जिनया जिनवर) **श्री जिनेन्द्र कर्मके विजेता जिनवर हैं** (जिन जयो जयो जय मुक्ति मेंरे) **जो सर्व रागादिको जीतकर मोक्षमें विराजते हैं ॥ २ ॥**

(छुटि गइ सरनि टूटिगौ गौरव) **संसार छूट गया है, पर्यायका अहंकार टूट गया है** (रमि रमन समय जिन मुक्ति पियारो) **आत्माके भीतर रमण करके श्री जिनराज मोक्षके साथ प्रेमालु होगए हैं ॥ ३ ॥**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जय जयन जयन जैन जै जयनं) जैनधर्मकी जय हो, जिसके प्रतापसे संसारकी विजय की जाती है (जय उवन समय सुइ मुक्ति गमनं) जैनधर्मकी जय हो जिससे यह आत्मा परमात्मा होकर मोक्षको गमन कर जाता है ॥ ४ ॥

(रमि रमन रमन उवन सुइ रमनं) अपने आत्माके ज्ञानमें रमण करना सो ही स्वात्मरमण है (उव उवन रमन सम सिधि सु गमनं) इसी ज्ञानमें रमणसे समभाव होता है, उस समभावके साथ आत्मा सिद्धगतिको जाता है ॥ ५ ॥

(दिपि दिष्टि दिप्ति उवन सुइ दिपियं) ज्ञानका अनुभव करते हुए ज्ञान प्रकाशमान रहता है (सुइ उवन दिप्ति कल अन्तर षिपियं) इसी आत्मज्ञानके प्रकाशसे संसारीके भीतर जो कर्मोंका बन्ध है सो क्षय होजाता है ॥ ६ ॥

(इस्ट दिप्ति इस्ट उवन दिपि उवनं) ज्ञान ज्योतिसे प्रेम करनेसे इष्ट ज्ञानका प्रकाश होते हुए केवलज्ञान प्रगट होजाता है (उव उवन दिप्ति इस्ट दिप्तिं सुइ विलयं) ज्ञानके प्रकाशसे जो इष्ट केवलज्ञान होता है वही क्षायिकभाव है ॥ ७ ॥

(इस्ट सब्द इस्ट उवन सुइ उवनं) आत्माके प्रकाशक इष्ट शब्दोंकी सहायतासे इष्ट ज्ञानका प्रकाश होना सो ही आत्माका प्रकाश है (उव उवन दिप्ति कल अन्तर विलयं) इस ज्ञानके प्रकाशसे शरीरके भीतरसे कर्मका मैल दूर होजाता है ॥ ८ ॥

(इस्ट उवन इस्ट उव उवन सु उवनं) हितकारी ज्ञानके अनुभव करनेसे बढ़ता हुआ ज्ञान केवलज्ञानमय होजाता है (उव उवन सुवन सुइ सिधि गमनं) इस ज्ञानमें परिणमन करता हुआ आत्मा सिद्धगतिको चला जाता है ॥ ९ ॥

(इस्ट हियन इस्ट उव हियन उंव उवनं) आत्माके इष्ट प्रयोजनसे प्रेम करनेसे इष्ट हित प्रगट होते होते अरहन्तपद प्रगट होजाता है (उव उवन हियं सम सिधि सु गमनं) इस तरह आत्माके हितकी प्रगटता होनेपर आत्मा समभावके साथ मोक्षमें चला जाता है ॥ १० ॥

(इस्ट सांह इस्ट उवन सह उवनं) रत्नत्रयका साधन इष्ट है। उसीसे हितकारी ज्ञानके प्रकाशके साथ आत्माका प्रकाश होजाता है (उव उवन साह सम सिधि सु गमनं) साधनेयोग्य परमात्मा पदके प्रकाशको लिखे हुए आत्मा समभावके साथ सिद्धगतिको चला जाता है ॥ ११ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(अवयास इस्ट उवन इस्ट उवनं) अनन्तज्ञानके साथ प्रेम करनेसे इष्ट केवलज्ञान प्रगट होजाता है (उव उवन इस्ट सम सिधि सु गमनं) इष्ट केवलज्ञानको लिये हुए समभावके साथ आत्मा सिद्धगतिको चला जाता है॥१२॥

(इस्ट कलन इस्ट उवन कलन सु उवनं) हितकारी आत्मानुभवके अभ्याससे आत्मानुभवका प्रकाश होते हुए केवलज्ञान होजाता है (उव उवन कलन सम सिधि गमनं) स्वात्मानुभवके पूर्ण प्रकाशसे यह आत्मा सम-भावके साथ सिद्धगतिको चला जाता है ॥ १३ ॥

(इस्ट कमल इस्ट उव कमल सु उवनं) इष्ट कमल समान शुद्धात्माके साथ प्रेम करनेसे कमलका पूर्ण प्रकाश होजाता है (उव उवन कमल सम सिधि सुगमनं) कमल समान विकसित परमात्मा समभाव सहित सिद्धगतिको जाता है ॥ १४ ॥

(उव उवन स्रेनि कलन उव उवनं) गुणस्थानोंके क्रमसे स्वात्मानुभव करते हुए केवलज्ञानका प्रकाश हो-जाता है (तारन तरन कमल सुइ उवनं) तब तारण तरण अरहन्त परमेष्ठी कमलके प्रकाशके समान होजाते हैं ॥ १५ ॥

(तारन तरन कमल सुइ रमनं) तारण तरण अरहन्त अपनेमें ही रमण करते हैं (उव तार कमल सम सिधि सु गमनं) अनेक भव्योंको भवसागरसे तारकरके वे परमात्मा कमल समभावके साथ सिद्धपदको प्राप्त होते हैं ॥ १६ ॥

भावार्थ—यहां श्री जिनेन्द्रकी महिमा गाई है, जिसके द्वारा प्रकाशित जैनधर्मसे आत्माका परमहित होता है। जब यह आत्मा अपने हितको समझता है कि मेरा सच्चा हित परमात्मपदको पाना है तथा इसका उपाय भी एक निज आत्माका अनुभव है। आत्माका स्वरूप निश्चयसे परमात्माके समान है, ऐसा समझकर व श्रद्धामें लाकर शुद्धात्माके स्वरूप ज्ञानमें उपयोगको जोड़नेसे आत्मानुभव जगता है। इस आत्मानुभवको ही रत्नत्रय धर्मकी एकता कहते हैं। इसके भीतर जैसे २ रमा जाता है कर्मोंका बल घटता है। तब अनन्तानुबन्धी कषाय और दर्शनमोहनीयकी तीन प्रकृतियोंके क्षयसे क्षायिक सम्यग्दर्शन हो जाता है। इस क्षायिकभावसे आत्मानुभव और भी निर्मल होता है तब चारित्र मोहनीयका क्षय होकर क्षायिक चारित्र भी होजाता है। क्षीणमोह गुणस्थानी शेष ज्ञानावरणादि तीन घातीयको क्षय करके अर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narta, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

ध्यानोंमें शब्दोंके आलम्बनकी जरूरत है। केवलज्ञानीके भीतर पूर्ण समभाव या वीतरागभाव रहता है। वे ही तारणतरण अरहंत कहलाते हैं। अनेकोंको तारकर स्वयं सिद्ध होजाते हैं। तात्पर्य यह है कि मुमुक्षुको श्रद्धापूर्वक आत्माका ज्ञान प्राप्त करके शुद्धात्मानुभव करना योग्य है। यही मोक्षका मार्ग है। ध्यानके लिये मन, वचन, कायकी गुप्तिकी जरूरत है। नियमसारमें कहा है—

जा रायादिणियत्ती मणस्स जाणीहि तम्मणोगुत्ती। अलियादिणियत्तिं वा मोणं वा होइ वदिगुत्ती ॥ ६९ ॥

कायकारियाणियत्ती काउस्सग्गो सरीरगे गुत्ती। हिंसाइणियत्ती वा सरीरगुत्तित्ति णिद्दिट्ठा ॥ ७० ॥

भावार्थ—रागद्वेषादिसे मनका छूट जाना उसको मन गुप्ति जानो। असत्य वचन आदिसे छूटना या मौन रहना सो वचन गुप्ति होती है। शरीरका हलन चलन बन्द करके कायोत्सर्ग करना कायगुप्ति है या हिंसादि पापोंसे छूटना उसे कायगुप्ति कहा गया है।

(१२९) धुव केवल बनजारा गाथा २६०१ से २६१७ तक।

जय जयो जयो जय रमन पौ, रमन पियं पिय उत्तुगा।
जिन सब्द पियं पिय उवन पौ, सम समय सिधि संपत्तुगा ॥ १ ॥
उव केवल वनजारारे, सुइ उवन जय जेवंतुगा।
सुइ मुक्ति पियं पिय रमन पौ, सुइ सब्द पियं पिय नंदुगा (आचरी) ॥ २ ॥
सुइ सुयं सुयं सुइ उवन जै, यं रंज रंज जिन रंजुगा।
जं जान जान जं उवन पौ, तं तार कमल जिन उत्तुगा ॥ उव केवल० ॥ ३ ॥
उव उवन उवन जै उवन पौ, तत्काल पियं सिधि रत्तुगा।
पर पर्म पर्म सुइ पर्म पौ, नयन्रत सिधि संपत्तुगा ॥ उव० ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जं जैन जैन जं जयन पौ, तं तत्त रमन आनंदगा।
उव उवन सहावे जं उवनू, तं तत्त सिधि संपत्तुगा ॥ उव० ॥ ५ ॥
जं जं अवगाहन उवन पौ, सासाहन उवन समत्थुगा।
हाहल वंचिय सुइ तरन पौ, सुइ सुयं सिधि संपत्तुगा ॥ उव० ॥ ६ ॥
तत्काल कर्न सुइ उवन जै, सिय सिद्धि समय जिन उत्तुगा।
धिय बोध न्यान केवल उवनं, उव उवन सिधि संपत्तुगा ॥ उव० ॥ ७ ॥
जै जैन जल्प धुव उवन पौ. उव उवन जयं जैवन्तुगा।
तव तारन तरन जिन समय पौ, उवलद्धि सिद्धि संपत्तुगा ॥ उव० ॥ ८ ॥
जो विलय काल कालंतर ए. कल कमल उवन विलसंतुगा।
रलि रमन रमन जिन उवन पौ, इय ईजं समय सिधि रत्तुगा ॥ उव० ॥ ९ ॥
सुइ सुयं सुयं सुइ जै रमनू, पा पार अपार तरंतुगा।
वा वारवार अनंत जै, इम ईजं सिधि संपत्तुगा ॥ उव० ॥ १० ॥
जो जं सुइ उवन अनन्त मौ, जै जयो जयो जिन नंदुगा।
ई इष्ट ईजं सुइ उवन पौ. सह समय सिद्धि संपत्तुगा ॥ उ० ॥ ११ ॥
उव उवन समय सुइ साहि मौ, कलि कमल उवन धुवसिद्धुगा।
रै रमन सुवन सुइ कमल जै, ई ईजं धुवं सिधि दत्तुगा ॥ उ० ॥ १२ ॥
सुइ सुयं सुयं जै रमन पौ, तत्काल मुक्ति दर्संतुगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उव उवन सहावे कर्नं जै, पा पार अपार विलसंतुगा ।
वा वार पार सुनन्त पौ, ई ईजं कमल धुव सिद्धगा ॥ उ० ॥ १४ ॥
सुइ स्नेनि उवन जिन स्नेनि पौ, जै जयो स्नेनि कलि स्नेनिगा ।
सह साह कलन जिन स्नेनि पौ, जिन स्नेनि कलन सिधि रत्तुगा ॥ उ० ॥ १५ ॥
जै तारन तरन सु उवन पौ, सुइ उवन कमल विलसंतुगा ।
सुइ कलन चरन सुइ कमल पौ, सुइ कर्न समय सिधि रत्तुगा ॥ उ० ॥ १६ ॥
उव स्नेनि तार सुइ तरन पौ, सुइ कलन कमल धुव उत्तुगा ।
धुव उवंन उत्तु सुइ समय मौ, सह समय सिद्धि संपत्तुगा ॥ उ० ॥ १७ ॥

(जय जयो जयो जय रमन पौ) **स्वात्मरमण अरहन्त पदकी जय हो** (रमन पियं पिय उत्तुगा) **वे परमप्रिय मोक्षमें रमण करनेवाले कहे गए हैं** (जिन सब्द पियं पिय उवन पौ) **जैसा प्यारा जिन शब्द है उसीके अनुसार उन्होंने प्रिय परमात्मापदको प्रगट किया है** (सम समय सिद्धि संपत्तुगा) **तथा वे समभाव सहित परमात्मा सिद्ध गतिको पालेते हैं** ॥ १ ॥

(उव केवल बनजारा रे) **वे जिनेन्द्र भगवान केवली मोक्ष जानेके लिये व्यापारी हैं** (सुइ उवन जयं जैवंतुगा) **वे प्रकाशमान हैं उनकी जय हो, जय हो** (सुइ मुक्ति पियं पिय रमन पौ) **वे परम प्यारी मुक्तिके भीतर रमण कर रहे हैं** (सुइ सब्द पियं पिय नंदुगा) **उनके नामका शब्द भी लेनेसे परमप्रिय आत्मानन्द मिलता है** ॥ २ ॥

(सुइ सुयं सुयं सुइ उवन जै) **उन अरहन्तकी जय हो, वे स्वयं अपने ही साधनसे प्रगट हुए हैं** (यं रंज रंज जिन रंजगा) **वे जिनेन्द्र आत्माके आनन्दमें मगन होते हुए आनन्द स्वरूप हैं** (जं जान जान जं उवन पौ) **वे ही मोक्षमार्गपर चलनेवाले जहाज हैं, उनका पद प्रकाशमान है** (तं तार कमल जिन उत्तुगा) **उन्हींको तारनेवाले कमल समान शुद्धात्मा जिन कहते हैं** ॥ ३ ॥

(उव उवन उवन जै उवन पौ) **उस प्रकाशमान अरहन्त पदकी जय हो** (उत्काल पियं सिधि रत्तुगा) **वे हर**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय परम प्यारी सिद्धगतिमें लवलीन हैं (पर पर्म पर्म सुइ पर्म पौ) वही पद परमसे परम बड़ा ही ऊँचा पद है (नय नृत सिद्धि संपत्तुगा) वे सच्चे आप्तदेव सिद्धिको पालेते हैं ॥ ४ ॥

(जं जैन जैन जं जयन मौ) कर्मोंको जितानेवाले जैनधर्मकी जय हो (तं तत्त रमन आनंदगा) जो जैनधर्मके तत्वोंमें रमण करता है उसे आनन्दका लाभ होता है (उव उवन सहावे जं उवनू) वह अपने ज्ञान स्वभावके द्वारा केवलज्ञानी होजाता है (तं तत्त सिद्धि संपत्तुगा) वही परमात्माके तत्वका लाभ करनेवाला सिद्धिको पालेता है ॥ ५ ॥

(जं जं अवगाहन उवन पौ) जिस जिस साधनके भीतर प्रवेश करनेसे परमात्मपद प्रगट होता है (सा साहन उवन समत्थुगा) वही साधन उस शक्तिको रखता है जिससे परमात्मपदका प्रकाश होमके (हा हल वंचिय सुइ तरन मौ) संसार-सागरके भ्रमणसे बचानेवाला वही साधन जहाज है (सुइ सुयं सिद्धि संपत्तुगा) जो इस साधनपर चलता है वह स्वयं सिद्धिको पाता है ॥ ६ ॥

(तक्काल कर्न सुइ उवन जै) जिस समय रत्नत्रयमई साधनका प्रकाश होता है उस साधनकी जय हो (सिय सिद्धि समय जिन उत्तुगा) उसीके पूर्ण प्रकाशके समय उस आत्माको शुद्ध सिद्ध आत्मा जिन कहते हैं (धियबोध न्यान केवल उवनं) आत्मज्ञानके अनुभवसे उसे केवलज्ञान प्राप्त होजाता है (धुव उवन सिद्धि संपत्तुगा) वे ध्रुवरूपसे प्रकाश करते हुए सिद्धिको पालेते हैं ॥ ७ ॥

(जै जैन जल्प धुव उवन पौ) जिनवाणीकी जय हो, जो ध्रुव परमात्माके पदके प्रकाशका मार्ग बताती है, (उव उवन जयं जैवंतुगा) जिसके प्रतापसे केवलज्ञान प्रगट होजाता है उसकी जय हो (जिन तारन तरन जिन समय मौ) तब तारणतरण जिनेन्द्र परमात्मा (उव लब्धि सिद्धि संपत्तुगा) सिद्धगतिकी लब्धिको पालेते हैं ॥ ८ ॥

(जो विलय काल कालंतरए) जो कोई समय पर उदय आने व सत्तामें बैठे हुए कर्मोंका क्षय करता है (कल कमल उवन विलसंतुगा) और कमल समान प्रकाशित शुद्धात्माके भीतर रमण करके आनन्द लेता है (रलि रमन रमन जिन उवन पौ) तथा उसीमें महान होहोकर जिन परमात्माका पद प्रगट कर देता है (इय ईर्जे समय सिधि रत्तुगा) वह ज्ञानी परमात्मा सीधा मोक्षको पधारकर उसीमें रत रहता है ॥ ९ ॥

(सुइ सुयं सुयं सुइ जै रमनु) स्वयं ही अपने आपमें रमण करने वाले भव्यकी जय हो (पा पार अपार [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

अनन्त गुणोंको प्रकाश कर देता है (इय ईर्जे सिद्धि संपत्तुगा) वही ज्ञानी जीवा सिद्धगतिको चला जाता है ॥१०॥

(जौं जं सुइ उवन अनंत मौ) जो कोई अपने अनन्तगुणोंको प्रगट कर देता है (जै जयो जयो जिन नंदुगा) ऐसे आनन्दमें मग्न जिनेन्द्रकी जय हो जय हो (ई इष्ट ईर्जे सुइ उवन पौ) वही इष्ट केवलज्ञानके शुद्ध प्रकाशको प्रगट कर देता है (सह समय समय सिधि संपत्तुगा) और उसी ज्ञानके साथ सिद्धगतिको पालेता है ॥ ११ ॥

(उवन उवन समय सुइ साहियौ) जो आत्मा ज्ञानी साधन करता है (कलि कमल उवन धुव सिद्धगा) वही शुद्धात्मारूपी कमलका अनुभव करके ध्रुव केवलज्ञानको पाकर सिद्ध होजाता है (रै रमन सुइ कमल जै) जो बराबर आत्माके रमणमें परिणमन करता है वही कमल समान विकसित शुद्धात्मा होजाता है उसकी जय हो (ई ईर्जे धुवं सिधि रत्तुगा) वही ध्रुव रूपसे केवलज्ञानमें परिणमन करते हुए सिद्धभावमें लीन रहता है ॥ १२ ॥

(सुइ सुयं सुयं सुइ रमन पौ) वही स्वयं आपसे आपमें रमण करनेवाला भव्य है (तत्काल मुक्ति दर्सतुगा) जो स्वात्म रमणके समय मुक्तिके स्वरूपका दर्शन करता है (ई ईर्जे समय सुइ उवन पौ) वह ज्ञानमें परिणमन करके केवलज्ञानी अरहन्त परमात्मा होजाता है (सह समय सिद्धि संपत्तुगा) तथा केवलज्ञान सहित सिद्धगतिको पालेता है ॥ १३ ॥

(उव उवन सहावे कर्न जै) ज्ञान स्वभावमें रमणरूप साधनकी जय हो (पा पार अपार विलसंतुगा) उसे साधनेवाला इस अपार संसारके पार होकर आत्मानन्दका विलास करता है (वार बार वास सुनंत पौ) व संसारके पार जाकर अनन्त परमात्मपदको पालेता है (ई ईर्जे कमल धुव सिद्धिगा) वही ज्ञानी कमल समान आत्मा ध्रुव अविनाशी सिद्धगतिको पालेता है ॥ १४ ॥

(सुन स्रेनि उवन जिन स्रेनि पौ) गुणस्थानोंकी श्रेणीपर चढ़कर श्री जिनेन्द्रका गुणस्थान प्रगट होता है (जै जयो स्रेनि जय स्रेनिगा) ऐसे जिनेन्द्रपदमें आरूढ़ नीचेकी श्रेणियोंको जीतनेवाले जिनेन्द्रकी जय हो (सह साह कलन जिन स्रेनि पौ) वे जिनेन्द्र उस पदमें भी आत्मानुभवके साधनमें लीन हैं (जिन स्रेनि कलन सिधि रत्तुगा) वे ही जिनेन्द्र जिनपदका अनुभव करते हुए सिद्धभावमें रत रहते हैं ॥ १५ ॥

(जै तारन तरन सु उवन मौ) प्रकाशमान तारण तरण जिनेन्द्रकी जय हो (सुइ उवन कमल बिलसंतुगा) वे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमल समान विकसित आत्माका आनन्द लेरहे हैं (सुइ कलन मरन सुइ कमल पौ) वे ही वीतराग चारित्रमें लीन हैं, वे ही कमलरूप हैं (सुइ कर्न समय दिपि रत्तुगा) वे ही मोक्षके साधक आत्मा सिद्ध भावमें लीन रहते हैं ॥ १६ ॥

(उव स्रेनि तार सुइ तरन पौ) इस पदपर जिनेन्द्र भव्योंको तारकर स्वयं तर जाते हैं (सुइ कलन कमल धुव उत्तुगा) उन्हें ही ध्रुवरूपसे आत्मारूपी कमलका आस्वादी कहा गया है (धुव उवन उत्तु सुइ समय मौ) वे ही ध्रुव केवलज्ञान सहित परमात्मा कहे गये हैं (सह समय सिद्धि संपत्तुगा) वे ही आत्मा शुद्ध ज्ञान सहित सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ १७ ॥

भावार्थ—ध्रुव केवल बनजारा छन्दमें बताया है कि जो मोक्षरूपी उत्तम सम्पत्तिको प्राप्त करना चाहता है वह एक व्यापारी है वह पहले अपने ही आत्मज्ञानके साधनको स्वात्मानन्दमें रमण होकर साधता है। स्वात्मरमणसे ही कर्मोंकी अविपाक निर्जरा होती है, आत्माका शांत स्वभाव प्रगट होता जाता है। वास्तवमें आप ही साधन है, आप ही साध्य है। अपनेमें आप ही रमण करनेसे अरहन्तपद प्रगट होजाता है उसे ही केवली बनजारा कहते हैं। वह शीघ्र ही सिद्धगतिको पाकर ध्रुवरूपसे मोक्ष सम्पदाका स्वामी होजाता है। तब ध्रुव केवल बनजारा कहलाता है। जिनेन्द्र कथित जैनधर्म बड़ा ही उपकारी है व जिनवाणी बड़ी ही कल्याणकारिणी है जो यथार्थ जिनधर्मको बताती है। जो निश्चय जैनधर्मको साधन करता है वही उन्नतिके पथपर चढ़ता जाता है। वह इस अपार संसार—सागरसे पार होजाता है व अनन्त आत्मीक गुणरूपी सम्पदाका स्वामी होजाता है। मोक्षप्राप्तिकी उमंग ही मोक्षके व्यापारीको सफलता दिलाती है। जैनधर्मके भीतर कहे गए जीवादि सात तत्वोंको समझकर फिर उसमेंसे एक निजात्म तत्वको ग्रहण करके उसी हीमें रमण करना चाहिये। वास्तवमें आत्माके ध्यानसे ही अरहन्तपद—सिद्धपद होता है।

नियमसारमें कहा है—

णोकम्मकम्मरहियं विहावगुणपज्जएहिं वदिरित्तं। अप्पाणं जो झायदि समणस्सालोयणं होदि ॥ १०७ ॥

जो पस्सदि अप्पाणं समभावे संठवित्तु परिणामं। आलोयणमिदि जाणह परमजिणंदस्स उवएसं ॥ १०९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

विभाव अशुद्ध गुण पर्यायोंसे शून्य शुद्ध स्वाभाविक आत्माको ध्याता है उसी साधुके कर्म काटनेवाली आलोचना होती है। जो कोई अपने भावको समभावमें स्थापन करके अपने आत्माको अनुभव करता है उसीके आलोचना जानो, यह परमात्मा जिनेन्द्रका उपदेश है।

(१२६) जयरंजसी अर्क गाथा २६१८ से २६५० तक।

जय जैने जैने जयन जैवंतु, उवन जिन उव समय रे।
जय किरने किरने किरन नंतु, क्रांति जिन सिद्ध रमे रे ॥ १ ॥
जै रंजे रंजे उवन रंजेइ, चरन चर उव चरे रे।
जै रमने रमने उवन रमेइ, परम पउ उवन पौ रे॥ (आचरी) ॥ २ ॥
जिन कलने कलने कलन जिनुत्तु, कलन जिन चरना मौ रे।
चर चरने चरने चरन चरंतु, कलन उव चरना पौ रे ॥ जै रंज० ॥ ३ ॥
जै चरने कलने उवन कलंतु, उवन सुइ उवन जय रे।
जै उवने उवने उवन लषंतु, अलष पौ उवन मौ रे ॥ जै रंज० ॥ ४ ॥
जै अलषे अलषे अगम गमंतु, अगम जिन उवन जय रे।
जै अगमे अगमे दर्स दर्संतु, दर्स जिन दर्स मौ रे ॥ जै० ॥ ५ ॥
जै इष्टे इष्टे उवन इष्टंतु, इष्ट जिन उवन पौ रे।
उव उवने उवने उवन जिनुत्तु, उवन कंठ उवन पौ रे ॥ जै० ॥ ६ ॥
जिन कंठे कंठे उवन उव उत्तु, कंठ जिन जै रमे रे।
जै गिर गिर उवन गिर उत्तु, वानि गिर जिनवानी रे ॥ जै० ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जै लषने लषने लषने लषन उत्तु, अलष पौ जिन रमै रे।
जे कलसे कलसे कलस ढलंतु, अगम गम कलस मौ रे ॥ जै० ॥ ८ ॥
जै लवने लवने लवन अनंतु, उवन उवन उवन जै रे।
जै सुवने सुवने सुवन अनंतु, सुवन सुइ सुवन जै रे ॥ जै० ॥ ९ ॥
जै रुवने रुवने उवन रुइ उत्तु, रुइय जिन कमल मौ रे।
जै धुवने धुवने धुव जै उत्तु, कमल धुव धुव रमे रे ॥ जै० ॥ १० ॥
जिन जै जै जय जय उत्तु, कमल जय धुव रमे रे।
जै पै पै पय पय उत्तु, कमल पय पर्भ पौ रे ॥ जै० ॥ ११ ॥
जै मिलने मिलने उवन मिलंतु, कमल कलि धुव मिले रे।
जै वयने वयने वयन जिनुत्तु, वयन जे कमल जे रे ॥ जै० ॥ १२ ॥
जय अर्क अर्क अर्क जिनुत्तु, अर्क जिन कमल मौ रे।
जय सुर्के सुर्के सुर्क जिनुत्तु, सुर्क जिन कमल मौ रे ॥ जै० ॥ १३ ॥
जय नृते नृते नृत जिनुत्तु, नृत जै कमल जै रे।
जय षिपने षिपने षिपन जिनुत्तु, षिपन जय कमल जै रे ॥ जै० ॥ १४ ॥
जै मुक्ते मुक्ते मुक्ति जिनुत्तु, मुक्ति मौ कमल मौ रे।
जै सुक्खे सुक्खे सुख अनंतु, सुख्य जै कमल जै रे ॥ जै० ॥ १५ ॥
सुइ कमले कमले कमल जिनुत्तु, कमल उव कमल जे रे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

जै उवन कमल धुव नंतु, कर्न उव सम समय रे।
जै कर्ने उवने सुवन समत्तु, सुवन सुइ सुइ उवै रे॥ जै०॥ १७॥
जय हंसे हंसे उवन हंसेइ, हुवन पौ हिय रमे रे।
अवयासे यासे उवन रमंतु, उवन जिन कमल मो रे॥ जै०॥ १८॥
दिपि दिप्ति दिप्ति दिप्ति दिपाई, सुयं दिस्टि रलि रमे रे।
सुइ सब्दे सब्दे सुवन समाई, सुवन सुइ उवन जै रे॥ जै०॥ १९॥
सुइ सुवने सुवने कलन कलाई, चरन चर जिन चरे रे।
जै चरने कलने कलन अनंतु, कलि कमल जिन धुव रमे रे॥ जै०॥ २०॥
सुइ दिप्ति दिप्ति दिप्ति सुइ दिप्ति, दिप्ति सुइ दिप्ति मौ रे।
जै अभये अभये अभय जिनुत्तु, अभय सुइ कमल पौ रे॥ जै०॥ २१॥
जै सुर्के सुक्र सुर्क सिय उत्तु, सुक जय कमल ज रें।
जै अर्थे अर्थे अथ सर्वार्थ, सर्वार्थ जय कमल जै रे॥ जै०॥ २२॥
जै विंदे विंदे विंद जिनुत्तु, विंद उव विंद जै रे।
जै विंद विंद जिनुत्तु, कमल विंद धुव रमे रे॥ जै०॥ २३॥
जै नंद नंद जिन नंद, नंद आनन्द ज रे।
जै समये समये समय जिनुत्तु, हिय रमन जै उव रमे रे॥ जै०॥ २४॥
जै अलषे अलषे अलष जैवंतु, अलष जै कमल जै रे।
जै अगमे अगमे अगम जैवंतु, अगम उव कमल जै रे॥ जै०॥ २५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जै सहने सहने सहयार जिनुत्तु, रमन सिय उवन जै रे।
सुइ रंज रंज जिन रंज, उवन जिन उवन जै रे ॥ जै० ॥ २६ ॥
जै षिपने षिपने षिपक सिय उत्तु, ममल धुव ममल पौं रें।
सुइ अर्क अर्क सिय उत्तु, अर्क सिय मुक्ति जै रे ॥ जै० ॥ २७ ॥
पै पय पै पय उत्तु, पयोग सिय उवन मौ रे।
जै विंद विन्यान पयोग, समय सिय उवन समय रे ॥ जै० ॥ २८ ॥
सुइ नन्द नन्द सुय नन्द, नन्द हिय यार हिय रे।
जै जान जान सुई जान, जैन सिय उवन जै रे ॥ जै० ॥ २९ ॥
जै लषन लषन उव लषन, लीन सिय लीन जै रे।
जै भद्र भद्र उव भद्र, मय उवन सिय उवन जै रे ॥ जै० ॥ ३० ॥
ज सहज सहज उव सहज, पय उवन सिय उवन पय रे।
पै पय पयोग सिय उत्तु, कमल उव धुव रमै रे ॥ जै० ॥ ३१ ॥
जै स्रेनि स्रेनि जिन स्रेनि, कलन स्रेनि अर्क जै रे।
जै कलन चरन चर कलन, कलन स्रेनि जै रमै रे ॥ जै० ॥ ३२ ॥
जै तारन तरन संपत्तु, कमल कलि इवन जै रे।
जै उवन समय सह उत्तु, समय सुइ मुक्ति जै रे ॥ जै० ॥ ३३ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जैने जैने जयन जैवंतु) कर्मको विजय करनेवाले जैनधर्मकी जय हो (उवन जिन [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्योति बढ़ते बढ़ते अनन्त ज्योति होजाती है (कांति जिन सिद्ध मेरे) केवलज्ञान ज्योतिके धारी होकरके सिद्ध भावमें रमण करते हैं ॥ १ ॥

(जै रंजे रंजे उवन रंजेइ) आत्माके भीतर मगन होते होते आत्माकी मगनता बढ़ती जाती है (चरन चर उव चरे रे) चारित्रमें चलते हुए चारित्र बढ़ जाता है (जै रमने रमने उवन रमेइ) आत्मामें रमण करते २ रमणता बढ़ती जाती है (परम पउ उवन पौ रे) तब प्रकाशमान परमात्माका पद उदय होजाता है ॥ २ ॥

(जिन कलने कलने कलन जिनुत्तु) जिनेन्द्रके स्वभावको मनन करते करते स्वानुभव होता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (कलन जिन चरना मौ रे) जिन स्वभावका अभ्यास ही चारित्र स्वरूप है (चर चरने चरने चरन चरंतु) चारित्रमें चलते चलते चारित्र बढ़ जाता है (उवन सुइ उवन जय रे) तब ज्ञान प्रगट कर केवलज्ञान हो जाता है ॥ ३ ॥

(जै चरने कलने उवन कलंतु) चारित्रके अभ्यासमें ज्ञानका अनुभव आता है (उवन सुइ उवन जय रे) यही ज्ञान केवलज्ञान होजाता है (जै उवने उवने उवन लषंतु) ज्ञान प्रगट होते होते ज्ञान स्वरूप ही झलकता है (अलष पौ उवन मौ रे) इसीसे अतीन्द्रिय परमात्मपद होजाता है ॥ ४ ॥

(जै अलषे अलषे अगम गमंतु) अतीन्द्रिय आत्माका अनुभव करते करते अतीन्द्रिय स्वरूपका प्रकाश होता है (अगम जिन उवन जय रे) तब अतीन्द्रिय जिन स्वभाव उत्पन्न होजाता है (जै अगमे अगमे दर्स दर्संतु) अतीन्द्रिय स्वभावके अनुभवसे आत्माका दर्शन होजाता है (दर्स जिन दर्स मौ रे) जिनराज स्वभावका दर्शन ही आत्मदर्शन है ॥ ५ ॥

(जै इष्टे इष्टे उवन इष्टंतु) अपने इष्टमें लीन रहनेसे अपना इष्ट परम पद प्रगट होजाता है (इष्ट जिन उवन पौ रे) तब इष्ट जिनपद प्रकाशरूप झलकता है (उव उवने उवने उवन जिनुत्तु) प्रकाश बढ़ते बढ़ते प्रकाश बढ़ता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (उवन कण्ठ उवन पौ रे) प्रकाशके निकट होनेसे ही प्रकाशक पद होता है। अर्थात् शुद्ध ज्ञानके अनुभवसे ही केवलज्ञान होता है ॥ ६ ॥

(जिन कण्ठे कण्ठे उवन उव उत्तु) जब जिनेन्द्रके स्वरूपका कण्ठमें मनन किया जाता है तब वह प्रगट होता है, ऐसा कहा गया है (कण्ठ जिन जै रमे रे) जिसके कण्ठमें जिन भक्ति होती है उसके पास विजय रमण करती है। वह रागादिकों व कर्मोंको जीतता है (जै गिर गिर उवन गिर उत्तु) जिनवाणीके उच्चारणसे ॥१३७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाणीका भाव झलकता जाता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (वानि गिर जिनवानी रे) जिनेन्द्रके द्वारा प्रगट वाणीको ही जिनवाणी जानना चाहिये ॥ ७ ॥

(जै लषने लषने लषन उत्तु) लक्षणको ध्यानमें लेनेसे आत्माके लक्षणका ज्ञान कहा गया है (अलष पौ जिन रमे रे) लक्षण द्वारा ही जिनेन्द्रके अतीन्द्रिय पदमें रमण होता है (जै कल्सं कल्सं कलस ढलंतु) जैसे कलशोंके द्वारा जिनेन्द्रका न्हवन होता है, वैसे ही अतीन्द्रिय स्वरूपका अनुभव लगातार करते रहना चाहिये (अगम गम कलस मौ रे) जब अतीन्द्रिय स्वरूप अर्थात् परमात्म स्वरूप प्राप्त होजाता है तब कलश स्वरूप स्वयं होजाता है। यहां पूर्ण आत्माके भीतर रमणको ही कलश ढारन कहा है ॥ ८ ॥

(जै लवने लवने लव अनंतु) कर्मोंका क्षय होते होते अनन्त कर्मका क्षय होजाता है (उवन उवन उवन जै रे) जैसे जैसे क्षायिक भाव बढ़ता है, वैसे २ अपनी विजय होती जाती है (जै सुवने सुवने सुवन अनंतु) स्वरूपमें परिणमन करते करते अनन्त कालतक स्वरूपमें परिणमन रहता है (सुवन सुइ सुषन जै रे) स्वात्म परिणमनसे श्री जिनेन्द्ररूप परिणमन होजाता है ॥ ९ ॥

(जै रुवने रुवने उवन रुइ उत्तु) रुचि बढ़ाते बढ़ाते क्षायिक सम्यग्दर्शनकी प्रगटता कही गई है (रुइय जिन कमल मौ रे) तब कमल समान प्रफुल्लित जिनके स्वभावकी रुचि होजाती है (जै धुवने धुवने धुव जै उत्तु) जब ध्रुव आत्माके स्वभावका अनुभव कियां जाता है तब ध्रुव स्वभाव प्रगट होता है, ऐसा कहा गया है (कमल धुव धुव रमे रे) तब यह आत्मारूप ध्रुव कमल ध्रुवरूपसे सदा स्वरूपमें रमण करता है ॥ १० ॥

(जिन जै जै जय जय उत्तु) जिन स्वभावकी जय जय कही गई है (कमल जय धुव रमे रे) कमल समान आत्मा ध्रुवरूपसे अपनी विजयमें रमण करता है (जै पै पै पय पय उत्तु) जिनपदके अनुभव करनेसे जिनपद होता है, ऐसा कहा गया है (कमल पय पर्म पौ रे) वही परमात्माका पद है। वही कमल पद है ॥ ११ ॥

(जै मिलने मिलने उवन मिलंतु) स्वरूपके साथ मिलते मिलते अपना यथार्थ प्रकाश मिल जाता है (कमल कलि धुव मिले रे) कमलके समान विकसित ध्रुव आत्मा मिल जाता है (जै वयने वयने वयन जिनुतु) स्वरूपमें गमन करते करते स्वरूपमें गमन जिनेन्द्रने कहा है (वयन जै कमल जै रे) स्वरूपके भीतर चलनेसे ही कमल सम आत्माकी विजय होती है ॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (अर्क जिन कमल मौ रे) श्री जिनेन्द्र सूर्य कमल समान प्रकाशमान है (जय सुर्के सुर्के सुर्क जिनुत्तु) शोभनीक सूर्यसम आत्माका मनन करते करते परम शांत सूर्य होजाता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (सुर्क जिन कमल मौ रे) शांत सूर्यके समान जिनेन्द्र कमल स्वरूप है ॥ १३ ॥

(जय नृते नृते जिन जिनुत्तु) सत्य स्वरूपका सत्य रूप अनुभव करते करते जिन स्वरूप प्रगट होता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (नृत जै कमल जै रे) सत्यकी विजयसे कमल सम आत्माकी विजय होती है (जय षिपने षिपने षिपन जिनुत्तु) कर्मोंका क्षय होते होते सर्व कर्म क्षय होजाते हैं, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (षिपन जै कमल जै रे) जब सब घातीयकर्म क्षय होजाते हैं तब आत्मा कमलकी विजय होजाती है ॥ १४ ॥

(जै मुक्ते मुक्ते मुक्त जिनुत्तु) परभावोंसे छुटकारा होते होते परभावोंसे मुक्ति होती है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (मुक्त मौ कमल मौ रे) मुक्ति स्वरूप कमल समान जिनेन्द्रका आत्मा है (जै सुक्खे सुक्खे सुख अनंतु) आत्मानन्दमें मगन होते होते अनन्त सुख झलक जाता है (सुल्य जै कमल जै रे) ऐसे अनन्त सुखकी जय हो, कमल सम शुद्धात्माकी जय हो ॥ १५ ॥

(सुइ कमले कमले कमल जिनुत्तु) कमल सम आत्माका अनुभव करते करते कमल समान आत्मा विकास दाता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (कमल उव कमल जै रे) कमलसे ही कमलकी विजय होती है (जय कमले कमले कमल जिनुत्तु) कमल समान आत्माकी रमणतासे स्वात्मरमणता बढ़ती है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (कलन उव कमल जै रे) स्वात्मरमण बढ़ जाता है तब ही कमलकी विजय होती है ॥ १६ ॥

(जै उवन कमल धुव नंतु) यह प्रकाशमान कमल समान आत्मा ध्रुवरूपसे अनन्त काल रहता है (कर्न उव सम समय रे) इस आत्माकी उन्नतिका साधन समभाव है (जै कर्न उवने सुवन समतु) सम्यग्दर्शनके भीतर परिणमन करना ही साधनका प्रकाश है (सुवन सुइ सुइ उवै रे) यही परिणमन स्वयं बढ़ता जाता है ॥१७॥

(जय हंसे हंसे उवन हंसेइ) भावोंकी स्वच्छता हँसके समान होते होते ज्ञानकी स्वच्छता होजाती है (हुवन पौ हिय रमे रे) तब ध्यानकी प्रगटता होकर आत्माके हितमें रमण होता है (अवयासे यासे उवन रमंतु) ज्ञानके प्रकाशमें ज्ञान रमण करता है (उवन जिन कमल मौ रे) तब कमल समान परमात्मा प्रगट हो जाते हैं ॥ १८ ॥

(दिपि दिप्ति दिप्ति दिप्ति दिपाई) ज्ञानका प्रकाश बढ़ते हुए ज्ञान प्रगट होजाता है (सुयं दिस्टि रलि रमे रे) ॥१३९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब आत्मा स्वयं आपका दर्शन करके आपमें ही मिलकर रम रहता है (सुइ सब्दे सब्दे सुवन समाई) शब्दोंके द्वारा सुननेसे समभाव जागृत होजाता है (सुवन सुइ उवन जै रे) स्वयं परिणमन करके जिन स्वभाव प्रगट होजाता है ॥ १९ ॥

(सुइ सुवने सुवने कलन कलाई) वही आत्मा परिणमन करते करते आत्माके भीतर तन्मय होता है (चरन चर जिन चरे रे) चारित्रमें चलते हुए जिनेन्द्रका यथाख्यात चारित्र होजाता है (जै चरने कलने कलन अनंतु) आत्मीक चारित्रमें चलनेसे अनन्त कालके लिये स्वात्मरमण होजाता है (कलि कमल जिन ध्रुव रमे रे) श्री जिनराजरूपी कमल विकसित होकर ध्रुवरूपसे आपमें रमण करते हैं ॥ २० ॥

(सुइ दिप्ति दिप्ति दिप्ति सुइ दिप्ति) ज्ञानका प्रकाश वही है जिससे ज्ञान प्रगट होता जावे (दिप्ति सुइ दिप्ति मौ रे) ज्ञान वही है जो ज्ञान परिपूर्ण होजावे (जै अभये अभये अभय जिन उत्तु) भय रहित आत्मीक भावमें रमण करनेसे भय रहित जिनराज होता है, ऐसा कहा गया है (अभय सुइ कमल पौ रे) अभय होजानेपर कमल समान परमात्माका पद प्रगट होजाता है ॥ २१ ॥

(जै सुर्के सुर्के सुर्क सिय उत्तु) शोभनीक व शांत सूर्य समान आत्मामें रमण करनेसे शुद्धात्मारूपी सूर्य होजाता है सुर्क जय कमल जै रे) जो शांत सूर्य समान आत्मा है वही कमल समान विकसित है उसकी जय हो (जै अर्थे अर्थे अर्थ सर्वार्थ) आत्म पदार्थका विचार करते करते–ध्यान करते करते पूर्णपने आत्मपदार्थ प्रगट हो जाता है (सर्वार्थ जय कमल जै रे) पूर्ण पदार्थ परमात्माकी जय हो। कमल समान आत्माकी जय हो ॥२२॥

(जै विंदे विंदे विंद जिनुत्तु) अनुभव करते करते अनुभव बढ़ जाता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (विंद उव विंद जै रे) अनुभव करते करते पूर्ण स्वानुभव होजाता है उसकी जय हो (जै विंद विंद जिनुत्तु) स्वात्मानुभव करना चाहिये, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (कमल विंद ध्रुव रमे रे) शुद्धात्मारूपी कमलका अनुभव करता हुआ परमात्मा ध्रुवरूपसे अपनेमें रमण करता है ॥ २३ ॥

(जै नंद नंद जिन नंद) आनन्द स्वभावकी जय हो। श्री जिनराज आनन्दमें मगन हैं (नंद आनंद जै रे) आनन्दमें जो मगन होता है उसकी जय होती है (जै समये समये समय जिनुत्तु) आत्माके भीतर रमनेसे आत्मा प्रगट होता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (हिय रमन जै उव रमे रे) जो अपने हितमें रमण करता है वह उन्नति करता हुआ आपमें रमण करता रहता है ॥ २४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जै अलषे अलषे अलष जैवंतु) अतीन्द्रिय स्वभावमें रहनेसे अतीन्द्रिय स्वभाव प्राप्त होता है उसकी जय हो (अलष जै कमल जै रे) अतीन्द्रिय स्वभ वधारी परमात्मा कमलकी जय हो (जै अगमे अगमे अगम जैवंतु) मनसे अगोचर भावमें रमण करनेसे स्वानुभव प्रगट होता है उसकी जय हो (अगम उव कमल जै रे) स्वानुभवी कमल समान आत्माकी जय हो ॥ २५ ॥

(जै सहने सहने सहयार जिनुत्तु) परसे हटकर आपमें जाननेसे अपनेमें स्थिरता बढ़ती है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (रमन सिय उवन जै रे) स्वात्मरमणसे शुद्ध भावका प्रकाश होता है (सुइ रंज रंज जिन रंज) वहां मगनता होनेसे जिन स्वभावमें मगनता होती है (उवन जिन उवन जै रे) तथा जिनराजका पद प्रगट होजाता है उसकी जय हो ॥ २६ ॥

(जै षिपने षिपने षिपक सिय उत्तु) कर्मोंको क्षय करते करते शुद्ध क्षायिक भाव प्रगट होता है, ऐसा कहा गया है (ममल ध्रुव ममल पौ रे) तब निर्मल पदधारी परमात्मा ध्रुवरूपमें स्थिर रहता है (सुइ अर्क अर्क सिय उत्तु) उसी परमात्माको सूर्य समान शुद्ध सूर्य कहा गया है (अर्क सिय मुक्ति जै रे) यही शुद्ध सूर्यसमान आत्मा मोक्षको जीत लेता है ॥ २७ ॥

(जै पय पय पय पय उत्तु) पद पद करते करते, चढ़ते चढ़ते परमात्मा पद प्रगट होता है, ऐसा कहा गया है (पयोग सिय उवन मौ रे) तथा शुद्ध उपयोग झलक जाता है (जै विंद विन्यान पयोग) इस स्वात्मरमी ज्ञानोपयोगकी जय हो (समय सिय उवन समय रे) शुद्धात्माके ध्यानसे ही परमात्मा पद प्रगट होता है ॥२८॥

(सुइ नंद नंद सुव नंद) शुद्धोपयोगमें आनन्द होनेसे आनन्दका ही परिणमन रहता है (नंद हिययार सिय रे) आत्मानन्द हितकारी है तथा शुद्ध है (जै जान जान सुइ जान) वही मोक्षमार्ग है उसीकी जय हो (जैन सिय उवन जै रे) जैनधर्मके ही द्वारा शुद्ध पद प्रगट होता है ॥ २९ ॥

(जै लषन लषन उव लषन) आत्माके लक्षणके पहचाननेसे आत्माका ज्ञान होता है (लीन सिय लीन जै रे) आत्मामें लीन होनेसे शुद्धभावमें लीनता होती है (जै भद्र भद्र उव भद्र) मङ्गलस्वरूप जिनपदमें रमनेसे मंगलीक जिनपद प्रगट होता है (मय उवन सिय उवन जै रे) ज्ञानके प्रकाशसे शुद्ध ज्ञान प्रगट होता है ॥३०॥

(जै सहज सहज उव सहज) सहज स्वभावमें रमते रमते सहज स्वभाव प्रगट होता है (पय उवन सिय उवन पय रे) आत्मीक पदके प्रकाशसे शुद्ध पदका प्रकाश होता है (पय पयोग सिय उत्तु) शुद्धोपयोग ही ॥१४१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मीक पद कहा गया है (कमल उव धुव रमे रे) इसीसे कमल समान आत्मा प्रगट होकर ध्रुवरूपसे आपमें रमण करता रहता है ॥ ३१ ॥

(जै सेनि सेनि जिन सेनि) गुणस्थानोंके द्वारा चढ़ते चढ़ते जिनराजकी श्रेणी आती है (कलन सेनि अर्क जै रे) क्षपकश्रेणीके अभ्याससे आत्मारूपी सूर्यकी विजय होती है (जै कलन चरन चर कलन) स्व चारित्रमें रमण करना ही चारित्रका अनुभव है (कलन सेनि जै रमे रे) परमात्मा अरहन्त अपने पदमें अनुभव करते हुए आपमें रमण करते हैं ॥ ३२ ॥

(जै तारन तरन समत्थु) तारण तरण समर्थ ऐसे अरहन्तकी जय हो (कमल कलि उवन जै रे) आत्मारूपी कमलके भीतर रमनेसे ज्ञान प्रकाश होता है उसकी जय हो (जै उवन ससय सह उत्तु) आत्माके साथ ज्ञान सदा रहता है। ज्ञान और आत्माकी जय हो (समय सुइ मुक्ति जै रे) वही परमात्मा मोक्षको जीत लेता है ॥३३॥

भावार्थ—इस जय रंजसी अर्कमें यह बताया है कि जैनधर्म व जिनवाणीके प्रतापसे मोक्षमार्ग मिलता है जो निश्चयसे स्वात्मरमण रूप है-शुद्धोपयोग रूप है, इसी भावमें रमण करनेसे स्वात्मरमणता बढ़ती जाती है व उपभोग भी अधिक शुद्ध होजाता है। स्वात्मरमणमें रत्नत्रय गर्भित है वही सम्य-ग्दर्शन है, सम्यग्ज्ञान है। वहीं सम्यक्चारित्र है-जहां आत्मामें रमणता होती है वहां इन तीनोंमें भी रमणता होती है। आत्माका स्वरूप यद्यपि चेतना लक्षणसे जाना जाता है तथापि वह अनुभव गोचर है, अलख है, अगम है। जो कोई मन वचन कायको रोककर स्वयं स्वानुभव करता है उसको अतीन्द्रिय आत्माका अनुभव होता है। स्वात्मानुभवसे कर्मोंकी शक्ति व स्थिति क्षय होती है। इसीसे क्षायिक सम्यक्त व क्षायिक चारित्र होता है। इसीसे केवलज्ञानादि अरहन्तके गुणोंकी प्राप्ति होती है। जैसे लक-ड़ीको लकड़ीसे रगड़नेसे अग्नि प्रगट होती है वैसे आत्माके द्वारा आत्माका ध्यान करनेसे परमात्माका पद प्रगट होता है। निश्चयसे आप ही परमात्मस्वरूप है। कर्मोंके क्षय होजानेपर आप ही परमात्मा होजाता है। स्वात्मानुभव रूप मोक्षमार्गमें आत्मानन्दका लाभ होता है। इसीमें मगनता ध्यानके समय होती है। आत्मानन्दका लाभ जितना जितना बढ़ता है कर्मोंकी निर्जरा होती है। आत्मानन्दके भोगसे आत्मानन्द बढ़ता है तथा सयोगकेवलीमें अनन्त सुख प्रगट होता है। मुमुक्षुको योग्य है कि [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सकेगा। आत्मा एक द्रव्य है—इसीको शुद्ध द्रव्य ध्यानमें लेकर अनुभव करनेसे आत्मा द्रव्य शुद्ध होजाता है। आत्मा ही कलश समान अपने गुणोंसे पूर्ण है, इसका अनुभव करना ही अपने ही आत्माके ऊपर कलशोंके द्वारा न्हवन कराना है, तब आत्मा स्वयं पूर्ण कलशकी तरह परमात्मा होजाता है। परमात्मा पद ध्रुव है। इस ध्रुवपदके ध्यानसे ध्रुवपद होता है। सत्य पदार्थ एक आत्मा है। इसीके ध्यानसे सत्य पदार्थ पूर्ण प्रगट होता है, यही आत्मा हँसके समान शुद्ध है। ऐसा ही ध्यान करनेसे परम शुद्ध हँस समान आत्मा होजाता है। आत्माके सहज स्वभावके ध्यानसे ही परमात्माका प्रकाश होता है। स्वात्मरमणसे ही तारणतरण अरहन्त होकर मोक्षका लाभ करता है। इसलिये स्वात्मरमण करना चाहिये।

नियमसारमें कहा है—

सम्मत्तणाणचरणे जो भत्तिं कुणइ सावगो समणो। तस्स दु णिव्वुदिभत्ती होदित्ति जिणेहि पण्णत्तं ॥ १३४ ॥

मोक्खंगयपुरिसाणं गुणभेदं जाणिऊण तेसिंपि। जो कुणदि परमभत्तिं ववहारणयेण परिकिहियं ॥ १३५ ॥

मोक्खपहे अप्पाणं ठविऊण य कुणदि णिव्वुदी भत्ती। तेण दु जीवो पावइ असहायगुणं णियप्पाणं ॥ १३६ ॥

भावार्थ—जो साधु या मुनि सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप रत्नत्रयमई आत्माके स्वभावमें भक्ति करता है, उसीके मोक्षकी भक्ति होती है ऐसा जिनेन्द्रने कहा है। मोक्ष प्राप्त सिद्ध पुरुषोंके गुणोंको पहचानकर जो उनकी परम भक्ति करता है उसे भी व्यवहारनयसे निर्वाण भक्ति कही गई है। जो मोक्षमार्गमें अपने आत्माको स्थापित करके निर्वाण भक्ति करता है वही आत्मा अपने आत्माके पूर्ण शुद्ध केवलज्ञानादि गुणोंको प्राप्त करता है।

(१२७) रंजरमन नन्द फलना गाथा २६५१ से २६६२ तक।

उव उवन उवन जिन उवन पौ, उव उवन जयं जैवंतु रे।
उव उवन सहावे मुक्ति पौ, सम समय सिद्धि संपत्तु रे ॥ १ ॥
जिन जिनय उवन जिन जिनवरा, जिन उवन कम्म विलि जाइ रे।
जिन मोय विनन्द विलि उवन पौ, जिन उवन मुक्ति विलसाइ रे (आचरी) ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जै रंज उवन जिन रंज पौ, भय विलय रमन जिन उत्तु रे ।
सुइ नंद विनंद विलिनंद पो, सुइ रंज रमन नंद जुत्तु रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥
जय रंज उवन हिय उवन पौ. जै अमिय रमन जिन नाहु रे ।
आनंद उवन जिन नंद मौ, जिन रंज रमन नंद साहु रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥
जिन रंज उवन सहयार मौ, वे दिप्ति रमन विगसंतु रे ।
सुइ चेय नंद जिन चेय मौ. जिन रंज रमन जिन उत्तु रे ॥ जिन० ॥ ५ ॥
जिन रंज उवन सुइ जान मौ, जिन रमन जिनय जिन उत्तु रे ।
सुइ सहजानंद जिन सहज सुइ, जिन रंज रमन नंद लाहु रे ॥ जिन० ॥ ६ ॥
जिन रंज उवन जिन रंज मौ, जिन नाथ रमन जिन उत्तु रे ।
सुइ परमानंद जिन परम पौ, जिन रंज रमन नंद नंद रे ॥ जिन० ॥ ७ ॥
सुइ स्वेनि उवन जिन स्वेनि मौ, जिन दिप्ति दिप्ति जिन उत्तु रे ।
जिन स्वेनि सब्द पिउ उवन मौ, जिन स्रवन स्रवन जिन उत्तु रे ॥ जि० ॥ ८ ॥
जिन स्वेनि उवन अन्तयाम मौ, जिन हिय हुव रमन जिन उत्तु रे ।
जिन अभय अर्थ सुइ सुर्क जिन, जिन विंद विन्यान संजुत्तु रे ॥ जि० ॥ ९ ॥
जिन स्वेनि चरन सह सह चरन, जिन कलन कलिय जिन उत्तु रे ।
जिन अर्क सुर्क सुइ कलन मौ, सम समय मुक्ति दसंतु रे ॥ जि० ॥ १० ॥
जिन स्वेनि उवन पिय पिय रमन, सुत्र सुवन सब्द पिउ उत्तु रे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

सुइ तारन तरन सु उवन मौ, सुइ उवन कमल विलसंतु रे।
सुइ कलन कमल सम समय मौ, सिद्धु समय मुक्ति संपत्तु रे ॥ जि० ॥ १२ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(उव उवन उवन जिन उवन पौ) आत्मप्रकाश होते होते जिनेन्द्रका प्रकाशमान पद प्रगट होता है (उव उवन जयं जैवंतु रे) वह प्रकाशनीय पद जयवंत रहो (उव उवन सहावे मुक्ति पौ) जब स्वभावका प्रकाश होजाता है तब मुक्तिपद मिल जाता है (सम समय सिद्धि संपत्तु रे) तब समभाव सहित आत्मा सिद्धिको प्राप्त कर लेता है ॥ १ ॥

(जिन जिनय उवन जिन जिनवरा) कर्मोंको जीतनेवाले वीतराग जिनेन्द्र प्रगट हुए हैं (जिन उवन कम्म विलिजाइ रे) जब चार घातीय कर्म क्षय होते हैं तब जिनेन्द्रपद प्रगट होता है (जिन मोय विनंद विलि उवन पौ) संसारके विषय भोगोंका क्षणिक सुख नाश होकर जिनराजका पद प्रगट होता है (जिन उवन मुक्ति विलसाइ रे) श्री जिनेन्द्र प्रगट होते हुए मोक्षका आनन्द लेते हैं ॥ २ ॥

(जै रंज उवन जिन रंज पौ) आत्मानन्दकी मगनतासे प्रगट होनेवाले जिनराजके आनन्दमई पदकी जय हो (भय विलय रमन जिन उत्तु रे) उनके सर्व भय दूर होगया है, वे वीतराग भावमें रमणकर्ता कहे गए हैं (सुइ नंद विनंद विलिनंद पौ) विषयानन्दको दूर करके उनके भीतर आत्मानंदका प्रकाश है (सुइ रंज रमन नंद जुत्तु रे) वे आत्मानन्दके भोगमें मगन होते हुए आत्मानन्दी हैं ॥ ३ ॥

(जय रंज उवन हिय उवन पौ) जब आत्मानन्द प्रगट होता है तब हितकारी आत्मप्रकाश पद प्रगट होता है (जै अमिय रमन जिन नाहु रे) श्री जिन भगवान आनन्दामृतमें रमण करते हैं (आनंद उवन जिन नंद मौ) श्री जिनराजमें अनन्त सुख प्रगट है वे आनन्दमई हैं (जिन रंज रमन नंद साहु रे) श्री जिनराजने आत्मानन्दमें रमण होकरके अनन्त सुखका साधन किया है ॥ ४ ॥

(जिन रंज उवन सहयार मौ) वीतरागताके साथ आनन्दमें रमण होना मोक्षके लिये सहकारी है (वै दिप्ति रमन विगसंतु रे) जो आत्मज्ञानमें रमण करता है वह आनन्द भोगता है (सुइ चेय नंद जिन चेय मौ) वे ही चिदानन्द स्वरूप जिन ज्ञानमई हैं (जिन रंज रमन जिन उत्तु रे) जो वीतरागताके साथ स्वात्मीक आनन्दमें मगन होते हैं वे ही जिन कहे गए हैं ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जिन रंज उवन सुइ जान मौ) जो आत्मानन्दमें मगन होते हैं वे ही मोक्षमार्ग पर चलनेवाले हैं (जिन रमन जिनय जिन उत्तु रे) वीतरागतामें रमण करनेवालेको जिन कहा गया है (सुइ सहजानंद जिन सहज सुइ) वही आनन्द सहजानन्द है-जो आत्मस्वरूपसे ही उठता है (जिन रंज रमन नंद लहु रे) जो वीतरागता सहित आनन्दमें मग्न हैं वे ही आनन्दको पाते रहते हैं ॥ ६ ॥

(जिन रंज उवन जिन रंज मौ) वीतरागभावमें आनन्द आनेसे जिनराजका आनन्दमई पद प्रगट होता है (जिन नाथ रमन जिन उत्तु रे) ऐसे पदमें रमण करनेवालेको जिननाथ कहते हैं (सुइ परमानंद जिन परम पौ) वे ही परमात्मा परमानन्दके भोगी हैं (जिन रंज रमन नंद नंद रे) श्री जिनराज स्वात्मानन्दमें मगन होकर आनन्दका लाभ लेरहे हैं ॥ ७ ॥

(जिन स्नेनि उवन जिन स्नेनि मौ) क्षपकश्रेणीके द्वारा चढ़कर श्री जिनराज अपनी श्रेणीपर प्राप्त हुए हैं (जिन दिप्ति दिप्ति जिन उत्तु रे) उन जिनेन्द्रमें केवलज्ञानकी ज्योति प्रगट है ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (जिन स्नेनि सब्द पिउ उवन मौ) सयोग केवली जिन तेरहवें गुणस्थानका शब्द बहुत प्यारा है इससे प्रगट है कि जिनेन्द्र प्रकाश स्वरूप हैं (जिन स्रवन स्रवन जिन उत्तु रे) श्री जिनराज अपने आपके अनुभवमें परिणमन करते हैं ऐसा जिनेन्द्रने कहा है ॥ ८ ॥

(जिन स्नेनि उवन अवयास मौ) श्री जिनराजका पद अनन्त ज्ञानके प्रकाशसे शोभित है (जिन हिय हुव रमन जिन उत्तु रे) वे जिनेन्द्र हितकारी आत्मानुभवरूपी होममें लगे हुए हैं उनके कर्मकी निर्जरा होरही है ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (जिन अभय अर्थ सुइ सुर्क जिन) श्री जिनेन्द्र सर्व भय रहित अभय पदार्थ हैं-वे ही शांत स्वरूपी सूर्य हैं वे ही कर्मविजयी हैं (जिन विंद विन्यान संजुत्तु रे) वे जिनेन्द्र ज्ञानके अनुभवमें लीन हैं ॥९॥

(जिन स्नेनि चरन सह सह चरन) गुणस्थानोंको चढ़ते हुए साथ साथ वीतराग चारित्रकी वृद्धि होती है (जिन कलन कलिय जिन उत्तु रे) श्री जिनराज आत्मानुभवमें लीन हैं, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (जिन अर्क सुर्क सुइ कलन मौ) जिनराज सूर्यके समान प्रकाशमान शांत सूर्य हैं व स्वात्मरमणरूप हैं (सम समय मुक्ति दर्सतु रे) वे परमात्मा समभावके साथ मोक्षपदको देख रहे हैं ॥ १० ॥

(जिन स्नेनि उवन पिय पिय रमन) श्री जिनराज अपने पदके भीतर अत्यन्त प्रेमसे रमण कर रहे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्यारा भासता है, ऐसा कहा गया है (सुइ उवन उवन पौ साहियो) उन्होंने आत्मज्ञानके द्वारा अनन्त ज्ञानका पद साधन किया है (सुइ समयं साहि जिन उत्तु रे) उनको ही समयसार आत्माके साधनेवाले श्री जिनेन्द्र कहते हैं ॥ ११ ॥

(सुइ तारन तरन सु उवन मौ) उन्हींको प्रकाशमान तारण तरण अरहन्त कहते हैं (सुइ उवन कमल विल संतु रे) वे ही प्रफुल्लित कमल समान आत्माका आनन्द लेरहे हैं (सुइ कलन कमल सम समय मौ) वे ही आत्मारूपी कमलके आस्वादी समभावधारी समयसार हैं (सिहु समय मुक्ति संपत्तु रे) वे ही परमात्मा मोक्षको पाते हैं ॥ १२ ॥

भावार्थ—इस छन्दमें यह बताया है कि सच्चा सुख आत्मानन्द है वह आत्माका सहज स्वभाव है। यह विषयानन्दसे विलक्षण है। विषयसुख क्षणिक, अतृप्तिकारी, पराधीन, नाशवंत है व राग सहित है तब आत्मानन्द चिरस्थायी, तृप्तिकारक, स्वाधीन, अविनाशी तथा वीतरागता सहित है। सम्यग्दर्शनके साथ २ ही विषयसुखकी रुचि हट जाती है। आत्मानन्दकी रुचि पैदा होजाती है। मोक्षका मार्ग आनन्दरूप है। जो निश्चय रत्नत्रयमें रमण करता है उसको आत्मानन्दका भोग प्राप्त होता है। यही वह ध्यानकी अग्नि है जिससे कर्मोंका क्षय होता है। इसी आत्मानन्दका भोग करते हुए भावोंकी शुद्धतासे यह जीव गुणस्थानोंके द्वारा चढ़कर क्षपकश्रेणीपर आकर चार घातीय कर्मोंका क्षय करके अरहंत परमात्मा होजाता है। आत्मानन्दको भोगते हुए ही आत्मा गुणस्थानोंपर चढ़ता है। केवलज्ञान होनेपर प्रत्यक्ष आत्माका दर्शन होता है तब प्रत्यक्ष अनन्त सुख प्रगट होजाता है। अतएव अरहन्त सदा परमानन्दमें मगन रहते हैं, वे स्वात्मामें लीन हैं, परम वीतराग हैं। वे मोक्ष पाकर भी परमानन्दमें मगन रहते हैं। जैनधर्मका साधन आनन्दप्रद है, फल भी परमानन्द है। अतएव भव्यजीवोंको उचित है कि निज आत्मामें श्रद्धापूर्वक रमण करके निजानन्दका लाभ करके मोक्षमार्गपर बढ़ते चले जावें। वास्तवमें आत्माका ध्यान ही सर्व कार्यका साधक है। धर्मध्यान और शुक्लध्यानको मोक्ष साधक बताया है। दोनों ही ध्यानोंके अभ्यासीको सहजानन्दका स्वाद आता है। श्रावकोंको व साधुओंको इन्हीं दोनों ध्यानोंकी प्राप्तिकी उमंग रखनी चाहिये। नियमसारमें कहा है—

वदसमिदिसीलसंजमपरिणामो करणणिग्गहो भावो। सो हवदि पायचित्तं अणवरयं चेव कायव्वो ॥ ११३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोहादिसगब्भावखयएहुदीभावणाए णिग्गहणं । पायच्छित्तं भणिदं णियगुणचिंता य णिच्छयदो ॥ ११४ ॥

भावार्थ—कर्मोंके काटनेका उपाय प्रायश्चित्त है। निमित्त कारणकी अपेक्षा व्यवहारनयसे पांच महाव्रत, पांच समिति, शील, संयमका भाव तथा इंद्रियोंके रोकनेका भाव निरन्तर करना सो प्रायश्चित्त है। निश्चयनयसे क्रोधादि भावोंके त्यागके लिये अपने ही आत्माके शुद्ध भावोंकी प्राप्तिमें भावना रखना या अपने ही आत्माके स्वाभाविक गुणोंका ध्यान करना प्रायश्चित्त है।

(१२८) सु रमन या स्वरमण चिंतामनि गाथा २६६३ से २७०७ तक।

जिन उवन चिंतामनि उवन पौ, जिन रवना रे।
उव उवन उवन दर्संतु, उवन जिन रमना रे ॥ १ ॥
जिन जिनय चिंतामनि जिन उवन, जिन रवना रे।
जिन जिनयति जिनय जिनन्दु, जिनय जिन रमना रे ॥ २ ॥
जिन इष्ट चिंतामनि उवन पौ, जिन रवना रे।
उव उवन इष्ट इष्टंतु, इस्ट जिन रमना रे ॥ ३ ॥
जिन लषन चिंतामनि अलष पौ, जिन रवना रे।
जिन अलष अलष दर्संतु, अलष जिन रवना रे ॥ ४ ॥
जिन गमन चिंतामनि अगम पौ, जिन रवना रे।
जिन अगम अगम दिष्टंतु, अगम जिन रवना रे ॥ ५ ॥
जिन सुयं चिंतामनि उवन पौ, जिन रवना रे।
जिन उवन रमन दर्संतु, रमन जिन रमना रे ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन समय चिंतामनि उव समय, जिन रवना रे ।
जिन असम साहि साहंतु, समय जिन रमना रे ॥ ७ ॥

जिन गुप्ति चिंतामनि गुप्ति जिन, जिन रवना रे ।
जिन गुप्ति उवन दर्संतु, गुप्ति जिन रमना रे ॥ ८ ॥

जिन पर्यं चिंतामनि पर्म जिन, जिन रवना रे ।
जिन पर्यं मुक्ति दर्संतु, पर्म जिन रमना रे ॥ ९ ॥

जिन ध्रुव चिंतामनि ध्रुव रमन, जिन रवना रे ।
जिन ध्रुवं मुक्ति विलसंतु, ध्रुवं जिन रमना रे ॥ १० ॥

जिन चलन चिंतामनि अचल पौ. जिन रवना रे ।
जिन अचल उवन इष्टंतु, अचल जिन रमना रे ॥ ११ ॥

जिन ढलन चिंतामनि ढलन पौ, जिन रवना रे ।
जिन उवन ढलन ढल नंतु, ढलन जिन रमना रे ॥ १२ ॥

जिन दिप्ति चिंतामनि दिप्ति जिन, जिन रवना रे ।
जिन उवन दिप्ति दिपि नंतु, दिप्ति जिन रमना रे ॥ १३ ॥

जिन दिष्टि चिंतामनि दिष्टि जिन, जिन रवना रे ।
जिन उवन दिष्टि दिष्टन्तु, दिष्टि जिन रमना रे ॥ १४ ॥

जिन अर्क चिंतामनि अर्क जिन, जिन रवना रे ।
जिन उवन अर्क अर्कंतु अर्क जिन रमना रे ॥ १५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन कलन चिंतामनि, उव कलन जिन रवना रे।
जिन सरनि कलन विलयंतु, कलन जिन रमना रे॥ १६॥

जिन चरन चिंतामनि. उव चरन, जिन रवना रे।
जिन सरनि चरन विलसंतु, चरन जिन रमना रे॥ १७॥

जिन कमल चिंतामनि उव कमल, जिन रवना रे।
जिन विविर उवन विलयंतु, कमल जिन रमना रे॥ १८॥

जिन कमल चिंतामनि धुव कमल, जिन रवना रे।
जिन कमल धुवं धुव उत्तु, कमल जिन रमना रे॥ १९॥

धुव कमल चिंतामनि धुव उवन, जिन रवना रे।
धुव उवन उवन सम सुवन, सुवन जिन रमना रे॥ २०॥

जिन सुवन चिंतामनि कर्न समय, जिन रवना रे।
जिन सरनि समय विलयंतु, सुवन जिन रमना रे॥ २१॥

जिन सुवन चिंतामनि सुव रमन, जिन रवना रे।
जिन सुवन हुवन विलसंतु, सुवन जिन रमना रे॥ २२॥

जिन हिय चिंतामनि हिय हुवन, जिन रवना रे।
जिन हिय हुव सरनि विलंतु, हियं जिन रमना रे॥ २३॥

अवयास चिंतामनि उवन पौ, जिन रवना रे।
सुइ मल अवयास विलंतु, उवन जिन रमना रे॥ २४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

अवयास जिनय जिन उवन मौ, जिन रवना रे।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइ मल अवयास विलतु, उवन जिन रमना रे ॥ २४ ॥

अवयास जिनय जिन उवन मौ, जिन रवना रे ।
अवयास नंत दर्संतु, रमन जिन रमना रे ॥ २५ ॥

सुइ दिप्ति चिंतामनि उवन दिप्ति, जिन रवना रे ।
उव उवन दिप्ति रम उत्तु, दिप्ति जिन रमना रे ॥ २६ ॥

जिन दिष्टि चिंतामनि दिष्टि उवन, जिन रवना रे ।
सुइ सरनि दिष्टि विलयंतु, दिष्टि जिन रमना रे ॥ २७ ॥

सुइ सुयं चिंतामनि दिप्ति सुइ, जिन रवना रे ।
दिपि दिष्टि उवन विलसंतु, उवन जिन रमना रे ॥ २८ ॥

सुइ अभय चिंतामनि उव अभय, जिन रवना रे ।
जिन अभय सल्य विलयंतु, अभय जिन रमना रे ॥ २९ ॥

जिन सुर्क चिंतामनि सुर्क जिन, जिन रवना रे ।
जिन सुर्क सरनि विलयंतु, सुर्क जिन रमना रे ॥ ३० ॥

जिन अर्थ चिंतामनि अर्थ जिन, जिन रवना रे ।
सर्वार्थ सुर्क विलसंतु, अर्थ जिन रमना रे ॥ ३१ ॥

जिन विंद चिंतामनि विन्द मौ, जिन रवना रे ।
जिन विन्द विन्द दर्संतु, विन्द जिन रमना रे ॥ ३२ ॥

जिन विन्द चिंतामनि विन्द मौ, जिन रवना रे ।
लघु दीर्घ विन्द जिन उत्तु, विन्द जिन रमना रे ॥ ३३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विन्द रमन जिन विन्द मौ, जिन रवना रे।
समरोम विन्द दर्संतु, दर्सं जिन रमना रे ॥ ३४ ॥
नो उवन चिंतामनि विन्द पौ, जिन रवना रे।
सुइ विन्द समय सम उत्तु, उवन जिन रमना रे ॥ ३५ ॥
जिन नंद चिंतामनि नंद जिन, जिन रवना रे।
आनन्द समय सम सिद्धि, चेय जिन रमना रे ॥ ३६ ॥
जिन समय चिंतामनि चिन्त जिन, जिन रवना रे।
हिय अलष अगम विलसंतु, हिय जिन रमना रे ॥ ३७ ॥
जिन अलष चिंतामनि अलष जिन, जिन रवना रे।
जिन अगम उवन विलसंतु, उवन जिन रमना रे ॥ ३८ ॥
सहयार चिंतामनि सहज जिन, जिन रवना रे।
जिन रमन मुक्ति विलसंतु, साह जिन रमना रे ॥ ३९ ॥
जिन रंज चिंतामनि रंज जिन, जिन रवना रे।
जिन उवन उवन विलसंतु, विलय जिन रमना रे ॥ ४० ॥
जिन षिपक चिंतामनि षिपक पौ, जिन रवना रे।
जिन ममल सिद्धि संपत्तु, ममल जिन रमना रे ॥ ४१ ॥
सुइ अर्क चिंतामनि सिय रमन, जिन रवना रे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

सुइ स्रेनि चिंतामनि कलन जिन रवना रे।

जिन स्रेनि कलन सिधि रत्तु, सुयं जिन रमना रे ॥ ४३ ॥

सुइ तारनतरन सु चिंतामनि, जिन रवना रे।

जिन उवन कमल विलसंतु, उवन जिन रमना रे ॥ ४४ ॥

तारनतरन चिंतामनि कमल मौ, जिन रवना रे।

सिहु समय सिद्धि संपत्तु, सिद्ध जिन रमना रे ॥ ४५ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जिन उवन चिंतामनि उवन पौ, जिन रवना रे) चिंतामणिके समान श्री जिनराजका परम ज्योतिस्वरूप पद प्रगट हुआ है। मैंने श्री जिनराजमें उपयोग लगाया है (उवन उवन दसंतु, उवन जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र ज्ञानमें रमण कर रहे हैं व ज्ञानकी प्रगटताका उपाय दरशाते हैं या मैं ज्योति स्वरूप जिनमें रमण करता हूँ ॥ १ ।

(जिन जिनय चिंतामनि जिन उवन, जिन रवना रे) चिंतामणिके समान श्री जिनका उदय हुआ है उन्हींमें मैंने उपयोग लगाया है (जिन जिनयति जिनय जिनन्द जिनय, जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र कर्मोंको व रागादिको जीत चुके हैं। वे वीतराग भावमें रमण कर रहे हैं या मैं जिनेन्द्रमें रमण करता हूँ ॥ २ ॥

(जिन इष्ट चिंतामनि उवन पौ, जिन रवना रे) श्री जिनराजने चिंतामणिके समान ज्ञानमई पद प्रगट कर दिया है, उसी जिनमें मैं रमण करता हूँ (उव उवन इष्ट दरसंतु, इस्ट जिन रमना रे) वे जिनेन्द्र इष्ट आत्मज्ञानका उपाय दरशाते हैं तथा वे वीतराग विज्ञानमें रमण कर रहे हैं या मैं प्रकाशमई जिनमें रमण करता हूँ ॥३॥

(जिन लषन चिंतामनि अलष पौ, जिन रवना रे) श्री जिनराजने चिंतामणिके समान अतीन्द्रिय परमात्म-पदको देख लिया है, मैं उन्हींमें रमण करता हूँ (जिन अलष अलष दसंतु, अलष जिन रमना रे) वे जिनेन्द्र स्वयं अतीन्द्रिय वीतराग भावमें रमण करते हुए अतीन्द्रिय स्वभावको दरशाते हैं या मैं अतीन्द्रिय जिनमें रमण करता हूँ ॥ ४ ॥ ॥१५३॥

(जिन गमन चिंतामनि अगाम पौ, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिंतामणिके समान मनसे अगोचर अनु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवगम्य पदको प्राप्त कर लिया है। मैं उन्हींमें रमण करता हूँ (जिन अगम अगम दिष्टंतु, अगम जिन रमना रे) वे जिनेन्द्र अगम स्वभावमें रमण कर रहे हैं तथा आनन्द स्वभावको दरशाते हैं या मैं अगम जिनमें रमण करता हूँ ॥ ५ ॥

(जिन सुयं चिंतामनि उवन पौ, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने स्वयं पुरुषार्थ करके चिंतामणिके समान ज्ञानमई पदको प्राप्त किया है, मैं श्री जिनमें भक्ति करता हूँ (जिन उवन रमन दर्सेतु, रमन जिन रमना रे) वे जिनेन्द्र ज्ञानमें रमण होनेका उपाय दरशाते है, वे स्वयं रमण स्वरूपमें रमण कर रहे हैं या मैं स्वात्मरमी जिनमें रमण करता हूँ ॥ ६ ॥

(जिन समय चिंतामनि उव समय, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र परमात्माने चिंतामणिके समान आत्माका प्रकाश कर दिया है, मैं जिन भगवानमें तन्मय होता हूँ (जिन असम साहि साहंतु, समय जिन रमना रे) श्री जिनने अनुभवसाध्य जो मुक्ति है उसका साधन कर लिया है। वे वीतराग आत्मामें रमण कर रहे हैं या मैं जिन परमात्मामें रमण करता हूँ ॥ ७ ॥

(जिन गुप्ति चिंतामनि गुप्ति जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिंतामणिके समान आत्माके गुप्त अनुभवगम्य स्वरूपमें लीनता प्राप्त करली है। मैं उनका ध्यान करता हूँ (जिन गुप्ति उवन दर्सेतु, गुप्ति जिन रमना रे) वे जिनेन्द्र गुप्त आत्मज्ञानको दिखलाते हैं, आप गुप्त जिन स्वभावमें रमण कर रहे हैं या मैं स्वरूप गुप्त जिनका रमण करता हूँ ॥ ८ ॥

(जिन पर्यं चिंतामनि पर्म जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिंतामणिके समान श्रेष्ठ जिनपद पालिया है, मैं जिन भगवानका शरण लेता हूँ (जिन पर्यं मुक्ति दर्सेतु, पर्म जिन रमना रे) श्री जिनने मोक्षपदका मार्ग दिखलाया है। वे परमात्माके जिन स्वभावमें रमण कर रहे हैं या मैं परम जिनमें रमण करता हूं ॥ ९ ॥

(जिन ध्रुव चिंतामनि ध्रुव रमन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिंतामणिके समान ध्रुव रूपसे रम रहे हैं, मैं जिनेन्द्रके चरणोंमें जाता हूं (जिन ध्रुवं मुक्ति विलसंतु, ध्रुवं जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र ध्रुव अविनाशी मोक्षके पदका आनन्द लेरहे हैं—वे ध्रुव वीतरागभावमें रमण कर रहे हैं या मैं ध्रुव जिनमें रमता हूं ॥ १० ॥

(जिन चलन चिंतामनि अचल पौ, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिन्तामणिके समान निश्चल शुद्ध पदमें परि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nana, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निश्चल ज्ञानमें तन्मय होकर निश्चल वीतरागपदमें रमण कर रहे हैं या मैं निश्चल जिनमें रमण करता हूँ ॥ ११ ॥

(जिन ढलन चिंतामनि ढलन पौ, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिन्तामणिके समान उन्नति प्राप्त आत्मीक पदमें विराजित हैं, मैं जिन भगवानका शरण लेता हूं (जिन उवन ढलन ढलनंतु, ढलन जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र ज्ञानके शुद्ध परिणाममें तन्मय हैं व उन्नति प्राप्त जिनपदमें रमण कर रहे हैं, मैं उन्नति प्राप्त जिनमें रमण करता हूं ॥ १२ ॥

(जिन दिप्ति चिंतामनि दिप्ति जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिन्तामणिके समान अनन्त ज्ञानमें प्रकाश पारहे हैं, मैं जिन भगवानका ध्यान करता हूं (जिन उवन दिप्ति दिपि नंतु, दिप्ति जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्रने अनन्त ज्ञानकी ज्योति प्रगट की है व उसी ज्ञानमें वे रमण कर रहे हैं या मैं ज्ञानस्वरूपी जिनमें रमण करता हूं ॥ १३ ॥

(जिन दिष्टि चिंतामनि दिष्टि जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिन्तामणिके समान अनन्तदर्शनको देख लिया है, मैं श्री जिनमें रमण करता हूं (जिन उवन दिष्टि दिष्टन्तु, दिष्टि जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र अनन्त दर्शनके प्रकाशको झलका रहे हैं तथा उसी अनन्तदर्शनमें वीतराग भावसे रमण कर रहे हैं या मैं अनन्त-दर्शनधारी जिनमें रमण करता हूं ॥ १४ ॥

(जिन अर्क चिंतामनि अर्क जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिन्तामणिके समान सूर्य स्वरूप प्रकाशित हैं, मैं श्री जिनका ध्यान करता हूं (जिन उवन अर्क अर्कंतु, अर्क जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्रने प्रकाशमान सूर्य-वत् प्रकाश पाया है तथा वे वीतराग सूर्यसम आत्मामें रमण कर रहे हैं या मैं जिन सूर्यमें रमण कर रहा हूं ॥ १५ ॥

(जिन कलन चिंतामनि, उव कलन जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिन्तामणिके समान स्वात्मानुभवको प्राप्त किया है, मैं जिनमें तन्मय होता हूं (जिन सरनि कलन विलयंतु, कलन जिन रमना रे) जिनेन्द्रने संसारकी तन्मयताको या भ्रमणाको दूर कर दिया है। वे वीतरागतासे आत्मानुभवमें रमण कर रहे हैं या मैं आत्मा-नुभवी जिनेन्द्रमें रमण करता हूं ॥ १६ ॥

(जिन चरन चिंतामनि उवन चरन जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिंतामणिके समान वीतराग चारित्रमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचरण किया है, मैं जिनका शरण लेता हूँ (जिन चरन सरनि विलसंतु, चरन जिन रमना रे) जिनेन्द्रने संसारका भ्रमण मेट दिया है व वे वीतराग चारित्रमें रमण कर रहे हैं या मैं वीतराग चारित्रमें रमण करता हूँ ॥१७॥

(जिन कमल चिंतामनि उव कमल, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिंतामणिके समान अपने आत्म कमलको विकसित किया है। मैं श्री जिनका ध्यान करता हूँ (जिन विविर उवन विलयंतु, कमल जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्रने कर्मोंके आस्रव द्वारको बन्द कर दिया है, वे कमल समान शुद्ध आत्मामें रमण कर रहे हैं या मैं कमल समान जिन भगवानमें रमण करता हूँ ॥ १८ ॥

(जिन कमल चिंतामनि ध्रुव कमल, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिंतामणिके समान ध्रुव अविनाशी कमल समान आत्माका प्रकाश किया है, मैं जिनेन्द्रकी शरण लेता हूँ (जिन कमल ध्रुवं ध्रुव उत्तु, कमल जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र कमलको निश्चयसे ध्रुव कहा गया है। वे कमल सम जिनपदमें रमण कर रहे हैं या मैं कमल जिनमें रमण करता हूँ ॥ १९ ॥

(ध्रुव कमल चिंतामनि ध्रुव उवन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र ध्रुव कमल चिंतामणिके समान ध्रुवरूपसे प्रकाशित हैं, मैं जिनराजकी भक्ति करता हूँ (ध्रुव उवन उवन सम सुवन, सुवन जिन रमना रे) वे प्रभु ज्ञानके प्रकाशमें समभावके साथ परिणमन कर रहे हैं। वे उसी परिणमनमें रम रहे हैं या मैं उस वीतराग परिणतिमें रमता हूँ ॥ २० ॥

(जिन सुवन चिंतामनि कर्न समय, जिन रवना रे) परिणमनशील जिन चिन्तामणिके समान आत्मीक साधनमें उपयुक्त हैं, मैं उनका मनन करता हूं (जिन सरनि समय विलयंतु, सुवन जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्रने आत्माका भव-भ्रमण नाश कर दिया है, वे वीतराग परिणतिमें रमण कर रहे हैं या मैं वीतराग परिणतिमें रमण करता हूं ॥ २१ ॥

(जिन सुवन चिंतामनि सुव रमन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिन्तामणिके समान स्वात्मरमणमें लीन हैं, मैं जिनेन्द्रका मनन करता हूँ (जिन सुवन हुवन विलसंतु, सुवन जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र अपने ज्ञानमें परिणमन करते हुए आनन्दमग्न हैं व वीतराग परिणमनमें रम रहे हैं या मैं वीतराग परिणतिमें रमण करता हूँ ॥ २२ ॥

(जिन दिय चिंतामनि दिय हुवन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिन्तामणिके समान हितकारी ध्यानके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

होनेमें मग्न हैं, मैं श्री जिनका ध्यान करता हूँ (जिन हिय हुव सरनि विलंतु, हियं जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्रने हितकारी ध्यानकी अग्निसे संसारका क्षय किया है व हितकारी वीतरागतामें रमण कर रहे हैं या मैं हितकारी जिनमें रमण करता हूँ ॥ २३ ॥

(अवयास चिंतामनि उवन पौ, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिन्तामणिके समान ज्ञानमई पदमें मगन हैं, मैं श्री जिनका शरण लेता हूँ (सुइ मल अवयास विलंतु, उवन जिन रमना रे) उनका ज्ञानावरण कर्म क्षय होगया है, वे वीतरागतासे ज्ञानमें रमण कर रहे हैं या मैं प्रकाशमान जिनमें रमण करता हूँ ॥ २४ ॥

(अवयास जिनय जिन उवन मौ, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रमें ज्ञानका प्रकाश होरहा है, मैं श्री जिनमें रमण करता हूँ (अवयास नंत दर्संतु, रमन जिन रमना रे) उन्होंने ज्ञान द्वारा अनन्त पदार्थोंको देख लिया है व वे स्वात्मरमणमें रमण कर रहे हैं या मैं रमणशील जिनमें रमण करता हूँ ॥ २५ ॥

(सुइ दिप्ति चिंतामनि उवन दिप्ति, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिन्तामणिके समान ज्ञान ज्योतिका प्रकाश कर लिया है, मैं जिनेन्द्रका शरण लेता हूँ (उव उवन दिप्ति रम उत्तु, दिप्ति जिन रमना रे) उनको ज्ञान प्रकाशमें रमणशील कहा गया है, वे जिनेन्द्र ज्ञानहीमें रमण कर रहे हैं या मैं जिनेन्द्रके ज्ञानमें रमण कर रहा हूँ ॥२६॥

(जिन दिष्टि चिंतामनि दिष्टि उवन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रने चिन्तामणिके समान अनन्तदर्शनको या क्षायिक सम्यक्तको देख लिया है, मैं जिनेन्द्रमें रमण करता हूँ (सुइ सरनि दिष्टि विलयंतु, दिष्टि जिन रमना रे) उन्होंने संसारकी दृष्टीको या अशुद्ध दर्शनको क्षय कर दिया है या मिथ्यादर्शनका नाश किया है। वे वीतराग सम्यग्दर्शनमें रमण कर रहे हैं या मैं आत्मदर्शी जिनमें रमण करता हूँ ॥ २७ ॥

(सुइ सुयं चिंतामनि दिप्ति सुइ, जिन रवना रे) वे जिनेन्द्र स्वयं चिन्तामणिके समान प्रकाश स्वरूप हैं, मैं जिनेन्द्रमें मगन हूँ (दिपि दिष्टि उवन विलसंतु, उवन जिन रमना रे) वे अनन्त ज्ञान व अनन्त दर्शनके प्रकाशका आनन्द ले रहे हैं, वे वीतरागमई प्रकाशमें रमण कर रहे हैं या मैं ज्योतिस्वरूप जिनमें रमण करता हूँ ॥२८॥

(सुइ अभय चिंतामनि उव अभय, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिन्तामणिके समान निःशङ्कभावमें लीन होकर पूर्ण अभय होगए हैं, मैं जिनेन्द्रका ध्यान करता हूं (जिन अभय सल्य विलयंतु, अभय जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्रने निर्भय भावके द्वारा सर्व प्रकार शल्योंको या विकल्पको या शंकाओंको चूर कर दिया है तथा वे वीतरागताके साथ निर्भय भावमें रमण कर रहे हैं या मैं अभय जिनराजमें रमण करता हूँ ॥ २९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जिन सुर्क चिंतामनि सुर्क जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र सूर्य चिंतामणिके समान वीतरागमई सूर्य हैं, मैं जिनेन्द्रमें मगन होता हूँ (जिन सुर्क सरनि विल्यंतु, सुर्क जिन रमना रे) जिनेन्द्र सूर्यने संसारके अन्धकारको दूर कर दिया है। तथा वे वीतरागमई सूर्यके प्रकाशमें रमण कर रहे हैं या मैं जिनेन्द्र सूर्यमें रमण करता हूँ॥ ३०॥

(जिन अर्थ चिंतामनि अर्थ जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र आत्मा पदार्थ हैं व चिंतामणिके समान आत्महितमें लीन हैं, मैं जिनराजकी शरण लेता हूँ (सर्वार्थ सुर्क विल्संतु, अर्थ जिन रमना रे) वे सर्व सिद्धिको देनेवाले सूर्यका आनन्द ले रहे हैं व वीतराग पदार्थमें रमण कर रहे हैं या मैं वीतराग जिनेन्द्रमें रमण करता हूँ ॥ ३१ ॥

(जिन विंद चिंतामनि विंद मौ, जिन रवना रे) ज्ञानवान जिनेन्द्र चिंतामणिके समान ज्ञानके अनुभवमें लीन हैं, मैं जिनका ध्यान करता हूँ (जिन विन्द विन्द दर्सतु, विन्द जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र स्वानुभवसे स्वानुभवके आदर्शको बता रहे हैं व वीतराग अनुभवमें रमण कर रहे हैं या मैं स्वानुभवी जिनमें रमण करता हूँ ॥ ३२ ॥

(जिन विन्द चिंतामनि विन्द मौ, जिन रवना रे) स्वानुभवी जिनेन्द्र चिंतामणिके समान स्वानुभव स्वरूप हैं, मैं जिनेन्द्रकी शरण जाता हूँ (लघु दीर्घ विन्द जिन उत्तु, विंन्द जिन रमना रे) जिनेन्द्रमें स्वानुभवको जघन्यसे उत्कृष्ट तक भेदरूप बताया है। सम्यग्दृष्टी अविरतिमें जघन्य व परमात्मामें उत्कृष्ट होता है, वे जिनेन्द्र स्वानुभवमें रमण कर रहे हैं या मैं स्वानुभवी जिनराजमें रमण करता हूँ ॥ ३३ ॥

(विन्द रमन जिन विन्द मौ, जिन रवना रे) स्वानुभवमें रमणशील जिनराज स्वानुभवरूप ही हैं। मैं जिनेन्द्रका ध्यान करता हूँ (समरोम विन्द दर्संतु, दर्स जिन रमना रे) वे जिनेन्द्र अपने समताभावमें लीन रोम-रोमसे, शरीरके अंश अंशसे या प्रत्येक आत्मप्रदेशसे स्वानुभवको झलका रहे हैं तथा वे वीतराग सम्यग्दर्शनमें रमण कर रहे हैं या मैं आत्मदर्शी जिनमें रमण करता हूँ ॥ ३४ ॥

(नो उवन चिंतामनि विन्द पौ, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्रके बाहरी शरीरके प्रकाशसे चिंतामणिके समान स्वानुभव झलक रहा है, मैं जिनराजकी शरण लेता हूँ (सुइ विन्द समय सम उत्तु, उवन जिन रमना रे) उन्हीं जिनेन्द्रको समभावके साथ आत्माका अनुभवी कहा गया है, वे वीतराग प्रकाशमें रमण कर रहे हैं या मैं प्रकाशमान जिनराजमें रमण कर रहा हूँ ॥ ३५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जिन नंद चिंतामनि नंद जित, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र चिंतामणिके समान आनन्द गुणमें मगन हैं, मैं जिनराजका भजन करता हूँ (आनंद समय सम सिद्धि, चेय जिन रमना रे) उन्होंने आनन्दरूपी आत्मा होकर समभावको सिद्ध किया है। वे वीतराग अनुभवगम्य स्वरूपमें रमण कर रहे हैं या मैं अनुभवगम्य जिनमें रमण करता हूँ ॥ ३६ ॥

(जिन समय चिंतामनि चिंत जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र परमात्मा चिंतामणिके समान वीतरागमई चेतनामें लीन हैं, मैं जिनेन्द्रकी शरण लेता हूं (हिय अलष अगम विलसंतु, हिय जिन रमना रे) वे हितकारी अतीन्द्रिय व मनसे अगोचर है। भावका स्वाद ले रहे हैं व हितकारी जिन स्वभावमें रमण कर रहे हैं या मैं हितकारी जिनराजमें रमण करता हूं ॥ ३७ ॥

(जिन अलष चिंतामनि अलष जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र अतीन्द्रिय हैं व चिंतामणिके समान अतीन्द्रिय भावमें लीन हैं, मैं जिनेन्द्रका ध्यान करता हूँ (जिन अगम उवन विलसंतु, उवन जिन रमना रे) वे जिनेन्द्र अतीन्द्रिय ज्ञानका आनन्द लेरहे हैं व वीतराग प्रकाशमें रमण कर रहे हैं या मैं प्रकाश स्वरूप जिनमें रमण करता हूँ ॥ ३८ ॥

(सहयार चिंतामनि सहज जिन, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र परम सहायक हैं। वे चिंतामणिके समान सहज जिन स्वभावरूप हैं। मैं जिनेन्द्रकी शरण लेता हूँ (जिन रमन मुक्ति विलसंतु, साह जिन रमना रे) वे वीतरागतामें रमण कर मोक्षका आनन्द लेरहे हैं व साध्य जिन स्वभावमें रमण कर रहे हैं या मैं साधनेयोग्य जिन स्वभावमें रमण करता हूँ ॥ ३९ ॥

(जिन रंज चिंतामनि रंज जिन जिन रवना रे) आनन्द मगन जिनेन्द्र चिंतामणिके समान आनन्दमें मग्न हैं, मैं जिनराजका अनुभव करता हूँ (जिन उवन उवन विलसंतु, उवन जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र ज्ञान ज्योतिका आनन्द लेरहे हैं व वीतराग प्रकाशमें रमण कर रहे हैं या मैं ज्योतिस्वरूप जिनराजमें रमण करता हूँ॥४०॥

(जिन षिपक चिंतामनि षिपक पौ, जिन रवना रे) श्री जिनेन्द्र क्षायिक भावधारी हैं व चिंतामणिके समान क्षायिक भावमें लीन हैं, मैं जिनराजका शरण लेता हूँ (जिन ममल सिद्धि संपत्तु, ममल जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्रने सर्व मल नाशकर सिद्धको प्राप्त किया है व वे शुद्ध वीतराग भावमें रमण कर रहे हैं या मैं शुद्ध जिनमें रमण करता हूँ ॥ ४१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सुइ अर्क चिंतामनि सिय रमन, जिन रवना रे) वे जिनेन्द्र सूर्य चिंतामणिके समान शुद्धोपयोगमें रमण कर रहे हैं। मैं जिनराजका ध्यान करता हूँ (सिय सुयं समय धुव रत्तु, धुवं जिन रमना रे) वे स्वयं ही ध्रुव व शुद्ध आत्मामें लीन हैं, वे ध्रुव वीतराग भावमें रमण कर रहे हैं या मैं ध्रुव जिनराजमें रमण करता हूँ ॥४२॥

(सुइ स्रेनि चिंतामनि कलन जिन, जिन रवना रे) वे ही जिनराजकी श्रेणीपर चिंतामणिके समान शुद्धात्मानुभवमें लीन हैं। मैं जिनराजका मनन करता हूँ (जिन स्रेनि कलन सिधि रत्तु, सुयं जिन रमना रे) जिनराज अपने पदमें मगन होकर सिद्धभावमें रत हैं व स्वयं वीतराग भावमें रमण कर रहे हैं या मैं स्वयंभू जिनमें रमण करता हूँ ॥ ४३ ॥

(सुइ तारन तरन सु चिंतामनि जिन रवना रे) वे ही चिंतामणिके समान तारण तरण अरहन्त हैं। मैं जिनेन्द्रका शरण लेता हूँ (जिन उवन कमल विलसंतु, उवन जिन रमना रे) श्री जिनेन्द्र प्रफुल्लित कमल सम आत्माका आनन्द लेरहे हैं व वीतराग प्रकाशमें रमण कर रहे हैं या मैं प्रकाशरूप जिनेन्द्रमें रमण करता हूँ ॥४४॥

(तारन तरन चिंतामनि कमल पौ, जिन रवना रे) वे तारणतरण अरहन्त चिंतामणिके समान कमल स्वरूप हैं, मैं जिनराजका ध्यान करता हूँ (सिहु समय सिद्धि संपत्तु, सिद्ध जिन रमना रे) वे ही परमात्मा सिद्धगतिको पाते हैं व सिद्धके वीतराग भावमें रमण करते हैं या मैं श्री सिद्ध परमात्मा जिनमें रमण करता हूँ ॥४५॥

भावार्थ—इस सुरमण या स्वरमण चिन्तामणि स्तोत्रमें बहुत ही उत्तम प्रकारसे श्री जिनेन्द्र परमात्माका स्वरूप दिखलाकर अपनी भक्ति व अपना प्रेम प्रगट किया है व उनके अंतरंग गुणोंके द्वारा स्वयं स्वात्मरमणकी भावना भाई है। जो वीतरागभावको प्राप्त करना चाहें उनको वारवार इस स्तोत्रका मनन करना चाहिये। इसका भाव यही है कि यह संसारी आत्मा स्वानुभवके मार्गसे ही गुणस्थान क्रमसे अरहन्त होकर सिद्ध होता है—स्वानुभवकी ज्योति चौथे अविरत सम्यग्दर्शन गुणस्थानसे प्रारंभ होती हैं तब वह जघन्य है, वही स्वानुभव बढते बढते परमात्मामें उत्कृष्ट होजाता है, क्योंकि यहां प्रत्यक्ष आत्माका ज्ञान है। क्षीणमोह गुणस्थान तक श्रुतज्ञान द्वारा परोक्ष आत्माका ज्ञान था। जैसे दोयजका चन्द्रमा बढते बढते पूर्णमासीका चन्द्रमा होजाता है वैसे ही जघन्य स्वानुभव उत्कृष्ट स्वानुभव होजाता है। स्वानुभव ही ध्यानकी अग्नि है जिससे कर्म समूह जलते हैं। अविपाक निर्जरा चौथेसे प्रारम्भ होकर बराबर बढती जाती है। [illegible]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

होजाते हैं-स्वात्मानुभवके समय आत्मानंद आता है। यह आनंद भी बढ़ते बढ़ते परमात्मामें अनन्त सुख होजाता है। स्वानुभवसे ज्ञान भी बढ़ता है, दर्शन गुण भी बढ़ता है, आत्मवीर्य भी बढ़ता है, ज्ञानावरण, दर्शनावरण व अंतराय कर्मका क्षयोपशम बढ़ते बढ़ते जब क्षय होजाता है तब परमात्मामें अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, व अनंत वीर्य प्रगट होजाते हैं। स्वानुभवके प्रारम्भमें स्वरूपाचरण चारित्र होता है, वही बढ़ते बढ़ते चारित्र मोहनीयके क्षयसे परमात्मामें यथाख्यात चारित्र होजाता है। सम्यग्दर्शन द्वारा आत्मानुभव भी बढ़ता है इसलिये परमात्माके सम्यग्दर्शनको परमावगाढ़ क्षायिक सम्यक्त कहते हैं। आत्मीक गुणोंको चिन्तामणिकी उपमा इसलिये दी है कि पूर्ण सन्तोष या तृप्ति इन्हींके लाभसे या आत्मविकाससे होती है। जहांतक संसार है, जहांतक कर्मोंका उदय है, वहांतक आत्मिक गुणोंके भोगमें अन्तराय रहता है व जन्म जरा मरण, इष्ट वियोग, अनिष्ट संयोगका कष्ट सहना ही पड़ता है। इंद्र व चक्रवर्ती भी इन दोषोंसे मुक्त नहीं हैं अतएव कर्मोंको क्षय करके ही पूर्ण तृप्तिकारी परमात्माका पद प्राप्त होता है। यद्यपि परमात्माका स्वरूप अतीन्द्रिय है, स्वानुभवगम्य है तथापि जब वे समवसरणमें विराजमान होते हैं तब दर्शकको उनके स्वरूपसे झलकता है कि उनका शरीर स्वात्मानुभवके भीतरी भावको रोमरोमसे प्रगट कर रहा है, भीतरी आत्मीक भावोंका असर शरीरपर झलकता है। अंतरंग व बहिरंग पूर्णशांति व वीतरागतामई अरहन्त ही भक्ति करने योग्य, मनन करने योग्य, ध्यान करने योग्य है, उनके स्वरूपके आलम्बनसे भव्य जीवको अपने स्वरूपका ज्ञान होता है। निश्चयसे आत्मा व परमात्मा समान हैं। जो परमात्माके आत्मीक गुणोंके भीतर रमण करता है वह मानो अपने ही गुणोंमें रमण करता है। परमात्माके मिथ्यात्व, अविरति, कषायभाव नहीं हैं संसार सम्बन्धी आस्रव क्षय होगए हैं। इससे सयोग केवलीमें ईर्यापथ आस्रव है वह भी अयोगी जिनमें नहीं रहता है। परमात्मा सिद्धपदको पाकर ध्रुवरूपसे सदा आत्मानन्दका भोग मोक्षपदमें करते हैं। श्री तारणस्वामीने उन्हींमें अपनी रमणता बताकर पूर्ण धर्मानुराग प्रगट किया है। नियमसारमें कहा है—

कोहं खमया माणं समद्दवेण ज्जवेण मायं च। सन्तोसेण य लोहं जयदि खुए चहुविहकसाए ॥ ११५ ॥

उक्किट्ठो जो वोहो णाणं तस्सेव अप्पणो चित्तं। जो धरइ मुणी णिच्चं पायच्छित्तं हवे तस्स ॥ ११६ ॥

णंताणंतभवेण समज्जिअसुहअसुहकम्मसंदोहो। तवचरणेण विणस्सदिं पायच्छित्तं तवं जम्हा ॥ ११८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ—क्रोधको क्षमासे, मानको मार्दवसे, मायाको आर्जवसे व लोभको सन्तोषसे इस तरह चारों कषायोंको जीतना चाहिये। उत्कृष्ट धर्म परमात्मस्वरूपका बोध, ज्ञान तथा अनुभव है। जो मुनि इस धर्मको नित्य धारण करता है उसीके कर्म क्षयकारी प्रायश्चित्त होता है। अनन्तानन्त जन्मोंमें जो शुभ व अशुभ कर्मोंका समूह बांधा था सो सब शुद्ध आत्मरमण रूप तपके आचरणसे नाश होजाता है, इसलिये तप ही प्रायश्चित्त है।

(१२९) स्वामी तारण जिनदेव फूलना गाथा २७०८ से २७१८ तक।

जिन जिनयति जिनय जिन उवने, जिन मुक्ति पंथ दर्सतु।
सब्द प्रिये सुइ सुयं उवन जिन, जै जयो सिद्धि संपत्तु ॥ १ ॥

हो स्वामी तारन देवा! उत्पन्न अर्क दरसाइयो।
जिन स्वामी पाए हो, स्वामी तारन देवा ॥
अगम अगम उवन हो, स्वामी तारन देवा।
असह सहाउ न हो, स्वामी तारन देवा (आचरी) ॥ २ ॥

जिन न्यान विन्यानह उवन रमाई, तारन तरन समत्थु।
जिन दिप्ति दिष्टि उत्पन्न मिली, सिद्ध समय सिद्धि संपत्तु॥ हो स्वामी० ॥ ३ ॥

रम रमयति रमन रमन जिन उवने, उव उवन अर्क अर्कंतु।
अर्क सुभावे उवन अर्क जिन, उव उवन सिद्धि संपत्तु ॥ हो० ॥ ४ ॥

चर चरन उवन सुइ चरन उवन जिन, चर चरन चरिय जिन उत्तु।
चर चरन सुभावे मुक्ति चरन जिन, उव चरन सिद्धि संपत्तु ॥ हो० ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Foundation

कलि कलन कलिय उव कलिय कलन जिन, कलि कलिय अर्क जिन उत्तु।
जिनं जिनय सहावे उवनं कलन जिन, कलि उवन सिद्धि संपत्तु ॥ हो० ॥ ६ ॥

चरि चरन कलन सुइ उवन रमन जिन, तत्काल रमन जिन उत्तु।
उव उवन सहावे रमन सुयं जिन, सुइ रमन सिद्धि संपत्तु ॥ हो० ॥ ७ ॥

चरन कलन सुइ उवन रमन जिन, कलि उवन कमल धुव उत्तु।
सुइ उवन कमल तर तार रमन जिन, उव कमल सिद्धि संपत्तु ॥ हो० ॥ ८ ॥

सुइ अर्क अर्क सुइ कमल अर्क जिन, सुइ अर्क कमल जिन उत्तु।
सह समय अर्क सुइ कमल अर्क जिन, उव कमल सिद्धि संपत्तु ॥ हो० ॥ ९ ॥

उव उवन कमल सुइ धुवं उवन जिन, धुव उवन समय सुव उत्तु।
धुइ उवन सुवन सुइ कमल रमन जिन, उव कमल सिद्धि संपत्तु ॥ हो० १० ॥

सुइ तारन तरन सुकमल रमन जिन, सुइ तार कमल जिन उत्तु।
सुइ तरन सहावे उवन कमल जिन, सह समय सिद्धि संपत्तु ॥ हो० ११ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जिन जिनयति जिनय जिन उवनं) **कर्मोंको व रागादिको जीतनेवाले श्री जिनेन्द्र प्रगट हुए हैं** (जिन मुक्ति पंथ दर्सेतु) **वे जिनेन्द्र मोक्षका मार्ग दरशाते हैं** (सब्द प्रिये सुइ सुयं उवन जिन) **हितकारी श्रुतज्ञानके शब्दोंके द्वारा श्री जिनराज पद स्वयं प्रगट होता है** (जै जयो सिद्ध संपत्तु) **वे सिद्धगतिको पालेते हैं उनकी जय हो ॥ १ ॥**

(हो स्वामी तारनदेवा—उत्पन्न अर्क दरसावो) **हे तारण तरण अरहन्त प्रभु! आपने सूर्यसम आत्माके प्रकाशके मार्गको दरशाया है** (जिन स्वामी पाए हो—स्वामी तारन देवा) **हमने तारण तरण अरहन्त जिनेन्द्रको पा लिया है** (अगम अगम उवन हो, स्वामी तारन देवा) **हे जिनेन्द्रदेव! आपने अतीन्द्रिय आत्माके अनुभवसे अती-**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्द्रिय पद प्रगट किया है (असह सहाउ न हो, स्वामी तारन देवा) हे तारणतरण ! आपका स्वभाव ऐसा नहीं है जो कष्टप्रद हो–सहा न जा सके, किन्तु सहज ही आनन्दप्रद है ॥ २ ॥

(जिन न्यान विन्यानह उवन रमाई–तारन तरन समत्थु) श्री जिनेन्द्र स्वयं आत्माके ज्ञानमें प्रगट हो रमण कर रहे हैं व तारणतरणकी शक्ति रखते हैं (जिन दिप्ति दिष्टि उत्पन्न मिली–सिद्ध समय सिद्धि संपत्तु) श्री जिनेन्द्रने अनन्तज्ञान व अनन्तदर्शनको प्रगट कर लिया है, वे ही परमात्मा स्वयं सिद्ध गतिको पाते हैं ॥ ३ ॥

(रम रमथति रमन रमन जिन उवने) रमणशील आत्मामें रमण करके श्री जिनवरका पद प्रगट हुआ है (उवन उवन अर्क अर्केतु) वे उदयरूप सूर्यके समान चमक रहे हैं (अर्क सुभावे उवन अर्क जिन) वे सूर्य स्वभाव-धारी हैं, वे जिनेन्द्र सूर्य समान प्रकाशमान हैं (उव उवन सिद्धि संपत्तु) वे प्रगट होकर सिद्धिको पाते हैं ॥४॥

(चर चरन उवन सुइ चरन उवन जिन) चारित्रमें चलनेके द्वारा श्री जिनेन्द्रने यथाख्यात चारित्रको प्रगट कर दिया है (चर चरन चरिय जिन उत्तु) इसी वीतराग चारित्रमें चलनेवालेको जिनेन्द्र कहते हैं (चर चरन सहावे मुक्ति चरन जिन) इसी वीतराग चारित्रके स्वभावसे वे जिनेन्द्र मुक्तिको चले जाते हैं (उव चरन सिद्धि संपत्तु) पूर्ण चारित्र गुण होजानेपर वे सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ ५ ॥

(कलि कलन कलिय उव कलिय कलन जिन) स्वानुभवके अभ्याससे ही जिनपदके योग्य स्वानुभव प्रगट होता है (कलि कलन अर्क जिन उत्तु) जिनेन्द्रको स्वानुभवी सूर्य कहा गया है (जिन जिनय सहावे उवन कलन जिन) वे जिनेन्द्र अपने जीतनेपनेके स्वभावसे प्रगट होकर स्वानुभवमें प्रकाशमान हैं (कलि उवन सिद्धि संपत्तु) इसी स्वानुभवके प्रकाशसे वे सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ ६ ॥

(चरि चरन कलन सुइ उवन रमन जिन) चारित्रमें चलनेसे स्वानुभवके द्वारा प्रगट होकर जिनेन्द्र आपके प्रकाशमें रमण कर रहे हैं (तत्काल रमन जिन उत्तु) श्री जिनेन्द्र हरसमय स्वरूपमें रमणशील कहे गए हैं (उव उवन सुहावे रमन सुयं जिन) वे जिनेन्द्र स्वयं अपने ज्ञान स्वभावमें रमण करते हैं (सुइ रमन सिद्धि संपत्तु) वे ही स्वरूपमें रमण करते हुए सिद्धिको पालेते हैं ॥ ७ ॥

(चरन कलन सुइ उवन रमन जिन) चारित्रके अभ्याससे वे जिनेन्द्र ज्ञानमें रमणशील हैं (कलि उवन कमल ध्रुव उत्तु) उन्हींको ज्ञानका अनुभवी ध्रुव कमल समान विकसित परमात्मा कहा गया है (सुइ उवनं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

कमल तर तार रमन जिन) वे ही प्रकाशमान कमल सम तारणतरण स्वात्मरमी जिन हैं (उव कमल सिद्धि संपत्तु) पूर्ण कमल सम विकासको पाते हुए वे सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ ८ ॥

(सुइ अर्क अर्क सुइ कमल अर्क जिन) वे ही सूर्य समान तेजस्वी हैं, वे कमल समान प्रफुल्लित जिन सूर्य हैं (सुइ अर्क कमल जिन उत्तु) उन्हीं जिनेन्द्रको सूर्य तथा कमल कहा गया है (सह समय अर्क सुइ कमल अर्क जिन) वे ही जिनेन्द्र आत्मा सूर्य हैं। वे ही कमल सहित सूर्य हैं (उव कमल सिद्धि संपत्तु) वे ही कमल सम प्रकाशित हो सिद्ध गतिको पालेते हैं ॥ ९ ॥

(उव उवन कमल सुइ धुवं उवन जिन) वे प्रकाशमान कमल समान जिनेन्द्र ध्रुव रूपसे प्रगट रहते हैं (धुव उवन समय धुव उत्तु) उनहीको ध्रुव प्रकाशमान परमात्मा कहा गया है (सुइ उवन सुवन सुइ कमल रमन जिन) वे ही जिनेन्द्र ज्ञानमें परिणमनशील हैं, वे ही कमल समान निज स्वभावमें रमणशील हैं (उव कमल सिद्धि संपत्तु) वे प्रफुल्लित कमलसम परमात्मा सिद्धगतिको जाते हैं ॥ १० ॥

(सुइ तारन तरन सु कमल रमन जिन) वे तारण तरण अरहंत अपने ही कमल समान स्वभावमें रमण करते हैं (सुइ तार कमल जिन उत्तु) उनहीको तारनेवाला कमल जिन कहा गया है (सुइ तरन सहावे उवन कमल जिन) वे आपसे आपको तारनेवाले हैं। स्व स्वभावको रखते हुए वे जिनेंद्र कमल समान प्रकाशित हैं (सह समय सिद्धि संपत्तु) वे परमात्मा पद सहित सिद्धिको पालेते हैं ॥ ११ ॥

भावार्थ—इस फूलनामें श्री अरहन्त परमात्माके स्वरूपका विचार है। यही आत्मा रत्नत्रय धर्मके द्वारा स्वानुभव करता हुआ कर्मोंको क्षय करके स्वयं परमात्मा जिनेन्द्र होजाता है। शुद्ध ज्ञान स्वभावमें श्रद्धा सहित रमण करना स्वानुभव है। यह स्वानुभव आनन्द देनेवाला है, संकल्प विकल्प मेटनेवाला है, आत्माका विकास करनेवाला है, मुरझाए हुए आत्मारूपी कमलको प्रफुल्लित व पूर्ण परमात्मारूपी कमल बनानेवाला है। यही आत्मारूपी सूर्यपर आए हुए मेघोंको उड़ानेवाला है और आत्म-सूर्यको पूर्ण प्रकाश करनेवाला है। स्वात्मरमण साधन है, स्वात्मरमण ही साध्य है। अरहन्त निश्चलतासे पूर्ण स्वात्मरमी हैं। चारित्र ही वास्तवमें धर्म है। जो स्वरूपमें आचरण करता है, रागद्वेष त्यागता है, वही वीतरागी होकर अरहंत पदमें यथाख्यात चारित्रको झलका देता है, स्वानुभवके रमणसे ही केवलज्ञान होता है तथा सिद्धपद होता है। अतएव मोक्षकी इच्छा रखनेवालोंको संसारसे उदास होकर एकाग्र होकर निज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्धात्मामें भावना करते हुए आत्मध्यानमई धर्मध्यानको जगाना चाहिये और कर्ममलसे शुद्ध होकर अरहन्त पदपर पहुँचनेका पुरुषार्थ करना चाहिये। ध्यानसे ही सिद्धि होती है।

नियमसारमें कहा है—

उसहादिजिणवरिन्दा एवं काऊण जोगवरभत्तिं। णिव्वुदिसुहमावण्णा तम्हा धरु जोगवरभत्तिं ॥ १४० ॥

आवासं जइ इच्छसि अप्पसहावेसु कुणदि थिरभावं। तेण दु सामण्णगुणं संपुण्णं होदि जीवस्स ॥ १४७ ॥

भावार्थ—श्री ऋषभादि चौबीस तीर्थंकरोंने इसी तरह योगाभ्यासकी भक्ति करके निर्वाणके सुखको पाया है। इसलिये तू भी ध्यानमें भक्ति कर। यदि स्वाधीन होना चाहता है तो तू अपने आत्माके स्वभावमें स्थिरता धर इसी आत्मध्यानसे इस जीवके सामायिक पूर्ण होती है।

(१३०) अर्क उवन फूलना गाथा २७१९ से २७४१ तक।

जिन जिनयति जिनय नंत जिन उवने, नंत अनंत केवल सुइ रमना।
कमल कलन सुइ उवन सुइ सुवना, कलन कमल धुव जिनय जिना ॥ १ ॥
सुनहु सषी जिन जिनवर रमना, अर्क छतीस कमल धुव वयना।
न्यान चरन सुइ समय सु सहना, रंज रमन नंद मुक्ति सु गमना (आचरी) ॥ २ ॥
चरन चरिय धुव रमन सुइ उवना, तत्काल रमन जिन जिनय सु रमना।
कलन चरन सुइ दर्सन कलना, उवन इष्ट सुइ कमल धुव उवना ॥ सुनहु० ॥ ३ ॥
उवन कमल जिन जिनय धुव उवना, उवन कर्न सुइ सुवन सु रमना।
सुवन समय सिय उवन सु सुवना, सुवन उवन सिय कमल जिन रमना ॥ सु० ॥ ४ ॥
हंस रमन हिय उवन सुइ सहना, सहन साह उव छोह सुइ रमना।
छोह उवन हुव अगम गम गमना, अगम हुवन सुइ कमल जिन उवना ॥ सु० ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोई उवन हुव अगम गम गमना, अगम हुवन सुइ कमल जिन उवना ॥ सु० ॥ ५ ॥
अवयास नंत सुइ उवन जिन उवना, सहन साह इच्छ असह सिधि गमना ।
दिप्ति दिप्ति सुइ दिप्ति जिन जैना, अवयास दिप्ति सुइ कमल जिन रमना ॥ सु० ॥ ६ ॥
अभय सियं सिय अभय भय गलना, अभय रंज भय विलय जिन रमना ।
सुर्क सुयं सिय नंत जिन उवना, नंत समय सुइ सिद्धि सु गमना ॥ सु० ॥ ७ ॥
अर्थ सियं सुइ सुर्क सु गमना, सब्द सुयं पै पिय अर्थ सु रमना ।
विंद विन्यान विंद नंत स्रवना, सुन्न समय विंद कमल जिन उवना ॥ सु० ॥ ८ ॥
नन्द नन्द जिन नन्द जिन सुवना, विली विनन्द नन्द जिन जिनया ।
आनंद नंद आनंद आनंद जिन रवना, आनंद सिय सम कमल जिन उवना ॥ सु० ॥ ९ ॥
समय समय सम उवन सम रमना, उवन उवन सम समय सुइ स्रवना ।
हियं अनंत नंत हिय गमना, हिय उवन चतुस्टै उवन रै रमना ॥ सु० ॥ १० ॥
अलष लषिय सुइ अलष जिनुत्तं, अलष रमन जिन जिनवर स्रवना ।
अगम अनन्त अगम जिन रवना, अगम सियं सिय कमल जिन उवना ॥ सु० ॥ ११ ॥
सहयार साह असह सह सहना, सहन साह हिय हुव उव उवना ।
रमन रमन सुइ रमन जिन रमना, रमन कमल कलि कलन जिन स्रवना ॥ सु० ॥ १२ ॥
रंज रंज सुइ रंज उव उवना, रंज हियं सह जिनय जिन जिनियं ।
उवन उवन उव उवन जै उवना, उवन जयं जै कमल जय उवना ॥ सु० ॥ १३ ॥
षिपन षिपन षिपि षिपन षिपि उवना, षिपन रमन जै जै जै उवना ।
ममल ममल सुइ ममल जिन रमना, ममल कमल उव उवन सिधि रत्तं ॥ सु० ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सियं सुभाव भव भय विलया, उवन ईजें सुइ रमन जिन रमना ।
जिन नाथ रमन जिन नंद सुनंदं, कमल कलिय सुइ मुक्ति जिनन्दं ॥ सु० ॥ १५ ॥
पयोग पिय पिय जिन पय उवना, पै पयं पयं पिय धुव धुव रमना ।
धुव धुवं धुवं धुव धुव जिन वयना, धुव उवन नंत जिन स्रवन सु रमना ॥ सु० ॥ १६ ॥
सुइ विंद विंद सुइ विंद जिन रमना, विंद विन्यान समय सुइ सुवना ।
विंद सियं सुइ उवन जिन उवना, विंद धुवं जिन जिनय सम सुवना ॥ सु० ॥ १७ ॥
नंद सियं सिय नंद जिन रमना, पयं पयोग पर्म धुव उवना ।
नंद हियं हिय हिय सुइ सुवना, हिययार सियं सिय सिधि जिन भवना ॥ सु० ॥ १८ ॥
जान जयं जै जै जै जैना, जैन रमन सुइ जान जिन भवना ।
जै जै नंत जयं जय जैना, जैन सियं जय जिनवर सुवना ॥ सु० ॥ १९ ॥
लषन लषिय अलष जिन जैना, अलष अगम लषन जिन उवना ।
लीन लीन जिन लीन सिय रमना, लीन सियं सिय लीन पय सुवना ॥ सु० ॥ २० ॥
भद्र सियं सिय भद्र जिन जिनया, मउ मनोयं मय मय उवना ।
मय उवन मय जिनय जिन बैना, मय उवन सियं सिय पर्म सिधि गमना ॥ सु० ॥ २१ ॥
सहज सियं सिय सहज जै जैना, सहज सरूव सुयं जिन उवना ।
पै उवन पयं पिय पिय पिय पियना, सब्द पियं पिय पिय सिधि गमना ॥ सु० ॥ २२ ॥
उवन पयोग पर्म पय गमना, पर्म पियं पिय पयोग जिन रमना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥१६९॥ अन्वयं सहित अर्थ—(जिन जिनयति जिनय नंत जिन उवनं) कर्मोंको व रागादिको जीतनेवाले अनन्त गुण-धारी जिनराज प्रगट हुए हैं (नंत नंत केवल सुइ रमना) वे अनन्त केवलज्ञानमें रमण कर रहे हैं (कमल कलन सुइ उवन सुइ सुवना) शुद्धात्मारूपी कमलका अनुभव करते हुए उन्होंने ज्ञानका प्रकाश किया है, वे उस ज्ञानमें ही परिणमन कर रहे हैं (कलन कमल धुव जिनय जिना) वे जिनेन्द्र आत्मारूपी कमलका स्वाद लेते हुए ध्रुव रूपसे रहते हैं ॥ १ ॥

(सुनहु सषी जिन जिनवर रमना) हे सखी सुनो ! श्री जिनेन्द्र वीतरागभावमें रमण करते हैं (अर्क छतीस कमल धुव वयना) वे ही तीन लोकके स्वामी छत्रके ईश सूर्य हैं, वे ही ध्रुव कमल हैं, उनके वचन सुनो (न्यान चरन सुइ समय सु सहना) ज्ञानमें आचरण करता हुआ उनका आत्मा भलेप्रकार स्थिर है रंज रमन नंद मुक्ति सु गमना) वे ही आनन्दमें मगन होते हुए मोक्षको जाते हैं ॥ २ ॥

(चरन चरिय धुव रमन सुइ उवना) वीतराग चारित्रमें चलते हुए वे उसमें सदा ध्रुव रूपसे रमण करते हुए प्रकाशित हैं (तत्काल रमन जिन जिनय सु रमना) वे जिनेन्द्र हर समय अपने जिन स्वभावमें रमण करते हैं (कलन चरन सुइ दर्सन कलना) चारित्रमें तत्पर रहते हुए क्षायिक सम्यग्दर्शनका अनुभव कर रहे हैं (उवन इष्ट सुइ कमल धुव उवना) वे अपने इष्ट साध्यको प्रगट कर चुके हैं, वे ही ध्रुव रूपसे कमल समान प्रकाशित हैं ॥ ३ ॥

(उवन कमल जिन जिनय धुव उवना) कमल समान प्रकाशित जिनेन्द्र ध्रुव रूपसे प्रकाश करते हैं (उवन कर्न सुइ सवन सु रमना) मोक्षका साक्षात् साधन प्रगट करके वे उसीमें चलते हुए रमण कर रहे हैं (सवन समय सिय (उवन सु सुवना) आत्मामें चलते हुए उन्होंने शुद्धोपयोगको प्रगट कर दिया है व उसीमें परिणमन कर रहे हैं (सुवन उवन सिय कमल जिन रमना) स्व रूपमें परिणमन करनेसे जिनराजने शुद्धोपयोगी कमलको प्रगट करके उसीमें रमणता की है ॥ ४ ॥

(हंस रमन हिय उवन सुइ सहना) हँसके समान शुद्धात्मामें रमण करनेसे आत्माका हित प्रगट होता है उसीमें जमना योग्य है (सहन साह उव छोह सुइ रमना) रागद्वेषादि क्षोभकारक भावोंको सहन कर अर्थात् जीत करके जिनेन्द्र वीतराग भावरूपी साधनमें रमण करते हैं (छोह उवन हुव अगम गम गमना) रागादि क्षोभको उत्पत्तिके कारण कर्मको जलानेके लिये वह ध्यान है जिसमें अतीन्द्रिय ज्ञानमें परिणमन होता है (अगम हुवन सुइ कमल जिन उवना) अतीन्द्रिय आत्माके ध्यानसे कमल समान जिनेन्द्रका प्रकाश होता है ॥ ५ ॥ ॥१६९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(अवयास नंत सुइ उवन जिन उवना) जब अनन्तज्ञान प्रगट होता है तब ही जिनेन्द्र भगवानका उदय होता है (सहन साह इच्छ असह सिधि गमना) आत्मामें स्थितिरूप साधनसे जिस सिद्धपदकी इच्छा थी उस सिद्धपदकी प्राप्ति होजाती है जिसका प्राप्त करना कठिन है (दिप्ति दिप्ति सुइ दिप्ति जिन जैना) ज्ञानमें ज्ञानके रमनेसे ज्ञानावरण कर्मको जीतकर अनन्तज्ञानकी वीतराग प्रीति प्रगट होजाती है (अवयास दिप्ति सुइ कमल जिन रमना) इसी केवलज्ञानके भीतर कमल समान जिनेन्द्र रमण करते हैं ॥ ६ ॥

(अभय सियं सिय अभय भय गलना) निर्भय या शंका रहित होकर शुद्ध भावमें रमनेसे भय रहित शुद्धोपयोग प्रगट होता है व सर्व भय गल जाता है (अभय रुंज भय विलय जिन रमना) निर्भय आत्माके पदमें मगन होनेसे सर्व भय क्षय हो जाता है व वीतरागभावमें रमण होता है (सुर्क सुय सियं नंत जिन उवना) तब यह आत्मा स्वय सूर्य समान प्रगट होकर शुद्ध अनन्त वीतरागतामें प्रकाश करता है (नंत समय सुइ सिद्धि सु गमना) ऐसा अनन्त गुणधारी आत्मा सिद्ध गतिको चला जाता है ॥ ७ ॥

(अर्थ सियं सुइ सुर्क सु गमना) जब आत्मा शुद्धोपयोगी होता है तब वही शांत सूर्यसम प्रकाशमें परिणमन कर जाता है अर्थात् शुद्धोपयोगमें रमण करनेसे शुक्लध्यान द्वारा केवलज्ञान प्रगट हो जाता है (सब्द सुयं पै पिय अर्थ सु रमना) शुक्लध्यानके समय हितकारी शब्दोंके द्वारा स्वयं आत्मीक पदार्थमें रमण होता है। शुक्लध्यानमें श्रुतके शब्दोंका आलम्बन रहता है (विंद विन्यान विंद नंत सुवना) भेदविज्ञान द्वारा आत्मानुभव करते करते अनन्तज्ञानमें परिणमन हो जाता है (सुन्न समय विंद कमल जिन उवना) जब आत्मा सर्व रागादि परभावोंसे शून्य हो जाता है और आत्मामें ज्ञान द्वारा लीन होता है तब जिनेन्द्र कमलका प्रकाश होता है ॥ ८ ॥

(नंद नंद जिन नंद जिन सुवना) वीतरागी जिनके स्वभावमें आनन्दसे रमनेसे आनन्द प्रगट होते होते जिनेन्द्रमें अनन्त सुखरूप परिणमन कर जाता है (विली विनंद नंद जिन जिनया) श्री जिनेंद्रमें विषयानन्द बिलकुल क्षय होगया है, केवल वीतराग सुख प्रगट है (आनंद नंद आनंद आनंद जिन रवना) आत्माके आनन्द गुणमें मगन होनेसे आनन्द बढ़ते बढ़ते वीतराग परमानंद होजाता है (आनंद सिय सम कमल जिन रवना) जब समभाव व शुद्धोपयोगके साथ आनंद होता है तब कमल समान जिनराजका प्रकाश हो जाता है ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(समय समय सम उवन सम रमना) आत्माहीका लगातार मनन करनेसे समभावका प्रकाश होता है तब ज्ञानी समभाव हीमें रमता है (उवन उवन सम समय सुइ स्रवना) समभावके अभ्याससे समभाव आत्मामें बढ़ता जाता है तब वह उसीमें रमण करता है (हियं अनंत नंत हिय गमना) तब आत्माका परिणमन हितकारी अनन्त समभावरूपी हितमें होजाता है। ऐसा समभाव प्रगट होता है जो अनन्त कालतक रहता है. (हिय उवन चतुस्टै उवन रै रमना) समभावके ही अभ्याससे हितकारी अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य चार चतुष्टय प्रगट होते हैं उनमें जिनेन्द्र सदा रमण करते रहते हैं ॥ १० ॥

(अलष लषिय सुइ अलष जिनुत्तं) अतीन्द्रिय आत्माका अनुभव करनेसे अतीन्द्रिय आत्मा प्रगट होता है.ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (अलष रमन जिन जिनवर स्रवनं) जो वीतरागी अतीन्द्रिय आत्मामें रमण करता है वह जिनराज होजाता है (अगम अनन्त अगम जिन रवना) मन वचन, कायसे अगोचर अनन्त अतीन्द्रिय गुणधारी जिनके स्वभावमें रमण करनेसे (अगम सियं सिय कमल जिन उवना) अतीन्द्रिय, शुद्धोपयोगी, शुद्ध कमल समान जिनेन्द्रका प्रकाश होता है ॥ ११ ॥

(सहयार साह असह सह सहना) मोक्षमार्गके साधनकी मददसे कठिनतासे अनुभवनेयोग्य आत्माके स्वभावमें स्थिति होती है (सहन साह हिय हुव उव उवना) इसी साधनके करनेसे हितकारी आत्मध्यानकी अग्नि जल पड़ती है (रमन रमन सुइ रमन जिन रमना) इस आत्माके ध्यानमें रमते रमते वीतराग परमात्मामें रमण होजाता है (रमन कमल कलि कलन जिन स्रवना) शुद्धात्मारूपी कमलके भीतर रमण करनेसे स्वानुभव द्वारा जिनेन्द्रपद प्रगट होजाता है ॥ १२ ॥

(रंज रंज सुइ रंज उव उवना) आत्माके भीतर रंजायमान होनेसे मगनता बढ़ती जाती है (रंज हियं सह जिनय जिन जिनियं) हितकारी परमात्माके स्वरूपमें मगन होते होते कर्मोंको जीतकर जिनपद प्रगट होता है (उवन उवन जै उवन उव उवना) आत्माके भीतर मगन होनेसे आत्माका उदय बढ़ते बढ़ते बढ़ जाता है (उवन जयं जै कमल जय उवना) तब वह उदयकर्मोंको जीत लेता है और कमल समान आत्माका प्रकाश होजाता है ॥ १३ ॥

(षिपन षिपन षिपि षिपन षिपि उवना) आत्माके ध्यानके बलसे कर्मोंका क्षय होते होते जब सर्व घातीय कर्म क्षय होजाते हैं तब नौ क्षायिकभाव या नौ केवल लब्धियां प्रगट होजाती हैं (षिपन रमन जै जै जै उवना) ॥१७१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षायिक भावोंके भीतर रमनेसे जिनराज पद होता है उनकी जय जय होती है (ममल ममल सुइ ममल जिन रमना) आत्मा कर्ममलसे रहित होते होते कर्मरहित शुद्ध जिनेन्द्रके पदमें रमण करता है (ममल कमल उव उवन सिधि रतं) यह कर्म मल रहित कमल समान आत्मा प्रगट होता हुआ सिद्धभावमें रत रहता है ॥१४॥

(सियं सुभाव भव भय विलया) आत्माके शुद्ध स्वभावमें रमण करनेसे सर्व संकटका भय दूर होजाता है। सम्यक्ती अविरति चौथे गुणस्थानवालेका भी भय मिट जाता है, वह निश्चयनयके द्वारा शुद्ध स्वभावमें रमण करता है (उवन ईर्ज सुइ रमन जिन रमना) जब निर्मल सरल ज्ञान प्रगट होता है तब उसीमें रमण करते हुए श्री जिनराजके भीतर रमण होता है (जिननाथ रमन जिन नंद सुनंदं) श्री जिनेन्द्रके भीतर रमण करनेसे जिनेन्द्रके आनन्दमें भलेप्रकार मगनता होती है—परमात्मा पदका आनन्द आजाता है (कमल कलिय सुइ मुक्ति जिनन्दं) फिर वही जिनेन्द्र होकर आत्मारूपी कमलका स्वाद लेता हुआ मुक्त होजाता है ॥ १५ ॥

(पयोग पिय पिय जिन पय उवना) हितकारी शुद्धोपयोगके द्वारा हितकारी जिनपद प्रगट होता है (पै पयं पयं पिय धुव धुव रमना) गुणस्थानोंके द्वारा चढ़ते हुए प्रिय व ध्रुव मुख्य परमात्माके पदमें रमण होजाता है (धुवं धुवं धुवं धुव धुव जिन वयना) श्री जिनवाणी भी ध्रुव है, परम्परासे चली आरही है व चलती रहेगी, यह ध्रुवपदकी प्राप्तिको बताती है (धुव उवन नंत जिन स्रवन सु रमना) इस जिनवाणी द्वारा श्रुतज्ञानमें रमनेसे ध्रुव व अनन्तज्ञान होजाता है व जिनपदके उदयसे उसीमें रमण रहता है ॥ १६ ॥

(सुइ विंद विंद सुइ विंद जिन रमना) ज्ञानका अनुभव करते करते केवलज्ञान प्रगट होता है। उसीमें जिनेन्द्र रमण करते हैं (विंद विन्यान समय सुइ सुवना) ज्ञानके अनुभवसे आत्मा जिनपदमें परिणमन कर जाता है (विंद सियं सुइ उवन जिन उवना) शुद्ध भावका अनुभव करनेसे शुद्धोपयोगकी वृद्धिसे जिनपद प्रगट होता है (विंद धुवं जिन जिनय सम सुवना) ध्रुव अविनाशी ज्ञानके साथ वीतरागी जिन समभावमें परिणमन करते हैं ॥ १७ ॥

(नंद सियं सिय नंद जिन रमना) शुद्धात्मामें आनन्द प्राप्त करनेसे शुद्ध परमानन्द प्रगट होजाता है। उसीमें जिनराज रमण करते हैं (पयं पयोग पर्म धुव उवना) जिनपदमें उत्कृष्ट व ध्रुव शुद्धोपयोग प्रगट होता है (नंद हियं हिय हियं सुइ सुवना) आत्माके हितमें आनन्द भोगनेसे आत्महितमें परिणमन हो जाता है (हियकार सियं सिय सिधि जिन भवना) हितकारी शुद्ध आनन्दके अनुभवसे शुद्ध सिद्धपद प्रगट होता है वही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(हियंयार सियं सिय सिधि जिन भवना) हितकारी शुद्ध आनन्दके अनुभवसे शुद्ध सिद्धपद प्रगट होता है वही परमात्मा जिनका मन्दिर व बसनेका स्थान होजाता है ॥ १८ ॥

(जान जयं जै जै जै जैना) मोक्षमार्ग स्वरूप जैनधर्मकी जय हो, जय हो, जय हो (जैन रमन सुद्ध जान जिन भवना) इस जैनधर्ममें रमण करनेसे वह सवारी मिल जाती है जिससे सिद्धपदरूपी जिन मन्दिरमें प्रस्थान होजाता है (जै जैवंत जयं जय जैना) ऐसे जैनधर्मकी जय हो, जय हो, जिससे कर्मोंपर विजय प्राप्त की जाती है (जैन सियं जय जिनवर सुवना) शुद्ध वीतराग जिनधर्मके द्वारा पूर्ण विजय होजाती है और श्री जिनेन्द्र पदमें परिणमन होजाता है। स्वानुभव ही निश्चय जैनधर्म है ॥ १९ ॥

(लषन लषिय अलष जिन जैना) लक्षणके द्वारा ही अतीन्द्रिय जिनराज व जैनधर्मका ज्ञान होता है। निश्चयसे जिनेन्द्र व जैनधर्म दोनों स्वानुभवगम्य हैं (अलष अगम लषन जिन उवना) जब अतीन्द्रिय व मन अगोचर आत्माका पूर्ण अनुभव होता है तब जिनपद प्रगट होता है (लीन लीन जिन लीन सिय रमना) वीतराग भावमें लीन होते होते शुद्धोपयोगमें रमण होता है (लीन सियं सिय लीन पय सुवना) शुद्धोपयोगमें लीन होनेसे शुद्धोपयोगमें लीन जिनपदका परिणमन होजाता है ॥ २० ॥

(भद्र सियं सिय भद्र जिन जिनया) शुद्धोपयोग भद्र है, उत्तम है, कल्याणकारी है। इसी मंगलीक शुद्धोपयोगसे कर्मोंपर विजय पाकर जिनपद होता है (भद्र मनोयं मय मय उवना) जिनमें मनोज्ञ व उत्तम शुद्धोपयोग होता है, वहीं ज्ञानके द्वारा केवलज्ञान प्रगट होजाता है (मय उवन मय जिनय जिन वैना) केवलज्ञानके उदय होनेपर ज्ञानी वीतरागी जिनेन्द्रकी दिव्यध्वनि प्रगट होती है (मय उवन सियं सिय पर्म सिधि गमना) शुद्ध केवलज्ञानके उदयसे शुद्ध परमात्मा सिद्धगतिको प्राप्त कर लेते हैं ॥ २१ ॥

(सहज सियं सिय सहज जै जैना) सहज स्वाभाविक शुद्धोपयोग ही शुद्ध सहज जैनधर्म है जो कर्मोंको जीतता है (सहज सरूव सुयं जिन उवना) इसी सहज स्वरूपमें रमण करनेसे स्वयं ही जिनपद प्रगट होता है (पै उवन पयं पिय पिय पिय पियना) जिनपदका प्रकाश परमप्रिय है, हितकारी है, सर्वको प्रिय लगता है, सर्वका कल्याणकारी है (सब्द पियं पिय पिय सिधि गमना) उनकी दिव्यवाणी सबको प्रिय लगती है। वे ही जिनेन्द्र परमप्रिय सिद्धपदको प्राप्त कर लेते हैं ॥ २२ ॥

(उवन पयोग पर्म पय गमना) शुद्धोपयोगके प्रकाशसे ही परमात्माका पद हो जाता है (पर्म पियं पिय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पयोग जिन रमना) उत्कृष्ट व प्रिय शुद्धोपयोगमें जिनेन्द्र रमण करते हैं (जिन जिनयति जिनय जिन उवना) जो कर्मोंको जीते वही जिन हैं। वे जैनधर्मी हैं, इसीके द्वारा कर्मोंको जीतते हुए जिनपद प्रगट होता है (उवन पयोग मुक्ति जिन रमना) शुद्धोपयोगके प्रकाशसे ही जिनेन्द्र मुक्तिमें जाकर उसी पदमें रमण करते रहते हैं ॥ २३ ॥

भावार्थ—इस अर्क उवन फूलनेमें आत्मारूपी सूर्यके प्रकाश करनेका उपाय बहुत अच्छी तरह बताया है-मनन करनेयोग्य है। आत्मा स्वभावसे सूर्यके समान सदा प्रकाशक स्वपरज्ञाता हैं व कमलके समान सदा प्रफुल्लित है, परन्तु कर्मोंके अनादि संयोगसे सूर्य अप्रगट रहता है व कमल ग्लानित व बंदसा रहता है। इसके ऊपरका कर्मरूपी आवरण हटानेका साधन एक श्री सर्वज्ञ वीतराग भाषित व जिनवाणी द्वारा प्रगट जैनधर्म है। जो इस धर्मकी सेवा करता है वही जैनी है, इसी धर्मके द्वारा जिनेन्द्र पद व सिद्ध-पद होता है। यह जैनधर्म आत्माका निज स्वभाव है, स्वानुभवरूप है, शुद्धोपयोगरूप है, समभाव स्वरूप है, आनन्द स्वरूप है, शंका व भयरहित है, सहज आत्मस्वभाव है, सम्यग्ज्ञान स्वरूप है, सम्य-ग्दर्शनरूप है, वीतराग चारित्ररूप है। जो इस जैनधर्मकी श्रद्धा लाकर शुभ व अशुभ भावोंको त्यागने योग्य व एक शुद्धोपयोगको ग्रहण करनेयोग्य मानकर उसी शुद्धोपयोगकी प्राप्तिका साधन करता है वह चौथे अविरत सम्यग्दर्शन गुणस्थानसे बढ़ते बढ़ते शुद्धोपयोगकी रमणतासे क्षपकश्रेणी द्वारा चढ़कर चार घातीय कर्मोंको क्षय करके अरहन्त परमात्मा होजाता है तब परमावगाढ़ सम्यग्दर्शन, केवलज्ञान, तथा यथाख्यात चारित्र, पूर्ण समभाव, पूर्ण परमानन्द आदि आत्माके सर्व ही गुण पूर्णरूपसे प्रगट हो जाते हैं तब ही उनको परमात्मा कहते हैं, वे शुद्धोपयोगकी उत्तमताको प्राप्त कर लेते हैं, वे जिनराज अपनी दिव्यध्वनिसे शुद्धोपयोगरूप वीतराग विज्ञानमय जैनधर्मका उपदेश देते हैं। ऐसे जिनेन्द्रकी व उनके द्वारा प्रगट जैनधर्मकी जय हो। निश्चयसे जैनधर्म मन, वचन, कायसे अगोचर एक अतीन्द्रिय आत्मीक परिणति है। इसीके भीतर रमण करनेसे आत्मध्यान होता है-शुक्लध्यान होता है व जो जिन-पद प्रगट होता है वह भी अतीन्द्रिय है। जो अतीन्द्रिय आत्मामें रमण करता है वही अतीन्द्रिय जिनेन्द्रके स्वरूपको जानता है। हमें निश्चिन्त होकर अतीन्द्रिय जैनधर्मका आराधन करना चाहिये।

नियमसारमें कहा है:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लद्धूणं णिहि एक्को तस्स फलं अणुहवेइ सु जणत्ते । तह णाणी णाणणिहिं भुंजेइ चइत्तु परतत्तिं ॥ १५६ ॥
सव्वे पुराणपुरिसा एवं आवासयं य काऊण । अपमत्तपहुदिठाणं पडिवज्ज य केवली जादा ॥ १५७ ॥

भावार्थ—जैसे कोई गरीब प्राणी पुण्योदयसे किसी भंडारको पाकर उसका फल अपनी जन्म-भूमिमें एकांतमें बैठकर भोगता है उसी तरह सम्यग्ज्ञानी आत्मज्ञानकी निधिको पाकर जनसमूहकी संगति छोड़कर एकांतमें ध्यान द्वारा उसका भोग करता है । सर्व ही प्राचीनकालके महान पुरुषोंने इस-तरह स्वाधीन आत्मध्यानके द्वारा अप्रमत्त आदि गुणस्थानोंको पाकर केवलज्ञानी पदको झलकाया है ।

(१३१) गद्य गाथा नं० २७४१ से २७४३ तक ।

जय जय जय जयवंतु, जयो जय जयो उवन जिन ।
उव उवन उवन उव उवन, सम समय जिनय जिन ॥
जिन जिनिय जिनिय जै जै जिनिया, सुइ जिनिय सुयं जिन ।
सुइ सुयं सुयं सुइ सुइ स्रवना, सुइ सुयं सुवन जिन ॥
सइ समय समय सुइ समय समय, सुइ सुयं सुयं जसु ।
सुइ रमन रमन सुइ रमन सुयं, जिन जयो सिद्धि रत्तु ॥ १ ॥
पय पयन पयन पय पालु, पर्म पय पर्म पउत्तु ।
पर्म पम चौ उवन उवन जिन जिनय जिनुत्तु ॥
आयरनह आयरिउ सुयं आयरन जिनुत्तु ।
आयरन उवन हिययार सहय सहयार पउत्तु ॥
जिन इच्छ इच्छ इच्छन्तु रै भवन विंद इच्छंतु जै ।
सुइ सुयं सुयं सुइ इच्छ जिन, सुइ सुयं सिद्धि जिन मुक्ति जै ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्वय सहित अर्थ—(जय जय जय जयवंतु, जयो जय जयो उवन जिन) जिससे जिनपद प्रगट होता है ऐसे जैनधर्मकी जय हो, जय हो, जय हो, वह जयवन्त रहो (उव उवन उवन उव उवन सम समय जिनय जिन) आत्म-ज्ञान बढ़ते बढ़ते इतना बढ़ जाता है कि केवलज्ञान होजाता है तब समभावधारी परमात्मा जिनेन्द्र हो जाते हैं (जिन जिनिय जिनिय जै जै जिनिया) जिनधर्मका प्रेमी कर्मोंको जीतते हुए जिनेन्द्र होजाता है तब उसकी जय, जय होती है (सुइ जिनिय सुयं जिन) जो जीतनेवाला है वही जिन हैं (सुइ समय समय सुइ सुयं सुयं जसु) वही आत्मा, आत्माके अनुभवसे आत्माको उन्नतिमें लाता हुआ स्वयं जिनेन्द्र यशस्वी होजाता है (सुइ रमन रमन सुइ रमन सुयं जिन जयो सिद्धि रतु) यही आत्मा अपने स्वरूपमें रमण करता हुआ स्वयं जिनेन्द्र होकर सिद्धभावमें रत रहता है ॥ १ ॥

(पय पयन पयन पय पालु पर्म पय पर्म पउतु) गुणस्थानोंके क्रमसे या पदवीके क्रमसे चलता हुआ प्रत्येक पदके अनुसार चारित्र पालकर यह आत्मा परम पदको पाकर परमात्मा होजाता है (पर्म पर्म पौ उवन उवन जिन जिनय जिनुतु) उस परमात्मामें अनन्तज्ञानादि चार चतुष्टय प्रगट होजाते है वह वीतरागी जिनेन्द्र होकर प्रकाश करता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (आयरनह आयरिउ सुयं आयरन जिनुतु) यह जीव स्वयं चारित्रको पालता हुआ यथाख्यात चारित्रको पालेता है, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (आयरन उवन हिययार सहय सहयार पउतु) चारित्रके द्वारा हितकारी आत्म स्थिति प्राप्त होजाती है. जो मोक्ष पानेमें सहकारी है (जिन इच्छ इच्छ इच्छंतु भवन विंद इच्छंतु जै) जिनपद पानेकी भावना करते हुए प्रवाहरूप ज्ञानका अनुभव होता है। तब भावनाकी विजय होती है (सुइ सुयं सुयं सुइ इच्छ जिनं सुइ सुयं सिद्धि जिन मुक्ति जै) वही स्वयं अब उत्साहके द्वारा जिनपद पालेता है फिर वही सिद्ध परमात्मा होकर मुक्तिमें राज्य करता है ॥ २ ॥

भावार्थ—इस गद्य गाथामें यही बात बताई है कि यह आत्मा स्वयं अपने ही पुरुषार्थसे परमात्मा या मुक्त होजाता है। उसके लिये तीव्र उत्साहकी जरूरत है। उत्साही श्रद्धावान व्यक्ति आत्महितमें लगा हुआ व्यवहार चारित्रके द्वारा निश्चय चारित्रको पाकर उन्नति करता हुआ परमात्मा जिनेन्द्र हो जाता है। उन्नति क्रम क्रमसे होती है। जैनधर्मके ही प्रतापसे कर्मोंपर विजय होती है। इस जैनधर्मको भलेप्रकार समझकर आत्मविश्वास प्राप्त करना चाहिये और शुद्धात्मानुभव मोक्षमार्ग है. ऐसा जानकर उसीका अभ्यास करना चाहिये। तब अवश्य मोक्ष होजायगी। ध्यानके साधनसे ही कर्मोंका नाश होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नियमसारमें कहा है—

किं बहुणा भणिएण दु वरतवचरणा महेसिणं सव्वं। पायच्छित्तं जाणह अणेयकम्माण खयहेउ ॥ ११७ ॥

भावार्थ—बहुत क्या कहें महा ऋषियोंका जो उत्तम तपश्चरण है वही अनेक कर्मोंके क्षयका कारण प्रायश्चित्त है ऐसा जानो।

(१२९) उवन कमल बत्तीसी गाथा २७४४ से २७७६ तक।

उव उवन उवन उव उवन सु पै यो, सुइ उवन उवन चित लाऊंगा।
उव उवन सहावे अन्ध विलीजे, जिन उवन मिलन दर्साऊंगा ॥ १ ॥
जै जै जे अमिय राऊंगा, सुइ दिप्ति दिष्टि परिनाऊंगा (आचरी) ॥ २ ॥
सुइ कलन कलिय सुइ कलन सु देखउ, सुइ कलन कमल रमि लाऊंगा।
सुइ कलन कमल सुइ उवन जिनय जिन, धुव उवन सुयं दरसाऊंगा ॥ जै० ॥ ३ ॥
सुइ चरन चरिय चरि चरन जिनय जिन, सुइ चरन कलन रमि राऊंगा।
सुइ कलन चरन चरि कलिय उवन जिन, सुइ चरन कमल सिधि जाऊंगा ॥ जै० ॥ ४ ॥
सुइ रमन रमन सुइ उवन रमन जिन, सुइ चरन कलन रमि राऊंगा।
सुइ रमन चरन कलि कलिय रमन जिन, सुइ रमन कमल धुव पाऊंगा ॥ जै० ॥ ५ ॥
तत्काल रमन सुइ उवन मिलन जिन, सुइ दिप्ति दिस्टि दरसाऊंगा।
सुइ सब्द प्रिये हिय हुवन रमन जिन, धुव रमन कमल विलसाऊंगा ॥ जै० ॥ ६ ॥
सुइ सुयं रमन सुइ कलन उवन जिन, सुइ उलटि चरन चराऊंगा। ॥१७७॥
उव उवन सहावे सुयं उवन निधि, धुव रमन कमल सिधि राऊंगा ॥ जै० ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिययार रमन सुइ चरन कलन जिन, सुइ उलन कलन कलि राऊङ्गा ।
हिय हुव रमन हिय हुव सिधि जिन, हिय हुवन कमल सिधि जाऊंगा ॥ जै० ॥ ८ ॥
सुइ उवन चरन सुइ उवन दर्स जिन, सुइ चरन कलन दर्साऊंगा ।
सुइ रमन रमन सुइ दिप्ति दर्स जिन, धुव कमल उवन विगसाऊंगा ॥ जै० ॥ ९ ॥
मय मय मय मय. उवन मयन जिन, सहयार ऊर्ध दर्साऊंगा ।
सुइ ढलन ढलिय सुइ उवन ढलन जिन, धुव ढलन कमल सिधि राऊंगा ॥ जै० ॥ १० ॥
जिन जिनय जिनय सुइ उवन जिनय जिन, सुइ हिय हुव रमन रमाऊंगा ।
वरं ब्रह्म सुइ उवन वरं जिन, सुइ वरं कमल सिधि जाऊंगा ॥ जै० ॥ ११ ॥
सुइ दान दान सुइ उवन दान जिन, सुइ नंत दान दर्साऊंगा ।
सुइ नंत नंत तत्काल रमन जिन, तत्काल कमल सिधि जाऊंगा ॥ जै० ॥ १२ ॥
सुइ डाल डाल सुइ मूल रमन जिन, सुइ पत्त सुपत्त रसाऊंगा ।
सुइ उवन उवन सुइ पुहय रमन कल, सुइ ढलन उवन ढलाऊंगा ॥ जै० ॥ १३ ॥
सुइ ढलन रमन जिन ढलन उवन जिन, सुइ कलन कमल सिधि राऊङ्गा ।
सुइ नंत ढलन ढल ढलिय उवन जिन, सुइ मुक्ति ढलन ढलि राऊङ्गा ॥ जै० ॥ १४ ॥
सुइ कण्ठ कण्ठ सुइ कण्ठ मुक्ति जिन, सुइ कण्ठ कमल उलहसाऊङ्गा ।
तं उल्हास विगस सुइ कण्ठ कमल जिन, सुइ कण्ठ कमल सिधि जाऊङ्गा ॥ जै० ॥ १५ ॥
जिन रुइय रुइय सुइ रुइय रमन जिन, रुइ रमन चरन चरिराऊङ्गा ।
चरि कलन उवन सुइ रुइय रमन जिन, रुइ कमल मुक्ति विलसाऊङ्गा ॥ जै० ॥ १६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुइ रमन चरन सुइ कलन उवन जिन, सुइ कलन कमल जिन राऊङ्गा ।
जिन जिनयति नन्त नंत ध्रुव उवने, ध्रुव उवन मुक्ति विलसाऊङ्गा ॥ जै० ॥१७॥
सुइ कलन कमल सुइ रमन कलन सुइ, चरन कमल चरि राऊङ्गा ।
सुइ नंत विसेषे नंत कमल जिन, सुइ नंत मुक्ति विलसाऊङ्गा ॥ जै० ॥१८॥
सुइ सेनि सेनि सुइ सेनि रमन जिन. सुइ कलन कलिय सिधि राऊङ्गा ।
सुइ तारन तरन सु कमल रमन जिन, सह समय मुक्ति विलसाऊङ्गा ॥ जै० ॥१९॥
सुइ रमन रमन तत्काल रमन जिन, सुइ चरन कंद रमि राऊङ्गा ।
सुइ सुयं सुयं सौ अट्ठ रमन जिन, परिनाम सुयं दरसाऊङ्गा ॥ जै० ॥२०॥
तं चरन अग्र तं सुयं सुयं जिन, चौसठि चरन चराउंगा ।
सुइ चरन चरन सुइ इच्छ चरन जिन, सुइ इच्छ कमल सिधि राऊङ्गा ॥ जै० ॥२१॥
सुइ साह साह सुइ साह रमन जिन, बतीस बतीस रमाऊङ्गा ।
सुइ सहस अठोत्तर लषन लषियो, सुइ जिन चौवीस बंदाऊङ्गा ॥ जै० ॥२२॥
सुइ कमल कंद सौ अट्ठ रमन जिन, सुइ कमल अग्र चौसठिगा ।
सुइ सुयं सुयं सुइ इच्छ सुयं जिन, सुइ अलष कमल सिधि राऊंगा ॥ जै० ॥२३॥
सुइ सुयं सुयं सुइ सहस बतीस, सुइ लषन तित्थ पिषाऊंगा ।
सहस अठोत्तर लष्यन लषियो, सइ लषन कमल सिधि जाऊङ्गा ॥ जै० ॥२४॥
सुइ सुयं सुयं सुइ जिनवर उवने, तित्थ परभाव दरसाऊङ्गा ।
सुइ सुयं उवन चौवीस जिनय जिन, सुइ दर्स कमल सिधि जाऊङ्गा ॥ जै० ॥२५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइ सुयं सुयं जै जै मयं हिय, सुइ उवन डंडरि पिछाऊङ्गा ।
सुइ जयं उवन उव उवन हिय मौ, सुइ उवन कमल सिधि राऊङ्गा ॥ जै० ॥२६॥
सुइ इष्ट जयं सुइ उवन जयं जिन, जै जयं जयं जय राऊङ्गा ।
जय उवन जयं जय रमन जयं जिन, जै कमल मुक्ति जै जाऊङ्गा ॥ जै० ॥२७॥
जै इष्ट इष्ट जै उवन रमन जिन, जै उवन उवन जै लाऊङ्गा ।
जै इष्ट उवन जे उवन उवन पौ, पै उवन कमल सिधि जाऊङ्गा ॥ जै० ॥२८॥
जै कण्ठ चरन जै जयं चरन जिन, जै चरन मयं दरसाऊङ्गा ।
जै रमन जयं जय जयो जयं जिन, जै कमल मुक्ति विलसाऊङ्गा ॥ जै० ॥२९॥
जे जयं जयं तत्काल रमन जिन, तत्काल उवन विगसाऊङ्गा ।
तत्काल मयं उव ऊर्ध गमन जिन, तत्काल कमल सिधि राऊङ्गा ॥ जै० ॥३०॥
तत्काल दर्स सुइ जयं जयं जिन, जै जयं जयं दरसाऊङ्गा ।
जय इष्ट जयं सुइ उवन जयं जिन, जै कमल मुक्ति विलसाऊङ्गा ॥ जै० ॥३१॥
जय चरन जयं जय कमल जियं जिन, जय रमन जयं उव रमनूङ्गा ।
जय उवन सहावे रमन जयं जिन, जे उवन कमल सिधि राऊङ्गा ॥ जै० ॥३२॥
जय स्रेनि जयं जय कमल जयं जिनु, जै रमन मुक्ति विलसाऊङ्गा ।
जै तारन तरन उव कमल रमन जिन, सम समय सिद्धि संपत्तुगा ॥ जै० ॥३३॥

अन्वय सहित अर्थ—(उव उवन उवन उव सु पै यो, सुइ उवन उवन चित लाऊंगा) **आत्मज्ञानमें उपयोग लगाकर जिस ज्ञानको पाया है उसी सम्यग्ज्ञानके प्रकाशमें चित्तको लगाऊंगा** (उव उवन सहावे अन्ध विलीजे, जिन हुवन मिलन दर्साऊंगा) **जिस ज्ञान स्वभावके प्रगट होनेसे अज्ञानका नाश होजाता है उसी ज्ञानसे जिन-**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजके ज्ञानसे मिलकर ज्ञान स्वभावको प्रकाश करूँगा अर्थात् शुद्ध ज्ञानकी भावनासे ज्ञानको शुद्ध करूँगा ॥ १ ॥

(जै जै अमिय राऊंगा, सुइ दिप्ति दिष्टि परिनाऊंगा) आत्मानन्दकी जय हो, उसीमें रहूंगा, उसीसे ज्ञान दर्शन गुणको शुद्ध करूंगा ॥ २ ॥

(सुइ कलन कलिय सुइ कलन सु देखउ, सुइ कलन कमल रमि लाऊंगा) ज्ञानमें तत्पर होकर ज्ञान स्वभावको भलेप्रकार देखकर—उसी ज्ञानके रमणसे आत्मारूपी कमलमें रम जाऊंगा (सुइ करुन कमल सुइ उवन जिनय जिन, धुव उवन सुयं दरसाऊंगा) उसी शुद्धात्मारूपी कमलमें तत्पर होकर- जिससे ही जिनपदका प्रकाश होता है, मैं अपना ध्रुव स्वभाव स्वयं प्रकाश करूंगा ॥ ३ ॥

(सुइ चरन चरिय चरि चरन जिनय जिन, सुइ चरन करुन रमि जाऊंगा) स्वरूपाचरण चारित्रमें चलकर व वीत- राग जिनेन्द्रके चारित्रमें चलकर उसी चारित्रके अभ्यासमें रम जाऊंगा (सुइ करुन चरन चरि कलिय उवन जिन, सुइ चरन कमल सिधि जाऊंगा) उसी चारित्रके अभ्याससे अपने वीतराग स्वभावको प्रगट कर स्वयं शुद्धात्मा- रूपी कमलमें मगन होकर सिद्धगतिको जाऊंगा ॥ ४ ॥

(सुइ रमन रमन सुइ उवन रमन जिन, सुइ चरन कलन रमि जाऊंगा) आत्माकी रमणतासे वीतराग स्वभावकी रमणताको प्रगट कर उसी वीतराग चारित्रके अभ्यासमें रम जाऊंगा (सुइ रमन चरन कलि कलिय रमन जिन, सुइ रमन कमल धुव पाऊंगा) उसी वीतराग चारित्रके रमणके अभ्याससे श्री जिनेन्द्रके स्वभावमें रमणकर कमल- समान शुद्धात्माके स्वभावको ध्रुवरूपसे पालूंगा ॥ ५ ॥

(तत्काल रमन सुइ उवन मिलन जिन, सुइ दिप्ति दिष्टि दरसाऊंगा) जिस समय आत्मीक रमणतासे श्री जिने- न्द्रके प्रकाशको झलकाऊंगा उसी समय अनन्त ज्ञान व अनन्त दर्शनको प्रगट कर दूंगा (सुइ सब्द प्रिये हिय हुवन रमन जिन, धुव रमन कमल विलसाऊंगा) हितकारी शब्दोंकी सहायतासे हितकारी वीतराग ध्यानमें रमणकर शुद्धात्मारूपी कमलमें सदाके लिये रमणताको पाकर आनन्द भोगूंगा। अर्थात् शुक्लध्यानसे केवलज्ञानी परमात्मा हो जाऊँगा ॥ ६ ॥

(सुइ सुयं रमन सुइ कलन उवन जिन, सुइ उलटि चरन चराऊंगा) आत्मामें रमण करके या जिनेन्द्रके प्रकाशमें मगन होकरके मैं इस भावको पलटकर कि मैं ध्याता हूँ व परमात्मा ध्येय है, अभेद निर्विकल्प चारित्रमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तूंगा (उव उवन सहावे सुयं उवन निधि, धुव रमन कमल सिधि राऊंगा) इस तरह अपने स्वभावमें प्रकाश करता हुआ मैं केवलज्ञानके भण्डारको प्रगट कर दूंगा तब मैं ध्रुवरूपसे आत्मारूपी कमलमें रमण करता हुआ सिद्ध-गतिमें विश्राम करूँगा ॥ ७ ॥

(हिययार रमन सुइ चरन कलन जिन, सुइ उलटि कलन कलि राऊंगा) जिनेन्द्रके चारित्रके भीतर हितकारी रमण करता हुआ फिर उसे पलटकर अर्थात् द्वैतभावको मेटकर एक अद्वैत निर्विकल्प भावमें रमण करता हुआ मैं रहूंगा (हिय हुव रमन हिय हुव सिधि जिन, हिय हुवन कमल सिधि जाऊंगा) इसतरह हितकारी ध्यानमें रमणकर हितकारी ध्यानमें जिनपदको सिद्ध करके शुद्ध ·मारूपी कमलमें बड़े हितसे ध्यानमग्न होता हुआ सिद्ध गतिको जाऊँगा ॥ ८ ॥

(सुइ उवन चरन सुइ उवन दर्स जिन, सुइ चरन कलन दर्साऊंगा) आत्मज्ञानमें आचरण करता हुआ या श्री जिनेन्द्रके दर्शनको प्रगट करता हुआ मैं चारित्रका अभ्यास प्रगट करूँगा (सुइ रमन रमन सुइ दिसि दर्स जिन, धुव कमल उवन विगसाऊंगा) यही चारित्रका आचरण रत्नत्रय धर्ममें रमणता है, यही वीतराग ज्ञानदर्शनका प्रकाश है, इसीसे ध्रुवरूपसे शुद्धात्मारूपी कमलको प्रकाश करके आनन्द भोगूंगा ॥ ९ ॥

(मय मय मय मय उवन मयन जिन, सहयार ऊर्ध दर्साऊंगा) ज्ञानके भीतर बारबार परिणमन करके वीतरागता-सहित केवलज्ञान प्रगट करके उसकी सहायतासे ऊर्धलोकमें बिराजित सिद्धका दर्शन करूँगा (सुइ ढलन ढलिय सुइ उवन ढलन जिन, धुव ढलन कमल सिधि राऊंगा) ज्ञानमें परिणमन करके ज्ञानकी उन्नति करता हुआ जिनेन्द्र स्वभावमें ढलकर ध्रुवरूपसे आत्मारूपी कमलमें मगन होता हुआ सिद्धरूप रहूंगा ॥ १० ॥

(जिन जिनय जिनय सुइ उवन जिनय जिन, सुइ हिय हुव रमन रमाऊंगा) श्री जिनेन्द्र कर्मको व रागादिको जीतनेवाले प्रकाशरूप हैं। उनके हितकारी ध्यानमें रमण करके मगन रहूँगा (वरं ब्रूहि सुइ उवन वरं जिन, सुइ वरं कमल सिधि जाऊंगा) वे जिनेन्द्र उत्तम उपदेश दाता है व उत्तम ज्ञानमें लीन है। उन्हींके समान उत्तम कमल सम विकसित होकर सिद्धगतिको चला जाऊँगा ॥ ११ ॥

(सुइ दान दान सुइ उवन दान जिन, सुइ नंत दान दरसाऊंगा) अपने आत्माको आनन्दका दान करता हुआ वीतरागतासे दानकी शक्तिको प्रगट करता हुआ मैं अनन्त दानकी लब्धिको प्रगट करूँगा (सुइ नंत नंत तत्काल रमन जिन, तत्काल कमल सिधि जाऊंगा) तब ही मैं अनन्त गुणधारी शुद्ध परमात्मा जिन स्वभावमें रमण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करता हुआ कमल समान विकसित होकर उसी समय चौदहवें गुणस्थानके अन्तमें सिद्धगतिको चला जाऊँगा ॥ १२ ॥

(सुइ डाल डाल सुइ मूल रमन जिन, सुइ पत्त सुपत्त रमाऊंगा) मैं श्री जिनराजरूपी कल्पवृक्षकी गुणरूपी शाखाओंमें तथा मूल द्रव्य स्वभावमें या गुणोंकी पर्याय स्वरूप पत्तोंमें रमण करूँगा (सुइ उवन उवन सुइ पुहुय रमन फल, सुइ ढलन उवन ढलाऊंगा) जिससे स्वात्मानुभवरूपी फूलको पाकर तथा पूर्ण रमणता या यथाख्यात चारित्ररूपी फलको पाकर उसी जिनपदमें ढलता हुआ जिन परमात्मा होजाऊँगा ॥ १३ ॥

(सुइ ढलन रमन जिन ढलन उवन जिन, सुइ कलन कमल सिधि राऊंगा) आत्मानुभवमें रमण करता हुआ जिनेन्द्र पदके रमणको प्रगट करके आतमारूपी कमलका स्वाद लेता हुआ सिद्ध स्वभावमें रहूंगा (सुइ नन्त ढलन ढल ढलिय उवन जिन, सुइ मुक्ति ढलन ढलि राऊंगा) इस तरह अनन्त गुणोंको प्रगट करके जिन परमात्मा होकर मोक्षपदमें जाकर सदा वहां विश्राम करूँगा ॥ १४ ॥

(सुइ कण्ठ कण्ठ सुइ कण्ठ मुक्ति जिन, सुइ कण्ठ कमल उल्हसाऊंगा) श्री जिनेन्द्र सिद्ध भगवानको अपने कण्ठमें वारवार धारण करके उनके कण्ठ द्वारा मननसे शुद्धात्मारूपी कमल होनेका उत्साह बढ़ाऊँगा (तं उल्हस विगस सुइ कण्ठ कमल जिन, सुइ कंठ कमल सिधि जाऊंगा) सिद्ध महाराजके स्वरूपमें उत्साह रखके अपने स्वभावका विकास करके श्री जिनेन्द्र कमलके निकटवर्ती होजाऊँगा। अर्थात् कमल समान शुद्ध या पूर्ण होकर सिद्धगतिको चला जाऊँगा ॥ १५ ॥

(जिन रुइय रुइय सुइ रुइय रमन जिन, रुइ रमन चरन चरि राऊंगा) श्री जिनेन्द्रके भीतर रुचि या श्रद्धा व प्रेमको बढ़ाकर उसी रुचिमें रमण करके रुचि रमणके साथ स्वरूपमग्न चारित्रमें चलता रहूँगा (चरि कलन उवन सुइ रुइय रमन जिन, रुइ कमल मुक्ति विलसाऊंगा) इस वीतराग चारित्रके अभ्याससे जिनेन्द्रके स्वभावमें रमण रूप परमावगाढ़ रुचिको प्रगट करके शुद्धात्मारूपी कमलमें मगन होकर मुक्तिमें जा आनन्द भोगूँगा ॥१६॥

(रुइ रमन चरन सुइ कलन उवन जिन, सुइ कलन कमल जिन राऊंगा) शुद्ध सम्यग्दर्शनरूपी रुचिमें रमण करना सो ही चारित्र है उसीके अभ्याससे जिनपद प्रगट होता है। मैं इसी तरह अभ्यास करके श्री जिनेन्द्ररूपी कमल होकर रहूँगा (जिन जिनयति नन्त नन्त ध्रुव उवने, ध्रुव उवन मुक्ति विलसाऊंगा) कर्मोंको जीत लेनेसे अनन्त गुणोंको ध्रुवरूपसे प्रगटकर मैं परमात्माके स्वभावमें ध्रुवरूप रहता हुआ मोक्षका आनन्द भोगूंगा ॥१७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सुइ कलनं कमल सुइ रमन कमल सुइ, चरन कमल चरि राऊंगा) **आत्मारूपी कमलका मनन सो ही आत्मारूपी कमलमें रमन है ऐसे कमलमें आचरण करता हुआ मैं चारित्र पालना रहूंगा** (सुइ नंत विशेषे नंत कमल जिन, सुइ नंतं मुक्ति विलसाऊंगा) **इसतरह अनन्त गुण पर्याय धारी कमल समान परमात्मा जिन होकर अनन्त काल-तक मोक्षके आनन्दको भोगूंगा ॥ १८ ॥**

(सुइ स्रेनि स्रेनि सुइ स्रेनि रमन जिन, सुइ कलन कलिय सिधि राऊंगा) **गुणस्थानोंके द्वारा चढ़कर संयोगकेवली जिन गुणस्थानमें श्री जिनराज रमण करते हैं उन्हीं जिनराजके स्वरूपका अनुभव करके मैं सिद्धपदमें रहूंगा** (सुइ तारन तरन सु कमल रमन जिन, सह समय मुक्ति विलसाऊंगा) **श्री अरहन्तके समान तारण तरन जिन अर-हन्त होकर शुद्धात्मा रूपी कमलमें रमण करता हुआ परमात्मपदके साथ मोक्षके आनन्दको भोगूंगा ॥ १९ ॥**

(सुइ रमन रमन तत्काल रमन जिन, सुइ चरन कंद रमि राऊंगा) **आत्मामें रमण करते हुए श्री जिनेन्द्र हर समय स्वात्मरमी होजाते हैं, उन्हींके वीतराग चारित्रके मूलमें मैं रमण करूंगा** (सुइ सुयं सुयं सौ अट्ठ रमन जिन, परनाम सुयं दरसाऊंगा) **मैं स्वयं ही एकसौ आठ दफे जिनेन्द्रके स्वभावका मनन कर अपने भावोंको स्वयं विशुद्ध करूंगा। मालामें एकसौ आठ दाने होते हैं, एक जाप एकसौ आठ दफे जपनेकी होती है अथवा एकसौ आठ लक्षणके धारी जिनेन्द्रमें रमण करूंगा। तीर्थंकर अरहन्त शरीरमें ९०० व्यञ्जन १०८ लक्षण होते हैं ॥ २० ॥**

(तं चरन अगु तं सुयं सुयं जिन, चौसठि चरन चराऊंगा) **श्री जिनेन्द्रके मुख्य वीतराग चारित्र है, वे स्वयं कर्मविजयी जिन हुए हैं, उनके स्वरूपका आचरण चौसठ दफे करूंगा मानो उनके ऊपर चौसठ चमर ढारूंगा** (सुइ चरन चरन सुइ इच्छ कमल सिधि राऊंगा) **उसी वीतराग चारित्रकी भावनामें चलता हुआ जिनेन्द्रके वीतराग चारित्रकी इच्छा करता हुआ उसी ध्यावनेयोग्य कमल सम सिद्ध भगवानमें रमण करूंगा ॥२१॥**

(सुइ साह साह सुइ साह रमन जिन, बतीस बतीस रमाऊंगा) **साधने योग्य आत्माका साधन करके श्री जिनेन्द्र अपने शुद्धात्मा रूपी साध्यमें रमण कर रहे हैं मैं उन्हींके भीतर अपने भावोंको बत्तीस बत्तीस दफे रमाऊंगा, मानो चौसठ चमर ढोरूगा** (सुइ सहस अठोत्तर लष्यन लषियो, सुइ जिन चौवीस वंदाऊंगा) **तथा १००८ एक हजार आठ लक्षणोंके धारी श्री चौवीस तीर्थंकरोंकी भाव सहित वंदना करूंगा ॥ २२ ॥**

(सुद्द कमल कंद सौ अट्ठ रमन जिन, सुद्द कमल अग्र चौसठिगा) **कमल समान जिनेन्द्रके मूलं स्वभावमें एकसौ**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

 आठ दफे रमण करके अर्थात् एक माला अपने उसी कमल समान तीर्थंकरके आगे चौसठ चमर ढारूंगा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आठ दफे रमण करके अर्थात् एक माला जपके उसी कमल समान तीर्थंकरके आगे चौसठ चमर ढारूंगा अर्थात् चौसठ दफे उनके वीतराग चारित्रका मनन करूंगा (सुइ सुयं सुयं सुइ इच्छ सुयं जिन, सुइ अलष कमल सिधि राऊंगा) **इसतरह वारवार स्वयं श्री जिनेन्द्रके स्वरूपकी भावना करके अतीन्द्रिय कमल समान होकर सिद्ध-भावमें रमण करूंगा ॥ २३ ॥**

(सुइ सुयं सुयं सुइ सहस वत्तीस, सुइ लषन तित्थ पिषाऊंगा) **मैं स्वयं ही वारवार एक हजार वत्तीस तीर्थंकरोंके लक्षणोंको देखूंगा। हरएक तीर्थंकरके एक हजार आठ लक्षण होते हैं, चौवीस तीर्थंकरोंके चौवीस चिन्ह होते हैं। इस तरह एक हजार वत्तीस लक्षणोंके द्वारा तीर्थंकरोंके स्वरूपका मनन करूंगा** (सहस अठोत्तर लषन लषियो, सुइ लषन कमल सिधि जाऊंगा) **एक हजार आठ लक्षणके धारी तीर्थंकरोंके स्वरूपका अनुभव करके मैं कमल समान शुद्धात्मा होकर सिद्धगतिमें जाऊंगा ॥ २४ ॥**

(सुइ सुयं सुयं सुइ जिनवर उवने, तित्थयर भाव दरसाऊंगा) **श्री जिनेन्द्र तीर्थंकर स्वयं अपने ही पुरुषार्थसे अरहन्तपदमें प्रगट हुए हैं। मैं उन्हीं तीर्थंकरोंके स्वरूपको अपने भीतर झलकाऊंगा** (सुइ सुयं उवन चौवीस जिनय जिन, सुइ दर्स कमल सिधि जाऊंगा) **वे चौवीस ऋषभादि तीर्थंकर स्वयं ही जिनेन्द्र हुए हैं। मैं उनके स्वरूपका दर्शन करके कमल समान शुद्धात्मा होकर सिद्धगतिमें जाऊंगा ॥ २५ ॥**

(सुइ सुयं सुयं जैं जै मयं हिय, सुइ उवन डंडरि विछाऊंगा) **जिनेन्द्रने स्वयं ही कर्मोंको जीतकर केवलज्ञानको प्राप्त किया है, जो आत्माका हितकारी है उसी स्वरूपको अपनेमें प्रकाश कर, मैं भीतर समुद्रके झागके समान मंद मंद शब्दोंके द्वारा मनन करूंगा** (सुइ जयं उवन उव उवन हियं मौ, सुइ उवन कमल सिंध राऊंगा) **मैं हितकारी ज्ञानके ध्यानसे उसी ज्ञानको प्रगट कर कमल समान शुद्धात्मा हो, सिद्धपदमें रहूंगा ॥ २६ ॥**

(सुइ इष्ट जयं सुइ उवन जयं जिन. जै जयं जयं जय राऊंगा) **इस इष्ट जिनपदकी जय हो, उस केवलज्ञानकी जय हो, मैं उनकी जय मनाकरके रहूंगा** (जय उवन जयं जय रमन जयं जिन, जै कमल मुक्ति जै जाऊंगा) **मैं उसी जीतनेवाले केवलज्ञानको उपजाकर व जिन स्वरूपमें रमणकर कमल समान विकसित होकर मोक्षमें जाऊंगा ॥ २७ ॥**

(जै इष्ट इष्ट जै उवन रमन जिन, जै उवन उवन जय लाऊंगा) **इष्ट जिनपदकी जय हो, ज्ञानमें रमण करनेवाले जिनकी जय हो। मैं अपने ज्ञानको प्रगट करके उनकी जय मनाऊंगा** (जय इष्ट उवन जै उवन उवन पौ, पै उवन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमल सिधि जाऊंगा) मैं इष्ट केवलज्ञानको झलका कर- ज्योति स्वरूप अरहन्त पद पाकर कमल समान प्रकाशित होकर सिद्धगतिको जाऊंगा ॥ २८ ॥

(जय कण्ठ चरन जै जयं चरन जिन, जै चरन मयं दरसाऊङ्गा) उत्तम चारित्रकी जय हो, चारित्र पर आरूढ़ ज़िनराजकी जय हो, मैं स्वयं चारित्रमई भावको प्रगट करूंगा (जै रमन जयं जय जयो जयं जिन, जै कमल मुक्ति विलसाऊंगा) मैं जिनराजमें रमण करके कर्मोंको जीतकर जिन हो, कमलके समान मोक्षमें तिष्ठकर आनन्द भोगूङ्गा ॥ २९ ॥

(जै जयं जयं तत्काल रमन जिन, तत्काल उवन विगसाऊंगा) श्री जिनेन्द्रकी जय हो जो हर समय स्वरूपमें रमण करते हैं. मैं हर समय सम्यग्ज्ञानका प्रकाश करूंगा (तत्काल मयं उव ऊर्ध गमन जिन, तत्काल कमल सिधि राऊंगा) श्री जिनेन्द्र हर समय केवलज्ञानमें शोभित होते हुए ऊर्धगमन स्वभावसे सिद्ध होते हैं, मैं भी हर समय सिद्धभावमें अपने उपयोगको लगाऊंगा ॥ ३० ॥

(तत्काल दर्स सुइ जयं जयं जिन, जै जयं जयं दरसाऊंगा) हरसमय आत्मदर्शी जिनेन्द्रकी जय हो, मैं भी उस आत्मदर्शनको अपनेमें प्रगट करूंगा (जय इष्ट जयं सुइ उवन जयं जिन, जै कमल मुक्ति विलसाऊंगा) मैं इष्ट व विजय करनेवाले केवलज्ञानको व जिनपदको प्रगट करके कमल समान मुक्तिमें तिष्ठकर आनन्द भोगूंगा ॥ ३१ ॥

(जय चरन जयं जय कमल जयं जिन, जय कमल जयं उव रमनूंगा) वितराग चारित्रकी जय हो, कमल सम जिनेन्द्रकी जय हो, मैं उमी कमलकी जय मनाता हुआ स्वरूपमें रमण करूंगा (जय उवन सहावे रमन जयं जिन, जै उवन कमल सिधि राऊंगा) मैं अपने ज्ञान-स्वभावमें रमण करके जिनराज होकर कमल समान प्रफुल्लित हो सिद्धभावमें रहूंगा ॥ ३२ ॥

(जय सेनि जयं जय कमल जयं जिन, जै रमन मुक्ति विलसाऊंगा) जिनराजके पदकी जय हो, कमल समान जिनकी जय हो, मैं उसीमें रमण करके मुक्तिका आनन्द लूंगा (जै तारन तरन उव कमल रमन जिन, सम समय सिद्धि संपत्तुगा) मैं तारण तरण अरहन्त होकर, कमल सम आत्मामें रमणकर समभाव धारी परमात्मा होकर, सिद्धगतिको प्राप्त कर लूंगा।

भावार्थ—इस उवन कमल बत्तीसीमें श्री तारण तरण स्वामीने स्वयं परमात्मा होनेकी सुन्दर भावना की है, वारवार पढ़ने योग्य है। यह पुरानी हिंदीका नमूना है। इस भावनामें वारवार यही बताया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है कि मैं जिनराजकी भक्ति द्वारा उन्नति करूंगा, उनके बाहरी व भीतरी स्वरूप पर ध्यान लगाकर उनके गुणोंका विचार करूंगा, चौबीस तीर्थंकरोंकी भक्तिसे उनके गुणोंको स्मरण करूंगा। वास्तवमें आत्मा तथा परमात्माका स्वभाव एक समान है। परमात्माके गुणोंका स्मरण वही आत्माके गुणोंका स्मरण है। जो परमात्माको जानता है वह अपने आत्माको जानता है। जो अपने आत्माको जानता है वह परमात्माको जानता है। परमात्मा व आत्माके द्रव्य, गुण, पर्यायोंको ठीक२ जानना चाहिये। व उसी शुद्ध स्वभावकी प्रगटताकी रुचि करनी चाहिये। गाढ़ भक्ति व प्रेमभाव त्याग करना चाहिये। यही सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दृष्टीके भीतर सच्ची अरहन्त भक्ति होती है।

भक्ति दो प्रकारकी है—एक भेद भक्ति, दूसरी अभेद भक्ति। भेद भक्तिमें परमात्माकी स्तुति, उनके स्वरूपका मनन, चिंतवन आदि होता है। अभेद भक्तिमें उनके स्वरूपको जोड़कर एकतानता की जाती है। ध्यानको प्रज्वलित किया जाता है, तब शुद्ध स्वभावधारी केवलज्ञानी वीतराग चारित्रवान परमात्माकी अभेद भक्ति जग जाती है तब स्वात्मानुभव होजाता है उसी समय निश्चय धर्म प्रगट होता है वहां सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रकी एकता होती है। इसी स्वानुभवसे ज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशम होकर ज्ञान बढ़ता है व क्षय होकर केवलज्ञान होजाता है तथा कषायकी मंदता होकर चारित्र बढ़ता है, फिर कषायोंका क्षय होकर वीतराग यथाख्यात चारित्र प्रगट होजाता है। स्वानुभवमें रमण करनेके लिये श्रुतज्ञान व शब्दोंका आलम्बन आवश्यक है। धर्मध्यानमें बुद्धिपूर्वक, शुक्लध्यानमें अबुद्धिपूर्वक शब्दोंका आलम्बन है। हरएक भव्यजीव श्रेणी–क्रमसे ही परमात्मा होता है। मोक्षका मार्ग एक ही प्रकार है। जो क्षायिक सम्यग्दर्शनका धारी क्षपकश्रेणी चढ़ेगा, वही अरहन्त परमात्माके पदमें पहुँचेगा तथा अरहन्त होकर ही सिद्ध होता है। स्वात्मानन्दका प्रकाश मोक्षमार्गके प्रारंभमें ही चौथे अविरत सम्यग्दर्शन गुणस्थानमें प्रारंभ होजाता है, यही आनन्द बढ़ते बढ़ते अनन्त सुख होजाता है और मोक्षमें सदा बना रहता है। मोक्ष आत्माका ध्रुव अविनाशी पद है, जो स्वयं भक्ति द्वारा, श्रद्धा द्वारा, चारित्र द्वारा, ज्ञान द्वारा, अभ्यास करनेके पुरुषार्थमें लग जाता है वह कभी न कभी सिद्ध होजाता है। भक्तको सांसारिक किसी पदकी भावना न करके केवल सिद्धपद पानेकी उमंगतासे व भावनासे मोक्षमार्गका आराधन करना चाहिये। जो स्वयं अपने भीतर आत्मानन्दमें मगन होकर आत्माको आनन्द प्रदान करता है वह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्त दानको प्रगट कर देना है। इस कथनसे यह बताया है कि आत्मामें परमात्माका पूर्णपने स्थापनसे परमात्मा सम्बन्धी नौ क्षायिक लब्धियां प्राप्त होजाती हैं। जैसा ध्यावे वैसा होजावे।

नियमसारमें कहा है कि शुद्ध आत्मतत्व या निर्वाण स्वरूप ऐसा है—

जाइजरमरणरहियं परमं कम्मट्ठवज्जियं सुद्धं। णाणाइचउसहावं अक्खयमविणासमच्छेयं ॥ १७६ ॥
अव्वावाहमणिंदियमणोवमं पुण्णपावणिम्मुक्कं। पुणरागमणविरहियं णिच्चं अचलं अणालम्बं ॥ १७७ ॥

भावार्थ—जहां जन्म, जरा, मरण नहीं है, जो उत्कृष्ट है, आठ कर्मोंसे रहित है, शुद्ध है, अनन्त ज्ञानादि चार चतुष्टय सहित है, अक्षय है, अविनाशी है, अखण्ड है, अव्याबाध है, अतीन्द्रिय है, अनुपम है, पुण्य पाप रहित है, पुनर्जन्म रहित है, नित्य है, अचल है, स्वाधीन है।

(१३३) तार कमल फूलना गाथा २७७७ से २७८९ तक।

जय जयं जयं जय जिनवर उवने, उव उवन उवन जिन रमिजै।
जिन जिनयति जिनय विंद ध्रुव रमनह, ध्रुव रमन मुक्तिसो मिलिजै ॥ १ ॥
सुनि सखी मिलरी जिना, जिन जिनय मुक्ति रमना (आचरी) ॥ २ ॥
जिन जिनयति सेनि सेनि जिन उवने, जिन सेनि उवन जिन रमिजै।
उव उवन सहावे सरनि विलीजे, जिन सेनि सुयं सिधि रमिजै ॥ सुनि० ॥ ३ ॥
जिन सेनि सुयं सुइ कलन सु रमने, कलि कलन उवन जिन रमिजै।
कलि कलन सहावे केवलि उवने, जिन सेनि कलन सिधि रमिजै ॥ सुनि० ॥ ४ ॥
कलि कलन उवन जिन चरन सुचरिजै, चरि कलन कमल चरि रमिजै।
चरि चरन उवन सुइ चरन जिनय जिन, चरि कलन मुक्ति सुइ मिलिजै ॥ सुनि० ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरि चरन रमन जिन रमन सु उवने, रमन चरन जिन रमिजै ।
चरि चरिय उवन षट् रमन जिनय जिन, उव रमन मुक्ति सुइ मिलिजै ॥ मुनि० ॥ ६ ॥
जिन उवन रमन तत्काल रमन जिन, हिय हुव रमन रमिजै ।
रम रमिय लोह सुइ परिस रमन जिन, उव समय परिस सिधि रमिजै ॥ मुनि० ॥ ७ ॥
तत्काल रमन सुइ दर्स जिनय जिन, उव दर्स उवन जिन दर्सय ।
रमि रमन दर्स सुइ नंत दर्स जिन, उव दर्स मुक्ति सुइ दर्सय ॥ मुनि० ॥ ८ ॥
उव दर्स उवन सुइ अर्क दर्स जिन, ६इ अर्क अर्क जिन रमिजै ।
अर्क सुभावे अर्क सुयं जिन, सुइ अर्क मुक्ति सुइ रमिजै ॥ मुनि० ॥ ९ ॥
सुइ अर्क उवन दिपि दिस्टि दिप्ति जिन, सुइ समय हिय हुव रमिजै ।
आयरन चरन गुन लषन लषिय जिन, सुइ लषन मुक्ति सुइ मिलिजै ॥ मुनि० ॥ १० ॥
ततु पय दिव्य दिप्ति दिष्टि जिन, सुइ काया क्रांति जिन रमिजै ।
सुइ नन्तानन्त चतुष्टे उवन जिन, सुइ उवन कमल सिधि रमिजै ॥ मुनि० ॥ ११ ॥
सुइ कलन चरन रम रमन उवन जिन, तत्काल रमन जिन रमिजै ।
सुइ दर्स उवन सुइ अर्क अलष जिन, अवयास कमल सिधि रमिजै ॥ मुनि० ॥ १२ ॥
सुइ नंत नंत उवयास रमन जिन, सुइ सेनि कलन सिधि गमिजै ।
सुइ तारन तरन अवयास कमल जिन, सुइ समय मुक्ति मिलिजै ॥ मुनि० ॥ १३ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जय जयं जिन जिनवर उवने) **श्री जिनेन्द्र रागादिको जीतनेवाले प्रगट हुए हैं, उनकी जय हो** (उव उवन उवन जिन रमिजै) **वे जिनेन्द्र प्रकाशमान ज्ञानमें रमण कर रहे हैं** (जिन जिनयति जिनय विंद धुव रमनह) **श्री कर्मविजयी जिनेन्द्र ध्रुव अविनाशी ज्ञानमें रमण कर रहे हैं** (ध्रुव रमन मुक्ति सो मिलिजै)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस ध्रुव स्वभावमें रमण करते हुए वे स्वयं मुक्तिसे मिल जाते हैं ॥ १ ॥

(सुनि सखी, मिलरी जिना, जिन जिनय मुक्त रमना) हे सखी ! सुन, श्री जिनेन्द्र मिल गए हैं, वे कर्मविजयी जिनेन्द्र मोक्षभावमें रमण कर रहे हैं ॥ २ ॥

(जिन जिनयति स्रेनि स्रेनि जिन उवने) श्री जिनेन्द्र कषायोंके गुणस्थानोंके द्वारा जीतकर सयोगकेवली जिन पदमें प्रगट हुए हैं (जिन स्रेनि उवन जिन रमिजै) इस जिनपदके प्रकाशमें बिराजित श्री जिनेन्द्रमें रमण करना चाहिये (उव उवन सहावे सरनि विलीजे) इस केवलज्ञानके प्रकाशसे जिनेन्द्रने संसारका नाश कर दिया है (जिन स्रेनिं सुयं सिधि रमिजै) ऐसे जिनपदमें होकर स्वयं सिद्धभावमें रमण करना चाहिये ॥ ३ ॥

(जिन स्रेनि सुयं सुइ कलन सु रमने) श्री जिनराज अपने पदका स्वयं एक रूपसे अनुभव कर रहे हैं (कलि कलन उवन जिन रमिजै) स्वात्मानुभवसे केवलज्ञानको प्राप्त करके श्री जिनेन्द्र हुए हैं उनमें रमण करना चाहिये (कलि कलन सहावे केवलि उवने) अपने निज स्वभावके अनुभवसे केवलज्ञान प्रगट होता है (जिन स्रेनि कलन सिधि रमिजै) श्री जिनराजके पदका अनुभव लेते हुए सिद्ध भावमें रमण करना चाहिये ॥ ४ ॥

(कलि कलन उवन जिन चरन सु चरिजै) स्वात्मानुभवसे प्राप्त केवलज्ञानमें जिनेन्द्र आचरण कर रहे हैं उन्हींका सेवन भलेप्रकार करना चाहिये (चरि कलन कमल चरि रमिजै) वीतराग चारित्रका अभ्यास करके कमल समान आत्मामें चारित्र द्वारा रमना चाहिये (चरि चरना उवन सुइ चरन जिनय जिन) वीतराग चारित्रमें चलनेसे जो यथाख्यात चारित्र होता है उसीमें जिनेन्द्र आचरण कर रहे हैं (चरि कलन मुक्ति सुइ मिलिजै) उसी चारित्रके लाभसे मोक्ष मिलानी चाहिये ॥ ५ ॥

(चर चरन रमन जिन रमन सु उवने) वीतराग चारित्रमें रमण करनेसे ही श्री जिनेन्द्र स्वात्मरमी प्रगट होते हैं (रमन चरन जिन रमिजै) ऐसे स्वात्मरमी चारित्रधारी जिनके स्वरूपमें रमना चाहिये (चर चरिय उवन षट् रमन जिनय जिन) वीतराग चारित्रके द्वारा छः गुण प्रगट होते हैं। अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य, क्षायिक सम्यक्त, क्षायिक चारित्र इनमें जिनेन्द्र रमण कर रहे हैं (उव रमन मुक्ति सुइ मिलिजै) उसी जिनेन्द्रमें रमण करके मोक्षको मिलाना चाहिये ॥ ६ ॥

(जिन उवन रमन तत्काल रमन जिन) जब ही जिनराजका प्रकाश होता है तबहीसे वे अपने जिन स्वभावमें रमण करते रहते हैं (हिय हुव रमन रमिजै) उन्हींका हितकारी ध्यान करके अपनेको रमाना चाहिये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(रम रमिय लोह सुइ परसि रमिय जिन) जैसे लोहा पारस पाषाणके स्पर्शसे सुवर्ण होजाता है वैसे शुद्धात्मामें रमण करके श्री जिनेन्द्र होते हैं (उव समय परसि सिधि रमिजै) इसी तरह पारस पाषाणके समान सिद्ध भगवानमें अपने आत्माको रमाना चाहिये ॥ ७ ॥

(तत्काल रमन सुइ दर्स जिनय जिन) श्री जिनराज अपने भीतर रमण करते हुए अपने आत्माका दर्शन हरसमय करते रहते हैं (उव दर्स उवन जिन दर्सय) इसी तरह आत्माकी तरफ दृष्टि लगाकर जिनराजके स्वरूपको देखना चाहिये (रमि रमन दर्स सुइ नंत दर्स जिन) आत्मदर्शनमें रमण करनेसे जिनराजके अनन्त दर्शन प्रगट होजाता है (उव दर्स मुक्ति सुइ दर्सय) इसी तरह आत्मदर्शनके द्वारा मोक्षके स्वरूपको देखना चाहिये ॥८

(उव दर्स उवन सुइ अर्क दर्स जिन) आत्माके दर्शनसे सूर्यके समान आत्माका प्रकाश श्री जिनेन्द्रके प्रगट होजाता है (सुइ अर्क अर्क जिन रमिजै) उसी सूर्यके समान जिनराज सूर्यमें रमण करना चाहिये (अर्क सुभावे अर्क सुयं जिन) सूर्य समान आत्माके स्वभावमें रमण करनेसे सूर्य समान जिनेन्द्र स्वयं होगए हैं (सुइ अर्क मुक्ति सुइ रमिजै) इसी सूर्य समान जिनराजके स्वभावमें उपयोग लगाकर मोक्षमें रमण करना चाहिये ॥९॥

(सुइ अर्क उवन दिपि दिष्टि दिप्ति जिन) इसी सूर्य समान आत्मामें रमण करनेसे श्री जिनेन्द्रके अनन्त दर्शन और अनन्तज्ञानका प्रकाश होता है (सुइ समय हिय हुव रमिजै) ऐसे ही आत्माके हितकारी ध्यानमें रमना चाहिये (आयरन चरन गुन लषन लषिय जिन) वीतराग चारित्रमें चलनेसे जिनेन्द्रके गुणोंका प्रकाश हो जाता है (सुइ लषन मुक्ति सुइ मिलिजै) उन्हींके गुणोंको जाननेसे या अनुभव करनेसे ही मोक्षको मिलाना चाहिये ॥ १० ॥

(ततु पयं दिव्य दिप्ति दिष्टि जिन) आत्मतत्वको पाकर श्री जिनराजके दिव्य केवलज्ञान व दर्शनका प्रकाश होता है (सुइ काया क्रांति जिन रमिजै) ऐसे ही परमौदारिक ज्योति स्वरूप शरीरधारी जिनके स्वरूपमें रमण करना चाहिये (सुइ नंतानंत चतुष्टे उवन जिन) श्री जिनेन्द्रके अनन्तज्ञानादि चतुष्टय प्रगट हैं (सुइ उवन कमल सिधि रमिजै) उन्हीं चार चतुष्टय अनन्त ज्ञानादिको प्रगट करके सिद्ध भावमें रमना चाहिये ॥ ११ ॥

(सुइ कलन चरन रम रमन उवन जिन) वीतराग चारित्र द्वारा आत्मामें रमण होनेसे जिनपद होता है (तत्काल रमन जिन रमिजै) हरसमय स्वात्मरमी जिनेन्द्रमें रमना चाहिये (सुइ दर्स उवन सुइ अर्क अलष जिन) शुद्ध स्वभावके अनुभवसे सूर्य समान तेजस्वी तथा अतीन्द्रिय जिनराजका उदय होता है (अवयास कमल सिधि रमिजै) ॥१९१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे अनन्त ज्ञानधारी कमल सम आत्मा होकर सिद्धभावमें रमण करना चाहिये ॥ १२ ॥

(सुइ नंत नंत अवयास रमन जिन) श्री जिनेन्द्र अनन्त ज्ञानमें रमण करते हैं (सुइ सेनि कलन सिधि गमिंजै) गुणस्थानपर चढ़कर उन्हीं सिद्धका ध्यान करना चाहियें (सुइ तारन तरन अवयास कमल जिन) श्री जिनेन्द्र तारण तरण अनन्त ज्ञानधारी कमल समान विकसित है (सह समय मुक्ति मिलिंजै) इसी तरह परमात्मा होकर मोक्षको प्राप्त करना चाहिये ॥ १३ ॥

भावार्थ—इस तार कमल फूलनामें श्री जिनेन्द्र परमात्माके गुणोंकी भावना करके उन्हींके समान होनेकी उमंग प्रगट की गई है। निश्चय रत्नत्रय स्वरूप शुद्धात्मानुभवके द्वारा ही आत्माका कर्ममल कटता है और यह परमात्मा होजाता है, अनन्त ज्ञानादिको प्राप्त कर लेता है, परम सुखी होजाता है, कर्म-मुक्त हो सिद्ध होजाता है। सदा ही नव मोक्षका सुख लेता है। इसी तरह भव्यजीवको जीवादि सात तत्वोंकी श्रद्धा प्राप्त करके निज आत्मामें रमण करके वीतराग चारित्रको प्राप्त कर लेना चाहिये। इसी चारित्रसे जिनपद प्रगट होगा। जो समभावके साथ परमात्माका स्वरूप ध्याता है वह स्वयं परमात्मा होजाता है। जैसे लोहा पारस पाषाणकी संगति करके सुवर्ण होजाता है, वैसे ही परमात्माके शुद्ध स्वभावका आराधन करनेसे अशुद्ध संसारी आत्मा शुद्ध होजाता है। इस फूलनामें वीतराग चारित्रकी आवश्यक्ता प्रगट की है। चारित्र ही धर्म है जिससे कर्म क्षय होते हैं व परमानन्द आता है। अतएव निश्चिन्त होकर व्यवहार चारित्रके द्वारा स्वात्मरमणरूप निश्चय चारित्रको या आत्मध्यानको प्राप्त करना चाहिये।

नियमसारमें कहा है—

पडिकमणपहुदिकिरियं कुव्वंतो णिच्छयस्स चारित्तम्। तेण दु विरागचरिए समणो अब्भुट्ठिदो होदि ॥ १५२ ॥

जदि सक्कदि कादुं जे पडिकमणादिं करेज्ज झाणमयम्। सत्तिविहीणो जो जइ सद्दहणं चेव कायव्वम् ॥ १५४ ॥

भावार्थ—जो निश्चय चारित्ररूप प्रतिक्रमण आदि क्रियाको करता है वही साधु इसी वीतराग चारित्रमें स्थिर होता है। हे भव्यजीव! यदि शक्ति है तो ध्यानमई प्रतिक्रमणादिको साधन कर। यदि आत्मध्यानकी शक्ति न हो तो यह श्रद्धान तो रखना ही चाहिये कि ध्यानमई हो प्रतिक्रमणादि निश्चयसे कर्म छुटानेके उपाय हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१३४) न्यान बनजारा गाथा नं० २७८९ से २७९४ तक।

जिन जिनयति जिनय जिनन्द, जिन रंज रमन सुइ नंद मौ, वनजारे हो।
आनन्द चेय सुइ नंद, सुइ सहज परम जिन नन्द मौ, वनजारे हो॥
सुइ सहज रूव सुरूव रूवउ, पर्मानन्द पयासिनो।
सुनन्द नंद सुनंद उल्हसिउ, सुइ मुक्ति विगस विलासिनो॥
सुइ कलन चरन सु चरन रमियो, सुइ रमन दर्सिउ जिन जिनो।
सुइ उवन उवने उवन जिनवर, सह समय मुक्ति पयासनो॥
सिय सहन साह सु उवन धुव निहि, धुव नत रमन विलास।
सुइ ममल कमल सु उवन धुव जिन, धुव उवन मुक्ति निवास॥
पर्म तत्त पद विंद मौ॥ बनजारे हो॥ १॥
धुव उवने कमल विलास, सुइ सुवन स्रवन सम समय जिन बनजारे हो।
हिय षट् रमन निवास, अर्क विंद आगंतु जिन-बनजारे हो॥
हिय हुव रमन विलास, सुवन उवन जिन जिनय जिन-बनजारे हो।
सुइ सुवन उवन विगसंतु विलसंतु, अवयास नंत पयासिनो॥
सुइ नंत ढलन ढलंत जिनवर, मुक्ति ढलन निवासिनो।
सुइ मुक्ति सुष सुइ नंद नंदित, नंद रमन विलासिनो॥
सुइ दिप्ति दिष्टि सु दिष्टि दिसिहि, दिप्ति नन्त प्रकासिनो।
सुइ सुयं दिप्ति सु दिष्टि सुयं जिन, भय विलय अभय विलास॥

॥१९३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइ मन्वु उवन उवन निहि जिन, सुइ सुर्कह मुक्ति विलास ।
पर्म निरंजन पम मौ ॥ बनजारे हो ॥ २ ॥
सुइ अर्थह अर्थ जिनुत्तु, अर्थ समर्थ सदर्थ जिन--बनजारे हो ।
सुइ सहन साह अवयास, अवयास नंत अन्मोय मौ--बनजारे हो ॥
सुइ षिपिगो मुक्ति विलास, नन्त चतुष्टै सूषमो--बनजारे हो ।
सुइ नंत सौख्य उवन जिनवर, नंत समय विगासिनो ॥
जं किन कमलह परिस लोहा, अमिय मुक्ति विलासिनो ।
सु विषय नन्त सु अमिय विलयो, सिय सिद्धि मुक्ति विगासिनो ॥
सुइ काय नंत प्रवेस जिनवर. नन्त समय पवासिनो ।
सुइ नन्त नन्त सु विंद रमनह सुइ नन्त मुक्ति विगास ॥
जिन जिनय उत्तु समत्त विंदह, सम समय सिद्धि विलास ।
जिन जिनय उत्तु सुइ विंद जै ॥ बनजारे हो ॥ ३ ॥
हिययार रमन सुइ उत्तु, जिन जिनय जिनय जिन रमन पौ--बनजारे हो ।
रंज रमन सुइ नन्द, आनन्द नन्द सुइ मुक्ति पौ--बनजारे हो ॥
सुइ समय अर्क सम उत्तु, कोमल केवल उक्त जिन--बनजारे हो ।
हिय अर्क अनन्त विसेस, सुइ अलष अगम जिनय जिन--बनजारे हो ॥
सुइ अलष अगम जिन नन्त नन्तह, रमन मुक्ति उल्हासिनो ।
सुइ रमन रमनह चिंतामनि जिन, सह समय मुक्ति विगासिनो ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सह साह उवन अनन्त जिन पौ, सुइ उवन कमल प्रकासिनो ।
सह साह रमन सु उवन उव निहि, रंज जै जै जै जिनो ॥
जैवंत जै वर जै पया जिनु, ज जै जैन विगास ।
जै जयो जिनवर नन्त समयह, सह समय सिद्धि विलास ॥
मुक्ति रमनी जिन मुक्ति पौ ॥ बनजारे हो ॥ ४ ॥

उव उवन अर्क सुइ नन्त, नन्तानन्त सु जिन रमन--बनजारे हो ।
जिन जिनियो ममल सुभाउ, ममल कमल जिन उवन पौ -बनजारे हो ॥
षिप षिप निकरुव जिनुत्तु, षिप षिपिन अर्क सह जिनय जिन--बनजारे हो ।
षिप षिपनिक ममल जिनुत्तु, ममल कमल षिपि ममल पौ--बनजारे हो ॥
सुइ ममल कमल सु उवन धुव निहि, चरन चरिय पयासिनो ।
सुइ चरन चरियह नन्त चरियो, कलिय कमल सु उवन जिनो ॥
सुइ कलन कलंतु सु रमन रमियो, नन्त दस सुदर्सनो ।
तत्काल रमन सु सुयं उव निहि, धुव उवन कमल विलासिनो ॥
जिन स्वनि उवन सु कलन कलियो, तर तार कमल पयास ।
सुइ तारन तरन सु कमल जिन पौ, सह समय मुक्ति विलास ॥
सम समय सिद्धि संपत्तु जिन ॥ बनजारे हो ॥ ५ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जिन जिनयति जिनय जिनन्द, जिन रञ्ज रमन सुइ नंद मौ, वनजारे हो) **हे मोक्षके व्यापारी! श्री वीतराग जिनेन्द्रकी जय हो, वे अपने आत्मीक आनन्दमें मगन हैं व वे आनन्दरूप ही हैं** (आनंद चेय सुइ नंद, सुइ सहज परम जिन नंद मौ, वनजारे हो) **हे मोक्षके व्यापारी ! वे जिनेन्द्र चिदानन्दरूप हैं, वे सहज**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वाभाविक परमानन्दमई हैं (सुइ सहज रूव सरूव रूवउ, पर्मानंद पयासिनो) **श्री जिनेन्द्रका स्वरूप सहज अमूर्तिक है, उनमें परमानन्द सदा प्रकाशमान है** (सुनंद नंद सुनंद उल्हसिउ, सुइ मुक्ति विगस विलासिनो) **वे आत्मानन्दमें हर्षायमान होते हुए मुक्तिके पदको प्रगट कर उसका आनन्द लेरहे हैं** (सुइ कलन चरन सु चरन रमियो, सुइ रमन दर्सिउ जिन जिनो) **आत्माके अभ्यासरूपी चारित्रमें भलेप्रकार चलके रमण करनेसे श्री जिनेन्द्रने उसी रमणसे जिनेन्द्र पदका दर्शन किया है-अर्थात् वीतराग चारित्रसे अरहन्त पद प्रगट किया है** (सुइ उवन उवनं उवन जिनवर, सह समय मुक्ति पयासिनो) **वे प्रगट होते होते जिनेन्द्र हुए हैं, वे परमात्मापदके साथ मुक्तिको प्रकाश कर लेते हैं** (सिय सहन साह सु उवन धुव निहि, धुव नंत रमन विलास) **वे शुद्धोपयोगमें स्थिर होनेसे साध्यको साधन करके ध्रुव परमात्मपदका ऐश्वर्य प्रगट करके ध्रुव रूपसे अनन्त काल तक उस पदमें आनन्द भोग रहे हैं** (सुइ ममल कमल सु उवन धुवं जिन, धुव उवन मुक्ति विलास) **वे ही शुद्ध कमल समान प्रकाशित ध्रुव जिनेन्द्र हैं जो ध्रुव प्रकाशित मुक्तिमें विलास करते हैं** (पर्म तत्त पद विंद मौ) **वे परम तत्वके पदका अनुभव करते रहते हैं ॥ १ ॥**

(धुव उवने कमल विलास, सुइ सुवन स्रवन सम समय जिन, वनजारे हो) **हे मोक्षके व्यापारी ! वे जिनेन्द्र ध्रुव रूपसे प्रकाशित आत्मारूपी कमलमें मगन होकर उसीके परिणमनमें परिणमन करते हुए समभावके धारी परमात्मा हैं** (हिय षट् रमन निवास अर्क विंद आगंतु जिन, वनजारे हो) **हे मोक्षके व्यापारी ! वे जिनेन्द्र हितकारी अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य, क्षायिक सम्यग्दर्शन, क्षायिक चारित्र इन छः गुणोंमें रमण करते हुए सूर्य समान ज्ञान ज्योतिधारी है** (हिय हुव रमन विलास, सुवन उवन जिन जिनय जिन, वनजारे हो) **हे मोक्षके व्यापारी ! हितकारी ध्यानके रमणसे आनन्द पाते हुए श्री जिनने जिनेन्द्र पदका प्रकाश किया है** (सुइ सुवन उवन विगसंतु विलसतु, अवयास नंत पयासिनो) **अपने आत्मामें परिणमन करके अपने स्वरूपका विकास करते हुए व आनन्दमग्न होते हुए जिनेन्द्रने अनन्त ज्ञानका प्रकाश किया है** (सुइ नंत ढलन ढलंत जिनवर मुक्ति ढलन निवासिनो) **श्री जिनेन्द्रने अनन्त गुणोंको प्रकाश करके तथा मोक्षको प्रगट करके उसीमें अपना निवास स्थिर किया है** (सुइ मुक्ति सुख सुइ नंद नंदित, नंद रमन विलासिनो) **तथा वे मोक्षके सुखमें आनन्द लेते हुए उसी आनन्दमें रमणका विलास सदा करते हैं** (सुइ दिप्ति दिष्टि सु दिष्टि दिप्तिह, दिप्ति नंत प्रकासिनो) **अपने आत्माके ज्ञानदर्शनमें मगन होकर श्री जिनने अनन्त दर्शन व अनन्त ज्ञानको प्रगट किया है** (सुइ स्वयं दिप्ति सु दिष्टि स्वयं जिन भय विलय अभय, विलास) **इस तरह स्वयं दर्शन ज्ञानमई होकर जिनेन्द्रने स्वयं**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है (सुइ सुयं दिसि सु दिष्टि सुयं जिन भय विलय अभय विलास) इस तरह स्वयं दर्शन ज्ञानमई होकर जिनेन्द्रने सर्व संसारका भय दूर कर निर्भय पदका आनन्द पाया है (सुइ भव्वु उवन उवन निहि जिन, सुइ सुर्कह मुक्ति विलास) जिनेन्द्रने भव्यत्व शक्तिका व आत्मीक ऐश्वर्यका प्रकाश करके शांत सुखमय मोक्षका आनन्द भोगा है (परम निरंजन पर्म पौ) वे कर्मरूपी अंजनसे रहित निरंजन परमात्मा हैं ॥ २ ॥

(सुइ अर्थह अर्थ जिनुत्तु, अर्थ समर्थ सदर्थ जिन–बनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! जिनेन्द्र कथित पदार्थोंका निश्चय करके अपने मोक्षरूपी पुरुषार्थको सिद्ध करनेकी शक्ति रखनेवाले जिनेन्द्रने अपने सत्य मूल पदार्थ आत्माका प्रकाश पालिया है (सुइ सहन साह अवयास, अवयास नंत अन्मोय मौ–बनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! श्री जिनेन्द्रने ज्ञानके अनुभवमें स्थिरतारूप साधनसे आनन्दमई अनन्त ज्ञानको प्रगट कर दिया है (सुइ षिपिगो मुक्ति विलास, नंत चतुष्टे सूष मौ–बनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! जिनेन्द्रने पृथ्वीकी रजके समान कर्मोंका क्षय करके तथा सूक्ष्म अतीन्द्रिय अनन्तज्ञानादि चतुष्टयको प्रगट करके मोक्षका आनन्द लिया है (सुइ नंत सौप्य विगस जिनवर, नंत समय विगासिनो) जिनेन्द्रने अनन्त सुखको प्रगट करके अनन्त गुणधारी आत्माका प्रकाश कर दिया है (जं किर्नि कमलह परसि लोहा, अमिय मुक्ति विलासिनो) जैसे लोहा पारस पत्थरको स्पर्श कर सुवर्ण होजाता है वैसे शुद्धात्मारूपी कमलकी किरणोंको स्पर्श कर आत्माने आनन्द अमृतको पाकर मोक्षका आनन्द पाया है (सु विषय नन्त सु अमिय विलयो, सिय सिद्धि मुक्ति विगासियो) आत्मानन्दरूपी अमृतके भोगसे अनन्त विषयवासनाको दूर करके शुद्ध होकर सिद्ध हो मुक्तिका आनन्द प्राप्त किया है (सुइ काय नन्त प्रवेस जिनवर नन्त समय पयासिनो) उन्होंने ही अनन्तज्ञानमें प्रवेश करके अनन्त पदार्थोंका प्रकाश किया है (सुइ नन्त नन्त सु विंद रमनह, सुइ नन्त मुक्ति विगास) वे जिनेन्द्र अनन्त गुणोंके स्वादमें रमण करते हुए अनन्त कालके लिये मोक्षको प्रकाश कर देते हैं (जिन जिनय उत्तु समत्त विंदह, सम समय सिद्धि विलास) वे जिनेन्द्र, जिनेन्द्र कथित क्षायिक सम्यग्दर्शनका अनुभव करते हुए समभावधारी परमात्मा होकर सिद्धगतिका आनन्द लेते हैं (जिन जिनय उत्तु सुइ विंद जै) जैसा जिनेन्द्रने कहा है, वे जिनेन्द्र ज्ञान चेतनामें रमण करते हैं ॥ ३ ॥

(हिययार रमन सुइ उत्तु, जिन जिनय जिनय जिन रमन पौ–बनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! जिन कथित हितकारी स्वात्मरमणके द्वारा कर्मोंको जीतकर जिनेन्द्रने स्वात्मरमण पद पाया है (रंज रमन सुइ नंद, आनंद नंद सुइ मुक्ति मौ–बनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! आत्माके आनन्दमें मगन होकर जिनेन्द्रने आनन्दमई

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुक्तिके पदको पाया है (सुइ समय अर्क सुइ, उत्तु कोमल केवल उक्त जिन—वनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! उन्हींको सूर्य समान परमात्मा कहा गया है। उन्हींको परम शांत व मृदु व केवली जिन कहा गया है (हिय अर्क अनंत विसेस, सुइ अलष अगम जिनय जिन—वनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! वे हितकारी अनन्त गुणधारी सूर्य हैं, वे ही अतीन्द्रिय व मनसे अगोचर जिनेन्द्र भगवान हैं (सुइ अलष अगम जिन नंत नंतह, रमन मुक्ति उल्हासिनो) वे अतीन्द्रिय व अगम जिनेन्द्र अनन्त काल तक मुक्तिमें रमण करते हुए आनन्द लेते हैं (सुइ रमन रमनह चिंतामनि जिन, सह समय मुक्ति विगासिनो) वे ही चिन्तामणि—रत्नके समान रत्नत्रयमें रमण करके परमात्मा जिनेन्द्र होकर मोक्षपदका प्रकाश कर देते हैं (सह साह उवन अनंत जिन पौ, सुइ उवन कमल प्रकासिनो) आत्मानुभवके साधनसे अनन्त जिनपदको प्रगट करके वे कमल समान विकसित हो प्रकाश कर रहे हैं (सह साह रमन सु उवन उव निहि, रंज जै जै जै जिनो) रत्नत्रयके साधनमें रमण करके जिनेन्द्रने आत्माकी गुप्त निधिको या गुण समूहको प्रकाश कर दिया है व उसीमें मगन है। उनकी जय हो, जय हो, जय हो (जैवन्त जैवर जै पयासिन, जै जै जैन विगास) श्री जिनेन्द्रको जय हो, उन्होंने उत्तम विजय प्रगट की है, उन्होंने अपने भीतर जैनधर्मको प्रकाश कर दिया है—सर्व कर्मोंको व रागादिको जीत लिया है (जै जयो जिनवर नन्त समयह, सह समय सिद्धि विलास) जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो, वे अनन्त गुणधारी परमात्मा हैं, वे इसी परमात्मा पदके साथ अनन्त काल तक सिद्धगतिका आनन्द लेते हैं (मुक्ति रमनी जिन मुक्ति पौ) वे मोक्ष रमणीमें रमण करनेवाले मुक्तिपदके धारी हैं॥४

(उव उवन अर्क सुइ नंत, नंतानंत सु जिन रमन, वनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! श्री जिनेन्द्र सूर्य अनन्त, अविनाशी हैं, वे अनन्त गुणोंमें रमण करनेवाले हैं (जिन जिनियो ममल सुभाउ, ममल कमल जिन उवन पौ वनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! श्री जिनेन्द्र कर्मोंको जीतनेवाले शुद्ध स्वभावधारी हैं, वे शुद्ध कमल समान आत्माको प्रगट करके प्रकाशित परमात्मापदमें हैं (षिपि षिपिनक रूव जिनुत्तु, षिपि षिपन अर्क सह जिनय जिन—वनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! श्री जिनेन्द्रने घातीय कर्मोंको क्षय कर दिया है इसलिये वे यथार्थ क्षपणक हैं। क्षायिक भावधारी निर्ग्रंथ दिगम्बर हैं, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है। वे सर्व आवरणको क्षय करके सूर्यसम प्रकाशित जिनेन्द्र हैं (षिप षिपनिक ममल जिनुत्तु, ममल कमल षिपि ममल पौ—वनजारे हो) हे मोक्षके व्यापारी ! श्री जिनेन्द्रने कहा है, वे ही अरहन्त कर्मोंको क्षय करके शुद्ध क्षपणक हैं, वे शुद्ध कमलरूप क्षायिक निर्मल पदमें हैं (सुइ ममल कमल सु उवन ध्रुव निहि, चरन चरिय पयासनो) उस शुद्ध कमल समान आत्माने ध्रुव अविनाशी

आत्मीक सम्पदाको प्रगट करके वीतराग चारित्रको प्रकाशित किया है (सुइ चरन चरियह नन्त चरियो, कल्पिय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्मीक सम्यक्त्वको प्रगट करके वीतराग चारित्रको प्रकाशित किया है (सुइ चरन चरियह नन्त चरियो, कलिय कमल सु उवन जिनो) स्वात्मरमणरूप चारित्रमें चलके उन्होंने अनन्त यथाख्यात चारित्रसे प्रकाश किया है, वे आत्मकमलमें मगन प्रकाशमान जिन हैं (सुइ कलन कलंतु सु रमन रमियो, नंत दर्स सुदर्सनो) स्वात्मानुभवके अभ्यासमें रमण करके जिनेन्द्रने अनन्त दर्शनको प्रगट किया है (तत्काल रमन सु उवन उव निहि, धुव उवन कमल विलासिनो) आत्मामें लगातार रमण करनेसे आत्माके भण्डारको प्रगट करके वे जिनेन्द्र ध्रुवरूपसे प्रकाशित कमलसम आत्माका आनन्द लेरहे हैं (जिन स्रेनि उवन सु कलन कलियो, तर तार कमल पयास) जिनेन्द्रको श्रेणीपर तिष्ठकर वे स्वात्मानुभव करते हुए अपने तारणतरण अरहन्त पदको कमल समान प्रकाश कर रहे हैं। (सुइ तारन तरन सु कमल जिन पौ, सह समय मुक्ति विलास) वे ही तारण तरण जिनेन्द्र कमल हैं, वे ही परमात्मापदके साथ मोक्षका आनन्द लेरहे हैं (सम समय सिद्धि संपत्तु) वे ही परमात्मा समभावके साथ सिद्धगतिको पाते हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—इस ध्यान बनजारा छन्दमें मोक्षको चाहनेवाला ज्ञानी व्यापारीका व्यापार बताया है। वह व्यापार जिससे मोक्ष लक्ष्मी मिल जाती है, एक मात्र अपने ही आत्माको परमात्मा समान मनन करके उसीका ध्यान करना है, उसी आत्मीक ध्यानके अभ्याससे रत्नत्रय धर्मका साधन होता है, वीतराग चारित्र प्रगट होता है, क्षपकश्रेणीपर गमन होता है, घातीय कर्मोंका क्षय होता है, अरहन्तपदका प्रकाश होता है, अनन्त गुणस्वरूपी आत्माका विकास होता है। मुक्तिके स्वरूपमें विलास होता है। ध्रुवरूपसे मुक्तिमें निवास होता है। संसारका वास नाश होता है। सर्व भवका विलय होता है, निर्मल पदका प्रकाश होता है। कमल समान आत्मा शोभायमान रहता है। सूर्यसम वीतरागतासे स्वपर प्रकाश करता है। परम समताभावमें रमण करता है। जैसे लोहा पारस पाषाणसे मिलकर सुवर्ण होजाता है, वैसे ही अशुद्धात्मा भव्यजीव परमात्माके स्वभावमें तन्मय हो, रमण करके स्वयं परमात्मा होजाता है। भव्यत्व शक्तिका फल पालेता है। सर्व गुप्त भण्डार जो कर्मोंके भीतर दबा था सो प्रगट होजाता है, परमेश्वरपना झलक जाता है। यह आत्मा आपसे ही आपकी उन्नति करता हुआ परमात्मा होता है। अरहन्तका व सिद्धका केवल भेद विचारके समय आलम्बन है, अभेद विचारमें गुणगुणीका भेद भी मिट जाता है। अतीन्द्रिय स्वानुभव जग जाता है। इसीसे स्वानुभवरूप जिनेन्द्रपद प्रगट होजाता है। यह स्वानुभवरूपी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मार्ग आनन्दमय है। इस आनन्दके भोगसे ही परमानन्दमय परमात्मपद होता है। इस छन्दका बार२ मनन कर मोक्षका व्यापार करना योग्य है। इस ज्ञान व्यापारसे जो निर्वाण लक्ष्मी प्राप्त होती है उसका स्वरूप नियमसारमें कहा है—

णवि दुक्खं णवि सुक्खं णवि पीडा णेव विज्जदे वाहा। णवि मरणं णवि जणणं तच्छेव य होइ णिव्वाणं ॥ १७८ ॥
विज्जदि केवलणाणं केवलसोक्खं च केवलं विरियं। केवलदिट्ठि अमुत्तं अत्थित्तं सप्पदेसत्तं ॥ १८१ ॥

भावार्थ—जहां न सांसारिक दुख है, न सुख है, न संयम है, न पीड़ा हैं, न बाधा है, न जन्म है, न मरण है, वही निर्वाण है। जहां केवलज्ञान है, केवल सुख है, केवल वीर्य है, केवल दर्शन है, जहां अमूर्तीकपना प्रदेश सहित आस्तिक कायपना रहता है वही निर्वाण है।

(१३६) उपयोग बत्तीसी गाथा २७९९ से २८२७ तक।

जय जयं जयं जय जैन रमन जिन, जय उवन रमन जिन मुक्ति जयं।
जय मुक्ति मुक्ति जयवंत मुक्ति जिन, सह समय जयं जै मुक्ति जयं ॥ १ ॥
जिन वंदि हउ, सुइ नंदि हउ, सुइ रंज रमन नंद सहज मुक्ति जिन।
वंदि हउ सुइ नंदि हउ (आचरी) ॥ २ ॥
जय पयं पयं पय पर्भ पयं जिन, पय पयोग उवन जिन मुक्ति जयं।
सुइ सुयं सुयं सुइ पयोग उवन जिन, पय पयोग रमन जिन सिद्धि जयं ॥जिन०॥ ३ ॥
जय न्यान रमन सुइ न्यान उवन जिन, जिन उवन आतुंजे अस्ट जयं।
सुइ दर्स दर्स जय दर्स रमन जिन, चौ उवन चतुष्टे मुक्ति जयं ॥जिन०॥ ४ ॥
मति कमल उवन सुइ ममल रमन जिन, जय कमल सहज जिन कंठ जयं।
जय कंठ उवन ९३ कोडि लष्य दह, जय लष्य लष्य दह पर्भ जिनं ॥जिन०॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मति ममल कमल सुइ चरन चरिय जिन, जय कलन रमन सुइ दर्स जयं ।
जय चरन कलन सुइ सुयं रमन जिन, मति कमल सहज जिन मुक्ति जयं ॥जिन०॥ ६ ॥
मति ममल कमल सुति हिययार रमन जिन, हिययार कमल सुइ मुक्ति विलं ।
हिय नत नंत परिनाम सहज जिन, सुइ सहज उवन जिन मुक्ति जयं ॥जिन०॥ ७ ॥
जय लष्य अलष्य लष लषन रमन जिन, विन्यान वीम सुइ कोडि जिनं ।
परिनाम उवन सुइ दर्स रमन जिन, हिय ममल कमल जै मुक्ति जयं ॥जिन०॥ ८ ॥
जय अवहि अवहि जिन गुप्ति रमन जिन, जय चरन पलटि जिन चरन चरं ।
सहयार कमल सुइ सहज ममल जिन, सुइ नंत नंत सु साहि जिनं ॥जिन०॥ ९ ॥
सो लष्य लष्य चालीस लष्य जिन, जै कोडि कोडि सुइ कोडि जयं ।
परिनाम गुप्ति सुइ उवन दस जिन, सुइ अवहि रिधि जिन जयो जयं ॥जिन०॥ १० ॥
जय मइ सुइ अवहि अवहि जिन उवने, उव उवन उवन उव अलष जिनं ।
जै अलष अगम सुइ अगम रमन जिन, जिय अगम उवन जिन न्यान जयं ॥जिन०॥ ११ ॥
जै उवन उवन सुइ उवन उवन मय, उव उवन कमल मय उवन जिनं ।
सुइ उवन कमल सुइ उवन चरन जिन, जय उवन रमन सुइ दर्स जयं ॥ जि० ॥ १२ ॥
सुइ लष्य लष्य सुइ कोडि रमन जिन, परिनाम सुयं सुइ पर्म जिनं ।
सुइ उवन उवन सुइ नन्त उवन जिन, मय उवन कमल केवलि उवनं ॥ जि० ॥ १३ ॥
सुइ उवन उवन हिय उवन कमल जिन, सुइ समय सहज हिय उव उवन जितं ।
तं अर्क नन्त सुइ नन्त विंद जिन, आगंतु समय उव सिद्धि जयं ॥ जि० ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुति कोडि सुयं सइ लष्य लष्य जिन, हिय हुव रमन जिन मुक्ति जयं ।
परिनाम नन्त हिय कमल उवन जिन, सुइ समय मुक्ति दिपि दिष्टि जयं ॥ जि० ॥ १५ ॥
सइ उवन उवन मुइ उवन अवहि निहि, सहयार रमन सुइ उवन जिनं ।
सइ साहिय नन्त नन्त धुव रमनं, सर्वांग रमन धुव सिद्धि जयं ॥ जि० ॥ १६ ॥
सुइ सुयं चतुष्टे चौ उवन रमन जिन, परिनाम लष्य लष्य कोडि जिनं ।
सुइ कोडि कोडि जय जयं रमन जिन, उव कमल अवहि निहि मुक्ति जयं ॥ जि० ॥ १७ ॥
जय जयं जयं जै जैन रमन जिन, मन उवन उवन जै जै उवनं ।
रिजु विपुल उवन सुइ सहज रमन जिन, मनपर्जय पर्म सुइ मुक्ति जयं ॥ जि० ॥ १८ ॥
सुइ सहस लष्य लष लषिय कोडि जिन चौदस सुइ उवन सु कमल जिनं ।
पय प्रान पयं पय चौदस उवनं, मन पर्जय समय सुइ मुक्ति जयं ॥ जि० ॥ १९ ॥
सुइ ममल कमल सुइ उवन उवन जिन, जय उवन मुषारविंद रमनं ।
सुइ उवन रमन तत्काल रमन जिन, तत्काल दर्स हिय हुव गमनं ॥ जि० ॥ २० ॥
हिय हुव सहज सुइ केवल उवनं, लष लष कोडि तव आयरन जिनं ।
सुइ नंतानंत चतुष्टे उवनं, केवल सुइ समय सु मुक्ति जयं ॥ जि० ॥ २१ ॥
तं न्यान न्यान सुइ उवन न्यान जिन, तं न्यान सुभाव सु जिनय जिनं ।
जिन जिनयति दिष्टि इष्टि सुइ उवने, सुइ दर्सन दर्सिय ममल पयं ॥ जि० ॥ २२ ॥
जय चष्य चष्य सुइ चष्य उवन जिन, चष्य रमन सुइ पर्म पयं ।
सुइ पर्म पर्म सुइ दर्स रमन जिन, जय दर्स कमल जिन सिद्धि जयं ॥ जि० ॥ २३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय सहस लष्य लषि कोडि रमन जिन, सुइ चष्य दर्स परिनाम जिनं ।
परिनवें पर्म जिन पर्म दर्स जिन, जिन जिनयति चष्य सुदर्स जिनं ॥ जि० ॥ २४ ॥
सुइ चष्य दर्स जिन अचष्य दस जिन, सुइ उवन दर्स दर्स कमल जिनं ।
सुइ उवन दस जिन सिद्धि जयं जिन, जिन अचष्य समय हिय मुक्ति जयं ॥ जि० ॥ २५ ॥
दुति सहस लष्य लष कोडि कोडि जिन, विन्यान वीस परिनाम जिनं ।
अचष्य रमन सुइ अलष रमन जिन, अचष्य गमन जय सिद्धि जयं ॥ जि० ॥ २६ ॥
सुइ लष लषि चालीस रमन जिन, जै कोडि कोडि सुइ उवन जिनं ।
सुइ दर्स दस सुइ उवन अवहि निहि, सुइ गुप्ति उवन जिन मुक्ति जयं ॥ जि० ॥ २७ ॥
सुइ उवन उवन सुइ गुप्ति कमल जिन, सुइ गुप्ति रमन कन कमल जिनं ।
सुइ अवहि उवन निहि दर्स रमन दिहि, दिसि अंग दर्स सुइ मुक्ति जयं ॥ जि० ॥ २८ ॥
सुइ चष्य उवन जिन अचष्य रमन जिन, सुइ अवहि उवन निहि उवन जिनं ।
सुइ कमल उवन जिन रमन नंत जिन, सुइ केवल दर्सन मुक्ति जयं ॥ जि० ॥ २९ ॥
जिन विमल विमल सुइ ममल रमन जिन, ममल पयं पय पम पयं ।
सुइ पर्म पर्म पय पर्म कमल जिन, सुइ केवल पम सु सिद्धि जयं ॥ जि० ॥ ३० ॥
सुइ न्यान न्यान सुइ दर्स रमन जिन, सुइ न्यान दर्स पय पयं जिनं ।
पै पयोग उवन सुइ उवन रमन जिन, सुइ रमन पयोग जिन जिनय जिनं ॥ जि० ॥ ३१ ॥
सुइ उवन उवन जिन स्रेनि उवन जिन, सुइ कलन कलिय जिन चरन चरं ।
जिन चरन रमन तत्काल रमन जिन, जिन स्रेनि कलन सुइ सिद्धि जयं ॥ जि० ॥ ३२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे तारन तरन उव रमन पर्म जिन, जै उवन कमल सुइ रमन जिन।
सुइ उवन जिनय जिन उवन रमन जिन, सह समय उवन जिन सिद्धि जयं ॥ जि० ॥ ३३ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जयं जयं जय जैन रमन जिन) जैनधर्ममें रमण करनेवाले श्री जिनेन्द्रकी जय हो (उव उवन रमन जिन मुक्ति जयं) जो ज्ञानमें रमण करते हुए मोक्षको जाते हैं (जय मुक्ति मुक्ति जयवंत मुक्ति जिन) मुक्तिकी जय हो, मुक्ति प्राप्त जिनेन्द्रका जय हो (सह समय जयं जय मुक्ति जयं) परमात्मापदकी जय हो, वे ही मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ १ ॥

(जिन वंदि हउ सुइ नंदि हउ) श्री जिनेन्द्रको वन्दना करता हूं; आत्मीक सुखमें मगन होता हूं (सुइ रञ्ज रमन नंद सहज मुक्ति) उसी आनन्दमें मगन होकर रमण करनेसे सहजमें मुक्ति होजाती है ॥ २ ॥

(जय पयं पयं पय पर्म पयं जिन) गुणस्थान क्रमसे परम पदको प्राप्त परमात्मा जिनकी जय हो (पय पयोग उवन जिन मुक्ति जयं) जिनेन्द्रने शुद्धोपयोगको प्रकाश करके मुक्तिको जीत लिया है (सुइ सुयं सुयं सुइ पयोग उवन जिन) स्वयं ज्ञानमें रमण करते करते जिनेन्द्रके शुद्धोपयोग प्रगट हुआ है (पय पयोग रमन जिन सिद्धि जयं) इसी शुद्धोपयोगमें रमण करके जिनेन्द्र सिद्धि पालेते हैं ॥ ३ ॥

(जय न्यान रमन सुइ न्यान उवन जिन) आत्मज्ञानमें रमण करनेसे ही केवलज्ञानको जिनेन्द्रने प्राप्त किया है (जिन उवन ओतु जे अष्ट जयं) जब सिद्धपद प्रगट होता है तब आठों कर्मोंका विस्तार जीत लिया जाता है (सुइ दर्स दर्स जय दर्स रमन जिन) आत्माका दर्शन करते करते अनन्तदर्शनको पाकर जिनेन्द्र उसीमें रमण करते हैं (जै उवन चतुष्टै मुक्ति जयं) वे अनन्तज्ञानादि चतुष्टयको प्रगट कर मोक्षको जीत लेते हैं ॥ ४ ॥

(मति कमल उवन सुइ ममल रमन जिन) कमलसम आत्मामें जब आत्मज्ञान पैदा होता है तब उसके द्वारा जिनेन्द्र शुद्ध भावमें रमण करते हैं (जय कमल सहज जिन कंठ जयं) सहज कमलके समान जिनेन्द्र भगवानकी जय हो (जय कंठ उवन सुइ कोडि लष्य दह, जय लष्य लष्य दह पर्म जिनं) श्री जिनेन्द्रमें दस लाख कोडि सूर्यसम प्रकाश उत्पन्न होता है। उस दश लाख कोडि सूर्यके प्रकाशको जीतनेवाले परमात्मा जिन हैं ॥ ५ ॥

(मति ममल कमल सुइ चरन चरिय जिन) शुद्ध ज्ञानके द्वारा श्री जिनेन्द्र कमलके समान आत्माके वीतराग चारित्रमें चलते हैं (जय कलन रमन सुइ दर्स जयं) आत्माके अनुभवमें रमण करनेसे अनन्त दर्शनको

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राप्त कर लिया है (जय चरन कलन सुइ सुयं रमन जिन) स्वरूपके चारित्रके अभ्याससे जिनेन्द्र स्वयं आपमें रमण करते हैं (मति कमल सहज जिन मुक्ति जयं) शुद्धात्मारूपी कमलमें ध्यान लगानेसे जिनेन्द्र मुक्तिको जीत लेते हैं ॥६॥

(मति ममल कमल सुति हियियार रमन जिन) शास्त्र या श्रुतज्ञानके द्वारा शुद्धात्मारूपी कमलके रमणसे श्री जिनेन्द्रने हितकारी स्वात्मरमणको पाया है (हियियार कमल सुइ मुक्ति जयं) हितकारी कमल होकर उन्होंने मुक्तिको जीत लिया है (हिय नंत नंत परिनाम सहज जिन) जिनेन्द्रके सहज ही हितकारी अनन्त आत्मीक गुणोंमें परिणमन होरहा है (सुइ सहज उवन जिन मुक्ति जयं) ऐसे स्वभावसे ही प्रगट होनेवाले जिनेन्द्र मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ ७ ॥

(जय लष्य अलष्य लष लषन रमन जिन) श्री जिनेन्द्र उस ज्ञानमें रमण करते हैं जो इंद्रिय व मनसे अगोचर सर्व स्थूल सूक्ष्मको जानता है (विन्यान वीस सुइ कोडि जिनं) ज्ञानके प्रकाशने बीस करोड़ सूर्यकी दीप्तिको जीत लिया है (परिनाम उवन सुइ दर्स रमन जिन) अपने ही स्वभाव परिणमनसे प्रगट आत्माके दर्शनमें जिनेंद्र रम रहे हैं (हिय ममल कमल जै मुक्ति जयं) हितकारी शुद्ध कमल समान आत्मा होकर उन्होंने मुक्तिको जीत लिया है ॥ ८ ॥

(जय अवहि अवहि जिन गुपित रमन जिन) वीतरागी यति अवधिज्ञानको पैदा करके भी गुप्त अनुभवगोचर जिनेन्द्रके स्वभावमें रमण करते हैं (जय चरन कलन जिन चरन चरं) व्यवहार चारित्रको उलटकर या उससे उपयोगको हटाकर वीतराग चारित्रमें आचरण करते हैं (सहयार कमल सुइ सहज ममल जिन) शुद्धात्मारूपी कमलकी सहायतासे वे सहज शुद्ध जिन होजाते हैं (सुइ नंत नंत सुइ साहि जिनं) वे ही अनन्त गुणोंको साधनेवाले जिनराज होजाते हैं ॥ ९ ॥

(सो लष्य लष्य चालीस लष्य जिन, जै कोड़ि कोड़ि सुइ कोड़ि जयं) श्री जिनेन्द्रने अपने तेजसे चालीस करोड़ लाख व कोड़ाकोड़ी क्रोड़ सूर्यके तेजको जीत लिया है (परिनाम गुप्त सुइ उवन दर्स जिन) श्री जिनेन्द्रने अपने गुप्त अनुभवगोचर भावोंसे अनन्तदर्शनको या आत्मदर्शनको प्रकाश कर लिया है (सुइ अवहि रिंधि जिन जयो जयं) वह अवधिज्ञानकी रिद्धि जयवन्त हो जिसके संयोगसे जिनेन्द्रपदकी विजय होती है—सर्वावधि ज्ञानधारी उसी भवसे जिनेन्द्र होजाता है ॥ १० ॥

(जइ मइ सुइ अवहि अवहि जिन उवने) जिस वीतरागी भव्यके भीतर मति, श्रुत, अवधि तीन क्षयोप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शम ज्ञान उत्पन्न होते हैं (उव उवन उवन उव अलष जिन) वह ज्ञानके भीतर ज्ञानको रमाकर अतीन्द्रिय जिन स्वभावी आत्माका अनुभव करता है (जय अलष अगम सुइ अगम रमन जिन) वही अतीन्द्रिय व मनसे अगोचर आत्माके तत्वके अनुभवसे स्वयं अतीन्द्रिय स्वभावमें रमण करनेवाला जिन होजाता है (जय अगम उवन जिन न्यान जयं) उस अतीन्द्रिय स्वभावके रमणसे वह केवलज्ञानको जीत लेता है ॥ ११ ॥

(जय उवन उवन सुइ उवन उवन मय) जैसे जैसे ज्ञानमें रमता है, ज्ञानको बढ़ाता जाता है, (उव उवन कमल मय उवन जिनं) तब वह कमल समान शुद्धात्माके अनुभवसे वीतरागी जिन होजाता है (सुइ उवन कमल सुइ उवन चरन जिन) कमल सम आत्माका अनुभव प्रकाश वही वीतराग चारित्रका प्रकाश है (जय उवन रमन सुइ दर्स जयं) इसी स्वानुभवके रमणसे वह अनन्त दर्शनको विजय कर लेता है ॥ १२ ॥

(सुइ रुय्य रुय्य सुइ कोड़ि रमन जिन) वही जिनेन्द्र करोड़ों सूर्योंसे भी अधिक तेजधारी वीतराग सर्वज्ञके स्वभावमें रमण करता है (परिनाम सुयं सुइ पर्म जिनं) आत्माका स्वयं आपमें परिणमन करना सो ही परमात्मा जिन होना है (सुइ उवन उवन सुइ नंत उवन जिन) आत्माके प्रकाशसे ही जिनके अनन्त गुणोंका प्रकाश हो जाता है (मय उवन कमल केवलि उवनं) तब कमल समान शुद्धात्माके केवलज्ञानका प्रकाश रहता है ॥ १३ ॥

(सुइ उवन उवन हिय उवन कमल जिन) आत्मा प्रकाश करते करते हितकारी कमल समान शुद्धात्मा जिन होजाता है (सुइ समय सहज हिय उव उवन जिनं) सहज स्वाभाविक आत्मा ही हितकारी जिनेन्द्र होता है (तं अर्क नंत सुइ नंत विंद जिन) वही सूर्य समान है, अनन्त गुणधारी हैं तथा अनन्त ज्ञानका धारी जिन हैं (आगंतु समय उव सिद्धि जयं) वही जिनेन्द्र अपने समयपर सिद्ध होजाता है ॥ १४ ॥

(दुति कोड़ि सुयं सुइ रुय्य रुय्य जिन) वे जिनेन्द्र अपनी परमौदारिक देहमें करोड़ों सूर्योंसे अधिक तेज धारण करते हैं। इस लक्षणसे जाने जाते हैं (हिय हुव रमन जिन मुक्ति जयं) हितकारी आत्मध्यानके भीतर रमण करते हुए ही वीतरागी आत्मा मुक्तिको जीत लेता है (परिनाम नंत हिय कमल उवन जिन) हितकारी कमल समान प्रफुल्लित जिनेन्द्र अनन्त काल तक स्वभावमें परिणमन करते हैं (सुइ समय मुक्ति दिपि दिष्टि जयं) वे ही अनन्तज्ञान व अनन्तदर्शनके धारी परमात्मा मुक्तिको विजय कर लेते हैं ॥ १५ ॥

(सुइ उवन उवन सुइ उवन अवहि निहि) यही आत्मा ज्ञानसे ज्ञानमें रमण करता हुआ अवधिज्ञानकी ऋद्धिको पैदा कर लेता है (सहयार रमन सुइ उवन जिनं) इस अवधिज्ञानकी सहायतासे स्वरूपमें रमण करते हुए जिनपदको प्रगट कर देता है (सुइ … अनन्त गुणोंको प्रगट कर उनमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुए जिनपदको प्रगट कर देना है (सुइ साहिय नंत नंत सुय रमनं) वही जिन अनन्त गुणोंको प्रगट कर उनमें ध्रुवरूपसे सदा रमण करते रहते हैं (सर्वांग रमन सुइ सिद्धि जयं) जब सर्व आत्माके प्रदेशोंसे कर्म छूट जाते हैं तब वे सिद्धिको प्राप्त होजाते हैं ॥ १६ ॥

(सुइ सुयं चतुष्टै चौ उवन रमन जिन) वे ही जिन अनन्तज्ञानादि चतुष्टयको प्रगट करते हुए इन्हीं चारों गुणोंमें सदा रमण करते हैं (परिनाम लष्य लष्य कोटि जिनं) जिनेन्द्रने करोड़ों शुभाशुभ भावोंको जीत लिया है (सुइ कोड़ि कोड़ि जय जयं रमन जिन) वे जिनेन्द्र कोड़ाकोड़ी सागरोंकी स्थिति रखनेवाले कर्मोंको जीतकर वीतराग स्वभावमें रमण करते हैं (उव कमल अवहि निहि मुक्ति जयं) तथा कमलरूपी आत्माके भीतर रहे हुए ऐश्वर्यको प्रगट करके मुक्तिको विजय कर लेते हैं ॥ १७ ॥

(जै जयं जयं जै जैन रमन जिन) जैनधर्ममें रमण करनेवाले वीतरागीकी जय हो, जय हो, जय हो (मन उवन उवन जै जै उवनं) जो ध्यानके प्रकाशसे मनःपर्ययज्ञानको प्रगट कर देते हैं उस प्रकाशकी जय हो (रिजु विपुल उवन सुइ सहज रमन जिन) वे ऋजु और विपुल दोनों ही प्रकारके मनःपर्ययज्ञानको प्रगट करके सहज अपने जिन स्वभावमें रमण करते हैं (मन.पर्यय पर्म सुइ मुक्ति जयं) मनःपर्ययज्ञानके पीछे परम ज्ञानको या केवलज्ञानको पाकर मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ १८ ॥

(सुइ सहस लष्य लष्य लषिय कोड़ि जिन—चौदस सुइ उवन सु कमल जिनं) वे अरहन्त सशरीर परमात्मा करोडो सूर्यकी ज्योतिको जीतनेवाले, चार प्राण या दश प्राणको रखतेहुए कमल समान जिन हैं। वचनबल, कायबल, आयु, श्वासोछ्वास ये चार प्राण अरहन्तमें कार्यरूप हैं। त्रस, पंचेंद्रिय, सेनी पर्यायकी अपेक्षा वे दश प्राणके धारी हैं या व्यवहारसे दश प्राण हैं। निश्चयसे सुख, सत्ता, चैतन्य, बोध इस चार प्राणके धारी हैं (पय प्रान पयं पय चौदस उवनं) अपने पदमें वे चार या दस प्राणके धारी हैं (मनपर्यय उवन सुइ मुक्ति जयं) ऐसे मनपर्यय ज्ञानके धारी महात्मा भी केवली होकर मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ १९ ॥

(सुइ ममल कमल सुइ उवन उवन जिन) वे शुद्ध कमल समान परमात्मा जिनेंद्र प्रगट होते हैं (जय उवन मुषारविंदं रमनं) उनका मुखरूपी कमल स्वात्मरमणको प्रगट करता है (सुइ उवन रमन तत्काल रमन जिन) वे ज्ञानमें हरसमय रमण करनेवाले जिन हैं (तत्काल दर्स हियं हुव गमनं) वे अनन्त दर्शनधारी हितकारी आत्मरमणमें ही परिणमन करते रहते हैं ॥ २० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(हिय हुव सहज सुइ केवल उवनं) हितकारो ध्यानके ही द्वारा सहज केवलज्ञान होता है (लष लष कोड़ि तवं आचरने जिनं) वे वीतरागो करोडों सागरोंकी स्थितिवाले कर्मोंको तपश्चरणके द्वारा जीत लेते हैं (सुइ नंतानंत चतुष्टे उवनं) तब अनन्तज्ञानादि चतुष्टय प्रगट होजाते हैं (केवल सुइ समय सु मुक्ति जयं) वे केवलज्ञानी परमात्मा मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ २१ ॥

(तं न्यान न्यान सुइ उवन न्यान जिन) आत्मज्ञानमें रमण करनेसे ही ज्ञानके ही द्वारा जिनेन्द्रमें केवलज्ञान प्रगट होता है (तं न्यान सुभाव सु जिनय जिनं) श्री जिनेन्द्रका स्वभाव ही ज्ञानमई व वीतराग है (जिन जिनयति दिष्टि इष्टि सुइ उवने) जिनेन्द्रने कर्मोंको जोतकर शुद्ध प्रिय क्षायिक सम्यग्दृष्टि प्राप्त की है (सुइ दर्सन दर्सिय ममल पयं) उसी क्षायिक सम्यग्दर्शनसे वे निर्मल पदका अनुभव कर रहे हैं ॥ २२ ॥

(जय चष्य चष्य सुइ चष्य उवन जिन) आत्मज्ञानके नेत्रसे ही आत्माको देखकर जिनेन्द्रने प्रत्यक्ष आत्मदर्शन प्राप्त किया है (चष्य रमन सुइ पर्म पयं) ज्ञान नेत्र द्वारा आत्मामें रमण कर.ा सो ही परमात्माका पद है (सुइ पर्म पर्म सुइ दर्स रमन जिन) वे ही परमात्मा जिन उत्कृष्ट हैं, वे ही आत्माके दर्शनमें रमण कर रहे हैं (जय दर्स कमल जिन सिद्धि जयं) कमल समान आत्माके दर्शनसे ही जिनेन्द्रने सिद्धपदको जोत लिया है ॥२३॥

(जय सहस लष्य लषि कोड़ि रमन जिन) श्री जिनेन्द्र करोडों प्रकारके शुद्ध आत्मीक भावोंमें रमण कर रहे हैं (सुइ चष्य दर्स परिनाम जिनं) यही ज्ञान नेत्र द्वारा देखनेका फल है (परिनवै पर्म जिन पर्म दर्स जिन) इस उत्कृष्ट आत्माके दर्शनसे वे परमात्मा जिन हुए हैं (जिन जिनयति चष्य सु दर्स जिनं) ऐसे कर्मविजई जिन उत्तम चक्षुदर्शनके धारो हैं अर्थात् ज्ञाननेत्रसे आत्माका अनुभव करनेवाले हैं ॥ २४ ॥

(सुइ चष्य दर्स जिन अचष्य दर्स जिन) ऐसे आत्मदर्शी चक्षु-नेत्रके दर्शनके धारो जिन अचक्षु दर्शनके भी धारो हैं अर्थात् अतीन्द्रिय ज्ञान नेत्रके धारी हैं (सुइ उवन दर्स दर्स कमल जिनं) इस अतीन्द्रिय ज्ञानरूपी अचक्षु दर्शनसे वे जिन शुद्धात्मारूपी कमलका दर्शन करते हैं (सुइ उवन दर्स जिन सिद्धि जयं जिन) इसी प्रगट आत्मदर्शनसे वे सिद्धपदको जीत लेते हैं (जिन अचष्य समय हिय मुक्ति जयं) अतीन्द्रिय जिनेन्द्र परमात्मा हो हितकारी मुक्तिको जीतते हैं ॥ २५ ॥

(दुति सहस लष्य लषि कोड़ कोड़ि जिन) श्री जिनेन्द्रके शरीरका प्रकाश करोड़ों सूर्यके तेजको जीतनेवाला है (विन्यान वीस परिनाम जिनं) उनका ज्ञानभी बीसों सूर्योंके प्रकाशको जीतनेवाला है (अचष्य रमन सुइ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अचप्य रमन जिन) अचक्षु दर्शनमें रमण करना यही है, जो वे जिनेन्द्र अतीन्द्रिय स्वभावमें रमण करते हैं
॥२०९॥ (अचप्य गमन गम सिद्धि जयं) इसी अतीन्द्रिय ज्ञानका अनुभव करते हुए वे सिद्धिको जीत लेते हैं ॥ २६ ॥

(सुइ लषि लषि चालीस रमन जिन--जै कोड़ि कोड़ि सुइ उवन जिनं) श्री जिनेन्द्र करोड़ों सूर्यको जीतनेवाले ज्ञानमें रमण करते हैं । उनमें करोड़ों सूर्योंसे अधिक ज्ञान तेज प्रगट है (सुइ दर्स दर्स सुइ उवन अवहि निहि) आत्माके दर्शनसे ही जिनेन्द्रने अपनी आत्माके भीतरकी सर्व गुणरूपी निधिको प्रगट कर दिया है (सुइ गुप्ति उवन जिन मुक्ति जयं) वे ही ज्ञानमें मगन जिनेन्द्र मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ २७ ॥

(सुइ उवन उवन सुइ गुप्ति कमल जिन) स्वरूपमें लवलीन आत्मा प्रगट होते होते कमल समान जिन होजाता है (सुइ गुप्ति रमन कर्न कमल जिनं) स्वरूपमें गुप्तपने रमण करना ही जिनेन्द्र कमलके विकासका कारण है (सुइ अवहि उवन निहि दर्स रमन दिहि–दिसि अंग दर्स सुइ मुक्ति जयं) वे ही वीतरागी जिन अपने भीतर सर्व ऐश्वर्यको प्रगट करके उसीके दर्शनमें रमण करते हुए दशों दिशाओंमें सर्व पदार्थोंको देखते हुए मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ २८ ॥

(सुइ चप्य उवन जिन अचप्य रमन जिन) वे जिनेन्द्र ऊपर कहे प्रमाण चक्षु तथा अचक्षु दर्शनमें रमण करते हुए (सुइ अवहि उवन निहि उवन जिनं) अवधि दर्शन अर्थात् अपने भीतरके सर्व गुणोंके दर्शनकी निधिको उत्पन्न करके प्रकाशित हैं (सुइ कमल उवन जिन रमन नंत जिन) वे ही जिन कमल समान प्रगट हो, अनन्त काल तक उसमें रमण करते हैं (सुइ केवल दर्सन मुक्ति जयं) इस तरह आत्मदर्शनरूपी केवलदर्शनको प्रगट करके वे मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ २९ ॥

(जिन विमल विमल सुइ ममल रमन जिन) श्री जिनेन्द्र कर्ममल व रागादि मल रहित हैं तथा शुद्ध स्वभावमें रमण करते हैं (ममल पयं पय पर्म पयं) शुद्धपदमई परमात्मापदको प्राप्त हैं (सुइ पर्म पर्म मय पर्मकमल जिन) वे परमात्मा परम पदधारी कमल समान जिन हैं (सुइ केवल पर्म सु सिद्धि जयं) वे ही उत्तम केवलज्ञानके साथ सिद्धगतिको जीत लेते हैं ॥ ३० ॥

(सुइ न्यान न्यान सुइ दर्स रमन जिन) वे ही जिनेन्द्र ज्ञानदर्शन स्वभावमें रमण करनेवाले हैं (सुइ न्यान दर्स पय ॥२०९॥
पयं जिनं) उन्होंने ज्ञानदर्शनके द्वारा ही जिनपदको पाया है (दैवयोग उवन सुइ उवन रमन जिन) उस पदमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्धोपयोगका प्रकाश है, उसीके भीतर वे जिन रमण करते हैं। (सुइ रमन पयोग जिन जिनय जिनं) उसी शुद्धोपयोगके रमणसे ही वे जिन हुए हैं ॥ ३१ ॥

(सुइ उवन उवन जिन सेनि उवन जिन) उसी शुद्धोपयोगके द्वारा गुणस्थानोंपर चढ़कर जिनराजकी श्रेणी पर वे प्रगट हुए हैं (सुइ कलन कलिय जिन चरन चरं) उसीके भीतर जिनेन्द्र अनुभवशील हैं व उसीसे वीतराग चारित्रमें आचरण कर रहे हैं (जिन चरन रमन तत्काल रमन जिन) जब जिनेन्द्र वीतराग चारित्रमें रमण करते हैं तब जिन स्वभावमें रमण करते हैं (जिन सेनि कलन सुइ सिद्धि जयं) अरहन्त जिनकी तेरहवीं व चौदहवीं श्रेणीको तय करके ही वे सिद्धपदको जीत लेते हैं ॥ ३२ ॥

(जै तारन तरन उव रमन पर्म जिन) तारणतरण अरहन्तकी जय हो, जो परमात्मापदमें रमण कर रहे हैं (जै उवन कमल सुइ रमन जिनं) उनका आत्मारूपी कमल प्रकाशित है, उसीमें वे जिनेन्द्र रमण करते हैं (सुइ उवन जिनय जिन उवन रमन जिन) वे ही आत्माके शुद्ध ज्ञानमें रमण करनेवाले स्वयं प्रकाशित जिनेन्द्र (सह समय उवन जिन सिद्धि जयं) परमात्मापदके साथ प्रकाशित होते हुए सिद्धिको जीत लेते हैं ॥ ३३ ॥

भावार्थ—इस उपयोग बत्तीसीमें शुद्धोपयोगकी महिमा प्रगट की है, इसी शुद्धोपयोगमें रमण करनेसे घातीय कर्मका क्षय करके अरहन्तपद प्रगट होता है। अरहन्तपदकी महिमा अपार है। उनके भीतर व बाहर अपार प्रकाश रहता है जिसकी उपमा करोड़ों सूर्योंके तेजसे भी नहीं दी जासकती है। सम्यग्दृष्टीके भीतर मति श्रुत अवधि मनःपर्यय चार ज्ञान व चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन होते हैं। केवलीमें केवलदर्शन व केवलज्ञान उपयोग रहता है। निश्चयसे आत्माके एक शुद्ध ज्ञान, शुद्ध दर्शन ही उपयोग है। इस उपयोग बत्तीसीमें यह भी अभिप्राय है कि पांच ज्ञान व चार दर्शन उपयोगोंको केवलज्ञान ही परमात्मामें घटाया गया है। आत्मचक्षुसे आत्माको देखना चक्षुदर्शन है। अतीन्द्रिय ज्ञानमें आत्माको देखना अचक्षु दर्शन है। आत्माके भीतर सब सम्पदाको देखना अवधि दर्शन है। केवल आत्माको देखना केवलदर्शन है। आत्मज्ञानका प्रकाश ही मतिज्ञान है। आत्मज्ञानका प्रकाश ही श्रुतज्ञान है, आत्माकी सब निधिका प्रकाश अवधिज्ञान है। सरल व विशाल केवलज्ञानका प्रकाश ऋजु व विपुल मनःपर्ययज्ञान है। केवल शुद्ध आत्माका ज्ञान केवलज्ञान है।

प्रयोजन यह है कि ज्ञानोपयोगसे ही ज्ञानोपयोग शुद्ध होता है। ज्ञानमें रमण करनेसे ही रागद्वेष

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हटते हैं, ज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशम होकर ज्ञान बढ़ता है। सम्यग्दर्शन सहित आत्मानुभवका उपयोग ही परम हितकारी है। इसीमें उपयोगको रमाना चाहिये। शुद्धोपयोगकी जघन्य ज्योति चौथे अविरत सम्यग्दर्शन गुणस्थानमें प्रगट होजाती है। उत्कृष्ट शुद्धोपयोगकी ज्योति केवली अरहन्तके होती है। शुद्धोपयोग ही जैनधर्म है। इसीका धारी सच्चा जैनी है। शुद्धोपयोग ही मोक्षका मार्ग है। सिद्ध भगवान भी शुद्ध दशामें शुद्धोपयोगमें ही रमण करते रहते हैं। आत्मानुभवसे ही उपयोग शुद्ध होता है।

समयसारजीमें श्री कुन्दकुन्दाचार्य कहते हैं—

जो पस्सदि अप्पाणं अवद्धपुट्ठं अणण्णयं णियदं। अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्धणयं विजाणीहि ॥ ॥

भावार्थ—जो कोई अपने आत्माको जलसे अलिप्त कमलके समान कर्मोंसे अलिप्त देखता है व सर्व घटादि पर्यायोंमें एक मिट्टीके समान सर्व पर्यायोंमें एक शुद्ध आत्मद्रव्यको देखता है, व निश्चल समुद्रके समान आत्माको निश्चल देखता है। पीतादि गुणोंसे अभेदरूप सुवर्णके समान ज्ञानादि गुणोंसे अभेद-रूप आत्माको देखता है। अग्नि संयोग रहित शीतल जलके समान रागद्वेष रहित वीतराग आत्माको देखता है। वही शुद्ध निश्चयनयसे आत्माको देखता है। इसी तरह आत्माके मननसे आत्मानुभव प्रगट होता है।

(१३६) ज्ञानाष्टक गाथा २८२९ से २८३६ तक।

उव उवन उवन उव उवन जिनैया, उव उवन सहावे कलि कलन कलैया।
चर चरन चरिय जिन चरन चरैया, चरि कलन उवन जिन मुक्ति मिलैया ॥ १ ॥
अव हम वंदे हैं जिन जिनय जिनया, कम कमल कलिय धुव मुक्ति रमैया (आचरी) ॥ २ ॥
मय ममल ममल मय ममल जिनैया, मति ममल कमल कंठ सहज उवैया।
उव उवन उवन मय उवन नंदैया, मति उवन कमल जिन मुक्ति मिलैया ॥अव०॥ ३ ॥ ॥२११॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइ ममल रमन चर चरिय चरैया, हिय कलन कमल सुइ सहज जिनैया।
उव उवन उवम हिय रमन रमैया, हिय उवन कमल सुइ जिनय जिनैया ||अव०|| ४ ||
सुइ अवहि अवहि चर उलट चरैया, सुइ गुप्ति कलन कलि अवहि जिनैया।
उव उवन अवहि निहि अवहि जिनैया, उवसाह कमल निहि मुक्ति मिलैया ||अव०|| ५ ||
मन ममल रमन जिन उवन जिनैया, रिजु विपुल सहज जिन मुक्ति मिलैया।
षट् रमन अरुह जिन हिय हियइ जेरैया, जै जया जयं जिन मुक्ति जिनैया ||अव०|| ६ ||
धुव धुवं धुवं सिधि धुवरैया, सिय सहन साह धुव साह सहैया।
सिय धुवं सहज जिन जिनय जिनैया, धुव केवल ममल सिधि मुक्ति जिनैया ||अव०|| ७ ||
जै जयो सेनि जिन सेनि जैरैया, ज उवन कमल कलि कलन कलैया।
सुइ सेनि कलन चर कलिय जिनैया, जिन सेनि कलन सम मुक्ति मिलैया ||अव०|| ८ ||
जै तार तरन तर तरन तरैया, जै तार कमल कम कमल जिनैया।
सुइ तार समय कलि कमल जेरैया, सह समय रमन सिधि मुक्ति मिलैया ||अव०|| ९ ||

अन्वय सहित अर्थ—(उव उवन उवन उव उवन जिनैया) **आत्माको प्रकाश करते करते श्री जिनेन्द्रका उदय हुआ है** (उव उवन सहावे कलि कलन कलैया) **अपने प्रकाशित स्वभावमें रमण करते हुए अनुभवशील हुए हैं** (चर चरन चरिय उव चरन चरैया) **वीतराग चारित्रमें चलते हुए वे यथाख्यात चारित्रमें चल रहे हैं** (चरि कलन उवन जिन मुक्ति मिलैया) **इसी चारित्र द्वारा जिनेन्द्रपदका लाभ कर उन्होंने मोक्षको प्राप्त कर लिया है** || १ ||

(अव हम वंदे है जिन जिनय जिनैया; कम कमल कलिय धुव मुक्ति रमैया) **अब हम कर्मविजयी श्री जिनेन्द्रको वन्दना करते हैं जो सुन्दर कमल समान आत्मामें रमण करते हुए ध्रुव मोक्षमें रमण करनेवाले हैं** || २ ||

(मय ममल कमल मय ममलजिनैया) **ज्ञानमई शुद्ध आत्मारूपी कमलके द्वारा शुद्ध ज्ञानको प्रकाश करनेवाले जिन हैं** (मति ममल कमल कंट सहज उवैया) **शुद्धोपयोगके द्वारा ही सहज ही उत्तम कमलके समान परमात्मा पदको प्राप्त करनेवाले जिन हैं** (उव उवन उवन मय उवन नंदैया) **जैसे जैसे ज्ञानका उदय होता है वे**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मात्मा पदको प्राप्त करनेवाले जिन हैं (उव उवन उवन मय उवन नंदैया) जैसे जैसे ज्ञानका उदय होता है वे उस ज्ञानमें आनन्द माननेवाले हैं (मति उवन कमल जिन मुक्ति मिलैया) केवलज्ञान धारी कमल समान जिनेन्द्र परमात्मा मोक्षको प्राप्त करते हैं ॥ ३ ॥

(सुइ ममल रमन चर चरिय चैरैया) वे ही शुद्धोपयोगमें रमण कर वीतराग चारित्रमें चलनेवाले हैं (हिय कलन कमल सुइ सहज जिनैया) वे ही हितके साथ शुद्धात्मा कमलका स्वाद लेते हुए सहजहीसें जिनराज हो जाते हैं (उव उवन उवन हिय रमन रमैया) जैसे जैसे ज्ञानका प्रकाश होता है उस ज्ञानमें हितसे रमण करने-वाले हैं (हिय उवन कमल सुइ जिनय जिनैया) जब हितकारी कमल समान आत्माका प्रकाश होजाता है तब वे ही जिनेन्द्र कहलाते हैं ॥ ४ ॥

(सुइ अवहि अवहि चर उलट चैरैया) वे ही क्षयोपशम ज्ञानमें चलते हुए उसके विरोधी क्षायिक अनन्त ज्ञानमें चलने लगते हैं (सुइ गुप्ति कलन कलि अवहि जिनैया) वे ही स्वात्मानुभवमें गुप्तिके साथ रमण करते हुए क्षयोपशमरूप मर्यादित ज्ञानको जीत लेते हैं (उव उवन अवहि निहि अवहि जिनैया) जब भीतरकी सब गुणरूप ऋद्धि प्रगट होजाती है—अर्थात् अनन्तज्ञानादि झलक जाते हैं तब वे क्षयोपशम ज्ञानको जीत लेते हैं (उव साह कमल निहि मुक्ति मिलैया) इसतरह कमल समान आत्माके भंडारको पाकर वे मोक्षको प्राप्त कर लेते हैं ॥ ५ ॥

(मन ममल रमन जिन उवन जिनैया) शुद्धोपयोग परिणाममें रमण करते हुए वे कर्मोंको जीत जिनराज होजाते हैं (रिजु विपुल सहज जिन मुक्ति मिलैया) शुद्ध सरल विशाल ज्ञानके धारी अर्थात् केवलज्ञानके धारी सहज जिनेन्द्र मोक्षको प्राप्त कर लेते हैं (षट् रमन अरुह जिन हिय हियइ जैरैया) अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य, क्षायिक सम्यग्दर्शन, क्षायिक चारित्र इन छः गुणोंमें रमण करनेवाले अरहन्त जिनेन्द्र आत्महितकी विजयमें परिणमन करते हैं (जै जयो जयं जिन मुक्ति मिलैया) ऐसे जिनेन्द्रकी जय हो, जो मोक्षको प्राप्त कर लेते हैं ॥ ६ ॥

(ध्रुव ध्रुवं ध्रुवं सिधि ध्रुवरैया) ध्रुव अविनाशी गुणोंको रखनेवाले परमात्मा जिन ध्रुव सिद्धगतिमें शोभित रहते हैं (सिय सहन साह ध्रुव साह रुहैया) उन्होंने शुद्धोपयोगमें स्थितिरूप साधनसे ही ध्रुव साध्य सिद्धपदको साध लिया है (सिय ध्रुवं सहज जित जिनय जिनैया) वे जिनेन्द्र शुद्धोपयोगके धारी व सहज स्वभाव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धारी वीतराग जिन हैं (ध्रुव केवल ममल सिधि मुक्ति मिलैया) उन्होंने ध्रुव केवलज्ञानसे सर्व कर्मरहित हो, मोक्ष पुरुषार्थको सिद्ध करके मुक्ति प्राप्त की है ॥ ७ ॥

(जै जयो स्रेनि जै स्रेनि जैरैया) उस गुणस्थानकी जय हो, जिनराज अपनी विजयमें शोभते रहते हैं (जै उवन कमल कलि कलन कलैया) वे कमल समान विकसित हो, उसी कमलका अनुभव करते रहते हैं (सुइ स्रेनि कलन चर कलिय जिनैया) वे उस श्रेणीमें प्राप्त वीतराग यथाख्यात चारित्रमें रमण करनेवाले जिन हैं (जिन स्रेनि कलन सम मुक्ति मिलैया) वे जिनेन्द्र उस श्रेणीको भोगते हुए समभावसे मोक्षको जाते हैं ॥ ८ ॥

(जै तार तरन तर तरन तरैया) तारणतरण अरहन्तकी जय हो, जो अपनेको तारते हुए दूसरोंको भी तारते हैं (जै तार कमल कम कमल जिनैया) कमल समान शोभित तारनेवाले जिनेन्द्र कमलकी जय हो (सुइ तार समय कलि कमल जै रैया) वे ही तारनेवाले परमात्मा आत्म-कमलके स्वादी हैं, उनकी जय हो (सह समय रमन सिधि मुक्ति मिलैया) वे ही परमात्मापदमें रमण करते हुए सिद्ध होकर मोक्ष प्राप्त करते हैं ॥ ९ ॥

भावार्थ—इस ज्ञानाष्टकमें सम्यग्ज्ञानकी महिमा बताई है। सम्यग्ज्ञानी जीव निश्चय रत्नत्रय स्वरूप आत्मज्ञानका अनुभव करते हुए गुणस्थानोंकी श्रेणीसे उन्नति करते हुए अरहन्त परमात्मा जिन होजाता है। जैनधर्मके प्रतापसे जिनेन्द्र होजाता है। स्वात्मानुभव या ज्ञानमें परिणमन ही जैनधर्म है, इसीके आराधनसे पूर्ण स्वात्मरमण प्राप्त होजाता है जो मोक्षपदमें भी बना रहता है। जहां आत्मानुभवका अभ्यास है वहां सम्यग्दर्शनमें भी रमण है, ज्ञानमें भी रमण है, चारित्रमें भी रमण है। उसी रमणसे ही कर्मोंका मैल जितना जितना दूर होता है उतना उतना आत्माका विकास होता है। इसी साधनसे श्रुतज्ञानकी पूर्णता होती है। अवधिज्ञान तथा मनःपर्ययज्ञान होजाता है। जब स्वात्मानुभव वीतराग चारित्र या यथाख्यात चारित्रके साथ वर्तन करता है व शुक्लध्यान होजाता है तब क्षयोपशम ज्ञान पलटकर क्षायिक ज्ञान होजाता है, केवलज्ञान प्रगट होजाता है। शुद्धोपयोगमें रमणसे ही शुद्धोपयोग बढ़ता है। प्रत्यक्ष ज्ञान व पूर्ण वीतरागता होनेसे शुद्धोपयोग निर्मल व स्पष्ट होजाता है। जिस जैनधर्मसे परमात्मा पद होता है, जन्म मरण छूटता है, अनन्त आनन्द प्राप्त होता है, निर्वाणका लाभ होता है जहां कोई कष्ट नहीं है उस जैन धर्मकी जय मनाते हुए भव्य जीवोंको उसका आराधन करना चाहिये। निश्चयसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

... जीवोंको उसकी आराधना करनी चाहिये। निश्चयसे यह धर्म एक अपने ही शुद्ध स्वभावका रमण है। इसको बिना प्राप्त किये कर्मोंपर विजय न होसकेगी, निर्वाणका लाभ न होसकेगा।

तत्वज्ञानी सम्यग्दृष्टी जीव सदा समभावका अभ्यास करता है, ज्ञानकी सेवा करता है ज्ञानसे वस्तु स्वरूप विचार करके दुःख व सुखमें समभाव रखता है। आत्माके ज्ञानमें रमण करके आनन्द लेता है। ज्ञान ही ज्ञानीका बड़ा भारी बल है। ज्ञानसे ही सर्व अज्ञान दूर होता है। ज्ञान सूर्य समान प्रकाशमान रहकर परमोपकार करता है।

समयसार कलशमें श्री अमृतचंद्राचार्य कहते हैं—

ज्ञानादेव ज्वलनपयसो रौष्ण्यशैत्यव्यवस्था। ज्ञानादेवोल्लसति लवणस्वादभेदव्युदासः॥
ज्ञानादेव स्वरसविकसन्नित्यचैतन्यधातोः। क्रोधादेश्च प्रभवति भिदाभिन्दती कर्तृभावम्॥ १५–३॥

भावार्थ– ज्ञानसे ही गर्म पानीमें पानीका स्वभाव ठण्डा तथा उष्णता अग्निकी झलकती है। ज्ञानसे ही व्यंजनमें व्यंजनका और लवणका स्वाद भिन्न२ मालूम होता है। ज्ञानहीसे झलकता है कि यह आत्मा अपने ही आत्मीक स्वभावमें रहनेवाला नित्य चैतन्यमई पदार्थ है तथा क्रोधादि विकार सब पुद्गल कर्मकृत रचना है। आत्मा स्वभावसे इनका कर्ता नहीं है।

(१३७) कमल चतुर्दशी गाथा २८३७ से २८५१ तक।

जय जयो जयो जय जय उवनं, जै रमन रमन जिन जिनय जिनं।
जिन गमन गमन सुइ अगम जयं, जिन नंत नंत सुइ मुक्ति जयं॥ १॥
जिन जिनयति जिनय सु जिनय जयं, जिन उवन उवन स्वामी मुक्ति जयं।
जिन अपर पर्म पय पर्म जयं (आचरी)॥ २॥
जय मयं मयं मय उव उवनं, जिन सहन सहन जिन उवन सहं।
जय ऊर्ध ऊर्ध सुइ ऊर्ध जयं, जिन उवन ऊर्ध जिन मुक्ति जयं॥जिन०॥ ३॥ ।२१५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन ढलन ढलन जिन उव ढलनं, जिन उवन उवन जिन उवन जिनं ।
जय लवन लवन जै उव लवनं, जै अलष लषिय जय सिधि गमनं ॥जिन०॥ ४ ॥
जिन इष्ट इष्ट जय इष्ट उवनं, जिन उवन उवन इष्ट उवन जिनं ।
जिन गिरय गिरय जिन गिर उवनं, जै उवन उवन गिर सिधि गमनं ॥जिन०॥ ५ ॥
जिन कण्ठ कण्ठ जय कण्ठ उवनं, उव उवन कण्ठ जिन जिनय जिनं ।
जिन रमन रमन जय उव रमनं, तत्काल रमन उव सिधि गमनं ॥जिन० ॥ ६ ॥
जय ममल ममल सुइ ममल जयं, जिन ममल साह जय साह जयं ।
सह साह जयं सिय उवन जयं, सिय उवन साइ जिन मुक्ति जयं ॥जिन०॥ ७ ॥
मिय चरन जयं जय चरि उवनं, जिन उवन चरन जय जिन चरनं ।
जिन चरन चरिय सिय धुव चरनं, धुव चरन रमन जिन सिधि गमनं ॥जिन०॥ ८ ॥
जिन चरन रमन सम उवन चरं, सुइ न्यान चरन चौ उवन चरं ।
जै उवन लषन लषि लषिय चरं, जै अलष चरन लषि मुक्ति वरं ॥जिन०॥ ९ ॥
जै कलन कलन कलि कलन रयं, जै कलन रमन धुव जिनय जिनं ।
सुइ चरन चरिय जिन कलन जयं, जै उवन कलन जिन पर्म जयं ॥जिन०॥ १० ॥
जय कलन कलिय जय कण्ठ उवनं, जै कलन कलिय जिन रमन जिनं ।
जय कलन रमन तत्काल जिनं, जिन कलन कलिय जिन धुव उवनं ॥जिन०॥ ११ ॥
जिन कलन कलिय जय दर्स जयं, जै नंत दर्स जिन कलन जिनं ।
जिन कलन कमल जय धुव उवनं, जै कलन उवन धुव मुक्ति जिनं ॥जिन०॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन कमल जयं ध्रुव उवनं, जै कलन उवन ध्रुव मुक्ति जिनं ॥जिन०॥ १२॥
जिन कमल कलन पे ध्रुव उवनं, जै चरन कमल सुइ कलन जिनं ।
जे पदम कमल पय पर्म जिनं, जै उवन कमल सिधि मुक्ति जिनं ॥जि०॥ १३॥
जै कलन कमल कलि कलिय जिनं, जै कमल सहज जिन उवन जिनं ।
जय जयो जयो जय कलन जयं, जय रमन कमल जिन सिधि रमनं ॥जि०॥ १४॥
जय सेनि कलन कलि कलिय जिनं, जय कमल कलिय जिन जिनय जिनं ।
जय तार कमल सम समय जिनं, सह समय साहि सुइ मुक्ति जयं ॥जिन०॥ १५॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जयो जयो जय जय उवनं, जय रमन रमन जिन जिनय जिनं) **जय हो, जय हो, श्री जिनके उदयकी जय हो, निज स्वरूपमें रमण करनेवाले कर्मविजयी जिनेन्द्रकी जय हो** (जिन गमन गमन सुइ अगम जयं) **जिन परमात्माका अनुभव करते करते अतीन्द्रिय स्वभावका लाभ होजाता है** (जिन नंत नंत सुइ मुक्ति जयं) **जब अनन्त गुणोंका प्रकाश जिनेन्द्रमें होजाता है तब वे मोक्षको जीत लेते हैं** ॥ १ ॥

(जिन जिनयति जिनय सु जिनय जयं) **कर्मोंको जीतनेवाले जिनेन्द्रकी जय हो** (जिन उवन उवन स्वामी मुक्ति जयं) **जो उन्नति करते करते मोक्षको जीत लेते हैं** (जिन अपार पर्म पय पर्म पयं) **जिनका परमात्मापद श्रेष्ठ व अनुपम है** ॥ २ ॥

(जय मयं मयं मय उव उवनं) **ज्ञानमें परिणमन करते करते ज्ञानकाप्र काश होता है** (जिन सहन सहन उव उवन सहं) **वीतरागभावमें थिरता करनेसे वीतरागभावमें स्थिरता बढ़ती है** (जय ऊर्ध ऊर्ध सुइ ऊर्ध जयं) **गुणस्थानोंके ऊपर चढ़ते चढ़ते ऊपर चढ़ जाता है** (जिन उवन ऊर्ध जिन मुक्ति जयं) **इसतरह जब परमात्मा जिनेन्द्र होजाता है तब वह मुक्तिको जीत लेता है** ॥ ३ ॥

(जिन ढलन ढलन जिन उव ढलनं) **वीतरागभावमें ढलते ढलते—उन्नति करते २ वीतरागी जिन होजाते हैं** (जिन उवन उवन जिन उवन जिनं) **वीतराग स्वभावको प्रकाश करते करते जिनराज होजाते हैं** (जै लवन लवन जै उव लवनं) **कर्मोंका नाश करते करते वे घातीय कर्मोंका नाश कर देते हैं** (जै अलख लषिय जय सिधि गमनं) **इसतरह अतीन्द्रिय स्वभावका अनुभव करके वे सिद्धगतिको पधार जाते हैं** ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जिन इष्ट इष्ट जय इष्ट उवनं) जिनेन्द्रमें प्रेम करते करते इष्ट जिनपद प्रगट होजाता है (जिन उवन उवन इष्ट उवन जिनं) वीतरागपद प्रगट होते होते इष्ट वीतरागपद होजाता है (जिन गिरय गिरय जिन गिर उवनं) जिन-वाणीका मनन करते करते जिनराजमें जिनवाणीका प्रकाश होजाता है (जै उवन उवन गिर सिधि गमनं) इस-तरह जिनवाणीको प्रकाश करते करते वे जिनेन्द्र सिद्धगतिको चले जाते हैं ॥ ५ ॥

(जिन कंठ कंठ जय कंठ उवनं) श्री जिनेन्द्रको कण्ठमें रहते रहते जिनराज पद प्रगट होजाता है (उव उवन कंठ जिन जिनय जिनं) जब मुख्य जिनपद प्रगट होता है तब वे कर्मोंको जीत लेते हैं (जिन रमन रमन जय उव रमनं) स्वरूपमें रमण करते करते स्वात्मरमण बढता जाता है (तत्काल रमन उव सिधि गमनं) जब पूर्ण स्वात्मरमण होजाता है बाधक आठों ही कर्म नहीं रहते हैं तब परमात्मा सिद्धगतिको पधार जाते हैं ॥६॥

(जय ममल ममल सुइ ममल जयं) शुद्ध होते होते यह आत्मा शुद्ध होजाता है (जिन ममल साह जय साह जयं) वीतरागभावसे शुद्ध स्वभावका साधन करनेसे वीतराग स्वभाव साध लिया जाता है (सह साह जयं सिय उवन जयं) तब साधनकी सिद्धि होनेसे शुद्धोपयोग पूर्ण प्रगट होजाता है (सिय उवन साह जिन मुक्ति जयं) जब शुद्धोपयोग जिनराजमें साध लिया जाता है, कोई बाधक कर्म नहीं रहते हैं तब वे जिन मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ ७ ॥

(सिय चरन जयं जय चरि उवनं) शुद्ध चारित्रमें चलनेसे वीतराग चारित्र प्रगट होता है (जिन उवन चरन जय जिन चरनं) वीतराग चारित्रकी वृद्धिसे जिनराजमें परम यथाख्यात चारित्र होजाता है (जिन चरन चरिय सिय धुव चरनं) वीतराग चारित्रमें आचरण करनेसे ध्रुव शुद्ध चारित्र गुण प्रगट होजाता है (धुव चरन रमन जिन सिधि गमनं) इस ध्रुव चारित्रमें रमण करते हुए जिन सिद्धगतिको चले जाते हैं ॥ ८ ॥

(जिन चरन रमं सम उवन चरं) वीतराग चारित्रमें रमण करनेसे समभावरूप चारित्र प्रगट होजाता है (सुइ न्यान चरं चौ उवन चरं) उसी ज्ञानमें आचरण करनेसे-ज्ञानमय होनेसे चार गुण प्रगट होजाते हैं। अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख, अनन्तवीर्य (जै उवन लषन लषि लषिय चरं) ज्ञानमई लक्षणको पहचान कर उस ज्ञानमें ज्ञानरूपसे वर्ता जाता है (जै अलष चरन लषि मुक्ति वरं) तब अतीन्द्रिय चारित्रका अनुभव होकर यह आत्मा मोक्षको वर लेता है ॥ ९ ॥

(जै कलन कलन कलि कलन रयं) स्वात्मानुभव करते करते स्वात्मानुभवमें मगनता होती जाती है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जै कलन रमन ध्रुव जिनय जिनं) स्वात्मानुभवके रमणसे ध्रुव जिनराजका पद प्रगट होजाता है (सुद्ध चरन चरिय जिन कलन जयं) वीतराग चारित्रमें चलनेसे जिनराजकासा स्वानुभव होजाता है (जै उवन कलन जिन पर्म जयं) जब पूर्ण स्वानुभव होजाता है तब आत्मा परमात्मा होजाता है ॥ १० ॥

(जय कलन कलिय जय कण्ठ उवनं) स्वात्मानुभवके अभ्याससे मुख्य वीतरागता प्रगट होती जाती है (जै कलन कलिय जिन रमन जिनं) उसी स्वात्मानुभवके अभ्याससे जिनराज वीतराग भावमें रमण करते रहते हैं (जय कलन रमन तत्काल जिनं) स्वात्मामें रमण जिस समय होता है तब ही जिनपदका प्रकाश होता जाता है (जिन कलन कलिय जिन ध्रुव उवनं) जब वीतरागता सहित स्वात्मानुभव बढ़ जाता है तब ध्रुव जिनपद प्रगट होजाता है ॥ ११ ॥

(जिन कलन कलिय जय दर्स जयं) वीतराग भावसे स्वात्मानुभव करते हुए दर्शन गुण प्रगट होता जाता है (जै नन्त दर्स जिन कलन जिनं) तब जिनराज पदमें अनन्तदर्शन प्रगट होजाता है, जिसका वे अनुभव करते हैं (जिन कलन कमल जय ध्रुव उवनं) शुद्धात्मारूपी कमलका अनुभव करनेसे ध्रुवरूपसे आत्मा–कमलका विकास होजाता है (जै कलन उवन ध्रुव मुक्ति जिनं) जब स्वात्मानुभव पूर्ण प्रगट होजाता है, तब ध्रुव मोक्षमें जिन प्राप्त होजाते हैं ॥ १२ ॥

(जिन कमल कलन पै ध्रुव उवनं) कमल समान जिनराजका मनन करनेसे ध्रुव जिनपद प्रगट होजाता है (जय चरन कमल सुद्द चरन जिनं) जिनराजरूपी कमलमें आचरण करनेसे वीतराग चारित्र होता है (जय पदम कमल पै पर्म जिनं) जब आत्मारूपी कमल पूर्ण कमल सम विकसित होजाता है तब यह परमात्मा जिन होजाता है (जै उवन कमल सिधि मुक्ति जयं) जब आत्मारूपी कमल पूर्ण विकसित होजाता है तब वह सिद्धगतिमें जाकर मुक्तिको जीत लेता है ॥ १३ ॥

(जय कलन कमल कलि कलिय जिनं) शुद्धात्मारूपी कमलका स्वाद लेनेसे जिनपदका प्रकाश होता जाता है (जय कमल सहज जिन उवन जिनं) जब कमल समान सहज स्वभावमें जिनराजका उदय होजाता है (जय जयो जयं जय कलन जयं) इस स्वात्मानुभवकी जय हो, जय हो, जय हो (जय रमन कमल जिन सिधि रमनं) शुद्धात्मारूपी कमलका रमण करते हुए जिनेन्द्र सिद्धभावमें रमण करते हैं ॥ १४ ॥

(जय सेनि कलन कलि कलिय जिनं) सयोगकेवली जिनकी श्रेणीपर बिराजित जिनराज स्वात्मामें रमण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करते हैं (जय कमल कलिय जिन जिनय जिनं) शुद्धात्मारूपी कमलका अनुभव लेनेवाले जिनेन्द्रकी जय हो (जयं तार कमल सम समय जिनं) तारणतरण समभावधारी कमल समान परमात्मा जिनकी जय हो (समय साहि सुइ मुक्ति जयं) इस तरह आत्मा, आत्माका साधन करके मुक्तिको जीत लेता है ॥ १५ ॥

भावार्थ—मोक्षमाग एक मात्र सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान सहित वीतरागतापूर्ण स्वात्मानुभवसे ही आत्माका कर्म मैल कटता है। इसका विकास होते हुए वह चार घातीय कर्मोंका क्षय करके परमात्मा अरहन्त होजाता है। स्वात्मानुभवका उपाय शुद्ध जिनपद्की पहचान है, जिनराजमें सच्ची भक्ति व सच्चा प्रेम है, जिनराजके आत्मीक गुणोंकी भावना है, भावना करते करते भावना सफल होती है। जिनराजका नाम भाव सहित रटनेसे व उनके स्वरूपका मनन करनेसे संसारसे उदासीनता आती है, मोक्षसे राग बढता है, तब यह आत्मध्यानका साधन करता है। यही आत्मध्यान परमात्मा पदके प्रकाशका कारण है। वास्तवमें आप ही साधन है, आप ही साध्य है, परमात्मा अरहन्त व सिद्ध भावनाके समय सहायक हैं। जबतक आपसे आपमें स्थिर होकर स्वात्मानुभव नहीं किया जायगा तबतक वीतरागताका प्रकाश न होगा। वीतरागताके प्रकाश बिना कर्म क्षय न होगा। इसलिये मुमुक्षुको संसार असारसे उद्धार पानेके लिये अपने ही आत्माके शुद्ध स्वभावरूपी उपवनमें रमण करना चाहिये। आनन्द सहित मोक्षमार्ग पर चलकर परमानन्दी मोक्षद्वीपमें पहुंच जाना चाहिये।

समयसार कलशामें कहा है—

त्यजतु जगदिदानीं मोहमाजन्मलीनं, रसयतु रसिकानां रोचनं ज्ञानमुद्यत् ।
इह कथमपि नात्मा नात्मना साकमेकः, किल कलयति काले क्वापि तादात्म्यवृत्तिं ॥ २२–१ ॥

भावार्थ—हे भाई! अब तो अनादि जन्मोंसे चले आए हुए मार्गको छोडो और आत्मरसिकोंको प्रिय ऐसे सुन्दर व प्रगट ज्ञानका रस आस्वादो। यह आत्मा अपने सिवाय सर्व अनात्माके साथ कहीं भी किसी तरहसे भी एकपनेको नहीं प्राप्त होसक्ता है, परसे भिन्न आत्मा हीका अनुभव करो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जयो जयो जय जयो आनंद, जय जैन सहावे स्वामी मुक्ति जिनेन्द ।
जय जयो जयो जय जैन स रिधि, जय जयो उवन सम समय सु सिधि ॥ १ ॥
उव उवन उवन उव उवन सु सधीर, उव उवन समय जिन स्वेनि सधीर ।
उव उवन कलन सिधि मुक्ति सुवास, उव तार कमल जिन मुक्ति निवास (आचरी) ॥ २ ॥
उव उवन कलन कलि कलिय अनंतु, उव कलन कमल ध्रुव सिद्धि संपत्तु ।
उव उवन कमल चर चरिय सुनंद, चरि चरिय कमल उव मुक्ति जिनेन्द ॥ उव उवनं० ॥ ३ ॥
उव उवन कमल उव नंतु अनंतु, उव उवन समय कर्न सिद्धि संपत्तु ।
उव उवन कमल सम स्रवन सु रिद्धि, सुव स्रवन रमन जिन मुक्ति सु सिद्धि ॥ उव० ॥ ४ ॥
उव स्रवन रमन सुइ सुवन अनंतु, सुइ सुवन हिय जिन सिद्धि संपत्तु ।
उव उवन हिय उव मुक्ति सरत्तु, हुव समय सुवन जिन सिद्धि सपत्तु ॥ उव० ॥ ५ ॥
उव उवन स्रवन अवयास जिनंदु, अवयास रमन दिपि मुक्ति संपत्तु ।
अवयास यास दिपि नंत अनंतु, अवयास कमल ध्रुव सिद्धि संपत्तु ॥ उव० ॥ ६ ॥
दिपि दिप्ति उवन सुइ दिप्ति सुनतु, सुइ सुयं उवन दिपि मुक्ति सरत्तु ।
दिपि सुयं दिप्ति सुइ सुर्क सहाउ, सुइ दिप्ति सुर्क जिन मुक्ति सुभाउ ॥ उव० ॥ ७ ॥
सुइ सुर्क उवन जिन अभय सनंदु, सुइ सुर्क अभय भय विलय जिनेन्द ।
सुइ अभय सुर्क जिन नन्त अनन्तु, जै सुर्क कमल ध्रुव सिद्धि संपत्तु ॥ उव० ॥ ८ ॥
सुइ सुर्क उवन सर्वार्थ सु अर्थ, सुकम हियं ध्रुव मुक्ति सु पंथ ।
सर्वार्थ अथ ध्रुव समय सविंद, उव विंद रमन जिन ज़िनय जिनेन्द ॥ उव० ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उव उवन विंद हिय नन्द आनन्द, सुइ नन्द नन्द आनंद जिनेन्द ।
आनन्द उवन आनंद स उत्तु, उव उवन विनन्द विलि सिद्धि संपत्तु ॥ उव० ॥ १० ॥
उव उवन आनंद सुइ विलय विनन्द, उव उवन कमल धुव समय जिनेन्द ।
सम समय समय सम जिनय स उत्तु, धुव समय रमन हिय सिद्धि संपत्तु ॥ उव० ॥ ११ ॥
धुव समय हिय हिय उवन अलषि, उव उवन अलषि हिय जिनय जिनुत्तु ।
उव उवन अलष अगम गम उत्तु, सुइ अगम उवन जिन सिद्धि संपत्तु ॥ उव० ॥ १२ ॥
उव उवन अगम गम साह साहंतु, सहयार सुवन आवरन जिनुत्तु ।
सह साह रमन उव उवन अनंतु, उव रमन कमल धुव सिद्धि संपत्तु ॥ उव० ॥ १३ ॥
उव उवन रंज जय जयो जिनुत्तु, जै जयं जयं जय रंज सिधि रत्तु ।
सुइ रंज उवन उव उवन जिनेन्द, जिन जिनय कमल सुइ पम जिनेन्द ॥ उ० ॥ १४ ॥
उव उवन उव षिपि षिपिय अनंतु, षिपि षिपन रमन जिन सिद्धि रत्तु ।
उव उवन षिपन सुइ ममल नंतु, उव ममल रमन धुव सिधि संपत्तु ॥ उ० ॥ १५ ॥
उव उवन सियं सिय मुक्ति सहाउ, सिय रमन सियं धुव उव सुभाउ ।
विन्यान वीय चौ उवन अनंतु, सिय धुवं धुवं सिय सिद्धि सपत्तु ॥ उ० ॥ १६ ॥
उव उवन वीरु विन्यान संजुत्तु, सुइ उवन स्रेनि जिन कलन स उत्तु ।
उव तार तरन जिन कमल जिनुत्तु, सह समय उवन जिन सिद्धि संपत्तु ॥ उ० ॥ १७ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जयो जयो जय जयो आनंद) आत्मानन्दकी जय हो, जय हो, जय हो (जय जैन सहावे स्वामी मुक्ति जिनन्द) जैनधर्मके स्वभावमें रमण करनेसे जिनेन्द्र मोक्षके स्वामी होजाते हैं (जय जयो जयो

जय जैन स रिधि) जैनधर्मरूपी सम्पदाकी जय हो, जय हो, जय हो (जय जयो उवन सम समय सु सिधि) जिसके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जैन स रिधि) जैनधर्मरूपी सम्पदाकी जय हो, जय हो, जय हो (जय जयो उवन सम समय सु सिधि) जिसके सेवन करनेसे समभावको प्रगट कर आत्मा सिद्धगतिको प्राप्त कर लेता है ॥ १ ॥

(उव उवन उवन उव उवन सधीर) धैर्यको रखनेवाला साहसी आत्मा ज्ञानका प्रकाश करते करते केवलज्ञानके प्रकाशको कर देना है (उव उवन समय जिन श्रेनि सुधीर) वही धीर आत्मा उन्नति करके जिनराजकी श्रेणीपर आजाता है (उव उवन कलन सिधि मुक्ति सुवास) जब केवलज्ञानका अनुभव होजाता है तब आत्मा सिद्ध होकर मोक्षमें वास करता है (उव तार कमल जिन मुक्ति निवास) कमल समान तारणतरण जिन मोक्षमें सदा काल रहते हैं ॥ २ ॥

(उव उवन कलन कलि कलिय अनंतु) आत्मानुभवका प्रकाश अनन्त गुणधारी आत्माका अनुभव करता है (उव कलन कमल धुव सिद्धि संपत्तु) कमल समान आत्माका अनुभव करनेसे ध्रुव सिद्धगतिका लाभ होता है (उव उवन कमल चर चरिय सुनंद) विकसित कमल सम आत्मा वीतराग चारित्रमें चलकर उत्तम आनन्दको पाता है (चर चरिय कमल उव मुक्ति जिनेन्द) कमल सम आत्मामें आचरण करते हुए श्री जिनेन्द्र मुक्तिको पालेते हैं ॥ ३ ॥

(उव उवन कमल उवनंतु अनंतु) कमल सम आत्मा अनन्त गुणोंको लिये हुए अनन्त काल तक प्रकाशित रहता है (उव उवन समय कर्न सिद्धि संपत्तु) आत्माका पूर्ण प्रकाशित होना ही वह साधन है जिससे सिद्धगति प्राप्त होती है (उव उवन कमल सम स्रवन सु रिद्धि) प्रफुल्लित कमल सम आत्मामें समभावकी उत्तम ऋद्धि सदा रहा करती है (सुव सुवन रमन जिन मुक्ति सु सिद्धि) इसी समभावके प्रवाहमें रमण करते हुए जिनराज मुक्तिको सिद्ध कर लेते हैं ॥ ४ ॥

(उव स्रवन रमन सुइ सुवन अनंतु) इसी समभावके प्रवाहमें रमण करना सो ही अनन्त काल तक परिणमन रहता है (सुइ सुवन हियं जिन सिद्धि संपत्तु) इसी हितकारी समताको प्रवाहित करते हुए जिनेन्द्र सिद्धगतिको पालेते हैं (उव उवन हियं उव मुक्ति सत्तु) जब हितकारी परमात्मपदका उदय होजाता है तब आत्मा मुक्तिको प्राप्त होता है (हुव समय सुवन जिन सिद्धि संपत्तु) आत्मध्यानमें परिणमन हुआ आत्मा जिनराज होकर सिद्धगतिको पालेना है ॥ ५ ॥

(उव उवन स्रवन अवयास जिनेन्दु) जिनेन्द्रमें जब ज्ञानका प्रवाह उदय होजाता है अर्थात् केवलज्ञान ॥२२३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जग जाता है (अवयास रमन दिपि मुक्ति संपत्तु) तब इस ज्ञानमें रमण करते हुए ज्योतिस्वरूप परमात्मा मुक्तिको पालेते हैं (अवयास यास दिपि नंत अनंतु) यह केवलज्ञान अनन्तानन्त द्रव्य गुण पर्यायोंको प्रकाश करनेवाला है (अवयास कमल ध्रुव सिद्धि संपत्तु) अनन्तज्ञान धारी कमल समान आत्मा ध्रुवरूपसे सिद्धगतिको पालेता है॥६

(दिपि दिप्ति उवन सुइ दिप्ति अनंतु) ज्ञान ज्योतिका प्रकाश अनन्त है (सुइ सुयं उवन दिपि मुक्ति सरत्तु) यह स्वयं प्रगट होता है। इस ज्ञानके द्वारा परमात्मा मुक्तिमें रत रहते हैं (दिपि सुयं दिप्ति सुइ अर्क सहाउ) यह केवलज्ञान ज्योति सूर्यके समान स्वपर प्रकाशक स्वभावधारी है (सुइ दिप्ति सुर्क जिन मुक्ति सुभाउ) केवलज्ञान ज्योतिधारी परमात्मारूपी सूर्यका स्वभाव ही मोक्षरूप है ॥ ७ ॥

(सुइ अर्क उवन जिन अभय सनंदु) केवलज्ञानी सूर्य सम परमात्मा निर्भय व आनन्दमई प्रकाश रखते हैं (सुइ सुर्क अभय भय विलय जिनेंद) वे ही परम शांत सूर्य हैं, उन अभयपद धारी जिनेन्द्रके भीतरसे सर्व संसारका भार बिला गया है (सुइ अभय सुर्क जिन नंत नंतु) वे अभय व शांत सूर्य सम जिनराज अनन्त काल तक उदय रहते हैं (जै सुर्क कमल ध्रुव सिद्धि संपत्तु) यही शांत सूर्य व कमल समान परमात्मा ध्रुवरूपसे सिद्धिको प्राप्त कर लेते हैं ॥ ८ ॥

(सुइ सुर्क उवन सर्वार्थ सु अर्थ) परम शांत सूर्य सम आत्माके प्रकाश होनेपर आत्मा पदार्थके सर्व प्रयोजनकी सिद्धि होजाती है (सुकर्म सियं ध्रुव मुक्ति सुपंथ) सूर्य सम आत्मा पदार्थमें शुद्धोपयोग होता है। यही ध्रुव मोक्ष पानेका उपाय है (सर्वार्थ अर्थ ध्रुव समय सविंद) पूर्ण पुरुषार्थको सिद्ध करनेवाला आत्मा ध्रुवरूपसे अपने परमात्म स्वभावका अनुभव करता रहता है (उव विंद रमन जिन जिनय जिनेन्द) श्री जिनेन्द्र कर्मोंकी विजय करके ज्ञानमें ही रमण करते रहते हैं ॥ ९ ॥

(उव उवन विंद हिय नन्द आनन्द) जब आत्मानुभवका उदय होता है तब आत्मानन्दमें भलेप्रकार मगनता होती है (सुइ नन्द नन्द आनंद जिनेन्द) उसी आनन्दमें मगन आनन्दमई जिनेन्द्र हैं (आनन्द उवन आनंद स उत्तु) जो आत्मासे आनन्द उठता है उसे ही सच्चा सुख कहा गया है (उव उवन विनन्द विलि सिद्धि संपत्तु) इस आत्मानन्दके होनेपर विषयानन्द बिला जाता है और सिद्धगतिका लाभ होजाता है ॥ १० ॥

(उव उवन आनंद सुइ विलय विनंद) जब परमानन्द प्रगट होता है तब विषयानन्द भाग जाता है (उव उवन कमल ध्रुव समय जिनेंद) इसी आनन्दके भोगसे कमल सम परमात्मपद प्रगट होता है, उस पदको ध्रुव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

... ध्रुव समय जिनंद) इसी आनन्दके मानसे कमल सम परमात्मपद प्रगट होता है, उस पदको ध्रुव रूपसे जिनेन्द्र सुशोभित करते हैं (सम समय समय सम जिनय स उत्तु) समताभाव सहित आत्मा जब वर्तता है तब समभाव धारी जिनेन्द्र होजाता है ऐसा कहा गया है (ध्रुव समय रमन हिय सिद्धि संपत्तु) जब आत्मा ध्रुव रूपसे समभावमें रमण करता है तब हितरूप सिद्धगति प्राप्त होजाती है ॥ ११ ॥

(ध्रुव समय हियं हिय उवन अलषि) जब आत्मा ध्रुवरूपसे अपने हितको पालेता है तब उसमें अतीन्द्रिय ज्ञानादि गुण प्रगट रहते हैं (उव उवन अलष हियं जिनय जिनुत्तु) अतींद्रिय स्वभावके प्रकाशकको ही हितरूप जिनेन्द्र श्री जिनने कहा है (उव उवन अलष अगम गम उत्तु) जिसमें अतीन्द्रिय गुण प्रगट होजाते हैं उन्हींको मनसे अगोचर तत्वका ज्ञाता कहा गया है (सुइ अगम उवन जिन सिद्धि संपत्तु) ऐसे मनसे अगोचर तत्वको प्रकाश करनेवाले जिनेन्द्र मोक्षको पालेते हैं ॥ १२ ॥

(उव उवन अगम गम साह सोहंतु) जहां अगम तत्वका प्रकाश होजाता है वही मोक्षको साध लेता है (सहयार सुवन आयरन जिनुत्तु) इस साध्यका सहायक साधन वीतराग चारित्रमें परिणमन है ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (सह साह रमन उव उवन अनंतु) इसी साधनमें रमनेसे अनन्तगुण प्रगट होजाते हैं (उव रमन कमल ध्रुव सिद्धि संपत्तु) शुद्धात्मारूपी कमलमें रमण करता हुआ परमात्मा ध्रुव सिद्धिको पालेता है ॥ १३ ॥

(उव उवन रंज जय जयो जिनुत्तु) जिनेन्द्रने कहा है कि आत्मज्ञानमें रंजायमान होनेकी जय हो जय हो (जै जयं जयं जय रंज सिधि रत्तु) इसीसे कर्मोंपर विजय करते हुए आत्मा स्वात्ममगनता बढ़ाकर सिद्ध स्वरूपमें मगन रहता है (सुइ रंज उवन उव उवन जिनेंद) उस आत्मानन्दकी मगनताके पूर्ण प्रकाशसे जिनेन्द्रपद प्रगट होजाता है (जिन जिनय कमलं सुइ पर्म जिनेन्द) कर्मविजयी कमल सम आत्मा ही श्रेष्ठ जिनेन्द्र हैं ॥१४॥

(उव उवन उवन षिपि षिपिय अनंतु) आत्मज्ञानके प्रकाशसे क्षायिक भाव होता है जिससे अनन्त कर्म क्षय होजाते हैं (षिपि षिपन रमन जिन सिद्धि रत्तु) कर्मकी क्षय करके क्षायिक भावमें रमण करनेवाले जिनेन्द्र सिद्ध भावमें रत रहते हैं (उव उवन षिपन सुइ ममल नंतु) कर्मोंके क्षय होनेसे आत्मा अनन्त काल तक शुद्ध रहता है (उव ममल रमन ध्रुव सिद्धि संपत्तु) इसी शुद्ध भावमें रमण करता हुआ परमात्मा ध्रुव सिद्धगतिको पालेता है ॥ १५ ॥

(उव उवन सियं सिय मुक्ति सहाउ) शुद्धोपयोगका प्रकाश होना सो ही शुद्ध मुक्तिका स्वभाव है (सिय रमन सियं ध्रुव उव सुभाउ) शुद्धोपयोगमें रमणसे शुद्ध व ध्रुव आत्माका स्वभाव प्रगट होजाता है (विन्यान वीस

२९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौ उवन स नंत) इसी आत्मज्ञानसे वर्तमान चौबीस तीर्थंकर मोक्ष गये हैं व अनन्त तीर्थंकर मोक्ष गये हैं। यदि विन्यान वीर्य पाठ लें तो अर्थ होगा कि ज्ञान सहित आत्मबलसे अनन्त चतुष्टय व अनन्तज्ञानादि प्रगट होजाते हैं (सिय ध्रुवं ध्रुवं सिय सिद्धि संपत्तु) जब शुद्धोपयोग पूर्ण ध्रुवरूपसे प्रगट होजाता है तब शुद्ध व ध्रुव सिद्धगति प्राप्त होजाती है ॥ १६ ॥

(उव उवन वीरु विन्यान संजुत्तु) जब आत्मामें अनन्त वीर्यके साथ अनन्तज्ञान प्रगट रहता है (सुइ उवन सेनि जिन कलन स उत्तु) उसीको जिनेन्द्रके गुणस्थान या पदका प्रकाश कहा गया है जहां जिनेन्द्र स्वभावमें मगन हैं (उव तार तरन जिन कमल जिनुत्तु) कमल समान जिनेन्द्रको ही तारणतरण अरहन्त जिनेन्द्रमे कहा है (सुइ समय उवन जिन सिद्धि संपत्तु) वे ही प्रकाशमान परमात्मा जिनेन्द्र सिद्धगतिको पाते हैं ॥ १७॥

भावार्थ—इस उवन अर्क सोलहीमें यही बताया है कि परमात्मा अरहन्त व सिद्धरूपी सूर्यका प्रकाश शुद्धात्माके अनुभवसे होता है, वहीं श्रद्धा सहित रमणता होती है, वहीं चारित्र है, वहीं समभाव है, वहीं शुद्धोपयोग है। यही जैनधर्म है, यही मोक्षका साधन है, अनन्त तीर्थंकर व केवली इसी साधनसे सिद्ध हुए हैं। इसके सिवाय और कोई सर्व प्रयोजन सिद्ध करनेवाला मार्ग नहीं है। इस स्वात्मानुभवरूपी मोक्षमार्गके साधनसे आत्मानन्द आता है। पांच इंद्रियोंके विषयसुखकी तृष्णा तब मिट जाती है। विषय सुख संसारवर्द्धक है। आत्मीक आनन्दका अनुभव संसारनाशक है। निश्चयसे मोक्षपद या परमात्मपद अतीन्द्रिय है, अगम है। उसका साधन भी अतीन्द्रिय व अगम है। जो मन, वचन, कायको रोककर उपयोगको मन व इंद्रियोंसे हटाकर आपसे आपमें रमण करता है तब अतीन्द्रिय स्वात्मानुभव होता है। यही साक्षात् मोक्षका उपाय है। भव्यजीवोंको इसीका पुरुषार्थ करना चाहिये।

समयसारमें श्री कुन्दकुन्दाचार्य कहते हैं—

परमट्ठो खलु समओ सुद्धो जो केवली मुणी णाणी। तह्मि ठिदा सब्भावे मुणिणो पावंति णिव्वाणं ॥ १६१॥

भावार्थ—उत्कृष्ट पदार्थ यह आत्मा है यही शुद्ध है, केवली है, मुनि है, ज्ञानी है। जो इस शुद्ध आत्माके स्वभावमें स्थिर होते हैं, वे ही मुनि निर्वाणको पाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१३९) जै जै मेल समय गाथा २८६९ से २८८७ तक।

उव उवन उवन उव उवन जिना, उव उवन समय जै सिधि गमना।
जै जयो जयो जय उवन जिना, सह समय मुक्ति जिन सिध रमना ॥ १ ॥
जै जै मेल समय षैंचे उवनु जिना, जै जै मुक्ति गमन जिन सिधि रमना (आचरी) ॥ २ ॥
जै जै उवन हियं हिय समय जिना, जै जै उवन हियं अब गहै जिना।
अव गहै उवन गुरु लघु रमना, जै अव्वावाह जिन जिनय जिना ॥ जै जै० ॥ ३ ॥
हिय हियं उवन लष अलष जिना, मय उवन समय जिन अगम जिना।
मितु मिलन उवन दिपि दिष्टि जिना, जिन उवन सब्द पिउ सिधि गमना ॥ जै० ॥ ४ ॥
परिनवै पर्म जिन उवन जिना, सह साह गमन जिन सिय ध्रुव रमना।
जै सब्द उवन पिउ सुवन जिना, जै उवन कमल केवल उवना ॥ जै० ॥ ५ ॥
परिनतु सुइ समय मलय रमना, दिपि दिष्टि सब्द पिउ उवन जिना।
कोमल सुइ कमल सुइ हिय उवना, अवयास कमल सिय साहि जिना ॥ जै० ॥ ६ ॥
कोमल कलि कलन उव उवन जिना, कलि कलन चरन जिन सिधि रमना।
दिपि दिष्टि रमन जिन अगम गमा, हुव गमन मुक्ति कोमल रमना ॥ जै० ॥ ७ ॥
कोमल सुइ उवन सिय ललिय जिना, हिय रमन जिनय जिन ध्रुव रमना।
किर्नि किर्नि ललिय जै जै जैना, जै जयो जयो जय मुक्ति जिना ॥ जै० ॥ ८ ॥
हिय हुवं रमन गम अगम जिना, जं जं रमन गमन तं तं हुवन जिना।
जं जं सब्द सुवन सुइ सुवन समा, तं तं हुवन उवन जिन मुक्ति जिना ॥ जै० ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिय ऊवं लब्धि जिन उवन जिना, जय सुयं लब्धि जिन सुइ रमना ।
वे वेय विन्यान सुइ उवन जिना, वे विनंद विली नन्द मुक्ति जिना ॥ जै० ॥ १० ॥
का कमल काज जिन जिनय जिना, सुइ क्रांति समय जिन रमन जिना ।
उव उवन क्रांति हिय उवन जिना, सुइ कल्प रमन जिन मुक्ति जिना ॥ जै० ॥ ११ ॥
जै जै फास रमन स्फटिक जिना, तं तं विक्त रमन अविक्त उवना ।
तं तं विक्त षिपन अविक्त स्रवना, तं परमानंद अविक्त उवना ॥ जै० ॥ ११ ॥
सुइ सब्द रमन लष अलष जिना, उव सब्द रमन गम अगम रमा ।
इष्ट उवन सब्द उव उवन जिना, उव उवन सब्द इष्ट मुक्ति जिना ॥ जै० ॥ १३ ॥
इष्ट उवन सब्द वस उवन जिना, उव उवन सब्द हुव उव गमना ।
उव अगम अलष सिधि उव रमना, इष्ट उवन लषन लष अलष उवना ॥ जै० ॥ १४ ॥
इष्ट उवन रमन लष उवन जिना, उव उवन रमन मुक्ति अलष रमना ।
इष्ट गमन रमन गम उवन मना, उव उवन अगम हुव सिधि गमना ॥ जै० ॥ १५ ॥
पर्जय इष्ट रमन सुइ उवन मना, पजय उवन उवन सुइ मुक्ति मना ।
इष्ट लषन गमन गम लषय मना, उव अलष अगम मनु मुक्ति जिना ॥ जै० ॥ १६ ॥
हिय हुव सुइ लब्धि सु जिनय जिना, उव कल्प उवन हिय हुव रमना ।
सुइ कल्प सुयं लहि लब्धि जिना, उव उवन हियं हुव सिधि रमना ॥ जै० ॥ १७ ॥
जय वीर समय उव उवन जिना, जै पूर्व रमन दिपि दिष्टि जिना ।
उव उवन कलन जिन स्रेनि जिना, सुइ स्रेनि कलन कलि सिधि गमना ॥ जै० ॥ १८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जे तार तरन जै जै रमना, जै उवन कमल जिन सिधि गमना।
जै तार कमल जिन ध्रुव उवना, उव उवन समय सिधि मुक्ति जिना ॥ जै० ॥ १९॥

अन्वय सहित अर्थ—(उव उवन उवन उव उवन जिना) प्रगट होते होते श्री जिनेन्द्र प्रगट हुए हैं (उव उवन समय जिन सिधि रमना) परमात्मा जिनेन्द्र प्रकाश करते हुए सिद्धभावमें रमण कर रहे हैं (जै जयो जयो जय उवन जिना) उदयरूप जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो, जय हो (सह समय मुक्ति जिन सिधि रमना) जो अपने आत्माको मुक्त करते हुए सिद्ध स्वभावमें रमण कर रहे हैं ॥ १ ॥

(जै जै मेल समय षैंचें उवन जिना) जब परमात्माके स्वभावसे मेल किया जाता है तब अपना स्वभाव भीतरसे खिंचकर प्रगट होते होते जिनेन्द्ररूप होजाता है (जै जै मुक्ति गमन जिन सिधि रमना) मोक्ष जानेवाले व सिद्धभावमें रमण करनेवाले जिनेन्द्रकी जय हो ॥ २ ॥

(जै जै उवन हिंयं हिय समय जिना) जब आत्माका हित प्रगट होता है तब हितकारी परमात्मा जिनका उदय होजाता है (जै जै उवन हिंयं अवगहै जिना) जो आत्महितको प्रकाश करता है वह जिनेन्द्रके स्वभावमें रमण करता है (अवगहै उवन गुरु लघु रमना) जब सिद्ध स्वभावमें प्रवेश किया जाता है तब अगुरुलघु गुणमें रमण किया जाता है अर्थात् निश्चयनयसे सर्व ऊंच नीच भावकी कल्पना मिटाकर समभावमें रमा जाता है (जै अव्वाबाह जिन जिनय जिना) इसी तरह कर्मोंको जीतकर बाधा रहित जिनेन्द्र होजाता है ॥ ३ ॥

(हिय हिंयं उवन लष अलष जिना) जब हित करनेका भाव मनमें पैदा होता है तब अतीन्द्रिय परमात्मा जिनको पहचाना जाता है (मय उवन समय जिन अगम जिना) तब ही वह ज्ञान पैदा होता है कि परमात्मा जिनका स्वभाव मन व इंद्रियोंसे अगोचर अनुभवगम्य है (मितु मिलन उवन दिपि दिष्ट जिना) जब मित्रके समान परमात्माके स्वभावसे मिला जाता है तब वीतरागमई ज्ञान दर्शन प्रगट होजाता है (जिन उवन सव्द पिउ सिधि गमना) जिसको जिन शब्द प्यारा लगता है, जिस शब्दके द्वारा जिन स्वभाव प्रगट होता है वह सिद्धभावको प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥

(परिनवै पर्म जिन उवन जिना) अपने भावको परमात्मा जिनमें जोड़नेसे जिन स्वभाव प्रगट होता है (सह साहं गमन जिन सिय ध्रुव रमना) साधने योग्य ज्ञानमई जिन स्वभावको ध्यानमें लेकर जब शुद्ध ध्रुव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्माके स्वभावमें रमण होता है (जै सब्द उवन पिउ सुवन जिना) तथा जिन स्वभावको बतानेवाले प्रिय शब्दका आलम्बन लिया जाता है (जय उवन कमल केवल उवना) तब कमल समान आत्माका स्वभाव विकसित होजाता है, तब केवलज्ञान प्रगट होजाता है ॥ ५ ॥

(परिनतु सुइ समय मलय रमना) आत्माको परिणमाकर मलयागिर चन्दनके समान परमात्मामें रमाना चाहिये.(दिपि दिष्टि सब्द पिउ उवन जिना) ज्ञान दर्शन शब्दोंके द्वारा मनन करना चाहिये जिससे जिन स्वभाव प्रगट हो (कोमल सुइ कमल सुइ हिय उवना) तब कोमल कमलके समान वीतराग शांत आत्माका हितकारी अनुभव प्रगट होगा (अवयास कमल सिय साहि जिना) तब कमल सम आत्माका विकास होजायगा, शुद्धोपयोग रूप जिन स्वभाव साध लिया जायगा ॥ ६ ॥

(कोमल कलि कलन उव उवन जिना) नम्रतासे व विनयसे कोमल स्वभाव द्वारा जब आत्माका अनुभव किया जायगा तब जिन स्वभाव प्रगट होगा (कलि कलन चरन जिन सिधि रमना) जब वीतराग चारित्रका अभ्यास किया जाता है तब सिद्धोंके वीतराग स्वभावमें रमण होजाता है (दिपि दिष्टि रमन जिन अगम गमा) जब ज्ञानदर्शन स्वभावमें रमण किया जाता है, तब अतीन्द्रिय जिन परमात्माका अनुभव होजाता है (हुव गमन मुक्ति कोमल रमना) आत्मध्यानसे मुक्तिमें जाकर कोमल शांत स्वभावमें सदा रमण होता है ॥७॥

(कोमल सुइ उवन सिय ललिय जिना) सिद्ध प्राप्त जिनेन्द्र कोमल स्वभावमें व शुद्ध स्वभावमें व ललित अर्थात् बड़े ही सुन्दर स्वभावमें प्रगट रहते हैं (हिय रमन जिनय जिन ध्रुव रमना) वे जिनेन्द्र स्वात्महितमें व जिन स्वभावमें ध्रुवरूपसे रमण करते रहते हैं (किर्नि किर्नि ललिय जै जै जैना) वे जिनेन्द्र हरएक आत्माके प्रदेशमें शोभायमान हैं उनकी जय हो, जय हो (जै जयो जयो जय मुक्ति जिना) इस तरह मोक्ष प्राप्त जिन भगवानकी जय हो, जय हो ॥ ८ ॥

(हिय हुवं रमन गम अगम जिना) हितकारी आत्मध्यानमें रमण करनेसे अनुभवगम्य जिन स्वभाव अपने अनुभवमें आजाता है (जं जं रमन गमन तं तं हुवन जिना) जैसे जैसे रमण किया जाता है वैसे वैसे वीतरागमई ध्यान बढ़ता जाता है (जं जं सब्द सुवन सुइ सुवन समा) जैसे जैसे मन्त्रोंके शब्दोंका मनन किया जाता है वैसे वैसे समभाव आता जाता है (तं तं हुवन उवन जिन मुक्ति जिना) जैसे जैसे ध्यान बढ़ता जाता है वैसे वैसे मोक्ष प्राप्त जिनेन्द्रका पद प्रगट होता जाता है ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(हिय सुयं लब्धि जिन उवन जिना) जब वीतरागी आत्मामें हितकारी ध्यान प्राप्त होजाता है, तब जिनपद प्रगट होजाता है (जय सुयं लब्धि जिन जिन सुइ रमना) जिनपदकी प्राप्ति स्वयं ही होती है—अपने पुरुषार्थसे होती है, वह पुरुषार्थ वीतराग जिन स्वभावमें रमण है (वे वेय विन्यान सुइ उवन जिना) जब भेद-विज्ञान द्वारा स्वानुभव होता है, तब जिनपद प्रगट होता है (वे विनंद विली नंद मुक्ति जिना) तब संसारका दुख सुख दोनों नाश होजाता है, परमानन्द प्राप्त होजाता है और जिनेन्द्र मुक्त होजाते हैं ॥ १० ॥

(का कमल कार्ज जिन जिनय जिना) जल कमलके समान कर्मविजयी जिन कार्य स्वरूप हैं। उनकी प्रगटता ध्यानरूपी साधनसे होती है (सुइ क्रांति समय जिन रमन जिना) वे शोभायमान आत्मा जिनेन्द्र वीतराग भावमें रमण करते रहते हैं (उव उवन क्रांति हिय उवन जिना) उनमें आत्माकी पूर्ण शोभा प्रगट है। उनमें आत्महित प्रगट है (सुइ कल्प रमन जिन मुक्ति जिना) वे ही स्वानुभवमें रमण करते हुए मुक्तप्राप्त जिनेन्द्र हैं ॥ ११ ॥

(जै जै फास रमन स्फटिक जिना) श्री जिनेन्द्र पवित्र आत्मामें रमण करते हैं जो स्फटिक पाषाणके समान निर्मल है (तं तं विक्त रमन अविक्त उवना) उनके प्रगट स्वभावमें जैसे जैसे रमण किया जाता है अप्रगट स्वभाव वैसे वैसे प्रगट होता जाता है (तं तं विक्त षिपन अविक्त सुवना) जैसे जैसे प्रगट सत्तामें व उदयरूप कर्म क्षय होते जाते हैं वैसे २ अप्रगट गुण प्रगट होते जाते हैं (तं परमानंद अविक्त उवना) इसी उपायसे वह परमानन्द जो अप्रगट है—गुप्त है वह प्रगट होजाता है ॥ १२ ॥

(सुइ सब्द रमन लष अलष जिना) इसी तरह शब्दोंके द्वारा स्वभावका अनुभव करनेसे अतीन्द्रिय जिन स्वभाव प्रगट होता जाता है (उव सब्द रमन गम अगम रमा) शब्दोंके द्वारा ज्ञानमें रमण करनेसे अतीन्द्रिय स्वभावमें रमण होजाता है (इष्ट उवन सब्द उव उवन जिना) आत्म प्रकाशक इष्ट शब्दोंके द्वारा आत्मामें रमण करनेसे जिन स्वभाव प्रगट होता है। शुक्लध्यानसे ही अरहन्तपद होता है (उव उवन सब्द इष्ट मुक्ति जिना) अरहन्त भगवानके द्वारा मनोहर वाणीका प्रकाश होता है, फिर वे जिनेन्द्र मोक्षपदको प्राप्त कर लेते हैं ॥१३॥

(इष्ट उवन सब्द वस उवन जिना) हितकारी शब्दोंके आधीन भाव प्रगट होते हैं, उन दोनोंके द्वारा जिन स्वभाव प्रकाशित होता है (उव उवन सब्द हुव उव गमना) शब्दोंके भावोंके द्वारा ध्यानका प्रकाश होता है (उव अगम अलष सिधि उव रमना) तब ध्यानके होते हुए मन, वचन, कायसे अगोचर अनुभवगम्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्ध स्वरूपमें रमण होता है (इष्ट उवन लषन लष अलष उवना) इष्ट ज्ञानमई लक्षणको अनुभव करनेसे अतीन्द्रिय ज्ञानका प्रकाश होता है ॥ १४ ॥

(इष्ट उवन रमन लष उवन जिना) इष्ट ज्ञानमें रमणके अनुभवसे जिनपद प्रगट होता है (उव उवन रमन लषि मुक्ति अलष रमना) ज्ञानके भीतर रमण करनेसे अनुभवगोचर मोक्षके स्वरूपमें रमण होता है (इष्ट गमन रमन गम उवन मना) इष्ट आत्मज्ञानमें रमण करनेसे ज्ञानका प्रकाश होता है (उव उवन अगम हुव सिधि गमना) अतीन्द्रिय स्वभावका ध्यान द्वारा प्रकाश होनेसे आत्मा सिद्धगतिको जाता है ॥ १५ ॥

(पर्जय इष्ट रमन सुइ उवन मना) इष्ट पर्याय एक सिद्ध पर्याय है, इसमें रमण करनेसे ज्ञानका प्रकाश होता है (पर्जय उवन उवन सुइ मुक्ति मना) शुद्ध पर्याय प्रगट होते होते आत्मा मोक्ष प्राप्त करता है (इष्ट लषन गमन गम लषय मना) तब इष्ट आत्माका लक्षण ज्ञानमें ध्याया जाता है, तब ज्ञानका अनुभव आता है (उव अलष अगम मनु मुक्ति जिना) तब हो अतीन्द्रिय स्वभावका ऐसा स्वाद आता है, मानों कर्मरहित मुक्तिको जीत लिया गया ॥ १६ ॥

(हिय हुव सुइ लब्धि सु जिनय जिना) जब हितकारी शुक्लध्यानकी प्राप्ति होती है, तब जिन पदका प्रकाश होता है (उव कल्प उवन हिय हुव रमना) हितकारी ध्यानमें रमण करनेसे इच्छित पद प्रकाश होजाता है (सुइ कल्प सुयं लहि लब्धि जिना) इच्छित पद एक जिनराज पदकी नौ लब्धियोंका प्रकाश है अनन्तज्ञानादि (उव उवन हिय हुव सिधि रमना) हितकारी शुक्लध्यानके प्रकाशसे ही आत्मा सिद्धगतिमें रमण करता है ॥ १७

(जय वीर समय उव उवन जिना) श्री वीर परमात्मा जिनेन्द्रका प्रकाश हुआ है उनकी जय हो (जै पूर्व रमन दिप्ति दिष्टि जिना) जो अपूर्व अनन्तज्ञान व अनन्तदर्शनमें रमण कर रहे हैं (उव उवन कलन जिन सेनि जिना) श्री जिनेन्द्र अपने गुणस्थानमें होते हुए उसका अनुभव कर रहे हैं (सुइ सेनि कलन काल सिधि गमना) वे ही तेरहवें व चौदहवें गुणस्थानोंका अनुभव करके अन्तमें सिद्धपदको प्राप्त होते हैं ॥ १८ ॥

(जै तारन तरन जय जय रमना) स्वात्मरमी तारण तरण अरहन्तकी जय हो (जै उवन कमल जिन सिधि गमना) प्रकाशित कमल समान जिनकी जय हो, जो सिद्धपदको जाते हैं (जै तार कमल जिन धुव उवना) संसार तारक कमल सम जिनेन्द्रकी जय हो, जिन्होंने ध्रुवरूपसे अपनेको प्रगट कर दिया है (उव उवन समय सिधि मुक्ति जिना) वे ही प्रकाशित परमात्मा सिद्ध हो मुक्तिको जीत लेते हैं ॥ १९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

भावार्थ—इस जैजै मेल समयमें यही बताया है कि परमात्मा जिनेन्द्रके साथ मेल करनेसे अपने भीतरके अप्रगट गुण बाहर खिंचकर आजाते हैं अर्थात् प्रगट होजाते हैं और वह सच्चा भक्त या ध्यानी स्वयं परमात्मा होजाता है, मित्रके समान सिद्ध स्वभावसे प्रेम करना चाहिये। ध्यानमें समभावको जागृत करनेके लिये निश्चय नयसे देखकर सर्व जगकी आत्माको एकसमान शुद्ध सिद्धसम देखना चाहिये। आत्महितकी श्रद्धा बहुत ही आवश्यक है। श्रद्धावान ही उन्नति करके परम पद प्राप्त कर लेना है। परमात्माका स्वभाव स्फटिक पाषाणके समान बिलकुल निर्मल है। उनके आत्मामें कोई रागादि विकार व कोई अज्ञान नहीं है। वे परम वीतराग व परमानन्दमई हैं, केवल शुद्ध आत्मा हैं, किसी कर्म पुद्गलका भी सम्बन्ध नहीं है। ऐसे परम सुन्दर व शांत स्वरूपके साथ मेल करना चाहिये, उसको ध्यानमें लेकर ध्याना चाहिये। जैसे दीपककी लौसे बत्ती लगती है तब स्वयं दीपकस्वरूप होजाती है, इसी तरह जो परमात्माको ध्याता है वह परमात्मा होजाता है। ध्यानका उपाय यह है कि श्रद्धा रखकर शब्दोंके द्वारा भावोंका मनन करे। मनन करते करते जब चित्त स्थिर होता है तब ध्यान होजाता है। धर्मध्यानमें तो शब्दोंकी जरूरत है। शुक्लध्यानमें भी बारहवें गुणस्थान तक शब्दोंकी आवश्यक्ता ध्यानके आलम्बनसे होती है। वास्तवमें शब्दोंके द्वारा व मनके द्वारा मनन एक निमित्त है। इस निमित्तसे जब निर्विकल्प व अतीन्द्रिय आत्मानुभव होता है तब ही यथार्थ मोक्षमार्ग स्वरूप आत्मध्यान प्रगट होता है। इसीसे ध्यानाग्नि द्वारा जैसे जैसे कर्मोंका नाश होता है वैसे वैसे आत्माके गुण प्रगट होते जाते हैं। जैसे मलीन सुवर्ण अग्निकी लौसे मैलको हटाते हटाते पूर्ण शुद्ध होजाता है वैसे आत्मा ध्यान अग्निसे सर्व कर्म क्षय करके सिद्ध होजाता है, मुक्त होजाता है। यह छन्द भी आत्माके मननका एक अच्छा साधन है। यह वाणी आत्माको वास्तवमें प्रकाश करनेवाला है। अध्यात्मज्ञान वही है जिससे आत्माका अनुभव हो। वास्तवमें आत्माके ही साधनसे आत्मा शुद्ध होता है। श्री समयसारमें कहा है—

णाणह्मि भावणा खलु, कादव्वा दंसणे चरित्ते य। ते पुणु तिण्णि वि आदा, तम्हा कुण भावणं आदे ॥ ११ ॥

जो आदभावणमिणं णिच्चुवजुत्तो मुणी समाचरदि। सो सव्वदुक्खमोक्खं, पावदि अचिरेण कालेण ॥ १२ ॥

भावार्थ—प्रथम शिष्यको सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्रकी भिन्न २ भावना करनी चाहिये, फिर केवल एक आत्माकी ही भावना करनी चाहिये, क्योंकि इन तीन स्वरूप आत्मा ही है। ॥२३३॥

३०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो मुनि नित्य उपयोग लगाकर अपने आत्माके शुद्ध स्वभावको ध्याता है वह थोड़े ही कालमें सर्व दुःखोंसे मुक्त होजाता है।

(१४०) दिसि अंग फूलना गाथा २८८८ से २९०४ तक।

उव उवन उवन पय उव उवन समय जय, उव उवन उवन उव उवन वरी।
जय जयो जयो जय जयो जय जिन, जै रमन सुयं जिन मुक्ति वरी ॥ १ ॥
जय जै उवन पौ उवन रसै, उव उवन समय सुइ मुक्ति वसै (आचरी) ॥ २ ॥
जय जयो जयो जय जय रमन उवन जै, जै जयो जयं जिननाथ रमै।
जय रमन रमन उव रमन जयं जिन, उव रमन समय जिन मुक्ति वसै ॥जय जयो०॥३॥
जै जयो उवन जिन जय उवन हिय जिन, सहयार सहज जिन रमन वसै।
आयरन उवन हिययार सहज जिन, सुइ नंद समय जिन मुक्ति वसै ॥ जय० ॥ ४ ॥
जय जान जिनय रिजु विपुल वसै, जै जै जयं जय मुक्ति समय।
पयं पय पय पय पम रमन जिन, पय पयं उवन जिन मुक्ति रमै ॥ जै० ॥ ५ ॥
पय पयह पयं जिन पय विंद रमन जिन, पय विंद रमन जिन उवन रसै।
उव उवन अर्क सुइ विंद रमन जिन, उव सुन्न रमन जिन मुक्ति वसै ॥ जै० ॥ ६ ॥
दिसि दिप्ति रसै दिप्ति दिस्टि वसै, उव उवन पूर्व दिसि उवन रमै।
उव उवन सहावे सब्द प्रिये जिन, दिसि अग्र उवन जिन मुक्ति गमै ॥ जै० ॥ ७ ॥
पूर्व पूर्व रमै अग्र उवन समय, अग्र पूर्व रमन आयरन रमै।
दिपि दिस्टि रमन आयरन दर्स जिन, दर्स नन उवन सिधि सिद्ध गमै ॥ जै० ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नृत नृत उवन जिन प्रिय इच्छ समय जिंन, सुइ प्रिछ प्रिये प्रिय उवन रमै ।
वा इव विक्त सुइ विक्त अविक्त जिन, अविनन्द परम जिन मुक्ति गमै ॥ जै० ॥ ९ ॥
सुइ विक्त अविक्त जिन उत्पन्न रमन जिन, उत्पन्न रमन तत्काल रमै ।
उत्तर दिसि उवन रमन जिन उवने, उत्पन्न ईस जिन मुक्ति गमै ॥ जै० ॥ १० ॥
ईस ईस इसे नंतानंत रसै, सुइ लोय लोय सुइ ईस वसै ।
सुइ लोय लोय अवलोय पम जिन, सुइ नन्त उवन जिन मुक्ति वसै ॥ जै० ॥ ११ ॥
ऊर्ध ऊर्ध ऊध जिन आगंतु समय जिन, अर्ध ऊर्ध नंत जिन उवन गमै ।
उव उवन उवन आयरन रमन जिन, दिसि दस समय जिन मुक्ति रसै ॥ जै० ॥ १२ ॥
दिसि दर्स रमन जिन वसु अंग समय जिन, उव उवन अर्क ध्रुव विंद रम ।
उव उवन उवन आयरन कमल जिन, ध्रुव कमल उवन जिन सिद्धि गमै ॥ जै० ॥ १३ ॥
इस्ट इष्ट षिपक जिन उव उवन षिपक जिन, उव उवन इस्ट उव मुक्त षिपै ।
उव उवन मुक्त सुइ विनन्द विली जिन, ह्रिययार रमन जिन मुक्ति वसै ॥ जै० ॥ १४ ॥
ह्रिय रमन अर्क जिन सुइ विंद समय जिन, आगंतु ह्रिय हुव रमन रमै ।
सुइ गुहिर गुप्ति आयरन परम जिन, सुइ गुप्ति जान जिन मुक्ति गमै ॥ जै० ॥ १५ ॥
सुइ गुप्ति जान जिन मन उवन उवन जिन, जिन उवन उवन पय पयं गमै ।
पय पयं उवन अस्टंग रमन जिन, दिसि अंग समय सुइ मुक्ति रमै ॥ जै० ॥ १६ ॥
उव उवन सेनि कलि कलन रमन पौ, जिन सेनि कलन जिन जयो जयं ।
सुइ तारन तरन ध्रुव कमल उवन जै, सह समय उवन जिन पर्म पयं ॥ जै० ॥ १७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्वय सहित अर्थ—(उव उवन उवन पय उव उवन समय जय) उन्नतिरूप पदमें विराजित परमात्माकी जय हो (उव उवन उवन उव उवन वरी) जिन्होंने ज्ञानको प्रगट करते करते केवलज्ञानको प्राप्त किया है (जय जयो जयो जय जयो जयं जिन) कर्मविजयी, रागादि विजयी जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो (जय रमन सुयं जिन मुक्ति वरी) श्री जिनेन्द्रने अपने आपमें रमण करके मोक्ष प्राप्त की है ॥ १ ॥

(जय जै उवन पौ उवन रसै) ज्ञानमई पदकी जय हो जहां जिन ज्ञानका रस लेरहे हैं (उव उवन समय सुइ मुक्ति वसै) जब परमात्मा पद प्रगट होजाता है तब मोक्षमें वास होता है ॥ २ ॥

(जय जयो जयो जै जै रमन उवन जै) ज्ञानमें रमण करनेवाले जिनेन्द्रकी जय हो जय हो (जै जयो जयो जय जिननाथ रमै) श्री जिनेन्द्र संसारकी विजयमें रमण कर रहे हैं (जय रमन रमन उव रमन जयं जिन) आत्मामें रमण करते करते जिनेन्द्रके स्वात्मरमण प्रगट हुआ है (उव रमन समय जिन मुक्ति वसै) जब आत्मामें पूर्ण रमण होजाता है तब जिनेन्द्र मोक्षमें वास करते हैं ॥ ३ ॥

(जय जयो उवन जिन जय उवन हियं जिन) प्रकाशमान जिनेन्द्रकी जय हो, हितको प्रगट करनेवाले जिनकी जय हो (सहयार सहज जिन रमन वसै) सहज ही विना प्रयत्नके भव्योंको सहाय करनेवाले जिनेन्द्र स्वात्मरमण-में वसते हैं (आयरन उवन हियार सहज जिन) वीतराग चारित्रके साधनसे हितकारी सहज जिनपद प्रगट होता है (सुइ नंद समय जिन मुक्ति वसै) वे ही परमानन्दी परमात्मा जिन मोक्षमें वास करते हैं ॥ ४ ॥

(जय जान जिनय रिजु विपुल वसै) जैनधर्मका मार्ग सरल है व विशाल है (जय जय जयं जय मुक्ति समय) जिस जैनधर्मके आराधनसे आत्मा मुक्तिको जीत लेता है (पय पय पय पय पर्म रमन जिन) पद पद पर, श्रेणी रूपसे चढते हुए परमात्मा पद होता है जहां वीतरागभावमें रमण होता है (पय पयं उवन जिन मुक्ति रमै) जब परमपद प्रगट होजाता है तब जिनेन्द्र मोक्षके भावमें रमण करते है ॥ ५ ॥

(पय पयह पयं जिन, पय विंद रमन जिन) पद पद पर उन्नति करते जिनपद होता है तब जिनेन्द्र उस परमपदके अनुभवमें रमण करते हैं (पय विंद रमन जिन उवन रसै) उस पदमें रमण करनेसे जिनेन्द्रको आनंद रसका स्वाद आता है (उव उवन अर्क सुई विंद रमन जिन) जब सूर्य समान आत्मा प्रकाशित होता है तब वही ज्ञानभावमें रमण करता रहता है (उव सुन्न रमन जिन मुक्ति वसै) रागादि परभावोंसे शून्य एक शुद्ध भावमें रमण करनेवाले जिनेन्द्र मोक्षमें वास करते हैं ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(दिसि दिसि रसै दिपि दिष्टि वसै) मुक्तिकी दिशाकी तरफ ज्ञानका उत्साह होनेसे वह आत्मा अपने ज्ञानदर्शन स्वभावमें रहता है (उव उवन पूर्व दिसि उवन रमै) केवलज्ञान सूर्यको प्रगट करनेयोग्य पूर्वदिशाके समान अपूर्व स्वानुभवरूप शुक्लध्यान जब प्रगट होजाता है तब वे उसीमें रमण करते हैं (उव उवन सहावे सब्द प्रिये जिन) ज्ञान स्वभावके प्रगट करनेमें प्रिय जिन शब्द भी सहायक होता है। जिन शब्द द्वारा जिनके स्वभावपर लक्ष्य रखनेसे जिनपद प्रगट होता है (दिसि अग्र उवन जिन मुक्ति गमै) जब मुख्य दिशा या चतुर्थ शुक्लध्यान प्रगट होता है, तब जिनेन्द्र ऊर्ध्वगमन स्वभावसे मोक्षमें जाकर वास करता है ॥ ७ ॥

(पूर्व पूर्व रमै अग्र उवन समय) जैसे जैसे पूर्वदिशाके समान शुक्लध्यानमें रमा जाता है वैसे वैसे आत्मा-रूपी सूर्य प्रगट होनेके सन्मुख होता है (अग्र पूर्व रमन आवरन समै) मुख्य पूर्वदिशारूप द्वितीय शुक्लध्यानके रमणमें आत्माके वीतराग यथाख्यात चारित्र प्रगट होता है (दिपि दिष्टि रमन आयरन दर्स जिन) अनन्तज्ञान व अनन्तदर्शन प्रगट होजाता है। जिनेन्द्र इस ज्ञानदर्शनके रमणसे वीतराग चारित्रका दर्शन करते रहते हैं (दर्स नृत उवन सिधि सिद्ध गमै) जब पूर्ण सत्य व शुद्ध आत्मदर्शन प्रगट होता है, सर्व कर्म क्षय होजाते हैं, तब मोक्षको सिद्धि करके आत्मा मोक्षमें प्राप्त होजाता है ॥ ८ ॥

(नृत नृत उवन जिन प्रिय इच्छ समय जिन) जब सत्य यथार्थ गुण जिनेन्द्रमें प्रगट होजाते हैं, तब वे हितकारी परमेष्ठी परमात्मा जिन कहलाते हैं (सुइ प्रिछ प्रिये प्रिय उवन रमै) तब वही भलेप्रकार अनुभव करते हुए अपने प्रकाशित परमप्रिय ज्ञानमें रमण करते रहते हैं (वा इव विक्त सुइ विक्त अविक्त जिन) जैसे उनको सुख प्रगट है वैसे वे स्थूल सूक्ष्म सबको जाननेवाले जिन हैं (अविनंद परम जिन मुक्ति गमै) उनमें कोई दुःख नहीं है, वे परमानन्दी हो मोक्षमें जाते हैं ॥ ९ ॥

(सुइ विक्त अविक्त जिन उत्पन्न रमन जिन) जो स्थूल सूक्ष्म सर्व पदार्थोंकी परिणतियोंको जाननेवाले ज्ञानमें रमण करते हैं, वे जिन हैं (उत्पन्न रमन तत्काल रमै) जबसे केवलज्ञान होता है, तबसे उसीमें रमण करते हैं (उत्तर दिसि उवन रमन जिन उवने) शुक्लध्यानको जो केवलज्ञानका साधक है पूर्वदिशा कहा है। उत्तर-दिशा उस चौथे शुक्लध्यानको कह सकते हैं जिससे वे योगरहित जिन होकर स्वभावमें रमण करते हैं (उत्पन्न ईस जिन मुक्ति गमौ) तब वे सर्वके स्वामी होकर शरीर छोड़कर सिद्धगतिमें जाते हैं ॥ १० ॥

(ईस ईस उव नंतानंत रमे) परमात्मा ईश होकर वे अनन्तानन्त आनन्दरसके भीतर मगन रहते हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सुइ लोय लोय संद ईसं वसैं) वे लोकालोकके स्वामी बने रहते हैं (सुइ लोय लोय अवलोय पर्म जिनं) वे परमात्मा जिन लोकालोकके जाननेवाले हैं व देखनेवाले हैं (सह नंत उवन जिन मुक्ति वसै) सो अनन्त काल तक प्रकाशित रहते हुए मोक्षमें वास करते हैं ॥ ११ ॥

(ऊर्ध ऊर्ध ऊर्ध जिंन आगंतु समय जिन) वे जिनेन्द्र तीन लोकके ऊपर बिराजित सबसे श्रेष्ठ हैं—स्वरूपमें रमणशील जिन हैं (अर्ध ऊर्ध नंत जिन उवन गमै) वे जिनेन्द्र आकाशके आधे भागको अर्थात् इस लोकको व ऊर्ध अर्थात् अलोकको जो अनन्त है, अपने ज्ञानसे जानते हैं (उव उवन उवन आवरन रमन जिन) वे परमात्मा जिनेन्द्र अपने ज्ञान व चारित्रमें रमण करते हैं (दिसि दर्प समय जिन मुक्ति रमै) वे परमात्मा जिन सर्व दिशाओंको देखते हुए मोक्षमें रमण कर रहे हैं ॥ १२ ॥

(दिसि दर्स रमन जिन वसु अंग समय जिन) सर्व दिशाओंको देखनेवाले व सम्यक्त आदि आठ सिद्धके गुणोंमें रमण करनेवाले परमात्मा जिन हैं (जिंन उवन अर्क धुव विंद रमै) वे सूर्य समान प्रगट होकर ज्ञानके अनुभवमें सदा रमण करते हैं (उव उवन उवन आयरन कमल जिन) वे ज्ञान व चारित्रके धारी कमल समान जिनेन्द्र हैं (धुव कमल उवन जिन सिद्ध गमै) वे ध्रुव कमल सम प्रगट रहते हुए सिद्धभावमें परिणमन करते हैं ॥१३॥

(इष्ट इष्ट षिपक जिन उव उवन षिपक जिन) श्री जिनेन्द्र परम इष्ट क्षायिक भावोंके धारी हैं—क्षायिक भावोंके द्वारा ही क्षायिक भावको प्रगट कर रहे हैं (उव उवन इष्ट उव मुक्त प्रियै) जब इष्ट क्षायिक सम्यक्त चारित्रादि भाव होते हैं तब इनसे भोगने योग्य कर्म क्षय होजाते हैं (उव उवन मुक्त सुइ विनंद विली जिन) भोगने योग्य कर्मोंके उदयसे जो दुःख होता है उसको वे दूर कर देते हैं (हिययार रमन जिन मुक्ति वसै) हितकारी भावमें रमण करते हुए जिनेन्द्र मोक्षमें वास करते हैं ॥ १४ ॥

(हिय रमन अर्क जिन सुइ विंद समय जिन) हितकारी भावमें रमण करनेवाले सूर्यसम जिनेन्द्र हैं या वही ज्ञानमें रमण करनेवाले परमात्मा जिन हैं (आगंतु हियं हुव रमन रमै) आनेवाले कर्मोंको हितकारी ध्यानसे जलानेवाले भावमें वे रमण करते हैं (सुइ गुहिर गुप्ति आयरन परम जिन) वे ही आत्माकी गुप्त गुफामें आचरण करनेवाले जिनेन्द्र हैं (सुइ गुप्ति जान जिन मुक्ति गमै) इसी गुप्त आत्मानुभवरूप मार्गसे जिन मोक्षमें जाते हैं ॥१५॥

(सुइ गुप्ति जान जिन मन उवन उवंन जिनं) वे ही जिनं गुप्त मोक्षमार्गपर चलकर ज्ञानको प्रगट करते रहते हैं (जिन उवन उवन पय पयं गमै) जैसे जैसे ज्ञानका प्रकाश होता है, पद पदपर वे बढ़ते रहते हैं (पय पयं रमन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

(जिन उवन उवन पय पय गम) जैसे जैसे ज्ञानका प्रकाश होता है, वह पदपर वे चढ़ते रहते हैं (पय पयं अमन अस्टंग रमन जिनं) इस तरह सिद्धपदमें जाकरके सम्यक्तादि आठ गुणोंमें रमण करते हैं (दिसि अंग समय सुइ मुक्ति गमै) आत्माके सर्व प्रदेशोंको दिशाके समान निर्मल करके वे मुक्त होजाते हैं ॥ १६ ॥

(उव उवन स्रेनि कलि कलन रमन पौ) जिनराजकी श्रेणीपर जाकरके जिन अपने पदमें रमण करके स्वात्मानुभव करते हैं (जिन स्रेनि कलन जिन जयो जय) जिन पदके अनुभव करनेवाले जिनेन्द्रकी जय हो (सुइ तारन तरन धुव कमल उवन जै) ऐसे तारणतरण अरहन्तकी जय हो, जिनका आत्मा कमल समान ध्रुव-रूपसे प्रगट रहता है (सह समय उवन जिन पर्म पयं) इस परमात्माके स्वभावको प्रगट करके वे परम पदमें सिद्धगतिमें रहते हैं ॥ १७ ॥

भावार्थ—इस दिसि अङ्ग फूलनामें अरहन्त व सिद्ध परमात्माकी स्तुति है। जैनधर्म परम कल्याणकारी सरल मोक्षमार्ग है। निश्चयसे यह ज्ञानमें रमणरूप है, इसीको सम्यक्त ज्ञान चारित्र कहते हैं। ज्ञानकी रमणतामें आनन्द भी आता है। इसी रमणको स्वानुभव कहते हैं, इसीका अभ्यास करते करते यह जीव शुक्लध्यान द्वारा अरहन्त होजाता है, फिर तीसरे चौथे शुक्लध्यानसे मुक्त होजाता है। आपहीके ध्यानसे आत्माकी उन्नति होती है। सिद्धपदमें आठ कर्मोंके नाशसे आठ गुण प्रगट कहे जाते हैं—सम्यग्दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य, सूक्ष्मत्व, अगुरुलघुत्व, अवगाहनत्व, अव्याबाधत्व। जैन धर्म निश्चयसे गुप्त आत्मानुभव है, इसीसे कर्मोंका क्षय होजाता है। धीरे धीरे गुणस्थानक्रमसे उन्नति होती है। जो आत्महित करना चाहे उनको अपने आत्माके शुद्ध स्वरूपका विश्वास लाकर उसीका ध्यान करना चाहिये, इसीसे वे सिद्धपदको प्राप्त करेंगे।

श्री समयसारजीमें कहा है—

एदह्मि रदो णिच्चं संतुट्ठो होहि णिच्चमेदह्मि। एदेण होदि तित्तो तो होहदि उत्तमं सोक्खं ॥ २१९ ॥

भावार्थ—शुद्धात्मामें ही सदा प्रेम करो, शुद्धात्मामें ही सदा सन्तोष मानो, शुद्धात्मामें ही तृप्त रहो तब तुम्हें सिद्ध सुख होगा।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१४१) समय उवन गाथा २९०५ से २९४१ तक।

उव उवन चिंतन जिन जैन श्री, उव उवन समय जिन मुक्ति वरी ॥ १ ॥
जय जयं जयं जिन आवलियां, उव उवन समय मुक्तावलिया (आचरी) ॥ २ ॥
मय मयं मयं मय ममल श्री, मय उवन ममल जिन मुक्ति वरी ॥ जय० ॥ ३ ॥
पय पयं पयं पय पर्भ सिरी, पय उवन रमन जिन मुक्ति वरी ॥ जय० ॥ ४ ॥
धुव धुवं धुवं धुव उवन रली, धुव कमल उवन जिन मुक्ति वरी ॥ जय० ॥ ५ ॥
सुव सुयं सुयं सुव उवन सुयं, सुव उवन पर्म जिन सिद्धि रयं ॥ जय० ॥ ६ ॥
पय उवन उवन जिन सिद्धि रयं, जिन उवन समय सुइ मुक्ति जयं ॥ जय० ॥ ७ ॥
ज दिप्ति सु दिप्ति जिन दिप्ति जयं, उव दिप्ति समय सम मुक्ति जयं ॥ जय० ॥ ८ ॥
जै दिस्टि इष्टि जिन दिस्टि जयं, उव दिस्टि रमन जिन दिप्ति सुयं ॥ जय० ॥ ९ ॥
उव दिप्ति जयं जय रमन रली, जै दिस्टि समय सम मुक्ति मिली ॥ जय० ॥ १० ॥
सुइ इच्छ इच्छ जय इच्छ जिनं, उव इच्छ रमन जिन सिद्धि रयं ॥ जय० ॥ ११ ॥
गुरु गुप्ति गुप्ति उव गुप्ति रयं, उव उवन गुप्ति जिननाथ जयं ॥ जय० ॥ १२ ॥
गुरु गुप्ति समय सम रमन सुयं, उव गुप्ति समय जै जयो जयं ॥ जय० ॥ १३ ॥
सुइ गुप्ति गहिर उव गहिर सुयं, उव उवन गहिर सम समय जयं ॥ जय० ॥ १४ ॥
जै रिद्धि रिद्धि उव रिद्धि मयं, उव उवन कमल रिधि मुक्ति जयं ॥ जय० ॥ १५ ॥
वृद्धि वृद्धि उवन जिन वृद्धि जयं, उव उवन वृद्धि जिन सिद्धि रयं ॥ जय० ॥ १६ ॥
जै न्यान उवन उव उवन पयं, पय उवन पर्म जिन पर्भ पयं ॥ जय० ॥ १७ ॥
पय पयं पयं पय उवन पयं, इय इष्ट ईर्ज जिन जयो जिनं ॥ जय० ॥ १८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

तिय तित्थ तित्थ उव तित्थ जिनं, इय ईर्जं किर्नं जिननाथ सुयं ॥ जय० ॥१९॥
मध्य ममल ममल उव ममल जिनं, हिय रमन उवन हिय हुव गमनं ॥ जय० ॥२०॥
धर धरन धरन जिन धरन सुयं, जय उवन धरन जिननाथ जयं ॥ जय० ॥२१॥
जै अलष अगम गम उव गमनं, उव उवन अगम जय मुक्ति जयं ॥ जय० ॥२२॥
उव ऊर्ध ऊर्ध उव ऊर्ध सुयं, उव उवन ऊर्ध जिन जिनय जिनं ॥ जय० ॥२३॥
वा वारवार आयरन जिनं, उव उवन आयरन जिन जिनय जिनं ॥ जय० ॥२४॥
उव उवन उवन वै उवन मयं, उव उवन समय जै सहज जयं ॥ जय० ॥२५॥
जै सियं सियं जिन उवन सियं, उव उवन कमल सिय मुक्ति जयं ॥ जय० ॥२६॥
सिय सुयं सुयं सह साह सुयं, सह साह रमन धुव मुक्ति जयं ॥ जय० ॥२७॥
धुव उवन कमल जय धुव उवनं, धुव समय उवन जय मुक्ति जयं ॥ जय० ॥२८॥
जै अल्प अल्प जे अल्प जयं, सुइ सूष्म अल्प जिन मुक्ति जयं ॥ जय० ॥२९॥
जय गमन अगम ऊर्धगमनं, उव ऊर्ध ऊर्ध जिन जिनय जिनं ॥ जय० ॥३०॥
जय ठान ठान जिन ठान जयं, जै जिन ठान कमल कोमल उवनं ॥ जय० ॥३१॥
जय कलन कमल कोमल उवनं, कोमल सहाय केवल सु सुयं ॥ जय० ॥३२॥
जय उवन उवन जिन वीर जयं, जय वीर समय जिन मुक्ति जयं ॥ जय० ॥३३॥
जय वीर उवन जिन स्रेनि जयं, जय कलन कलिय जिन जिनय जिनं ॥ जय० ॥३४॥
जिन स्रेनि कलन जिन समय जयं, सम समय उवन जिननाथ जयं ॥ जय० ॥३५॥
जै तार तरन सम तरन जयं, जय कमल उवन तर तार जिनं ॥ जय० ॥३६॥
जय तार कमल जिन स्रेनि सुयं, सह समय साह जिन मुक्ति जयं ॥ जय० ॥३७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्वय सहित अर्थ—(उव उवन चिंतन जिन जैन श्री) श्री जिनेन्द्रका मनन प्रगट हुआ है (उव उवन समय जिन मुक्ति वरी) जिनेन्द्रने आत्माको प्रगट करके मोक्षको वरा है ॥ १ ॥

(जय जयं जयं जिन आवलिया) श्री जिनेन्द्रकी जय हो जिन्होंने कर्मोंका संवर किया है (उव उवन समय मुक्तावलिया) श्री जिनेन्द्रने आत्माको प्रगट कर मोक्षको प्राप्त किया है ॥ २ ॥

(मय मयं मयं मय ममलश्री) ज्ञानमें परिणमन करते करते शुद्ध ज्ञानकी लक्ष्मी प्रगट होती है (मल उवन ममल जिन मुक्ति वरी) कर्म मल रहित जिनेन्द्रने केवलज्ञानको उत्पन्न करके मोक्षको वरा है ॥ ३ ॥

(पय पयं पयं पय पर्म सिरी) पद पदसे क्रम क्रमसे गुणस्थान द्वारा परम लक्ष्मी केवलज्ञानादि प्रगट होती है (पय उवन रमन जिन मुक्ति वरी) परमात्मा पदको प्रगट कर व उसीमें रमण करके जिनेन्द्रने मुक्ति वरी है ॥ ४ ॥

(धुव धुवं धुवं धुव उवन रली) जो कोई ध्रुव आत्मामें निश्चितरूपसे उपयोगको जोड़ते हैं (धुव कमल उवन जिन मुक्ति वरी) वे ध्रुव कमल समान जिनेन्द्र होकर मोक्षको वर लेते हैं ॥ ५ ॥

(सुव सुयं सुयं सुव उवन सुयं) स्वय यह आत्मा अपनेमें परिणमन करता हुआ स्वयं ही उन्नति करता है (सुव उवन पर्म जिन सिधि रयं) इसी आत्मीक परिणमनसे उन्नति करके परमात्मा जिन सिद्ध स्वभावमें रत रहते हैं ॥ ६ ॥

(पय उवन उवन जिन सिधि रयं) गुणस्थान द्वारा चढ़ते हुए जो सिद्ध स्वभावमें रमण करते हैं (जिन उवन समय सुइं मुक्ति जयं) वे ही जिनेन्द्र आत्माका विकास करके मोक्षको जीत लेते हैं ॥ ७ ॥

(जै दिप्ति सुदिप्ति जिन दिप्ति जयं) सम्यग्ज्ञानके प्रकाशसे ही वीतरागी भव्य केवलज्ञानको प्रगट करता है (उव दिप्ति समय सम मुक्ति जयं) जो कोई आत्मा ऐसे केवलज्ञानको प्रगट कर लेता है, वही समभावसे मोक्षको विजय कर लेता है ॥ ८ ॥

(जै दिस्टि इस्टि जिन दिस्टि जयं) जो कोई इष्ट मोक्षकी तरफ दृष्टि लगाता है वह केवलदर्शनको प्रगट कर लेता है (उव दिष्टि रमन जिन दिप्ति सुयं) जो केवलदर्शनमें रमण करता है वह स्वयं केवलज्ञानी जिनेन्द्र हैं ॥ ९ ॥

(उव दिप्ति जयं जयं रमन रली) जो केवलज्ञानको प्रगट करके उसीमें रमण करते हुए रहता है (जै दिस्टि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय सम मुक्ति मिली) वह आत्मा, आत्माका साक्षात् दर्शन करता हुआ समभावसे मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ १० ॥

(सुइ इच्छ इच्छ जय इच्छ जिनं) जो जिनपदकी इच्छा करता है, भावना करता है, वह भावनाके अनुसार जिनपदको प्रगट कर देता है (उव इच्छ रमन जिन सिद्ध रमं) जब इच्छानुसार जिनराज होजाता है तब वह सिद्धभावमें रमण करता है ॥ ११ ॥

(गुरु गुप्ति गुप्ति उव गुप्ति रयं) जो गुरु या साधु तीन गुप्तियोंको साथ गुप्त आत्मामें गुप्त होजाता है, वह आत्मगुप्ति या आत्मानुभवकी शक्तिको बढ़ा लेता है (उव उवन गुप्ति जिननाथ जयं) इसी गुप्त स्वानुभवके बढ़नेसे जिनराज होजाता है ॥ १२ ॥

(गुरु गुप्ति समय सम रमन सुयं) जब गुरु या साधु आत्मामें गुप्त हो, समभावके साथ आप ही रमण करते हैं (उव गुप्ति समय जय जयो जयं) तब गुप्त आत्माकी जीत होजाती है, वह परमात्मा होजाता है ॥१३॥

(सुइ गुप्ति गहिर उव गहिर सुयं) जो आत्माके भीतर रमण करता हुआ आत्माकी गम्भीर गुफामें प्रवेश कर जाता है, वह स्वयं गम्भीर आत्मारूप होजाता है (उव उवन गहिर सम समय जयं) जब गम्भीर गुफाके समान दृढ़ आत्मामें रमण होता है तब समभावका धारी परमात्मा होजाता है ॥ १४ ॥

(जय रिद्धि रिद्धि उव रिद्धि मयं) जब आत्माकी गुणरूपी रिद्धिमें रमण होता है तब वह स्वयं गुणोंको प्रगट कर गुणोंका धारी ऐश्वर्यमय होजाता है (उव उवन कमल रिधि मुक्ति जयं) तब उसका आत्मारूपी कमल विकसित होजाता है तब वह अपने गुणोंके ऐश्वर्यसे मुक्तिको जीत लेता है ॥ १५ ॥

(वृद्धि वृद्धि उवन जय वृद्धि जयं) आत्माके गुणोंकी बढ़ती होते होते पूर्ण वृद्धि होजाती है (उव उवन वृद्धि जिन सिद्धि रयं) जब पूर्ण वृद्धि होकर वह जिनराज होजाता है तब सिद्ध स्वरूपमें रमण करता है ॥१६॥

(जय न्यान उवन उव उवन पयं) आत्मज्ञानके प्रकाशसे आत्माका पद प्रकाश होता जाता है (पय उवन पर्म जिन पर्म पयं) पदके प्रकाशसे जब जिनराज परमात्मा होजाता है तब परमपद मोक्षको पालेता है ॥१७॥

(पय पयं पयं पय उवन पयं) गुणस्थानोंके क्रमसे परमात्माका पद प्रगट होता है (इय इष्ट ईर्ज जय जयो जयं) जब इष्ट केवलज्ञानका प्रकाश होता है तब वह जिनेन्द्र होजाता है ॥ १८ ॥

(तिय तित्थ तित्थ उव तित्थ जिनं) सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र ही धर्मतीर्थ हैं। इसी रत्नत्रय धर्मके ॥२४३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेवनसे तीर्थंकर जिन होजाता है (इय ईजे किंनं जिननाथ सुयं) जब केवलज्ञान ज्योति प्रगट होती है, तब यह स्वयं जिनेन्द्र होजाता है ॥ १९ ॥

(मध्य ममल ममल उव ममल जिंनं) जो शुद्ध भावके भीतर रमण करता है वह कर्म मलरहित हो, शुद्ध जिनराज होजाता है (हिय रमन उवन हिय हुव गमनं) जब हितकारी आत्मरमण होता है, तब हितकारी आत्मध्यान प्रगट होजाता है ॥ २० ॥

(जय धरन धरन जिन धरन सुयं) स्वरूपमें स्थिर होते होते स्वयं जिनके स्वरूपमें स्थिरताको प्राप्त कर लेता है (जय उवन धरन जिननाथ जयं) जब पूर्ण स्थिरता होती है तब वह जिनेन्द्र होजाता है ॥ २१ ॥

(जय अलष अगम गम उव गमनं) जब इंद्रिय अगोचर व मनसे अगोचर तत्वमें रमण होता है, तब आत्मरमण बढ़ जाता है (उव उवन अगम जय मुक्ति जयं) जब अतीन्द्रिय आत्माका प्रकाश होजाता है, तब मुक्तिको जीत लिया जाता है ॥ २२ ॥

(उव ऊर्ध ऊर्ध उव ऊर्ध सुयं) ऊपर चढ़ते चढ़ते यह स्वयं ऊपर चढ़ जाता है (उव उवन ऊर्ध जिन जिनय जिंनं) तब श्रेष्ठि जिनपद प्रगट होजाता है, तब वह विजयी जिनराज होजाता है ॥ २३ ॥

(वा वारवार आयरन जिंनं) आत्म सुखरूपी जलमें डूबते डूबते उसी सुखका आचरण जिन रूप हो जाता है अर्थात् अनन्तसुख होजाता है (जिंनं उवन आयरन जिन जिनय जिंनं) जब स्वरूपमें चारित्र बढ़ जाता है तब जिनराज होजाता है ॥ २४ ॥

(उव उवन उवन वै उवनं मयं) निश्चयनयके द्वारा अनुभव करनेसे ज्ञानका प्रकाश होता है (उव उवन समय जय सहज जयं) तब आत्मा प्रकाश करके सहज हो जिनराज होजाता है ॥ २५ ॥

(जय सियं सियं उव उवन सियं) शुद्धोपयोगमें रमण करनेसे शुद्धोपयोग बढ़ता जाता है (सह साह रमन धुव मुक्ति जयं) तब स्वात्मरमणको सिद्ध करके यह आत्मा ध्रुव मुक्तिको जीत लेता है ॥ २६ ॥

(हिय सुयं सुयं सह साह सुयं) आत्महितमें रमण करते हुए स्वयं आत्म हित साध लिया जाता है (सह साह रमन धुव मुक्ति जयं) साध्य आत्मामें रमण करनेसे ध्रुव मोक्षको जीत लिया जाता है ॥ २७ ॥

(धुव उवन कमल जय धुव उवनं) जब ध्रुवरूपसे आत्मा कमलका प्रकाश होजाता है तब ध्रुव प्रकाश बना रहता है (धुव समय उवन जय मुक्ति जयं) तब ध्रुव परमात्मा मुक्तिको जीत लेता है ॥ २८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जय अल्प अल्प जय अल्प जयं) थोड़ा थोड़ा रागादि व कर्मादि जीतते जीतते शेष घातीयकर्मोंको व रागादिको जीत लिया जाता है (सुइ सूक्ष्म अल्प जिन मुक्ति जयं) जब सूक्ष्म अघातीय कर्मोंको भी जीत लिया जाता है तब मुक्तिको जीत लिया जाता है ॥ २९ ॥

(जय गमन अगम ऊर्ध गमनं) जब अगम अर्थात् अनुभवगम्य आत्माके भीतर ज्ञान होता है तब श्रेष्ठ ज्ञान प्रगट होजाता है (उव ऊर्ध ऊर्ध जिन जिनय जिनं) तब परमात्मा जिन होकर कर्मविजयी होजाता है ॥३०॥

(जय ठान ठान जिन ठान जयं) गुणस्थानोंको विजय करते करते जिनराजका तेरहवां गुणस्थान प्राप्त हो जाता है (जिन ठान कमल कोमल उवनं) तब कोमल कमलके समान वीतराग शांत जिनराजपद प्रगट हो जाता है ॥ ३१ ॥

(जय कलन कमल कोमल उवनं) स्वात्मानुभवके द्वारा ही कोमल कमल समान शांत आत्माका प्रकाश होता है (कोमल सहाव केवल सु सवं) शांत भावकी सहायतासे ही आत्मा स्वयं केवलज्ञानी होता है ॥ ३२ ॥

(जय उवन उवन जिन वीर जयं) आत्मा प्रगट होते होते वीर जिन होजाता है, कर्मोंको जीत लेता है (जय वीर समय जिन मुक्ति जयं) ऐसा वीर परमात्मा मुक्तिको जीत लेता है ॥ ३३ ॥

(जय वीर उवन जिन सेनि जयं) जब वीर भाव प्रगट होता है तब ही जिनराजका गुणस्थान प्रगट होता है (जय कलन कलिय जिन जिनय जिनं) तब आत्माका स्वाद लेते हुए जिनराज स्थिर रहते हैं ॥ ३४ ॥

(जिन सेनि कलन जिन समय जयं) जिनराजके पदका अनुभव करते हुए परमात्मा जिनकी जय होती है (सम समय उवन जिननाथ जयं) जब समभाव आत्मामें झलकता है तब ही जिनेन्द्र होता है ॥ ३५ ॥

(जय तार तरन सम तरन जयं) तारण तरण समभाव धारी अरहन्तकी जय हो (जय कमल उवन तर तार जिनं) जब कमल समान आत्माका विकास होता है तब जिनराज संसारसागरसे तर जाते हैं ॥ ३६ ॥

(जय तार कमल जिन सेनि सुयं) जिनराज सयोगकेवली जिनकी श्रेणीपर स्वयं विराजित हो अनेकोंको तारते हैं (सह समय साह जिन मुक्ति जयं) साथमें परमात्मपदका साधन करके मोक्षको जीत लेते हैं ॥ ३७ ॥

भावार्थ—इस समय उवनमें यह दिखलाया है कि यह आत्मा आप ही अपने पुरुषार्थसे परमात्मा होकर सिद्धगतिको पाता है, मोक्षका लाभ स्वयं ही करना पड़ता है, कोई मुक्तिको दे नहीं सक्ता है, आत्माका स्वभाव ही मोक्षरूप है, कर्मोंके आवरणसे स्वभाव प्रगट नहीं है। जो कोई यह श्रद्धान व ज्ञान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राप्त कर लेता है कि निश्चयसे अर्थात् द्रव्य स्वभावसे मैं शुद्ध स्वभावका धारी हूं परमात्माके समान परम ज्ञान व परम आनन्दका सागर हूं। मुझे कर्मोंके जो पर हैं आत्मध्यानके बलसे दूर कर देना चाहिये। जब वह स्वानुभवरूप चारित्रको धारण करता है, आपसे आपमें रमण करता है, समभावमें रमण करता है। गुणस्थानोंके क्रमसे क्षायिक सम्यग्दृष्टी आत्मा क्षपकश्रेणीपर चढ़कर क्षायिक चारित्रका स्वामी होजाता है, फिर शेष ज्ञानावरणादि कर्म क्षय करके सयोगकेवली जिन होजाता है, तब अनेक भव्योंको उपदेश देकर भवसागरसे पार कर देता है, तब तारणतरण नाम पाता है। फिर वही शेष अघातीय कर्मोंको क्षय करके सिद्ध परमात्मा होकर ध्रुवरूपसे सिद्धपदमें विराजता है। स्वात्मरमण ही जैनधर्म है। यह अगम अलख है, केवल अनुभवगोचर है। व्यवहार धर्मके निमित्तसे—स्तुति, भजन, मनन, एकांत सेवन, शास्त्रोय संयम आदि साधनोंके द्वारा स्वात्मानुभवको बढ़ाना चाहिये। यही बढ़ते बढ़ते वीतराग चारित्ररूप होजाता है। इस स्वानुभवके मार्गमें सदा आत्मानन्द प्राप्त होता है। केवलीके अनन्तसुख प्रगट होजाता है। मुमुक्षुके अपने ही आत्माका साधन स्वयं ही करना चाहिये, तब आत्मध्यानसे वह परमात्मपदको पालेगा। समयसारमें कहा है—

सम्मद्दंसणणाणं एदं लहदित्ति णवरिविनदेसं। सव्वणवपक्खरहिदो भणिदो जो सो समयसारो ॥ १५४ ॥

भावार्थ—पहले सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान व सम्यक्चारित्रको धारण करके उद्यम करना चाहिये। फिर वही इसी रत्नत्रयके द्वारा सब नयोंकी पक्षसे रहित शुद्धात्मारूपी समयसार होजायगा। रत्नत्रय व्यवहारसे मार्ग है, निश्चयसे स्वानुभवरूप आत्मा ही मोक्षमार्ग है।

(१४२) उवन पिय रमन गाथा २९४२ से २९५० तक।

जै जयं जयं जय जिनवर नंदे, जय जिनय जिनय जय पर्म जिनन्दे।
जै पर्म पर्म पय पर्म सुनन्दे, कय कलन चरन जिन कमल जिनन्दे ॥ १ ॥
जै पियं पियं पिय पियं जिन रंजे, सुइ रंज रमन नंद जिन सहज जिनंदे।
जै जयं जयं जै जैन जिनंदे, जय मुक्ति रमन सम समय सुनंदे (आचरी) ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइ रमन रमन सुइ रमन सुनंदे, सुइ गमन गमन जिन अगम जिनंदे ।
सुइ सहन सहन सुइ असह सहंते, सह साह रमन जिन मुक्ति सरत्ते ॥जय पियं०॥ ३॥
आयरन अवहि निहि रिसि सानंदे, जै जयं रमन रिहि उवन जिनंदे ।
उव उवन उवन निहि रिहि जिनंदे, आयरन मुक्ति जिन जिनय जिनंदे ॥ जै० ॥ ४ ॥
अयास आस सुइ आस सनंदे, सुइ आस उवन जिन अगम जिनंदे ।
रा राय राय जिनराय आनन्दे, सुइ ध्याय मुक्ति जिन समय जिनंदे ॥ जै० ॥ ५ ॥
आ आय आय उव आय आनंदे, या याय अलष गम अगम जिनन्दे ।
रा रमन रयन जिन जिनय जिनुत्ते, आयरन रमन जिन सिद्धि संपत्ते ॥ जै० ॥ ६ ॥
आ आदि अनादि नंत जिन नंदे, ला लाय लाय जिन उवन जिनंदे ।
पा पार परम परमेष्टि सनंदे. आ लाय परम जिन जिनय जिनंदे ॥ जै० ॥ ७ ॥
आराह रमन जिन नंत अनंते, आयरन उवन जिन मुक्ति सरंते ।
आलाय लाय उव लोय जिनुत्ते, सुइ रमन उवन जिन सिद्धि संपत्ते ॥ जै० ॥ ८ ॥
सुइ सुयं सुयं सुइ सेनि जिनुत्ते, सुइ कलन रमन जिन सेनि स उत्ते ।
सुइ तार तरन उव कमल सरत्ते, सह समय रमन जिन सिद्धि संपत्ते ॥ जै० ॥ ९ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जै जयं जयं जय जिनवर नंदे) **श्री जिनेन्द्रकी जय हो, जो आनन्दरूप है** (जय जिनय जिनय जय पर्म जिनंदे) **परमात्मा कर्मविजयी जिनेन्द्रकी जय हो** (जै पर्म पर्म पय पर्म सुनंदे) **परमात्मापद पाकर जो परमानन्दमई है, उनकी जय हो** (जय कलन चरन जिन कमल जिनंद) **स्वरूपाचरणके अनुभव करनेवाले कमल समान जिनेन्द्रकी जय हो ॥ १ ॥**

(जै पियं पियं पिय पिय जिन रंजे) **जो कोई परमप्रिय परमात्मा जिनके स्वभावमें मगन होता है** (सुर रंज रमन नंद सहज जिनंदे) **वही आनन्दमें रमण करता हुआ आनन्दमई सहज स्वभावी जिनेन्द्र होजाता है**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जय जयं जयं जय जैन जिनंदे) जैनधर्मसे जयको पानेवाले जिनेन्द्रकी जय हो (जै मुक्ति रमन सम समय जिनंदे) मोक्षभावमें रमण करनेवाले समभाव धारी परमात्मा जिनेन्द्रकी जय हो ॥ २ ॥

(सुइ रमन रमन सुइ रमन सुनंदे) जो कोई शुद्धात्मामें रमण करता रहता है, वही आनन्दमई स्वात्मरमी होजाता है (सुइ गमन गमन जिन अगम जिनंदे) वही आत्मज्ञानको बढ़ाता हुआ अतीन्द्रिय ज्ञानधारी जिनेन्द्र होजाता है (सुइ सहन सहन सुइ असह सहंते) जो कोई साधन करते करते दुर्लभ तत्वका साधन कर लेता है (सह साह रमन जिन मुक्ति सरत्ते) वही साध्य शुद्ध तत्वमें रमण करता हुआ मोक्षमें लीन रहता है ॥ ३ ॥

(आयरन अवहि निहि रिसि सानंदे) रिषि या साधु स्वरूपाचरणके द्वारा आनन्द सहित अवधिज्ञानकी ऋद्धिको पालेते हैं या पूर्णज्ञान केवलज्ञानको पालेते हैं (जय जयन उवन रिहि रमन जिनंदे) इसतरह केवलज्ञानकी रिद्धिको प्रकाश करनेवाले व उसीमें रमण करनेवाले जिनेन्द्रकी जय हो (उव उवन उवन निहि रिहि जिनंदे) प्रकाश होते होते केवलज्ञानकी रिद्धि जिनेन्द्रमें प्रगट होजाती है (आयरन मुक्ति जिन जिनय जिनंदे) तब श्री जिनेन्द्र मोक्षतत्वमें आचरण करते रहते हैं ॥ ४ ॥

(आयास आस सुइ आस सनंदे) आकाश समान अनन्त ज्ञानकी प्राप्तिकी आशासे आनन्द सहित आशा बढ़ती जाती है—ज्ञानोन्नतिकी उमंग बढ़ जाती है (सुइ आस उवन जिन अगम जिनंदे) जब वही आशा पूर्ण होजाती है केवलज्ञान होजाता है तब वे अतीन्द्रिय जिनेन्द्र होजाते हैं (रा राय राय जिनराय आनंदे) आत्मानन्दको लेते लेते जिनेन्द्र परमानन्दी होजाते हैं (सुइ ध्याय मुक्ति जिंन समय जिनंदे) यह आत्मा मोक्षके ध्यान करनेसे ही जिनेन्द्र होजाता है ॥ ५ ॥

(आ आय आय उव आय आनंदे) जैसे जैसे सर्व तरफसे हटकर अपने स्वरूपके निकट आया जाता है वैसे वैसे आनन्दका लाभ होता है (या याय अलष गम अगम जिनन्दे) जब स्व रूपमें प्रवेश करते हुए अतीन्द्रिय स्वभावका अनुभव होता है, तब अतीन्द्रिय जिनेन्द्रपदका लाभ होता है (रा रमन रयन जिन जिनय जिनुत्ते) जब जिनेन्द्र कथित वीतराग रत्नत्रय भावमें भलेप्रकार रमण किया जाता है (आयरन रमन जिंन सिद्ध संपत्ते) तब वीतराग चारित्रमें रमण कर जिन सिद्धगतिको पाते हैं ॥ ६ ॥

(आ आदि अनादि नंत जिन नंदे) परमात्मा जिनेन्द्र कर्म क्षय करके हुए हैं इससे सादि हैं। द्रव्यकी अपेक्षा उनका आत्मा अनादि है, ऐसे परमात्मा अनन्त काल तक आनन्दमें मगन रहते हैं (ला लाय लाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन उवन जिनंदे) अपने स्वरूपका लाभ करते करते श्री जिनेन्द्र प्रगट होजाते हैं (पा पार परम परमेष्टि सनंदे) संसारका पार पा करके परमात्मा परमेष्ठीपदमें आनन्दका लाभ करते हैं (अलाप परम जिन जिनय जिनंदे) उन्हींको परमात्मा जिन व जिनेन्द्र कहते हैं ॥ ७ ॥

(आराह रमन जिन नंत अनंते) सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र व तप इन चार आराधनाओंमें रमण करनेसे ही अनन्तानन्त आत्माएँ जिनराज हो चुके हैं (आयरन उवन जिन मुक्ति सत्ते) स्व रूपके आचरणसे ही जिनराज मोक्षपद पाते हैं आ लाय लाय उव लोय जिनुत्ते) वाणीके द्वारा भी आत्माका मनन करना चाहिये, ऐसा जिनेन्द्रने कहा है (सुइ रमन उवन जिन सिद्धि संपत्ते) आत्मामें रमणता पूर्ण होनेपर सिद्धगतिका लाभ होता है ॥ ८ ॥

(सुइ सुयं सुयं सुइ सेनि जिनुत्ते) जिनेन्द्रने कहा है कि यह आत्मा स्वयं ही चढ़कर जिनपदकी श्रेणीपर आता है (सुइ कलन रमन जिन सेनि स उत्ते) जहां प्रत्यक्ष आत्माका अनुभव है उसे ही जिनराजकी श्रेणी कहते हैं (सुइ तार तरन उव कमल सदत्ते) वे ही तारण तरण जिनेन्द्र शुद्धात्मारूपी कमलमें लीन रहते हैं (सह समय रमन जिन सिद्धि स पत्ते) वे ही जिनेन्द्र परमात्मामें रमण करते हुए सिद्धगतिको पालेते हैं ॥ ९ ॥

भावार्थ—इस उवन पिय रमनमें बताया है कि मुमुक्षुको परमात्माके पदसे प्रेम पैदा करना चाहिये तथा इष्ट श्रद्धावान होना चाहिये कि मुझे अनन्त ज्ञानका प्रकाश करके आत्माको भवसागरसे तारना है। सम्यग्दर्शन बड़ी उन्नतिका उपाय है–उन्नति होनेका साधन एक स्वात्मरमण है जहां सम्यग्दर्शनादि चारों आराधनाओंका लाभ होता है। जैसे २ आत्मामें रमणता होती है आत्माकी उन्नति होती जाती है। यह आत्मा अनादिसे अनन्त काल तक एक ही है–कर्मोंके संयोगसे विकारी होरहा है। जब कर्म दूर होजाते हैं तब यह परमात्मा होता है। इस अपेक्षा परमात्मा सादि हैं। मोक्षमार्ग भी आनन्दमई है, मोक्षपद भी आनन्दमई है। समयसारमें कहा है कि ज्ञानीको ऐसी भावना भानी चाहिये—

अहमिक्को खलु सुद्धो दंसणणाणमइओ सयारूवी। णवि अत्थि मज्झ किंचिव अण्णं परमाणुमित्तं वि ॥ ४३ ॥

भावार्थ—मैं एक अकेला हूं, शुद्ध हूं, दर्शन ज्ञानमई हू, सदा अमूर्तीक हू, और कोई परमाणु मात्र भी मेरा नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१४१) उवन जिनपयोग गाथा २९५१ से २९६४ तक।

उव उवन उवन उवनी उव उवन उवन पिउ उत्तु पम जिन उवन जिनी ।
जय जयं जयं जैनी, जै जयो जयो पिउ उत्तु, अलष जिन जय उवनी ॥ १ ॥
जिन जिनय जिनी, जिन उवन उवन दरसायो, परम जिन मुक्ति रमै (आचरी) ॥ २ ॥
ज अलष अलष रवनी, जय अलष अलष जैवंतु जय जिन सुवनी ।
सुइ अगम अगम गमनी, जय अगम अगम पिउ उत्तु अगम जिन नित उवनी ॥जिन०॥ ३ ॥
जय उवन कमल उवनी, जय जयं जयं जय कमल, पम पय पय उवनी ।
जय जय जय धुवनी, धुव धुव धुव धुव उवन, उवन जिन धुव रवनी ॥जिन०॥ ४ ॥
जय चरन चरन चरनी जै जयं जय जय चरन चरन जिनवर उवनी ।
चर चरन चरन उलटि चरनी, चर चरियो नतानंत ममल रस चर जैनी ॥जिन०॥ ५ ॥
चर चरन कठ चरनी, जिन कंठ चरन सम उत्तु कमल सर उव उवनी ।
उव उवन अनंत रवनी, सुइ नन्त सहज सुइ साह जिनय जिन उव उवनी ॥जिन०॥ ६ ॥
उव उवन उवन चरनी, सुइ तालु रमन जिन जिनय जिनय पय जिन उवनी ।
सुइ रमन रयन उवनी, तत्काल रमन सुइ उत्तु, रमय पय उव रवनी ॥ जिन० ॥ ७ ॥
सुइ दर्स दस चरनी, सुइ चरन दर्स जिननाहु, दस जिन रमन जिनी ।
धुव धुव इष्ट उवनी, सुइ सुयं सुइ धुव रमन, उवन जिन धुव रमनी ॥ जिन० ॥ ८ ॥
सुइ चरन उवन चरनी, सुइ अर्क विंद सुइ चरन, नंत अर्क जिन चरनी ।
सुइ नंत विंद रवनी, सुइ सरनि कलन कलि नंत, कलन जिन जिन रवनी ॥ जिन० ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइ कलन रमन कलनी, कलि कलियो नंत विसेष कमल जिन पय रवनी ।
जं कलन कलियं उवनी, कलि कलन कलय जिननाहु कमल पय पय रवनी ॥ जिन० ॥१०॥
जै चरन कलन कलनी, सुइ रमन नंतानंत कमल सर सरनी ।
जै चरन कलन रवनी, धुव पयडि नंत नंत कमल सर सिधि रवनी ॥ जिन० ॥११॥
सुइ कमल ममल उवनी, धुव मुक्ति रमन जिननाह कमल जिन जय जयनी ॥ जिन० ॥१२॥
सुइ उवन कमल रवनी, सुइ केवल नंतानंत मुक्ति जिन सिधि रवनी ।
जिन स्रेनि स्रेनि रवनी, सुइ कलन कमल जिननाह, समय जिन सिधि गमनी ॥ जिन० ॥१३॥
सुइ तार तरन तरनी, सुइ तार कमल जिन सिद्ध सिद्ध जिन जिनय जिनी ।
सुइ तार समय रवनी, सुइ तरन समय सिधि रत्तु, कमल पय पर्म जिनी ॥ जिन० ॥१४॥

अन्वय सहित अर्थ—(उव उवन उवन उवनी) **ज्ञान प्रगट होते हुए प्रगट हुआ है** (उव उवन पिउ उत्तु, पर्म जिन उवन जिनी) **इस ज्ञानको हितकारी कहा गया है, परमात्मा जिनेन्द्र केवलज्ञानके धारी वीतराग हैं।** (जय जयं जयं जैनी) **जैनधर्मके धारीकी जय हो** (जय जयो जयो पिउ उत्तु, अलष जिन जय उवनी) **जो अतीन्द्रिय जिनेन्द्र हैं, उसीने कर्मोंपर विजय पाई है, उनकी जय हो, उन्हींको प्रिय व हितकारी कहा गया है ॥ १ ॥**

(जिन जिनय जिनी) **कर्मविजयी जिनकी जय हो** (जिन उवन उवन दरसायो, पर्म जिन मुक्ति रमै) **श्री जिनेन्द्रने ज्ञानके प्रकाशका मार्ग बताया है, वे परमात्मा जिन मोक्षमें रमण करते हैं ॥ २ ॥**

(जय अलष अलष रवनी) **जो अतीन्द्रिय आत्मामें परिणमन कर रहे, उनकी जय हो** (जय अलष अलष जैवंतु जयं जिन जिन सुवनी) **अलष परमात्माकी जय हो, जिन्होंने कर्मोंको विजय करके जिन भावमें परिणमन किया है** (सुइ अगम अगम गमनी) **वे ही मनसे अगोचर तत्वमें रमण कर रहे हैं** (जय अगम अगम पिउ उत्तु, अगम जिन निल उवनी) **अगम अनुभवमय तत्वको हितकारी कहा गया है। श्री जिनेन्द्र उसी अतीन्द्रिय तत्वमें लीन होकर प्रगट हुए हैं ॥ ३ ॥**

(जय उवन कमल उवनी) **विकसित कमल समान आत्माके प्रकाशकी जय हो** (जय जयं जयं जय कमल पर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पय उवनी) उसी कमल समान परमात्माकी जय हो जिन्होंने परम पदके ध्यानसे परम पद प्रगट किया है (जय जयं जयं धुवनी) इस ध्रुव अविनाशी पदकी जय हो (धुव धुव धुव धुव उवन, उवन जिन धुव रवनी) जो ध्रुव आत्मीक पदमें निश्चयसे स्थिर होते हैं उन्हींको यह ध्रुवपद प्रगट होजाता है श्री जिनेन्द्र उसी ध्रुवपदमें परिणमन करते हैं ॥ ४ ॥

(जय चरन चरन चरनी) वीतराग चारित्रमें चलनेवालेकी जय हो (जै जयं जयं जय चरन चरन जिन चर उवनी) उस चारित्रकी जय हो, जिसपर चलनेसे जिनेन्द्रपद प्रगट होता है (चर चरनि उलटि चरनी) चारित्रमें चलते हुए जब निर्विकल्प चारित्र होता है (चर चरिया नंतानंत ममल रस चर जैनी) तब वे अनन्तानन्त काल तक इसी चारित्रमें चलते रहते हैं, शुद्ध आत्मीक रसका पान करते हुए वीतराग भावमें रहते हैं ॥ ५ ॥

(चर चरन कंठ चरनी) चारित्रका आचरण करना योग्य है (जिन कंठ चरन सम उत्तु, कमल सर उव उवनी) इस वीतराग चारित्रको समभाव कहा गया है। इसीसे कमल समान आत्माका विकास होता है (उव उवन अनंत रवनी) वह परमात्मा अनन्त काल तक प्रगट रहते हैं (सुइ नन्त सहन सुइ साह, जिनय जिन उव उवनी) वे अनन्त काल तक थिर रहते हुए जिनेन्द्रपदके साध्य स्वरूपको प्रकाश करते रहते हैं, अर्थात् मोक्षमें रमण करते रहते हैं ॥ ६ ॥

(उव उवन उवन चरनी) चारित्रके सेवनसे चारित्र बढ़ता है (सुइ तालु रमन जिन जिनय जिनय पय जिन उवनी) मुखके द्वारा जिन शब्दमें रमण करनेसे व उसका भाव विचारनेसे जिनेन्द्रका पद शुक्लध्यान द्वारा प्रगट होता है (सुइ रमन रमन उवनी) जिनके स्वरूपमें रमण करनेसे रत्नत्रयका भाव अन्तरंगमें प्रगट होजाता है (तत्काल रमन सुइ उत्तु, रमन पय उव रवनी) रत्नत्रयमें जब रमण किया जाता है, तब उसीको उस समय आत्मीक रमण पद कहते हैं ॥ ७ ॥

(सुइ दर्स दर्स चरनी) यही सम्यग्दर्शनका आचरण है (सुइ चरन दर्स जिननाह, दर्स जिन रमन जिनी) उसी चारित्रसे जिनेन्द्रके स्वरूपका दर्शन होता है। इसी जिनदर्शनमें वीतरागी रमण किया करते हैं (धुव धुवं इष्ट उवनी) इसी रमणसे निश्चयसे ध्रुव व इष्टपद परमात्माका प्रगट होजाता है (सुइ सुयं सुइ धुव रमन, उवन जिन धुव रमनीं) तब श्री जिनेन्द्र उस शुद्ध ध्रुवपदमें स्वयं रमण करते हैं। यह ध्रुव जिनपद सदा प्रगट रहता है ॥ ८ ॥ ॥२५२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(सुइ चरन उवन चरनी) इसी चारित्रसे चारित्र प्रकाशित होता है (सुइ अर्क विंद सुइ चरन, नन्त अर्क जिन चरनी) इसीसे सूर्यसम आत्माका अनुभव होता है, इसी चारित्रसे अनन्त काल तक जिनेन्द्र सूर्य आपमें रमण करते रहते हैं (सुइ नंद विंद रवनी) यह आत्मरमण अनन्त काल तक रहता है (सुइ सरनि कलन कलि नंत कलन जिन जिन रवनी) इसी चारित्रके अभ्याससे अनन्तकाल तक स्वानुभव बना रहता है–श्री जिनेन्द्र जिन स्वभावमें परिणमन करते रहते हैं ॥ ९ ॥

(सुइ सलन रमन कलनी) वही चारित्र स्वात्मानुभवमें रमणशील है (कलि कलियो नंत विसेष कमल जिन पय रवनी) इसीसे अनन्त पदार्थोंका ज्ञान रहता है, कमल समान जिनेन्द्र अपने पदमें ही परिणमन करते हैं (जं कलन कलिय उवनी) स्वानुभवसे स्वानुभव बढ़ता है (कलि कलन कलिय जिन बहु कमल पय पय रमनी) इसीसे जिनेन्द्र सदा स्वानुभव करते हैं व कमल समान प्रगट रहकर उसी पदमें रमण करते हैं ॥ १० ॥

(जै चरन कलन कलनी) चारित्र स्वरूप स्वानुभवकी जय हो (सुइ रमन नंतानंत कमल सर सरनी) इसीसे अनन्तकाल तक कमल समान शुद्धात्मा आनन्दरूपी सरोवरमें रहकर रमण किया करते हैं (जै चरन कलन रवनी) चारित्रमें रमणकी जय हो (धुव पयडि नंतानंतु कमल सर सिधि रवनी) इसीसे कमल समान सिद्ध भगवान अनन्तकाल तक अपने ध्रुव स्वभावमें रमण किया करते हैं ॥ ११ ॥

(सुइ कमल ममल उवनी) वही शुद्ध कमल समान परमात्मा प्रगट रहता है (धुव मुक्ति रमन जिन नाह कमल जिन जय जयनी) वे जिनेन्द्र ध्रुव मोक्षमें रमण करते हुए कमल समान झलकते हैं। ऐसे जैनधर्म धारी जैनोंकी जय हो ॥ १२ ॥

(सुइ उवन कमल रवनी) वे विकसित कमल समान शुद्धात्मा आपमें रमण करते रहते हैं (सुइ कमल नंतानंत मुक्ति जिन सिधि रवनी) वे ही अनन्त केवलज्ञानको लिये हुए मुक्त होकर सिद्धपदमें रमण करते रहते हैं (जिन सेनि सेनि रवनी) श्री जिनराज अपनी श्रेणीमें सुशोभित रहते हैं (सुइ कलन कमल जिन नाह, समय जिन सिधि गमनी) शुद्धात्मा कमलका अनुभव करते हुए वे ही जिनेन्द्र परमात्मा सिद्धपदमें गमन करते हैं ॥१३॥

(सुइ तार तरन तरनी) वे ही जिनेन्द्र तारण तरण जहाजके समान हैं (सुइ तार कमल जिन सिद्ध सिद्ध जिन जिनय जिनी) वे ही भव्य जीवोंको तारनेवाले कमल समान जिनेन्द्र हैं, वे ही सिद्ध जिन हैं, वे ही वीतरागी जिन हैं (सुइ तार समय रवनी) वे ही परमात्मा अपने तारक स्वभावमें परिणमन करते हैं (सुइ तरन समय सिधि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रतु काल पय पर्म जिनी) वे ही परमात्मा स्वयं तरके सिद्धभावमें लीन रहते हैं। वे ही शुद्ध कमल पद रूप परमात्मा जिन हैं ॥ १४ ॥

भावार्थ—इस उवन जिनपयोगमें बताया है कि जिनपदका प्रकाश एक शुद्धात्माके अनुभवसे होता है। आत्मज्ञानके रमणसे आत्मज्ञान झलकता है। जहां शुद्धात्मामें रमण है वही सम्यग्दर्शनका, सम्यग्ज्ञानका, व सम्यक्चारित्रका आचरण है। वही रत्नत्रय स्वरूप मोक्षमार्ग है–वही वीतराग चारित्र है। इसी चारित्रपर चलते रहनेसे यथाख्यात चारित्र होजाता है, शुक्लध्यानका प्रकाश होता है, जिसमें घातीय कर्मोंका क्षय होता है। श्री जिनेन्द्र परम वीतरागी होते हैं, वे निरन्तर स्वात्मरमण करते रहते हैं। वहां सहज ही शुद्धोपयोग है।

रागद्वेषकारक मोहनीय कर्मका ही क्षय होगया है। जब आत्माका प्रकाश होजाता है तथा घातक कर्म क्षय होजाते हैं, तब ध्रुवरूपसे परमात्मा पद प्रगट होजाता है। अघातीय कर्मोंके क्षयसे वे ही सिद्ध होजाते हैं, और अनन्त काल तक सिद्धपदमें रमण करते हैं। मुमुक्षु जीवको उचित है कि अपने भीतर गुप्त जिनपदको प्रकाश करनेके लिये जिन भगवानकी पहचान करके उनकी सची भक्ति करे। जिन भक्तिसे स्वात्माके रमणकी शक्ति प्रगट होती है। यही मोक्षमार्गका प्रारंभ है। स्वात्मरमण बढ़नेसे गुणस्थान बढ़ जाता है। परमात्माके द्रव्यको पहचाननेसे आत्मद्रव्यका यथार्थ निश्चय होता है। वास्तवमें आत्मामें रमणता ही मोक्षका उपाय है। यही निश्चय रत्नत्रय है। व्यवहार रत्नत्रयके आलम्बनसे निश्चय रत्नत्रय होता है। समयसारमें कहा है—

आयारादीणाणं जीवादी दंसणं च विण्णेयं। छज्जीवाणं रक्खा भणदि चरित्तं तु ववहारो ॥ ३०० ॥
आदा खु मज्झ णाणे आदा मे दंसणे चरित्ते य। आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोगे ॥ ३०१ ॥

भावार्थ—व्यवहारनयसे जीवादि सात तत्वोंकी श्रद्धा सम्यक्त है। आचारांग आदि शास्त्रका ज्ञान सम्यग्ज्ञान है। छःकायके प्राणियोंकी रक्षा सम्यक्चारित्र है। निश्चयसे जहां आत्मानुभव है वही ज्ञान है व सम्यग्दर्शन है, वही चारित्र है, वही त्याग हैं, वही संवर है, वही योग है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१४४) हिय उवन समय गाथा २९६९ से २९८६ तक।

जय जयं जयं जय जिन जैनं, जय अपर पर्म पय परम जिनं ॥ जिन उवन जिनं ॥ १ ॥

अहो जिन जिनवर जिनके हियए वसै, अहो जिन तिनके हिय हुव मुक्ति रसै।

अहो जिन जिनय जिनं (आचरी) ॥ २ ॥

जय कलन कमल जय जयं कलै, जिन उवन कमल सिधि ध्रुवं मिलै ॥जिन उवन० अहो०॥ ३ ॥

जय क्रांति कमल कलि कलन रसै, जय उवन कमल क्रांति मुक्ति बसै ॥ जिन० अहो० ॥ ४ ॥

जय ममल कमल स्फटिक रलै, जिन तार कमल वीर्थं मुक्ति मिलै ॥ जिन० अहो० ॥ ५ ॥

जय जयं जयं जय रूव रहै, जय रूव कमल जिन मुक्ति लहै ॥ जिन० अहो० ॥ ६ ॥

जय लषन कमल जिन रूव लषै, जिन अलष कमल रूव मुक्ति अषै ॥ जिन० अहो० ॥ ७ ॥

जय जयं कमल मय सब्द मिलै, उव कमल सब्द जिन मुक्ति रलै ॥ जिन० अहो० ॥ ८ ॥

जय अगम कमल सब्द अगम गमै, जिन उवन उवन सब्द मुक्ति रलै ॥ जिन० अहो० ॥ ९ ॥

जय अगम कमल मनु अगम सहै, उव उवन कमल मनु मुक्ति रलै ॥ जिन० अहो० ॥१०॥

जय षिपक कमल मनु षिपक गमै, जिन मुक्ति कमल मनु मुक्ति रमै ॥ जिन० अहो० ॥११॥

हिय रमन कमल जिन रमन रमै, हिय उवन कमल जिन मुक्ति रमै ॥ जिन० अहो० ॥१२॥

ध्रुव उवन कमल ध्रुव रमन रमै, जिन उवन उवन ध्रुव मुक्ति गमै ॥ जिन० अहो० ॥१३॥

जय जयं जयं जय षिपक रसै, उव षिपक कमल जिन मुक्ति रमै ॥ जिन० अहो० ॥१४॥

आयरन कमल आयरन गमै, जिन आयरन उवन जिन मुक्ति रमै ॥ जिन० अहो० ॥१५॥

जय इच्छ कमल आयरन सहै, जिन इच्छ उवन कलि मुक्ति लहै ॥ जिन० अहो० ॥१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पय रमन कमल पय रमन गमै, पय उवन कमल सुइ मुक्ति रमै ॥ जिन० अहो० ॥१७॥
मध्य रमन कमल षट् रमन रमै, मध्य उवन कमल रमि मुक्ति गम ॥ जिन० अहो० ॥१८॥
आयरन उवन उव उवन गमै, उव उवन कमल उव मुक्ति रमै ॥ जिन० अहो० ॥१९॥
आयरन उवन उव कमल सहै, उव ठान कमल जिन मुक्ति लहै ॥ जिन० अहो० ॥२०॥
आयरन स्रेनि जिन स्रेनि गमै, आयरन कमल सिय सिद्धि रमै ॥ जिन० अहो० ॥२१॥
आयरन तार तर तरन गमै, आयरन कमल सम सिद्धि रमै ॥ जिन० अहो० ॥२२॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जयं जयं जय जिन जैनं) जैनधर्मके धारी श्री जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो, जय हो (जय अपर पर्म पय परम जिनं) जो अनुपम परम पदके निवासी परमात्मा जिन हैं ॥ १ ॥

(अहो जिन जिनवर जिनके हियए बसै, अहो जिन जिनके हिय हुव मुक्ति रसै) हे भाई ! जिनके हृदयोंमें श्री जिनेन्द्र वास करते हैं उन्हींके हृदयोंमें मुक्तिके रसमें भीगा हुआ ध्यान प्रगट होता है ॥ * ॥

(जय कलन कमल जय जय कलै) शुद्धात्मारूपी कमलके अनुभवकी जय हो जिससे स्वानुभव बढ़ता है (जिन उवन कमल सिधि धुवं मिलै) श्री जिनेन्द्रके कमल समान आत्माका प्रकाश होजाता है इससे उनको अविनाशी सिद्धपद प्राप्त होजाता है ॥ ३ ॥

(जय क्रांति कमल कलि कलन रसै) प्रकाशमान शुद्धात्मारूपी कमलके अनुभवसे आनन्द रस आता है (उव उवन कमल क्रांति मुक्ति बसै) इसी उपायसे जिसके भीतर कमलसम आत्माका शोभायमान प्रकाश होजाता है वह मोक्षमें वास करता है ॥ ४ ॥

(जय ममल कमल स्फटिक रलै) जो स्फाटिक समान निर्मल शुद्धात्मारूपी कमलका ध्यान करता है (जिन तार कमल वीर्य मुक्ति मिलै) वही तारणतरण कमल सम जिनेन्द्र होकर अपने अनन्त वीर्यसे मोक्षका लाभ करता है ॥ ५ ॥

(जय जयं जयं जय रुव रहै) शुद्ध स्वभावकी जय हो, उसमें जो रहता है (जय रुव कमल जिन मुक्ति लहै) वह कमल समान जिनका स्वभाव प्रगट कर मोक्षको पाता है ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

अनुभव करता है (जिन अलष कमल सरूव मुक्ति अपै) सो अतीन्द्रिय कमल समान जिनेन्द्र होकर अविनाशी मोक्ष स्वरूप होजाता है ॥ ७ ॥

(जय जयं कमल मय सव्द मिलै) जिमको कर्मको जीतनेवाले कमलसम आत्माके प्रकाशक शब्दोंके द्वारा मनन या ध्यान मिल जाता है (उव कमल सव्द जिन मुक्ति रलै) वह कमल शब्दके अनुसार जिन भगवानका स्वभाव प्रगट कर मोक्षमें पहुँच जाता है ॥ ८ ॥

(जय अगम कमल सब्द अगम गमै) जो कोई अगम शब्दके अनुसार अतीन्द्रिय कमलसम आत्माका अनुभव करता है (जिन उवन उवन सब्द मुक्ति रलै) वह उस शब्दकी सहायतासे अतीन्द्रिय स्वभावको प्रगट कर मोक्ष पाता है ॥ ९ ॥

(जय अगम कमल मनु अगम सहै) जो कोई अतीन्द्रिय कमलसम आत्माके समान अतीन्द्रिय होकर स्वभावमें स्थिर होता है (उव उवन कमल मनु मुक्ति रलै) वह स्वयं कमल समान विकसित होकर मोक्ष लाभ करता है ॥ १० ॥

(जय षिपक कमल मनु षिपक गमै) जो कोई क्षायिक भावधारी कमलसम आत्माके समान स्वयं क्षायिक भावोंमें परिणमन करता है (जिन मुक्ति कमल मउ मुक्ति रमै) वह मुक्त जिनेन्द्र कमलके समान होकर मुक्तिमें रमण करता है ॥ ११ ॥

(हिय रमन कमल जिन रमन रमै) जो कोई हितकारी आत्मरमी कमलसम आत्माके समान स्वयं वीत-राग स्वभावमें रमण करता है (हिय उवन कमल जिन मुक्ति रमै) वह हितकारी कमलरूप जिनेन्द्र आत्मा स्वयं होकर मोक्षमें रमण करता है ॥ १२ ॥

(ध्रुव उवन कमल ध्रुव रमन रमै) जो कोई अविनाशी प्रकाशित कमल सम आत्माके समान अपने ध्रुव स्वभावमें रमण करता है (जिन उवन उवन ध्रुव मुक्ति गमै) वह प्रकाश करते करते जिनेन्द्र पद प्रगट कर फिर ध्रुव मुक्तिमें पहुंच जाता है ॥ १३ ॥

(जय जयं जयं जय षिपक रसै) क्षायिक भावोंके स्वाद लेनेवालेकी जय हो, जय हो (उव षिपक कमल जिन मुक्ति वसै) श्री जिनेन्द्र कमल क्षायिक भावोंको प्रगट कर मोक्षमें वास करते हैं ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(आयरन कमल आयरन गमै) जो कोई कमलसम शुद्धात्मामें आचरण करता है वह चारित्रको बढ़ाता है (जिन आयरन उवन जिन मुक्ति रमै) वही वीतराग चारित्रको प्रगट कर जिनेन्द्र हो मोक्षमें रमण करता है ॥१५॥

(जय इच्छ कमल आयरन सहै) जो बड़े उत्साहसे कमलसम आत्माकी चाहना करके उसीके आचरणमें स्थिर होजाता है (जिन इच्छ कमल कलि मुक्ति लहै) वही इच्छित कमल समान जिनेन्द्र होकर मोक्षको पाता है ॥१६॥

(पय रमन कमल पय रमन गमै) जो कमल सम परमात्माके पदमें रमण करता है व स्वात्मरमणको बढ़ाता है (पय उवन कमल सुइ मुक्ति रमै) वही कमल सम परमात्मा होकर मोक्षमें रमण करता है ॥ १७ ॥

(मध्य रमन कमल षट् रमन रमै) जो कमल सम परमात्माके गुणोंके भीतर प्रवेश करता है वह छः गुणोंके भीतर रमण करता है। अनन्तज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, सम्यक्त चारित्र ये मुख्य छः गुण हैं (मध्य उवन कमल रमि मुक्ति गमै) वह स्वयं अपने आत्म-कमलके भीतर बिराजित गुणोंको प्रगट कर उसमें रमता हुआ मोक्ष पाता है ॥ १८ ॥

(आयरन उवन उव उवन गमै) जो वीतराग चारित्रके प्रकाशसे चारित्रका प्रकाश बढ़ाता जाता है (उव उवन कमल उव मुक्ति रमै) वही कमल समान विकसित होकर मोक्षमें रमण करता है ॥ १९ ॥

(आयरन उवन उव कमल सहै) जब वीतराग चारित्र बढ़ता है, तब कमल सम आत्मामें स्थिर होता है (उव ठान कमल जिन मुक्ति लहै) तब वह परमात्मा जिन कमलके तेरहवें व चौदहवें गुणस्थानको पाकर मोक्ष प्राप्त करता है ॥ २० ॥

(आयरन सेनि जिन सेनि गमै) जिनराज पदके भीतर वीतराग चारित्रसे यह अपने जिनपदमें परिणमन करता है (आयरन कमल सिय सिद्धि रमै) शुद्धात्मा कमलके भीतर आचरणसे पूर्ण शुद्ध होकर सिद्धगतिमें रमण करता है ॥ २१ ॥

(आयरन तार तर तरन गमै) वीतराग चारित्रके साथ तारणतरण अरहन्त पदमें जहाजके समान परिणमन करता है (आयरन कमल सिद्धि रमै) फिर शुद्धात्मारूपी कमलमें आचरण करता हुआ मोक्षमें जाकर सिद्धपदमें रमण करता है ॥ २२ ॥

भावार्थ—इस छन्दमें बड़ी ही सुन्दर भावना आत्मामें रमणकी की गई है। यह एक स्तोत्र है जिसके बार बार पढ़नेसे मन आत्माके भीतर जमता है। इसका सार यही है, जो जैसा भावे वह वैसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होजावै। हमें यदि अरहँत व सिद्धपदका लाभ करना है तब उनके द्रव्यको, उनके गुणोंको, उनकी शुद्ध पर्यायको पहचानना चाहिये, और यह निश्चय करना चाहिये कि मेरे भीतर भी वे ही गुण हैं। मैं भी कर्मोंके मैलको नाश करके अरहन्त व सिद्ध होसक्ता हूँ। ऐसा गाढ निश्चय करके पूर्ण श्रद्धावान होकर भव्यको उचित है कि परमात्माकी भक्ति द्वारा अपने आत्माकी भक्ति करे। मन बड़ा चञ्चल है। जबतक शुक्लध्यान प्रगट न हो धर्मध्यान हो तबतक बुद्धिपूर्वक उत्तम आत्मज्ञान बोधक पाठोंके द्वारा आत्माका मनन करना योग्य है। मनन करते करते ही क्षणमात्रके लिये ध्यान होजाता है। आत्माके ध्यानसे ही वीतराग चारित्रका प्रकाश होता है। जितना जितना कषायका क्षय होता है, वीतराग चारित्र बढ़ता जाता है। इसीसे क्षपकश्रेणी चढ़कर मोहका नाश करके फिर शेष घातीय नाश करके नौ क्षायिक भाव धारी या छः मुख्य गुणधारी अरहन्त परमात्मा होजाता है। उस पदमें उनकी वाणीसे अनेकोंको मोक्षमार्ग मिलता है। इसलिये वे तारणतरण कहलाते हैं। फिर वही तीसरे व चौथे शुक्लध्यानसे पूर्ण शुद्ध हो मोक्षमें जाकर ध्रुव रूपसे निजानन्दका स्वाद सदा लेते रहते हैं-संसारसागरसे पार होजाते हैं। सिद्धकी भक्तिसे ही हित होगा। समयसारमें कहा है—

जो सिद्धभत्तिजुत्तो उवगूहणगो दु सव्वधम्माणं। सो उवगूहणगारी सम्मादिट्ठी मुणेदव्वो ॥ २४८ ॥

भावार्थ—जो कोई सिद्ध भगवानकी भक्तिमें उपयोग जोड़ना है वह सर्व रागादि भावोंको मिटाता है, वही उपगूहन अंग धारी सम्यग्दृष्टी है ऐसा जानना योग्य है।

(१४५) अर्क पिय गाथा २९८६ से ३००२ तक।

जय उवन उवन उवन पौ, उवन उव रसावै।
जय उवन रंज रमन नंद, मुक्ति रमन पावे ॥ जै रंज रमन नंदनं ॥ १ ॥
जय ऐय ऐय गुप्ति अर्क, पिय नन्त नंत सावै।
जय नंद लीन कोउ जिनवर, मुक्ति पंथ पावै ॥
॥ अहो जिन नंदिनी सुहाई (आचरी) ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय ममल कमल कलन, कमल उव उवन पौ रसावै ।
जय चरन चरिय उवन, कमल मुक्ति पंथ पावै ॥ जै रंज रमन नंदनं० ॥३॥

जै कन किर्न सुवन सुवन उवनं उव रसावै ।
जै उवन रमन हंस रयन मुक्ति रमन पावै ॥ जै रंज० ॥ ४ ॥

जै सुवन हुवन हुव अनंत नंत रमन रावै ।
अवयास नन्त जै अनन्त नत मुक्ति पाव ॥ जै रंज० ॥ ५ ॥

जै दिप्ति दिष्टि सुय दिप्ति उव उवन दिप्ति सावै ।
ज सुयं सुयं सुयं उवन उवन मुक्ति पावै ॥ जै रंज० ॥ ६ ॥

जै अभय अभय अभय रंजु अभय उवन रावै ।
जै सुर्क सुर्क उवन सुक उवन मुक्ति पावै ॥ जै रंज० ॥ ७ ॥

जै अर्थ अर्थ उवन अर्थ अर्थ उवन रावै ।
जै विंद विंद उवन विंद सुन्न मुक्ति पावै ॥ जै रंज० ॥ ८ ॥

जै नंद नंद उवन नंद नंद रमन लावै ।
आनद नंद सहज नंद नंद मुक्ति पावै ॥ ज रंज० ॥ ९ ॥

जै समय समय उवन समय उवन उवन रावै ।
हिययार नंद हाग समय उवन मुक्ति पाव ॥ जै रंज० ॥ १० ॥

जै अलष अलष अलष उवन उवन उवन रावै ।
जै अगम अगम अगम नाथ अगम मुक्ति पावै ॥ जै रंज० ॥ ११ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जै साह साह अगम साह उवन साह साहै ।
जै रमन रमन उवन रमन उवन मुक्ति पावै ॥ जै रंज० ॥ १२ ॥
जै रंज रंज अगम रंज उवन रंज रावै ।
जै उवन उवन उवन नन्द नन्द मुक्ति पावै ॥ जै रंज० ॥ १३ ॥
जै षिपक षिपक उवन षिपक षिपक उवन सावै ।
जै ममल ममल उवन ममल ममल मुक्ति पावै ॥ जै रंज० ॥ १४ ॥
जै अर्क अर्क सेनि अर्क अर्क कलन अर्क रावै ।
जै अर्क अर्क तार तरन अर्क मुक्ति पावै ॥ जै रंज० ॥ १५ ॥
जै तार तरन तरन कमल उवन कमल रावै ।
जै उवन कमल समय उवन उवन मुक्ति पावै ॥ जै रंज० ॥ १६ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय उवन उवन उवन पौ, उवन हुव रसावै) जो कोई ज्ञानमई पदमें लीन होकर ज्ञानको बढ़ाता हुआ आत्मरसमें भीजता है (उव उवन रंज रमन नंद मुक्ति रमन पावै) वह ज्ञानमें मगन होता हुआ व आनंदमें रमण करता हुआ मोक्षको पाता है ॥ १ ॥

(जय ऐय ऐय गुप्ति अर्क पिय नंत नंत सावै) जो कोई अपने स्मरणमें बारबार लाता है कि अनुभवगोचर आत्मारूपी सूर्य परमप्रिय है व अनन्त गुणोंका धारी है (जय नन्द लीन कोड जिनवर मुक्ति पंथ पावै) वही आत्मानन्दमें लीन होकर जिनेन्द्रके स्वरूपको स्वीकार कर मोक्षके मार्गको पाता है (अहो जिन नंदिनी सुहाई) हे भाई ! मुझे तो श्री जिनेन्द्रके स्वरूपमें आनन्दसे रमण ही सुहाता है ॥ २ ॥

(जय ममल कमल कलन कमल उव उवन पौ रसावै) जो कोई शुद्धात्मारूपी कमलका मनन करता हुआ उसी कमलमें प्रेमी होकर अपने आत्मज्ञानके प्रकाशमें उत्साह रखता है (जय चरन चरिय उवन कमल मुक्ति पावै) वही आत्मानुभव द्वारा वीतराग चारित्रमें उन्नति करता हुआ कमल समान परमात्मा जिन हो, मोक्षको पाता है ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जै कर्न किर्न सुवन सुवन उवन उव रसावै) जो कोई मोक्षके साधनके प्रकाश करनेमें परिणमन करता हुआ तथा आत्मानुभवरूपी साधनको बढ़ाता हुआ उसका रसिक होजाता है (जै उवन रमन हंस रमन मुक्ति रमन पावै) वही स्वात्मरमणको बढ़ाकर हंसके समान शुद्ध रत्नत्रयमई वीतराग शुद्धोपयोगको पाता है, वही मोक्षमें रमणका लाभ कर लेता है ॥ ४ ॥

(जै सुवन हुवन हुव अनंत नंत रमन रावै) जो कोई आत्मध्यानकी अग्निमें अनन्त कर्मोंको जलाकर आत्माके शुद्ध अनन्तज्ञानादि गुणोंमें रमण करता है (अवयास नंत जै अनन्त नंत मुक्ति पावै) वह अनन्तज्ञानसे पूर्ण हो, अनन्त कर्मोंको जीतकर अविनाशी अनन्त मोक्षको पाता है ॥ ५ ॥

(जय दिप्ति दिप्ति सुयं दिप्ति उव उवन दिप्ति सावै) जो कोई आत्मज्ञानकी ज्योतिको स्वयं जलाकर ज्ञान-ज्योतिके प्रकाशको बढ़ाता है (जै सुय सुयं सुयं उवन उवन मुक्ति पावै) वह अपनेसे अपनेको अपनेमें प्रकाश कर अर्थात् परमात्मा होकर प्रकाशरूप मोक्षको पाता है ॥ ६ ॥

(जै अभय अभय अभय रंजु अभय उवन रावै) जो कोई अभय पदधारी परमात्माके भीतर भयरहित हो, रंजायमान होता है वह अभयभावको बढ़ाता है (जै सुर्क सुर्क उवन सुर्क उवन मुक्ति पावै) वह अपने भीतर केवलज्ञानमई सूर्यका ध्यान करके सूर्यसम अरहन्त केवलज्ञानी हो, मोक्षको पाता है ॥ ७ ॥

(जै अर्थ अर्थ उवन अर्थ अर्थ उवन रावै) जो कोई परमात्मा पदार्थका निश्चय करके उसी पदार्थमें ध्यान लगाता है वह अपने आत्मा पदार्थका विकास करता है (जै विंद विंद उवन विंद सुन्न मुक्ति पावै) वह स्वात्मानु-भव करके स्वात्मानुभवको बढ़ाता हुआ सर्व रागादि परभावोंसे शून्य हो, मोक्ष प्राप्त करता है ॥ ८ ॥

(जै नंद नंद उवन नंद नंद रमन लावै) जो आत्मानन्दमें मगन होता है वह आनन्दको प्रगट कर आन-न्दकी रमणताको बढ़ाता है (आनंद नंद सहज नंद नंद मुक्ति पावै) वह आत्मानन्दकी मगनतासे सहजानन्दी होकर अनन्तसुख सहित मोक्षको पाता है ॥ ९ ॥

(जै समय समय उवन समय उवन उवन रावै) जो शुद्धात्माका वारवार मनन करता है वह आत्माकी उन्नति करता हुआ आत्मज्ञानको बढ़ाता है (हिययार नन्द हाग समय उवन मुक्ति पावै) वही हितकारी आनन्दको पाकर परमात्मा हो, मोक्ष पाता है ॥ १० ॥

(जय अलष अलष अलष उवन उवन उवन रावै) जो कोई अतीन्द्रिय आत्माका वारवार अनुभव करता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

वह अपने आत्माके प्रकाशको बढ़ाता है (जै अगम [illegible] मुक्ति पावै) वही अतीन्द्रिय गुणोंका स्वामी होकर अनुभवगोचर मोक्षको पाता है ॥ ११ ॥

(जै साह साह अगम साह उवन साह साहै) जो कोई मोक्षमार्गका साधन करके आत्मानुभवको साधन करता है वह आत्माका साधन साधता है—आत्माकी शक्ति बढ़ाता है (जै रमन रमन उवन रमन उवन मुक्ति पावै) वही अपने स्वरूपमें रमण कर आत्माकी रमणताको बढ़ाकर परमात्मा हो, मोक्ष पाता है ॥ १२ ॥

(जै रंज रंज अगम रंज उवन रंज रावै) जो आत्माके स्वरूपमें मगन होता हुआ आत्मानुभवमें आनंद लाभ करता है वह अपने आनन्दकी मगनताको बढ़ाता है (जै उवन उवन उवन नंद नंद मुक्ति पावै) वही आत्मानन्दके अभ्याससे अनन्तसुखको प्रगट कर उसीमें आनन्दित हो, मोक्ष पाता है ॥ १३ ॥

(जै षिपक षिपक उवन षिपक षिपक उवन रावै) जो कोई क्षायिक सम्यग्दृष्टी क्षायिक भावको प्रगट कर ध्याता है वह कर्मोंका क्षय करता हुआ क्षायिक भावोंको बढ़ाता है (जै ममल ममल उवन ममल ममल मुक्ति पावै) वही शुद्धोपयोगतासे घातीय कर्मरहित शुद्ध अरहन्त हो, फिर अघातीय कर्ममलसे भी छूटकर मोक्ष पाता है ॥ १४ ॥

(जै अर्क अर्क सेनि अर्क अर्क कलन अर्क रावै) जो कोई सूर्यसम परमात्माका मनन कर गुणस्थानोंके द्वारा चढ़ता हुआ उसी सूर्यका अनुभव करता हुआ अपने आत्माके प्रकाशको बढ़ाता है (जै अर्क अर्क तार तरन अर्क मुक्ति पावै) वही इस निजात्मारूपी सूर्यके ध्यानसे तारण तरण अरहन्त सूर्य हो, फिर पूर्ण सूर्य होकर मोक्ष पाता है ॥ १५ ॥

(जै तार तरन तरन कमल उवन कमल रावै) जो तारण तरण जहाजके समान अरहन्तरूपी कमल, कमल समान प्रकाशित होता है (जै उवन कमल समय उवन उवन मुक्ति पावै) वही प्रकाशित कमल पूर्ण परमात्मा होकर सदा प्रकाशनीय मोक्षको पाता है ॥ १६ ॥

भावार्थ—यह छन्द पुरानी हिन्दी भाषाका नमूना है। इसमें भी बड़ी ही उत्तमतासे आत्माके मननकी भावना की गई है और यह भलेप्रकार दिखला दिया है कि अपने आत्माके ही द्वारा आत्माकी उन्नति होती है। परमात्माके समान निश्चयसे मेरा आत्मा है। मैं स्वभावसे सर्व रागादि विकारोंसे रहित हू। मैं वीतरागी पूर्ण ज्ञानानन्दी हूँ, सहजानन्दी हूँ, परिणमनशील हूँ, स्वात्मरमणशील हूँ। इस-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तरह जो श्रद्धान करके आत्माका पूर्ण रसिक होजाता है। तथा फिर आत्माके स्वरूपका मनन करता हुआ आत्मानुभवकी व आत्मामें आनन्द लाभकी शक्तिको प्रगट करता है वह क्षायिक सम्यग्दृष्टी होकर वीतरागताकी वृद्धिसे साधु हो, क्षपकश्रेणी चढ़कर मोहका नाश कर क्षायिक चारित्रको प्रगट करता है, फिर शेष तीन घातीय कर्मोंको क्षय करके अरहन्त परमात्मा होजाता है। फिर शेष अघातीय भी क्षय करके मोक्ष प्राप्त करता है, वहां भी सदा अपने शुद्ध स्वरूपमें प्रकाशित रहता हुआ अनन्त परमानन्दका भोग करता है। जो परमात्मारूपी सूर्यको ध्याता है, वही सूर्यसम परमात्मा होजाता है। मुमुक्षुको रत्नत्रयमई धर्मपर श्रद्धा लाकर आत्मानुभवकी शक्तिको बढ़ाना चाहिये। भेदविज्ञानसे आत्मानुभव होता है।

समयसार कलशमें कहा है—

संपद्यते संवर एष साक्षाच्छुद्धात्मतत्त्वस्य किलोपलंभात्। स भेदविज्ञानत एव तस्मात्तद्भेदविज्ञानमतीव भाव्यम्॥ ५–६॥

भावार्थ—शुद्धात्माके अनुभवसे साक्षात् कर्मोंका संवर होता है। वह शुद्धात्माका अनुभव भेदविज्ञान द्वारा होता है। इसलिये भेदविज्ञानकी वारवार भावना करनी योग्य है।

(१४६) साध्य शुद्ध गाथा ३००३ से ३००९ तक।

जय जिनयति हो जिन वाली, जिन जिनियो जिनय जिनाली।
जिन जिनयति हो जिन जिन तार, जय जय हो तुम्ह मुक्ति वियाली॥ १॥
साधउ धुव उव उवना, उव उवने हो जिन जिनय सुतार॥ साधउ धुव उव उवना॥
जिन धुव जिन हो जिन उवन सवीरु, साधउ धुव ममल जिना (आचरी)॥ २॥
जय जय हो जय जय नाली, जै जै जै कमल वियाली।
जय जय हो कलि कलन पओ, जै जै जै हो तुम मुक्ति जिनाली॥ साधउ०॥ ३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मय ममल जुहो जिन ममल जिनाली, धर अधर धुवं धुव जिन धरनं।
उव उवने हो सुइ नंतानंतु, मय धुवं उवन जिन मुक्ति पियाली ॥ साधउ० ॥ ४ ॥
मय ममल ममल जिन जिनवाली, आयरन धुवं धुव उवन पओ।
आराहिय हो धुव नंतानंतु, आलाप परम जिन मुक्ति वियाली ॥ साधउ० ॥ ५ ॥
आराहि उवन हिय सहयाली, आयरन उवन हिय साह सहै।
आलाप उवन हिय सहन सहं, आलाप जयं जय मुक्ति जिनाली ॥ साधउ० ॥ ६ ॥
सुइ सेनि जुहो जिन सेनि जिनाली, सुइ कलन कलिय जिन कलन पओ।
सुइ तारन हो जिन कमल सु तार, सह समय उवन जिन मुक्ति अपार ॥ साधउ० ॥ ७ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जिनयति हो जिनवाली, जिन जिनियो जिनय जिनाली) **श्री जैनधर्मधारी जिनेन्द्रकी जय हो, जिनेन्द्रने जीतनेयोग्य कर्मोंको जीत लिया है** (जिन जिनयति हो जिन जिन तार) **तारणतरण श्री जिनेन्द्रकी जय हो** (जय जय हो तुम्ह मुक्ति पियाली) **हे जिनेन्द्र! आपकी जय हो, आपने मोक्षको प्राप्त कर लिया है ॥१॥**

(साधउ धुव उव उवना) **जिनेन्द्रने साधन करके ध्रुव प्रकाश पाया है** (उव उवने हो जिन जिनय सु तार) **हे तारणतरण जिनेन्द्र! आप प्रगट हो** (जिन धुव जिन हो जिन उवन सुवीरु) **हे जिनेन्द्र! आप ध्रुव हो, वीतराग हो, प्रकाशमान हो, बड़े वीर हो** (साधउ धुव ममल जिना) **आपने ध्रुव शुद्ध जिनपदको साधन किया है ॥२॥**

(जै जै हो जै जैनाली) **जैनधर्म धारीकी जय हो, जय हो** (जै जै जै कमल वियाली) **कमल समान विकसित प्रभुकी जय हो, जय हो** (जै जै हो कलि कलन पओ) **स्वात्मानुभव पदके धारीकी जय हो, जय हो** (जै जै जै हो तुम्ह मुक्ति वियाली) **आपकी जय हो, जय हो, जय हो। आपने मोक्ष प्राप्त करली है ॥ ३ ॥**

(मय ममल जुहो जिन ममल जिनाली) **आप शुद्ध ज्ञानके धारी हो, आप शुद्ध जिन भगवान हो** (धर अधर धुवं धुव जिन धरनं) **आप स्वाधीन ध्रुव अविनाशी जिन स्वरूपके धारण करनेवाले हो** (उव उवने हो सुइ नंतानंतु) **आपने अनन्तज्ञानादि गुणोंको प्रकाश कर दिया है** (मय धुवं उवन जिन मुक्ति वियाली) **आप जिनेन्द्रने ध्रुव ज्ञानको प्रगट करते हुए मोक्ष प्राप्त की है ॥ ४ ॥**

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(मय ममल कमल जिन जिनवाली) आप शुद्ध ज्ञानके धारी कमलके समान श्री जिनेन्द्र हो (आयरन ध्रुवं ध्रुव उवन पओ) वीतराग चारित्रके द्वारा आपने ध्रुव प्रकाश करनेवाले पदको ध्रुवरूपसे पाया है (आराहिय हो ध्रुव नंतानंतु) आपने ध्रुव अनन्त गुणधारी आत्माका आराधन किया था (आलाप परम जिन मुक्ति पियाली) इसीसे आपको परमात्मा कहते हैं। आप जिनेन्द्रने मुक्ति प्राप्त की है ॥ ५ ॥

(आराहि उवन हिय सहयाली) रत्नत्रयकी आराधनासे आपने हितकारी साधनको प्रगट किया था (आयरन उवन हिय साह सहै) वीतराग चारित्रके द्वारा हित साधनको साधा था (आताप उवन हिय सहन सहं) इसीसे कहा जाता है कि आप हितकारी साधनमें स्थिर हो। स्वरूपमें मगन हो (आलाप जयं जय मुक्ति जिनाली) तथा यह भी वचन कहा जाता है कि आपकी जय हो, क्योंकि आपने मोक्षको पालिया है ॥ ६ ॥

(सुइ स्रेनि जुहो जिन स्रेनि जिनाली) आपने क्षपकश्रेणी चढ़कर जिनराजकी श्रेणीको जीता है (सुइ कलन कलिय जिन कलन पओ) वही सयोगकेवली जिनका पद स्वात्मानुभवरूप है। क्योंकि निरन्तर आत्मामें मगनता है (सुइ तारन हो उव कमल सु तार) आप ही तारणतरण कमल समान अरहन्त हो (सह समय उवन जिन मुक्ति अपार) आपने परमात्माके पदके साथ अनन्त काल तक रहनेवाली मुक्तिको झलका दिया है ॥ ७ ॥

भावार्थ—इस स्तोत्रमें यह बताया है कि सिद्धपद या अरहन्तपद रत्नत्रयकी आराधनासे या वीतराग चारित्रकी आराधनासे या स्वानुभवसे ही प्रगट होता है। मोक्षका लाभ स्वयं होता है—कोई मोक्ष देता नहीं। तथा मोक्षपद सदा ध्रुव बना रहता है। जिनेन्द्र इसी लिये पूज्यनीय हैं। उन्होंने जैनधर्मके द्वारा कर्मोंको जीतकर जिनपद पाया है तथा निरन्तर स्वात्मानुभवमें मगन हो आत्मानन्द लाभ कर रहे हैं।

समयसारमें परमात्माका स्वरूप कहा है—

सो सव्वणाणदरसी कम्मरयेण णियएण उच्छण्णो। संसारसमावण्णो णवि जाणदि सव्वदो सव्वं ॥ १६७ ॥

भावार्थ—जो कोई कर्मोंकी रजसे बिलकुल भिन्न होजाता है वह सर्वज्ञ व सर्वदर्शी परमात्मा होजाता है, तथा यह आत्मा भी निश्चयसे ऐसा ही है। निश्चयसे यह शुद्ध है परंतु संसारमें अनादिकालसे भ्रमता हुआ सर्वको सर्व तरह नहीं जानता है, अल्पज्ञानी होरहा है। यदि अपने स्वरूपका आराधन करे तो परमात्मा होजावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१४७) मिलन रमन चौतीसी गाथा ३०१० से ३०२८ तक ।

संजोय विओय विलय सुइ होई, संजोय विओय विलेई ।
जिन स्वामी उवन जिन रावै ॥ १ ॥
री, सिय साहि उवन जिन रमन रले, रलि रमन रले सुइरे ।
सिय सिद्धि मुक्ति जिन स्वामी भावै (आचरी) ॥ २ ॥
विओय संजोय रमन ध्रुव होई, सिय रमन ध्रुवं ध्रुव जोई ।
ध्रुव रमन सिद्ध जिन स्वामी भावै ॥ री सिय० ॥ ३ ॥
निर्मल विमल जिनं ध्रुव होई, सुइ ममल सुयं सुइ होई ।
सिय ममल मुक्ति जिन स्वामी पावै ॥ री० ॥ ४ ॥
जिन उवन चरन चरेइ, जिन कलन उवन रक लेई ।
कलि कलन मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ ५ ॥
चरि चरन उवन जिन चरन चरै, तत्काल रमन रमि जोइ ।
रमि रमन मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ ६ ॥
जिन दर्स उवन दर्सावै, जिन अलब्धि लब्धि रत्न होई ।
सुइ अलब्धि मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ ७ ॥
जिन इच्छ उवन जिन इच्छ रसावै, जिन गुप्ति इच्छ ध्रुव रे ।
ध्रुव इच्छ मुक्ति जिन स्वामी पावै ॥ री० ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन गुप्ति रमन सिय सिद्धि रमै, निहि रिद्धि गुप्ति जिन रे ।
सुइ गुप्ति मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ ९ ॥

पय परम तत्त पद विंद रमै, पय ईर्ज रमन जिन रे ।
पय ईर्ज मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ १० ॥

ति अर्थ तिलोइ रमन सुइ नेई, ति ईज उवन थित्तेई ।
इय रमन मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ ११ ॥

मध्य ममल रमन जिन रावै, ध्याय नंत नंत जिन रे ।
मध्य रमन मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ १२ ॥

उव उवन रमन रलि रमन रलेई, तत्काल रमन जिन रे ।
पय नंत मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ १३ ॥

नय उवन उवन सुइ रमन रलेई, सुइ उवन उवन सुइ रे ।
उव उवन नंत जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ १४ ॥

आ आय उवन जिन रमन रलै, गु गुप्ति रमन जिन रे ।
वा उवन मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ १५ ॥

हा हल वंचिय चेय रमन जिन उवन रलै, ध्याय याय उवन जिन रे ।
हिय थान मुक्ति जिन स्वामी पावै ॥ री० ॥ १६ ॥

हा हल हुव हुव सुइ रमन रमै, सिय ईर्ज नंतानंत रे ।
ई ईर्ज मुक्ति जिन स्वामी पावै ॥ री० ॥ १७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ अगम अगम जिन अगम रलै, या यास आस जिन रे।
ई इज मुक्ति जिन स्वामी पावै ॥ री० ॥ १८ ॥
जिन सेनि कलन जिन रमन रलै, सुइ तार कमल जिन रे।
तर कमल मुक्ति जिनस्वामी पावै ॥ री० ॥ १९ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(संजोय वियोय विलय सुइ होई) जो संयोग वियोगके विकल्पोंको मिटा रहा है। शुद्ध निश्चयसे आत्माके साथ न बन्ध है न मोक्ष है, यह स्वतंत्र एक पदार्थ है ऐसी जो भावना करता है वह शुद्ध होजाता है (संजोय विओय विलोई जिन स्वामी उवन जिन रावै) संयोग वियोगके विकल्पोंको दूर कर स्वात्मानुभवके द्वारा जिनेन्द्रने जिनपदको प्रगट किया है व वे जिनपदमें शोभते हैं ॥ १ ॥

(री, सिय साहि उवन जिन रमन रले, रलि रमन रहे) हे भाई! शुद्धोपयोगसे जिनपदको साधन कर वे जिनेन्द्र पदमें लीन होरहे हैं (सिय सिद्धि मुक्ति जिन स्वामी भावै) उन्होंने शुद्ध होकर मोक्षको सिद्ध कर लिया है, उन जिनेन्द्रकी भावना करो ॥ २ ॥

(विओय संजोय रमन ध्रुव होई) जब कर्मोंका सम्बन्ध दूर कर दिया जाता है तब आत्माका ध्रुवरूपसे सदा स्वात्मरमण रहता है (सिय रमन ध्रुवं ध्रुव जोई, ध्रुव रमन सिद्ध जिन स्वामी भावै) शुद्ध भावमें ध्रुवरूपसे रमण होनेसे ध्रुव आत्माका अनुभव होता है। सिद्ध भगवान सदा ही आपमें रमण करते हैं, उनकी भावना करो ॥ ३ ॥

(निर्मल विमल जिनं ध्रुव होई) श्री जिनेन्द्र घातीय कर्म मल व रागादि मलसे रहित हो ध्रुव स्वभावको पा लेते हैं (सुई ममल सुयं सुइ होई, सिय ममल मुक्ति जिन स्वामी०) वे ही स्वयं शुद्ध होकर शुद्ध निर्मल मुक्तिके स्वामी होजाते हैं, उनकी भावना करो ॥ ४ ॥

(जिन उवन चरन चरेई) श्री जिनेन्द्र प्रकाशमान वीतराग चारित्रमें आचरण कर रहे हैं (जिन कलन उवन रक लेई, कलि कलन मुक्ति०) श्री जिनेन्द्र स्वात्मानुभवको प्रगट करके आपमें रत होते हुए मुक्तिके स्वामी है, उनकी भावना करो ॥ ५ ॥

(चरि चरन उवन जिन चरन चरै) श्री जिनेन्द्र चारित्रमें चलकर वीतराग चारित्रको प्रगट करके उसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारित्रमें चल रहे हैं (तत्काल रमन रमि जोईं, रमि रमन मुक्ति०) वे हरसमय स्वचारित्रमें रमते हुए मोक्षके स्वामी होजाते हैं, उनकी भावना करो ॥ ६ ॥

(जिन दर्स उवन दरसावै) श्री जिनेन्द्रने आत्माके दर्शनसे अनन्त दर्शनको प्रगट किया है (जिन अलब्धि लब्धि रल होई सुइ अलब्धि मुक्ति०) श्री जिनेन्द्रने अत्यन्त दुर्लभ अनन्तज्ञानादि लब्धियोंको पाया है वे ही अत्यन्त दुर्लभ मोक्षके स्वामी होगये हैं, उनकी भावना करो ॥ ७ ॥

(जिन इच्छ उवन जिन इच्छ रसावे) जिन स्वभावकी भावना करनेसे जिनेन्द्रके स्वभावमें रस आता है (जिन गुप्ति इच्छ ध्रुवरे, ध्रुव इच्छ मुक्ति०) जिनेन्द्र भगवान इच्छित और गुप्त तथा ध्रुव स्वभावमें रत हैं, ऐसे ध्रुव इच्छित मोक्षके स्वामीकी भावना करो ॥ ८ ॥

(जिन गुप्ति रमै सिय सिद्धि रमै) जो आत्माके गुप्त अनुभवगोचर स्वभावमें रमता है वह शुद्ध सिद्ध स्वभावमें रमता है (निहि रिद्धि गुप्ति जिनरे, सुइ गुप्ति मुक्ति०) वही जिनेन्द्र गुप्त भंडारकी निधि पाकर गुप्त मोक्षपदका स्वामी होजाता है, उनकी भावना करो ॥ ९ ॥

(पय परम तत्त पद विंद रमै) जो परमात्माके तत्वको समझकर उसी परमात्माके स्वभावमें रमण करता है (पय ईर्जे रमन जिन रे, पय ईर्जे मुक्ति०) वही केवलज्ञानमें रमण करता हुआ जिनेन्द्र हो, ज्ञानमई मोक्षका स्वामी होजाता है, उनकी भावना करो ॥ १० ॥

(ति अर्थ तिलोय रमन सुइ नेई) जो रत्नत्रयरूपी पदार्थमें रमण करता है वह तीन लोकका ज्ञाता हो जाता है (तिं ईर्जे उवन थिर्त्तेई, इय रमन मुक्ति०) वह इष्ट रत्नत्रयसे ज्ञानमई परमात्मपदको पाकर स्थिर होता है और ज्ञानमें रमण करनेवाली मुक्तिका स्वामी होजाता है, उनकी भावना करो ॥ ११ ॥

(मध्य ममल रमन जिन रावै) जो शुद्धोपयोगके मध्यमें रमण करता है वह वीतराग होजाता है (ध्याय नंत नंत जिन रे, मध्य रमन मुक्ति०) वह अनन्त परमात्माको ध्याता हुआ स्वभावमें रमण करनेवाली मुक्तिका स्वामी होजाता है, उनकी भावना करो ॥ १२ ॥

(उव उवन रमन रलि रमन रलेई) जो कोई ज्ञानमें रमण करता हुआ अपने रमणको बढ़ाता है (तत्काल रमन जिन रे, पय नंत मुक्ति०) वह शीघ्र ही स्वात्मरमी जिनेन्द्र होकर अनन्त काल तक रहनेवाली मुक्तिका स्वामी होजाता है, उनकी भावना करो ॥ १३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(नय उवन उवन सुइ रमन रलेई) जो कोई निश्चयनयसे आत्माका शुद्ध स्वभाव ध्यानमें लेता है, वह स्वात्मरमणको पाता है (सुइ उवन उवन सुइ रे, उव उव अनंत जिन०) वही अपनेको प्रकाश करता हुआ अनन्त गुणोंका स्वामी जिनेन्द्र होजाता है, भावना करो ॥ १४ ॥

(आ आय उवन जिन रमन रलै) जो कोई आप आत्माको निश्चय करके आत्मज्ञान द्वारा वीतराग जिनके स्वभावमें रमण करता है (गु गुप्ति उवन जिन रे, वा उवन मुक्ति०) वह अपने गुप्त स्वभावको प्रगट कर जिनेन्द्र होकर मोक्षका स्वामी होजाता है, भावना करें ॥ १५ ॥

(हा हल वंचिय चेय रमन जिन उवन रलै) इस भ्रमणशील संसारसे उदास होकर जो चेतनाके स्वरूपमें रमण करता है, वह वीतराग भावको प्रगट करता है (ध्याय पाय उवन जिन रे, हिय भाव मुक्ति०) वह वारवार ध्यानका अभ्यास कर श्री जिनेन्द्र पदको प्रगट कर हितकारी मोक्षस्थानका स्वामी होजाता है, भावना करो ॥ १६ ॥

(हा हल हुव हुव सुइ रमन रमै) जो कोई भव भ्रमणको जलानेके लिये ध्यानकी अग्नि जलाकर ध्यानमें रमण करता है (सिय ईर्जे नंतानंत रे ई ईर्जे मुक्ति०) वह शुद्ध हो अनन्तज्ञानको पाकर ज्ञानस्वरूप मुक्तिका स्वामी होजाता है, भावना करो ॥ १७ ॥

(आ अगम अगम जिन अगम रलै) जो सब तरफसे उपयोग हटाकर अतीन्द्रिय स्वभावमें रमण करता है, वह अतीन्द्रिय वीतराग जिन स्वभावसे मिल जाता है (या यास आस जिन रे, ई ईर्जे मुक्ति०) और जिस जिनपदकी आशा थी उसे पाकर ज्ञानस्वरूप मुक्तिका स्वामी होजाता है, भावना करो ॥ १८ ॥

(जिन स्रेनि कलन जिन रमन रलै) जो जिनराजके गुणस्थानको पाकर जिन स्वभावमें रत होता है (सुइ तार कमल जिन रे, तर कमल मुक्ति०) वही तारक जिनेन्द्र कमल होकर भवसागरसे तरकर कमलके समान मोक्षका स्वामी होजाता है, भावना करो ॥ १९ ॥

भावार्थ—इस मिलन रमनमें यह बताया है कि परमात्माका स्वरूप व उसका साधन वारवार ध्यानमें लेकर भावना करनेसे आत्माकी उन्नति होती है, (जैसा भावै वैसा होजावे) अपने आत्माके द्रव्य स्वरूपको निश्चय करके उसीमें रमण करना आत्माके शुद्ध होनेका उपाय है। आत्मध्यानकी आग ही कर्मोंको जलाती है व आत्माको शुद्ध करती है। समयसारमें कहा है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंधाणं च सहावं वियाणिदुं अप्पणो सहावं च। बंधे सु जोण रज्जदि सो कम्मविमुक्खणं कुणदि ॥ ३१५ ॥

भावार्थ—जो कोई कर्मबन्धोंका स्वभाव और आत्माका स्वभाव जानकर बन्धके भीतर रमण नहीं करता है किन्तु अपने ही शुद्धात्मामें रमण करता है वही कर्मोंसे छूट जाता है।

(१४८) जिनयरली गाथा ३०२९ से ३०३२ तक।

ऐ मेरो जिनय लड़ी, जिनसे आदि करे, धुव रमन रले, रलि चेयन पै भावै।
ऐ धुव ढलन ढली, सुइ उवन मगे, ऐ वलि सुवन चले, ऐ दुति ताग संजोए ॥
ऐ तू ममल सु रे, सुयं दर्सियरे, ऐ विन्यानीयरे, जिन जिनवर चेला।
सुइ जिनह जिनवर जिनह दर्सिउ, ममल रमन रलि आउलो ॥
सुइ जिनह जैनी कमल कलनी, आयरन दिप्ति सुइ मुक्ति लो ॥ १ ॥
ऐ मेरी जिनय लडो जिन सो आदि करे, धुव रमन रलै रलि चेयन पै भावै (आचरी) ॥२॥
अबहु मिलहु सोरा, सम सम लडिया, धुव रमन लडिया, धुव रमनह मिलिगे।
उव रमन चेला थाल निहि रिह पिय पिय दर्सिउ मुक्ति लौ ॥
जै सुवन सुवनह उवन उव निहि सम समय मुक्ति सुइ सोहलो।
परमान उवनह उवन मिलि हौ, सह समय मुक्ति लै मोहियो ॥ ऐ मेरी० ॥ ३ ॥
ऐ चरि चरन चरिया, धुव रम लडिया, जिन कलि लडिया, जिन जिनवर पै भावै।
सुइ सेनि कलनह कलन पिय निहि, जिन सेनि कलन सुइ मुक्ति रौ ॥
जिन जिनय सेनि सु जिनह जिनवर, तर तार समय सु मुक्ति लौ।
तर तार उवन सु कमल कलियो, सम समय तार सुइ मुक्ति पौ ॥ ऐ मेरी० ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—मेरी दृष्टि जिनवरदेवसे मिली है—जिनेन्द्रको ही अपना हितू मान रही है, श्री जिनके ध्रुव पदमें रम रही है, रम करके चेतनपदकी भावना कर रही है। अविनाशी पदकी तरफ दृष्टि ढल रही है, उसीसे मोक्षमार्गका मेरेमें प्रकाश हुआ है तथा उसीमें भाव वर्त रहा है। ज्ञानके बलसे परवस्तुका त्याग कर दिया है। हे जिनेन्द्र! तू ही मलरहित शुद्ध है, तू स्वयं आत्मदर्शी है, ज्ञानस्वरूपी है। हे जिनेन्द्र! मैं तेरा शिष्य हूँ, मैंने श्री जिनेन्द्रका दर्शन किया है, उससे मेरा रमण शुद्ध भावमें होरहा है, उसीसे वीतरागमई स्वात्मानुभूति जगी है, चारित्रका प्रकाश हुआ है। मोक्षकी तरफ लौ लगी है ॥ १ ॥

मेरी दृष्टि जिनवरदेवसे मिली है........ ॥ २ ॥

हे भाई! आओ, उन्हीं जिनेन्द्रसे मिलो, समभावसे प्रेम करो, ध्रुवपदसे प्रेम करो, ध्रुव आत्मरमणकी प्राप्ति करो। जो कोई आत्मरमणका आराधनेवाला होता है वह आत्माके गुणरूपी रिद्धियोंकी तरफ दृष्टि धर परम प्यारी मुक्तिकी तरफ लौ लगाता है। इसतरह आपमें परिणमन करता हुआ आत्माकी गुणरूपी निधिको प्रगट करके समभावके साथ परमात्मा होकर मुक्तिमें शोभता है, केवलज्ञान पैदा हो-जाता है, पूर्ण प्रकाश मिल जाता है, परमात्मपदके साथ मुक्तिका मोही बना रहता है ॥ ३ ॥

हे भाई! वीतराग चारित्रपर चलो, ध्रुव आत्मरमी सिद्धसे प्रेम करो, वीतराग व स्वात्मानुभवसे प्रेम करो, जिनेन्द्रपदकी भावना करो, जो ऐसा करेगा वह गुणस्थानोंके द्वारा चढ़ता हुआ—आत्माके भंडारका आनन्द लेता हुआ जिनराजके पदपर आकर मोक्षमें रत होजायगा। फिर जिनराजकी श्रेणीपर रहकर अनेकोंको भवसमुद्रसे तारकर मुक्तिरूप आत्मापर ही दृष्टि रक्खेगा। तारण तरण होता हुआ, शुद्धात्मारूपी कमलका अनुभव करता हुआ समभावसे अपने आत्माको तारकर मोक्षपदमें पहुंचा देगा ॥४॥

भावार्थ—यहां यही प्रयोजन है कि मोक्षके इच्छुकको परमात्माका व मोक्षमार्गका प्रेमी होकर सच्ची श्रद्धाके साथ वैराग्यवान हो आत्मामें मननका, रमणका व ध्यानका अभ्यास करना चाहिये। भावना करते करते आत्माकी भावना सफल होगी। समयसारमें कहा है—

आदह्मि दव्वभावे अथिरे मोत्तूण गिण्ह तव णियदं। थिरमेकमिदं भावं उवलंभंतं सहावेण ॥ २१६ ॥

भावार्थ—अपने आत्मामें जो द्रव्यकर्म व भावकर्म झलक रहे हैं उनको नाशवन्त जानकर उनसे ॥२७३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोह छोड़दे, और अपने ही निश्चित, स्थिर, एक, अविनाशी, स्वानुभवसे प्राप्त होने योग्य आत्मा पदार्थको ज्ञानस्वभावमें स्थिर होकर ग्रहण कर ।

(१४९) वर उवन लडी गाथा ३०३३ से ३०५२ तक ।

ऐ वर उवन लडी, उव उवन सुहाग उवन जिन पाए ।
ऐ तेरे चरन सुहाए, सुयं जिन जिनवर उवन मिलाए ॥ १ ॥
ऐ तेरे सुवन सुहाए, अभय जिन अभय मिलाए ।
ऐ तेरे रयन सुहाए, रयन जिन रमन मिलाए (आचरी) ॥ २ ॥
ऐ तेरे गमन सुहाए, अगम जिन अगम पिब्राए ।
ऐ तेरे अवल सुहाए, अवल बलि जिनवर राए ॥ ३ ॥
ऐ तेरे षिपक सुहाए, षिपक जिन षिपक मिलाए ।
ऐ अन्मोय सुहाए, सुयं जिन अन्मोय मिलाए ॥ ४ ॥
ऐ तेरे रंज सुहाए, ममल जिन ममल मिलाए ।
ऐ तेरे चरन सुहाए, उवन जिन उवन मिलाए ॥ ५ ॥
ऐ तेरे नन्द सुहाए, नन्द जिन नन्द मिलाए ।
ऐ आनन्द सुहाए, चेयन नन्द सहज मिलाए ॥ ६ ॥
ऐ तेरे सहज सुहाए, परमानन्द पर्म रमाए ।
ऐ तेरे मुक्ति सुहाए, मुक्ति जिन मुक्ति मिलाए ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐ तेरे सियं सुहाए, ध्रुव जिन ध्रुव रमन रमाए ।
ऐ तेरे दर्स सुहाए, दर्स जिन दर्स मिलाए ॥ ८ ॥

ऐ तेरे रसन सुहाए, सहज जिन रसन रसाए ।
ऐ तेरे परस सुहाए, परस जिन परस मिलाए ॥ ९ ॥

ऐ तेरे वास सुहाए, वास जिन परम वास वसाए ।
ऐ तेरे चिंत सुहाए, चिंत जिन चिंत मिलाए ॥ १० ॥

ऐ तेरे अमिय सुहाए, अमिय जिन अमिय मिलाए ।
ऐ तेरे उवन सुहाए, उवन जिन मुक्ति मिलाए ॥ ११ ॥

ऐ तेरे अर्क सुहाए, अर्क जिन अर्क रमाए ।
ऐ तेरे विंद सुहाए, विंद जिन नन्त विंद मिलाए ॥ १२ ॥

ऐ तेरे सुन्न सुहाए, सहज जिन सहज मिलाए ।
ऐ तेरे कमल सुहाए, कमल जिन ध्रुव कमल मिलाए ॥ १३ ॥

ऐ तेरे कलन सुहाए, कलन जिन कलि मुक्ति मिलाए ।
ऐ तेरे अप्प सुहाए, अप्प जिन उव अप्प मिलाए ॥ १४ ॥

ऐ आरा हियडो अचराहिउ, पंच उवन समय समय उवन जिन हीरा ।
ऐ वर सम समय सहज जिन सम कहि न्यान श्रीके हो वीरा ॥१५॥

ऐ तेरे वयन लडे वर, चर उवन रमन जिनराए ।
ऐ तेरे मय उवन उवन सषि, सहज सुयं जिन रमन रमाए ॥१६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐ तेरे कमल लडे, चरि चरियं उवन उवन जिन रमन रमाए ।
ऐ तेरे समय लडे, गम अगम रमन जिन वर राए ॥१७॥
ऐ तेरे पेम लडे, जिन सेनि कलन कलि जिनय जिनराए ।
सुइ तार तरन जिन कमल जिनय, जिन जिनवर राए ॥१८॥
ऐ तेरे समय लडे, सम समय समय जिन जिनवर राए ।
ऐ तेरे हिय हुवन लडे, चरि कमल कलन जिन जिनय रमाए ॥ १९ ॥
ऐ तेरे जै गमन लडे, जय जयो नंत जिन जिनवर राए ।
ऐ तेरे अवल वले, सम समय सुयं जिन जिनवर सिद्धि मिलाए ॥ २० ॥

अर्थ—(अन्वयके लिखनेकी जरूरत नहीं है)—

हे भाई ! मेरा प्रेम उत्कृष्ट पदके प्रकाशमें होरहा है, मेरे भाग्यका उदय हुआ है, मैंने ज्योतिस्वरूप जिनेन्द्र पा लिये हैं। हे जिनेन्द्र ! तेरे चरण व तेरा चारित्र अच्छा लगता है, जिस चारित्रपर चलनेसे स्वयं प्रकाशित हो जिनेन्द्र पद होजाता है ॥ १ ॥

हे प्रभू ! तेरा परिणमन अच्छा लगता है । तू निर्भय जिनेन्द्र हैं, तेरी भक्तिसे अभयपद मिल जाता है । तेरे सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तीनों रत्न अच्छे लगते हैं । इस रत्नत्रय धर्ममें रमनेसे वीतराग जिनपद मिल जाता है ॥ २ ॥

हे प्रभू ! तेरा आत्मानुभव अच्छा लगता है । तू अतीन्द्रिय जिन हैं, तेरे ज्ञानसे अतीन्द्रिय आत्माका दर्शन होता है, तेरा अनुपम वीर्य अच्छा लगता है, जिसके ध्यान करनेसे अनन्त वीर्यधारी जिनेन्द्र होजाता है ॥ ३ ॥

हे जिनेन्द्र ! तेरा क्षायिक भाव अच्छा लगता है । इसके द्वारा कर्मोंको क्षय कर वीतराग हो क्षायिक भाव होजाता है, तेरा आनन्द गुण भी सुहाता है । इस आनन्दमें मगन होनेसे स्वयं जिनराज हो अनन्त सुख प्राप्त होजाता है ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे प्रभू ! तेरी आत्ममगनता अच्छी लगती है। इसीके अनुभवसे कर्ममल हटाकर जिन हो शुद्ध पदका लाभ होता है। तेरा चारित्र भी सुहाता है, जिससे यह आत्मा प्रगट होकर ज्ञानमई हो ज्ञानपद निर्वाणको प्राप्त कर लेता है ॥ ५ ॥

हे जिनेन्द्र ! तेरा नन्दपना अच्छा लगता है जिसके द्वारा वीतरागतामें नन्दित हो नन्दपद मिल जाता है। तेरा आनन्द भी सुहाता है। जिसके द्वारा चिदानन्दमई स्वभाव सहजमें मिल जाता है ॥६॥

हे प्रभू ! तेरा सहज स्वभाव अच्छा लगता है जिससे परम परमानन्दमें रमण होता है। तेरी मुक्ति भी भली झलकती है। जो मुक्तिसे अनुराग करता है वह कर्ममुक्त जिन हो मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥७॥

हे जिनेन्द्र ! तेरा शुद्धोपयोग प्यारा लगता है जिससे जिनराज ध्रुवरूपसे ध्रुव आत्मामें रमण किया करते हैं। तेरा दर्शन भी सुहाता है, जिससे जिनपदका दर्शन हो अनन्त दर्शन होजाता है ॥८॥

हे स्वामी ! तेरा आत्मीक रस अच्छा लगता है। जिसके कारण सहज ही भव्य जीव जिन हो आत्मीक रसका स्वाद लेता रहता है। तेरा स्पर्श या ध्यान भी सुहाता है जिससे तुझे मिलकर तेरा पद मिल जाता है ॥ ९ ॥

हे जिनेन्द्र ! तेरे पास रहना अच्छा लगता है। जो जिनेन्द्रके भावोंमें बसता है वह परम वास निर्वाणको पाता है। तेरा चेतनागुण अच्छा लगता है, इसके द्वारा जो जिनराजका मनन करता है वह चेतनागुणको प्रगट कर लेता है ॥ १० ॥

हे जिनेन्द्र ! तेरा आनन्दामृत सुहाता है। जो इस आनन्दामृतका पान करता है वह जिन हो सदा आनन्दामृत पाता रहता है। तेरा आत्मप्रकाश भाता है, इसके द्वारा जिनराज होकर मोक्ष प्राप्त होती है ॥ ११ ॥ हे प्रभू ! तेरा सूर्य स्वभाव अच्छा लगता है। इसके अनुभवसे सूर्य समान जिन हो अनन्त ज्ञानमय प्रकाशमें रमण होता है। तेरा अनुभव सुहाता है, इससे वीतराग भावका अनुभव होकर अनन्त ज्ञान होजाता है ॥ १२ ॥

हे भगवन् ! तेरा शून्य स्वभाव अर्थात् परभावोंसे रहित स्वभाव अच्छा लगता है, जिसके ध्यानेसे सहज ही जिन हो स्वभाव रूप मोक्ष प्राप्त होजाता है। तेरा कमल समान विकास सुहाता है, इससे कमल समान जिन हो ध्रुव कमल होजाता है ॥ १३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे प्रभू ! तेरा स्वात्मानुभव सुहाता है जिससे भव्यजीव स्वात्मानुभवी जिन हो मोक्ष प्राप्त कर लेता है, तेरे आत्माका स्वभाव भी अपूर्व है। जो इसके द्वारा वीतराग आत्म-स्वभावमें रमता है वह परमात्मा होजाता है ॥ १४ ॥

हे भाई ! आराधना करो, आचरण करो, पांच परमेष्ठियोंको, परमात्मा जिनको जो हीरेके समान चमकते हैं। हे भाई ! उत्कृष्ट समभावको धरते हुए स्वाभाविक जिनेन्द्र ज्ञान लक्ष्मीके धारी वीर भगवान झलक रहे हैं ॥ १५ ॥

हे जिनेन्द्र ! तेरी वाणी श्रेष्ठ है, जो प्रेम करता है, वह चारित्रको प्रगट कर जिनराजके स्वभावमें रम जाता है। हे प्रभु ! तेरा ज्ञान प्रकाश भी अपूर्व प्रकाश स्वरूप है। जो इसे समझता है वह स्वयं सहज ही जिन हो, इस प्रकाशमें रमण करता है ॥ १६ ॥

हे प्रभू ! मैं तेरे कमल समान आत्मासे प्रेम करता हूँ, जो तेरे वीतराग चारित्रमें चलता है वह जिनपद प्रगट कर उसमें रमण करता है। जो तेरे परमात्मापदसे प्रेम करता है वह अतीन्द्रिय भावका अनुभव करके जिनवर होजाता है ॥ १७ ॥

हे भगवान् ! जो तुझसे प्रेम करता है वह गुणस्थानोंपर चढ़कर आत्मानुभव करता हुआ जिनेंद्र होजाता है। वही तारणतरण अरहन्त कमल समान जिनपदमें शोभता है ॥ १८ ॥

हे प्रभू ! जो तेरे स्वात्मरमणरूप चारित्रसे प्रेम करता है, वह समभावके साथ आत्माको ध्याता हुआ परमात्मा जिन होजाता है। जो तुझसे हित करके आत्मध्यान करता है, वह शुद्धात्मारूपी कमलका आचरण कर जिन हो, जिनपदमें रमण करता है ॥ १९ ॥

हे जिनेन्द्र ! जो तेरे जैनधर्मसे प्रेम करता है, वह कर्मोंको जीतकर अनन्त गुणधारी जिनेन्द्र हो जाता है। जो तेरे अनुपम वीर्यको जानता है, वह स्वयं समभावधारी परमात्मा जिन हो सिद्धगतिको चला जाता है ॥ २० ॥

भावार्थ—इस स्तोत्रमें आत्माराधनकी बहुत ही बढ़िया भावना है। हमें उचित है कि हम परमात्माके स्वभावको ठीक ठीक जानें। उनके गुणोंको पहचाने, उनके साथ अटल प्रेम करे। यह भावना उत्पन्न करे कि यह संसारवास असार दुःखधाम है। जिस तरह तीर्थंकर संसारसे उदास होकर व मोक्ष-मार्गपर चलकर परमात्मा हुए और मोक्षमें पधारे हैं उसी तरह हमको भी वैराग्यवान होकर मोक्षमार्ग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मार्गपर चलकर परमात्मा हुए और मोक्षमें पधारे हैं उसी तरह हमको भी वैराग्यवान होकर मोक्षमार्ग पर चलकर परमात्मापद प्रगट करना चाहिये। जिससे अविनाशी मोक्षका लाभ हो और कभी भी फिर संसारका भ्रमण न हो। मोक्षमार्ग भी निश्चयसे अपने ही आत्माका रमण व स्वानुभव है। निश्चयनयके द्वारा अपने द्रव्य स्वभावका मनन, चिंतवन, आराधन, ध्यान ही कर्म-कलंक जलानेको एक योगरूप यज्ञ है। जो इस यज्ञके भीतर कर्मोंका होम करता है वह शुद्ध हो मुक्ति पाता है।

इस मोक्षमार्गके आराधनमें आत्मानन्दका स्वाद आता है, यह कष्टप्रद बिलकुल नहीं है, यह आनन्दका स्वाद देता है, इसीसे अनन्तसुख होजाता है। समयसारमें कहा है—

अहमिक्को खलु सुद्धो य णिम्ममो णाणदंसणसमग्गो। तह्मि ठिदो तच्चित्तो सव्वे एदे खयं णेमि ॥ ७८ ॥

भावार्थ—मैं एक हूँ, अकेला हूँ, निश्चयसे शुद्ध हूँ। मेरा कोई साथी नहीं है। मैं ज्ञान दर्शन स्वभावसे पूर्ण हूँ। इसी अपने स्वभावमें ठहरा हुआ उसीका अनुभव करता हुआ मैं सर्व कर्मोंका क्षय करता हूँ, यह भावना करनी योग्य है।

(१५०) समय उवन मिलन गाथा ३०५३ से ३०६३ तक।

साहि साहि सुवन सुइ सवनी, ऐ सुध ध्रुवपद लाया रे।
ध्रुव जिन उवने समय सिय रमने, सह समय मुक्ति पद पाया रे ॥ १ ॥
गुप्ति अर्क सुइ मिलिय उवन जिन अब सुइ जिनय जिनाला रे।
अब सह समय उवन जिन उवने, जय जिन मुक्ति पियारा रे (आचरी) ॥ २ ॥
उव समय सुयं सुइ सुवन उदेसी, सुइ उवन उवन जयराया रे।
जय जयवन्तु जयं जय जिनवर, जय समय मुक्ति दरसाया रे ॥ गुप्ति० ॥ ३ ॥
उव समय रमन रय रमिय वयन जिन, जिन जिनयति जिनय जिनाला रे।
सब्द प्रिये सुइ मिलिय उवन जिन, सुइ हिय हुव मुक्ति पियारा रे ॥ गुप्ति० ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइ उवन समय तत्काल रमन जिन, सुइ दिप्ति दिष्टि रमि राया रे ।

सुइ उवन स्वाद रस मिलिय उवन पिय, सह समय मुक्ति जिनाला रे ॥ गु० ॥ ५ ॥

दिप्ति दिष्टि सुर्क मिलिय उवन जिन, सुइ समय अवल बलि राया रे ।

अवल बलि उव सब्द प्रिये सम, सह समय मुक्ति सिधि पाला रे ॥ गु० ॥ ६ ॥

उव समय दर्स सुइ मिलिय उवन जिन, सुइ कलन कमल धुव नाला रे ।

कमल उवन सुइ सुवन समय जिन, सुइ सुवन उवन सिधि पाला रे ॥ गु० ॥ ७ ॥

उव समय मिलन जै परिस रमन जिन, जय मिलिय मिलन रसियाला रे ।

सब्द साहि सुइ सांति सप्त जिन, उव समय मुक्ति सिधि पाला रे ॥ गु० ॥ ८ ॥

उव समय मिलन सुइ अर्क अर्क जिन, सम अर्क कमल कलि कमला रे ।

अर्क अर्क सुइ सहज कमल मिलि, धुव उवन मुक्ति सिधि पाला रे ॥ गु० ॥ ९ ॥

सुइ अर्क सेनि मिलि कलन कलिय जिन, सुइ सेनि कलन कलि कमला रे ।

सुइ सेनि उवन जिन सेनि पियं जिन, पिय उवन मुक्ति सिधि पाला रे ॥ गु० ॥१०॥

सुइ तारन तरन सुइ उवन कमल जिन, धुव उवन तरन पर पारा रे ।

सुइ तार कमल पिय उवन कमल जिन, उव समय सहज सिधि पाला रे ॥ गु० ॥११॥

अन्वय सहितअर्थ—(साहि साहि सुवन सुइ सुवनी, ऐ सुध धुव पय लाया रे) अपनी परिणति द्वारा मोक्षमार्गको लगातार साधन करके श्री जिनेन्द्रने शुद्ध ध्रुवपद प्राप्त किया है (धुव जिन उवने समय सिय रमने, सह समय मुक्ति पथ पाया रे) जिनेन्द्रका प्रकाश ध्रुवरूपसे हुआ है, वे शुद्ध आत्मामें रमण कर रहे हैं। उन्होंने आत्माके ही अनुभवसे मोक्षका मार्ग पाया है ॥ १ ॥

(सुपि अर्क सुइ मिलिय उवन जिन, अव सुइ जिनग झिनाला रे) सूर्य समान शुभ आत्मासे मेल करके जिन-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्का प्रकाश हुआ है। अब वे कर्मविजयी जिन हैं (अव सह समय उवन जिन उवने, जै जिन मुक्ति पियारा रे) अब वे जिनेन्द्र परमात्माके स्वभावके साथ प्रगट हैं। जिनेन्द्रकी जय हो, जिनको मुक्तिसे प्रेम है ॥ २ ॥

(उव समय सुयं सुइ सुवन उदेसी, सुइ उवन उवन जय राया रे) वे जिनेन्द्र परमात्मा होकर आत्माकी उन्नतिका उपदेश देते हैं, वे सदा ही जिनराजके स्वभावमें प्रकाश करते हैं (जय जयवंतु जयं जय जिनवर, जय समय मुक्ति दरसाया रे) ऐसे श्री जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो जिन्होंने आत्माकी मुक्तिका मार्ग प्रकाश किया है ॥३॥

(उव समय रमन रय रमिय वयन जिन, जिन जिनयति जिनय जिनाला रे) वे जिनेन्द्र अपनी आत्मामें रमण करते हुए आत्मामें रमण करानेकी ही वाणीका प्रकाश करते हैं, ऐसे बीर जिनेन्द्रकी जय हो (सव्द प्रिये सुइ मिलिय उवन जिन, सुइ सिय हुव मुक्ति पियारे) जो कोई उनकी वाणीसे प्रेम करता है उसको जिनपद्का प्रकाश प्राप्त होजाता है। वह हितकारी ध्यानसे कर्म क्षय करके मोक्षका प्यारा जिनेन्द्र होजाता है ॥ ४ ॥

(सुइ उवन समय तत्काल रमन जिन, सुइ दिप्ति दिप्ति रमिराया रे) उस भव्यके भीतर जब आत्माका ज्ञान प्रगट होता है तब वह वीतराग जिन स्वभावमें रमण करता है तथा ज्ञानदर्शन स्वभावमें रम रहता है (सुइ उवन स्वाद रस मिलिय उवन पिय, सह समय मुक्तिर जिनाला रे) वह आत्मानन्दके रसका स्वाद ले करके प्रिय अरहन्तपद्को झलकाकर परमात्माके स्वभावसे मुक्तिको जीत लेता है ॥ ५ ॥

(दिष्टि दिष्टि सुर्क मिलिय उवन जिन, सुइ समय अवलि वल राया रे) जो अनन्त ज्ञान दर्शन धारी आत्मारूपी सूर्यसे मेल करता है वह वीतरागता पाकर अतुल वीर्यधारी आत्मा होजाता है (अवल बली हुव सव्द प्रिये सम, सह समय मुक्ति सिधियाला रे) वही अतुल बली वीतरागी साधु प्रिय समभाव प्रकाशक शब्दोंकी सहायतासे शुक्लध्यान द्वारा परमात्मा होकर कर्मोंसे मुक्त हो सिद्ध होजाता है ॥ ६ ॥

(उव समय दर्स सुइ मिलिय उवन जिन, सुइ कलन कमल धुव नाला रे) जिसके भीतर आत्माका दर्शन प्रगट होजाता है अर्थात् जो सम्यग्दृष्टी होजाता है वह परमात्माके स्वभावसे प्रेम करके ध्रुव कमल समान आत्माका अनुभव करता है (कमल उवन सुइ सुवन समय जिन, सुइ सुवन उवन सिधि पाला रे) वही अपने आत्मारूपी कमलको प्रगट कर जिन परमात्मा होकर स्वरूपमें परिणमन करता हुआ सिद्ध होजाता है ॥ ७ ॥

(उव समय मिलन जय परिस रमन जिन, जय मिलिय मिलन रसियाला रे) जिसको आत्माका ज्ञान होजाता है वह जिनेन्द्रके स्वभावको स्पर्श करके या मनन करके रमण करता है इससे उसको कर्मोंपर विजय मिलती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाती है, वह आत्मानन्दके रसमें मगन रहता है (सब्द साहि सुइ सांत सत्य जिन, उव समय मुक्ति सिधि पाला रे) शब्दोंकी सहायतासे वह बीतराग व सत्य जिनेन्द्र होकर परमात्मा पदके साथ मोक्षको सिद्ध कर लेता है ॥८॥

(उव समय मिलन सुइ अर्क अर्क जिन) परमात्मापदका प्रकाश है वही सूर्यसम जिनेन्द्र सूर्यका प्रकाश है (सम अर्क कमल कलि कमला रे) वही समभाव धारी कमल समान होकर अपनी आत्मीक लक्ष्मीका भोग करता है (अर्क अर्क सुइ सहज कमल मिलि ध्रुव उवन मुक्ति सिधि पाला रे) सूर्य सम प्रगट व कमलसम प्रफुल्लित आत्मा ध्रुव मोक्षको प्रगट कर सिद्ध होजाता है ॥ ९ ॥

(सुइ अर्क स्नेनि मिलि कलन कलिय जिन, सुइ स्नेनि कलन कलि कमला रे) वही आत्मारूपी सूर्य जिनेन्द्रके गुणस्थानपर जाकर उस पदके भीतर रमता हुआ अपनी सम्पदाको भोगता है (सुइ स्नेनि उवन जिन स्नेनि पियं जिन, पिय उवन मुक्ति सिधि पाला रे) वे ही जिनपदमें रहता हुआ उसी पदमें तल्लीन होकर पूर्ण हितकारी रूपसे प्रगट हो मुक्तिको सिद्ध कर लेता है ॥ १० ॥

(सुइ तारन तरन सुइ उवन कमल जिन, ध्रुव उवन तरन पर पारा रे) वे तारण तरण कमल समान प्रफुल्लित अरहन्त जिन ध्रुवरूपसे प्रगट रहकर संसारसागरसे पार होजाते हैं (सुइ तार कमल पिय उवन कमल जिन, हुव समय सहज सिधि पाला रे) वे भव्यजीवोंको तारनेवाले कमल समान जिनेन्द्र अपने आत्माके सहज स्वरूपके साथ सिद्ध होजाते हैं ॥ ११ ॥

भावार्थ—इस समय मिलन उवनमें यही दिखलाया है कि जो परमात्माके स्वरूपसे प्रेम करता है, उनको पहचानता है, उन समान अपने आत्माको जानता है, कर्मोंको क्षय करनेकी सच्ची भावना रखकर सम्यग्दृष्टी होजाता है, वह आत्माका अनुभव करता है, आत्मध्यानसे कर्मोंको जलाता है, वीतरागताको बढ़ाता है। स्वय अरहन्त तारणतरण जिन होकर सिद्ध होजाता है। जिसको संसारसागरसे पार होना हो, उसको श्री अरहन्त व सिद्धसे प्रेम करके—उनसे मिलकर उनके समान होजाना चाहिये।

समयसारमें कहा है—

एवं सम्मदिट्ठी अप्पाणं मुणदि जाणग सहावं। उदयं कम्मविवागं च मुअदि तच्चं वियाणंतो ॥ २१२ ॥

भावार्थ—इस तरह सम्यग्दृष्टी अपने आत्माको ज्ञान स्वभावमई अनुभव करता है। आत्मतत्वको अनुभव करता हुआ उदयरूपी कर्मोंके फलसे वे रागादि भावोंसे मोह नहीं करता हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१९१) जिनेली गाथा ३०६४ से ३०७६ तक ।

जिन जिनय जिनेली मैं वई जिन उत्पन्न जोग ।
सुइ सुयं विलसे जिनय जिन, सह समय सिद्धि संपत्तु ॥ १ ॥
जिनेली मेरी उल्हसति है, यह अलष रमै जिन ओंत ॥जिनेली मेरी विल्हसति है॥
जै जै रंज रमन जिन नंद, जिनेली मेरी विगसति है (आचरी) ॥ २ ॥
उव उवन उवन पौ साहियो, उव उवन मुक्ति संजोग ।
सह साह सुवन सुइ रमन जिन, सह समय सिद्धि संपत्तु ॥जिनेली०॥ ३ ॥
जिन जिनयति जिनय सु उवन जिन, जिन जिनियो नंतानंत ।
यहु नंत चतुष्टे समय मौ, सह समय सिद्धि संपत्तु ॥जिनेली०॥ ४ ॥
सुइ दर्स दर्स उव दर्स जिन, परिनाम कोड़ संजुत्त ।
सुइ अर्क विंद सम सुन्न पौ, सम अर्क समय सिद्धि रत्तु ॥जिनेली०॥ ५ ॥
सुइ उवन विलि उव सुन्न पौ, उव उवन मुक्त विलयंतु ।
सुइ विनंद विला जिननंद मौ, सुइ नंद समय सिधि रत्तु ॥जिनेली०॥ ६ ॥
सुइ नंद विंद उव सुन्न पौ, सुइ सुन्न कम्म विलयंतु ।
सुइ सुन्न उवन हिय ताग मौ, हिय ताग समय सिधि रत्तु ॥जिनेली०॥ ७ ॥
सुइ सुन्न सहावे विंद मौ, सुइ विंद सन्न जिन उत्तु ।
सुइ सुन्न विंद अर्क समय मौ, सुइ अर्क समय सिधि रत्तु ॥जिनेली०॥ ८ ॥
धुव दिप्ति दिष्टि उव दिप्ति मौ, उव उवन दिप्ति जैवंतु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जय जय जै अर्क मौ, जय समय सिद्धि संपत्तु ॥ जि० ॥ ९ ॥
आराहि उवन हिय समय मौ, आलाप मुक्ति सिय सिद्ध ।
आवरन तित्थ तित्थ पर मौ, तित्थयर समय सिधि रत्तु ॥ जि० ॥ १० ॥
उव उवन दिप्ति हिय यार मौ, हिय साहि समय ध्रुव उत्तु ।
हिय साहि समय हुव उवन पौ, हुव समय सिद्धि संपत्तु ॥ जि० ॥ ११ ॥
सुइ वीर समय जिन स्रेनि पौ, सुइ स्रेनि कलन कलयंतु ।
कलि कलन सहावे रमन पौ, सुइ स्रेनि कलन सिधि रत्तु ॥ जि० ॥ १२ ॥
सुइ तारन तरन सु कमल मौ, सुइ उवन कमल विगसंतु ।
सुइ अर्क उवन उव कमल मौ, उव समय सिद्धि विलसंतु ॥ जि० ॥ १३ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(जिन जिनय जिनेली मै वई जिन उत्पन्न जोग) मैंने परमात्मा जिनेन्द्रपदकी उत्पत्तिके लिये अपनेमें जैनधर्मको बोया है जिससे कर्मोंको जीत लिया जायगा (सुइ सुयं विल्सै जिनय जिन, सह समय सिद्धि संपत्तु) जिससे जिनेन्द्र होकर यह आत्मा स्वय आनन्द भोगे और परमात्मा पदके साथ सिद्धगतिको पाले ॥ १ ॥

(जिनेली मेरी उल्हसति है, यह अलष रमै जिन ओत, जिनैली मेरी विगसत है, जै जै रंज रमन जिन नंद) मेरी जैनधर्मकी रुचि उत्साहरूप है । इसने वीतरागतापूर्ण अतीन्द्रिय आत्मामें रमणता पाई है । यह प्रसन्न होरही है, यह जिन स्वभावमें मगन होकर आनन्द लेरही है ॥ २ ॥

(उव उवन उवन पौ सहियो, उव उवन मुक्ति संजोग) आत्मज्ञानका उदय हुआ है । यह परमात्मापदका साधन करता है, जिससे मोक्षका संयोग प्राप्त होजावे (सह साह सुवन सुद्ध रमन जिन, सह समय सिद्धि संपत्तु) श्री जिनेन्द्र अपनेको साधन करके आपमें रमण करते हैं तथा वे ही परमात्मा हो सिद्धगतिको पाते हैं ॥ ३ ॥

(जिन जिनयति जिनय सह उवन जिन, जिन जिनियो नंतानंत) जो जीते उसको जिन कहते हैं, वे जिन स्वभावको प्रगट करते हैं । श्री जिनेन्द्रने अनन्त कर्मोंको जीत लिया है (सहु नंत चतुस्टे समय मौ, साह समय सिद्धि संपत्तु)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथा अनन्तज्ञानादि चतुष्टयको पाकर वे परमात्मा स्वरूप होगये हैं। इसी परमात्मापदके साथ वे सिद्धिको पालेते हैं ॥ ४ ॥

(सुइ दर्स दर्स उव दर्स जिन परिनाम कोड संजुत्त) आत्माने श्री जिनेन्द्रका स्वरूप दर्शन करके—अनन्त परिणमन सहित अनन्तदर्शनको प्रगट किया है (सुइ अर्क विंद सम सुन्न पौ, सम अर्क समय सिधि रत्तु) वही परमात्माका पद सूर्य समान है, ज्ञानस्वरूप है, समभाव सहित है, परभावोंसे शून्य है। ऐसा ही समभावधारी सूर्यसम परमात्मा सिद्धभावमें लीन रहता है ॥ ५ ॥

(सुइ उवन विली उव सुन्न पौ, उव उवन मुक्त विलयंतु) यह पद कर्मके बन्ध रहित शून्य पद है तथा जो कर्म उदयमें आते हैं, वे स्वयं क्षय होजाते हैं (सुइ विनंद विली जिन नंद मौ, सुइ नंद समय सिधि रत्तु) इस पदमें सांसारिक सुखका अभाव है। वीतराग आत्मीक आनन्दमई यह पद है। ऐसा ही आनन्दस्वरूप परमात्मा सिद्धभावमें रत रहता है ॥ ६ ॥

(सुइ नंद विंद उव सुन्न पौ, सुइ सुन्न कम्म विलयंतु) यह आत्मानन्दको अनुभव करनेवाला राग द्वेषादिसे शून्य पद है। इस वीतरागीके कर्म क्षय होरहे हैं (सुइ सुन्न उवन हिय ताग मौ, हिय ताग समय सिधि रत्तु) जहां शून्यता है वहां हितकारी त्यागभाव है, यह हितकारी त्याग स्वरूप परमात्मा सिद्ध स्वभावमें रत रहते हैं ॥ ७ ॥

(सुइ सुन्न सहावं विंद मौ, सुइ विंद सुन्न जिन उत्तु) यह शून्य स्वभावी परमात्मा ज्ञानमई है, इस केवलज्ञानी पदको ही जिनेन्द्रने शून्य पद कहा है (सुइ सुन्न विंद अर्क समय मौ, सुइ अर्क समय सिधि रत्तु) यह शून्य भावको अनुभव करनेवाला सूर्य समान परमात्मा है, यही सूर्य समान परमात्मा सिद्धभावमें रत है ॥८॥

(ध्रुव दिप्ति दिष्टि उव दिप्ति मौ, उव उवन दिप्ति जैवंतु) अविनाशी अनन्त ज्ञान व अनन्त दर्शनकी ज्योति सदा प्रगट रहती है सो जयवन्त हो (जय जय जै जै अर्क मौ, जय समय सिद्धि संपत्तु) ऐसे ज्योति स्वरूप सूर्यकी जय हो। यही परमात्मा सिद्धगतिको पाते हैं ॥ ९ ॥

(आराहि उवन हिय समय मौ, आलाप मुक्ति सिय सिद्ध) इसतरह जो आत्मज्ञानको आराधन करके हितकारी परमात्मा होजाते हैं उनहीको मुक्त, शुद्धोपयोगी तथा सिद्ध कहते हैं (आयरन तित्थ तित्थ पर मौ, तित्थयर समय सिद्धि रत्तु) जो धर्म तीर्थका आचरण करता है, वही तीर्थंकर होजाता है, वही तीर्थंकर परमात्मा सिद्धभावमें रत रहते हैं ॥ १० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(उव उवन दिप्ति हियियार मौ हिय साहि समय ध्रुव उत्तु) अनन्त ज्ञानदर्शनकी ज्योति हितकारी है। इसीसे आत्महित साधा जाता है व आत्माको ध्रुव अविनाशी कहा जाता है (हिय साहि समय हुव उवन पौ, हुव समय सिद्धि संपतु) आत्माके हितको साधनेवाला आत्मध्यानका प्रकाश है। इसी आत्मध्यानसे सिद्धपद होता है ॥ ११॥

(सुइ वीर समय जिन स्रेनि पौ, सुइ स्रेनि कलन कल्यंतु) यही कर्मविजयी वीर आत्मा जिनराजकी श्रेणीपर होकर इस पदमें स्वानुभवको करता रहता है (कलि कलन सहाव रमन पौ, सुइ स्रेनि कलन सिधि रत्तु) वह अपने सहज स्वभाव स्वरूपमें रमण करते हैं। वही परमात्माके पदका अनुभव लेते हुए सिद्धभावमें रत रहते हैं ॥ १२॥

(सुइ तारन तरन सु कमल मौ, सुइ उवन कमल विगसंतु) वे ही तारण तरण कमल स्वरूपी अरहन्त हैं, वे ही प्रफुल्लित कमलके समान प्रकाशित रहते हैं (सुइ अर्क उवन उव कमल मौ, उव समय सिद्धि विलसंतु) वे ही सूर्य समान या कमल समान प्रगट परमात्मा सिद्धपदका आनन्द लेते हैं ॥ १३ ॥

भावार्थ—इस स्तुतिमें यह भावना भाई गई है कि जिनधर्म ही आत्माको जिन बनाता है। इसी धर्मके सेवनसे वीतरागभाव होकर कर्मोंका क्षय किया जाता है। जो कोई जिनधर्मको अपनेमें बोता है, अर्थात् सम्यग्दर्शनका बीज डाल देता है। उसीके भीतर धर्मवृक्ष फलता है और उससे सिद्धपदका फल प्रगट होता है। परमात्मा अरहन्तके पदमें नया बन्ध होता नहीं, पुराने कर्म झड़ते हैं। रागादि कोई विकार नहीं होते हैं। इसलिये उनको शून्य पदधारी कहते हैं, वहां इंद्रियजन्य सुख व इन्द्रियजन्य ज्ञान नहीं है। अतीन्द्रिय सुख है व अतीन्द्रिय ज्ञान व दर्शन है। इसी ज्ञानानन्द स्वभावमें मगन हो परमात्मा सिद्ध होजाते हैं। सच्चा त्याग भाव परमात्मामें होता है।

नियमसारमें कहा है—

मोत्तूण सयलजप्प मणागयसुहमसुहुवारणं किच्चा। अप्पाणं जो झायदि पच्चक्खाणं हवे तस्स ॥ ९५ ॥

भावार्थ—जो कोई सर्व आगामी होनेवाले शुभ व अशुभ भावोंको दूर करता है तथा सर्व वचनका विकल्प छोड़ता है और आत्माको ध्याता है, वही त्यागी होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narla, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१६२) शून्य रमन चौतीसी गाथा ३०७७ से ३१११ तक ।

विलस रमन जिन अंकुर पाए, लषन साहि जिन उव धुव आए ॥ १ ॥

जिन जिनवरके गुन रमन रलै, उव उवन उदय सम मुक्ति मिलै (आचरी) ॥ २ ॥

रमनन्तर हिय जोगी जानै, विलस रमन सिधि पाए मानै ॥ जिन० ॥ ३ ॥

विंद सुन्न हिय सहै सु सोई, उव उवन रमन सिधि मुक्ति लहेई ॥ जिन० ॥ ४ ॥

जय उवन सुन्न हिय दस सोई, जय सुन्न सुन्न उव उवन सु होई ॥ जिन० ॥ ५ ॥

जय रमन सुन्न सुइ साह सुलेई, जय तिष्ठ सुन्न रुह सहइ जो सोई ॥ जिन० ॥ ६ ॥

जै इष्ट सुन्न लष अलष लषेई, हिय रमन सुन्न दह अलष रमेई ॥ जिन० ॥ ७ ॥

सुइ सहज सुन्न कुल कोडि जिनेई, सुइ दर्स सुन्न जिन कोडि रमेई ॥ जिन० ॥ ८ ॥

जो उवन सुन्न सुइ कोड़ि सो सोई, सुइ लषन सुन्न सह साह रमेई ॥ जिन० ॥ ९ ॥

जय अंग सुन्न सुइ अगम सु सोई, पय पयोग सुन लषि उवन रमेई ॥ जि० ॥ १० ॥

जय चरन सुन्न दह अलष लषेई, जय पूर्व सुन्न सुइ कोडि लष सोई ॥ जि० ॥ ११ ॥

तिथि रमन सुन्न सह सहै सु सोई, दह सहस लषन सुइ लब्धि सु सोई ॥ जि० ॥ १२ ॥

अंक सुन्न जे ईस जिनेइ, दह कोडाकोडि काल विलेई ॥ जि० ॥ १३ ॥

सैताल सुन्न उव उवन सु होई, सुइ कोडि उवन जिन कोडि रमेई ॥ जि० ॥ १४ ॥

उव सब्द सुन्न सुइ समय रमेई, हिय जेरि सुन्न सुइ कोडि रमेई ॥ जि० ॥ १५ ॥

सुइ उवन कोडि सुइ सुन्न समेई, सौ अट्ठ रमन सुइ सुन्न रमेई ॥ जि० ॥ १६ ॥

हुव सुन्न रमन अवयास रमेई, सुइ चरन उवन जिन जिनवर सोई ॥ जि० ॥ १७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकट प्रवेस कलन जिन होई, कलन कमल अर्थ कोड सु सोई ॥ जि० ॥ १८ ॥
सुइ तीन रयन सुन्न समेई, अर्थ कोडि जिन जिनवर सोई ॥ जि० ॥ १९ ॥
सु दिप्ति उवन दिपि सुन्न समेई, उत्पन्न समय सुन जिनवर सोई ॥ जि० ॥ २० ॥
उव उवन हिययार सुन्न रमन रमेई, उव उवन सुन्न तित्थयर सु सोई ॥ जि० ॥ २१ ॥
उव कण्ठ सुन्न कलि कलन सु सोई, उत्पन्न ताल जिन रमन रमेई ॥ जि० ॥ २२ ॥
उव उवन रमन सुन्न सह साह सु सोई, उव उवन साह जिन जिनवर सोई ॥ जि० ॥ २३ ॥
उव सब्द सुन्न सुइ दरसै सोई, उव चरन सुन्न जिन समय सु सोई ॥ जि० ॥ २४ ॥
अवयास उवन सुन सुन्न समेई, उव उवन अवयास जिन जिनवर सोई ॥ जि० ॥ २५ ॥
प्रकट कलन सुइ कमल रमेई, सुइ कलन कमल जिन मुक्ति लहेई ॥ जि० ॥ २६ ॥
कलन सु कलन सु सुन्न रमेई, सुन्न सुन्न उव कलन समेई ॥ जि० ॥ २७ ॥
सुन्न प्रवेस अर्क जिन होई, दिसि अंग सुन्न जिन मुक्ति लहेई ॥ जि० ॥ २८ ॥
बतीस चौक सु सुयं सुइ होई, पय पयोग रमन सुन मुक्ति लहई ॥ जि० ॥ २९ ॥
सुइ उवन बतीस पयोग सुन सोइ, कलन प्रवेस उवन जिन होई ॥ जि० ॥ ३० ॥
अष्ट प्रवेस कलन कलि सोई, कलन रमन जिन समय सिधि होई ॥ जि० ॥ ३१ ॥
सुइ उवन सेनि जिन सेनि सु सोई, सुइ कलन कमल जिन मुक्ति लहेई ॥ जि० ॥ ३२ ॥
सुइ तारन तरन सुइ कलन कलेई, सुइ कलन कमल जिन मुक्ति लहेइ ॥ जि० ॥ ३३ ॥
सुइ सेनि कलन तर कमल सु सोई, सुइ तार समय जिन मुक्ति लहेई ॥ जि० ॥ ३४ ॥
सै पंच बहतर सुन्न समेई, सुइ सुन्न कलन जिन जिनवर सोई ॥ जि० ॥ ३५ ॥

अन्वय सहित अर्थ—(विलस रमन जिन अंकुर पाए, स्यन सादि जिन उव धुव आए) जिसने जिनेन्द्र भगवानरूपी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंकुर पाया है। जिनेन्द्रके स्वरूपको अपने भीतर जमाया है और उसके आनन्दमें रमण करता है, वह कर्म काटके जिनेन्द्रका ध्रुव अविनाशी पद साध लेता है ॥ १ ॥

(जिन जिनवरके गुन रमन रलै, उव उवन उदय सम मुक्ति मिलै) जो कोई जिनेन्द्रके गुणोंमें रमण करता है, वह अपने आत्माको प्रकाश करके समभावसे मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ २ ॥

(रमनन्तर हिय जोगी जानै, विलस रमन सिधि पाए मानै) योगी, ध्यानी, साधु आत्माके भीतर रमण करके अपने हितको जानते हैं। वे उसीमें आनन्दसे मगन होजाते हैं तथा ऐसा मानते हैं कि मानों हमें सिद्ध भगवान मिल गए ॥ ३ ॥

(विंद सुन्न हिय सहै सु सोई, उव उवन रमन सिधि मुक्ति लहेई) जो रागादिसे शून्य होकर आत्माके ज्ञानमें थिर होता है, वह अपनेको प्रकाश करके केवलज्ञानमें रमण करके सिद्ध होकर मुक्ति पाता है ॥ ४ ॥

(जय उवन सुन्न हिय दर्सै सोई, जय सुन्न सुन्न उव उवन सु होई) जो कोई सर्व विकल्पोंसे शून्य होकर भीतर आत्मानुभव करता है वह इस शून्य ध्यानसे अपना प्रकाश कर देता है ॥ ५ ॥

(जय रमन सुन्न सुइ साह सुलेई, जय तिष्ठ सुन्न दह सहइ जो सोई) जो वीतराग भावमें रागादिसे शून्य हो रमण करता हुआ साधन करता है वह शून्य भावमें ठहरकर दशलाक्षणी धर्मका प्रकाश अपने भीतर करता है। उसमें उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य तथा ब्रह्मचर्य इन दश धर्मोंका लाभ करता है ॥ ६ ॥

(जय इष्ट सुन्न लष अलष लषेई, हिय रमन सुन्न दह अलष रमेई) जो कोई शून्य भावसे प्रेम करता है वह अतीन्द्रिय आत्माको जानकर उस हितकारी पदार्थमें रमण करता हुआ दशलक्षण धर्मके विकल्पोंसे शून्य अलष भावमें रमण करता है ॥ ७ ॥

(सुइ सहज सुन्न कुल कोडि जिनेई, सुइ दर्स सुन्न जिन कोडि रमेई) जो शुद्ध वीतराग भावका साधन करता है वह संसारी जीवोंके १९७॥ लाख कोड़ कुल कोड़ोंके रूपमें जन्मको जीत लेता है। वह आत्माके दर्शनमें शून्य व निर्विकल्प होकर जिन स्वरूपको अंगीकार करके स्वरूपमें रमण करता है ॥ ८ ॥

(जो उवन सुन्न सुइ कोडि सु सोई, सुइ लषन सुन्न सह साह रमेई) जो शरीरको निश्चल करके शून्य आत्मा जिनके स्वरूपको ग्रहण करता है वह उसी शून्य ध्यानमें रहकर साधन करता है ॥ ९ ॥ ।२८९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(जय अंग सुन्न सुइ अगम सुं सोईं, पय पयोगं सुन्न लषि उवन रमेईं) जिसका शरीर बिलकुल निश्चल रहता है और मनके अगोचर स्वरूपको पाता है वह अपने उपयोगको शून्य या निर्विकल्पभावमें रमण कराता है ॥१०॥

(जय चरन सुन्न दह अलष लषेईं, जय पूर्व सुन्न सुईं कोडि लष सोईं) जो शून्य वीतराग चारित्रमें ठहरकर दशलाक्षणी धर्मके भीतर एक भावमें रम जाता है वह पूर्व सम्बन्धी जिनवाणीके विकल्पोंसे शून्य होकर उसी भावको स्वीकार किये रहता है ॥ ११ ॥

(तिथि रमन सुन्न सह सहै सु सोईं, दह सहस लषन सुइ लब्धि सु सोईं) जो कोई धर्मतीर्थके रमणमें शून्य होकर ध्यान करता है वह लाखों लब्धियोंको, रिद्धियोंको प्राप्त कर लेता है ॥ १२ ॥

(अंक सुन्न जे ईस जिनेइ, दह कोडाकोडि काल विलेईं) जो कोई शून्य ध्यानसे जिनेन्द्र, ईश, परमात्मा होजाता है वह दश कोड़ाकोड़ी सागरके कालको जीत लेता है अर्थात् फिर उसका जन्म किसी अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी कालमें नहीं होता है, वह मुक्त होजाता है ॥ १३ ॥

(सैताल सुन्न उब उवन सु होईं, सुइ कोडि उवन जिन कोडि रमेईं) सैतालीस अकोंके लिखनेसे व्यवहार पल्यके वर्ष आते हैं। जो कोई शून्य भावसे रहकर कालके विकल्पोंको नहीं करता है वह निर्विकल्प होकर वीतराग निर्विकल्प भावमें रमण करता है ॥ १४ ॥

(उव सब्द सुन्न सुइ समय रमेईं, हिय डोरि सुन्न सुइ कोडि रमेईं) जो कोई शब्दोंको छोड़कर शब्दसे अतीत आत्मामें रमण करता है वह मनकी डोरीको थांभ करके अपने स्वभावके भीतर रमण करता है ॥ १५ ॥

(सुइ उवन कोडि सुइ सुन्न समेईं, सौ अट्ठ रमन सुइ सुन्न रमेईं) जो ज्ञानको जगा करके शून्यभावमें समभाव रखता है वह १०८ एकसौ आठ लक्षणधारी तीर्थंकरमें रमण कर फिर निर्विकल्प आत्मामें रमण करता है ॥१६॥

(हुव सुन्न रमन अवयास रमेईं, सुइ चरन उवन जिन जिनवर सोईं) जो शून्य ध्यानके द्वारा ज्ञानमें रमण करता है वह वीतराग चारित्रको प्रगट करके स्वयं जिनेन्द्र होजाता है ॥ १७ ॥

(प्रकट प्रवेस कलन जिन होईं, कलन कमल अर्थ कोड सु सोईं) जो कोई जिनेन्द्रके स्वरूपका प्रगट रूपसे मनन करता है वह कमल समान शुद्ध आत्माका अनुभव करता हुआ अपने आत्मा पदार्थमें लीन होजाता है ॥ १८ ॥

(सुइ तीन रमन सुन्न समेईं, अर्थ कोडि जिन जिनवर सोईं) जो रत्नत्रय धर्मकी एकतामें एकरूप होकर विक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ल्पोंसे शून्य हो समा जाता है वही आत्माको अनुभव करके जिनेन्द्र होजाता है ॥ १९ ॥

(सु दिसि उवन दिपि सुन्न समेईं, उत्पन्न समय सुन जिनवर होईं) जो आत्मज्ञानको प्रगट करके इस ज्ञानमें सर्व विकल्प छोड़ समा जाता है वही वीतराग परमात्माका स्वभाव प्रगट कर जिनराज होजाता है ॥२०॥

(उव उवन हिययार सुन्न रमन रमेईं, उव उवन सुन्न तित्थयर सु सोईं) जो कोई हितकारी शून्य वीतराग भावमें रमण करता है वह वीतराग स्वभावको प्रगट कर तीर्थंकर होजाता है ॥ २१ ॥

(उव कण्ठ सुन्न कलि कलन सु सोईं, उत्पन्न ताल जिन रमन रमेईं) जो कोई निर्विकल्प भावको जानकर स्वानुभवी होजाता है वही ध्यानका सिंहासन बनाकर जिन स्वभावमें रमण करता है ॥ २२ ॥

(उव उवन रमन सुन्न सह साह सु सोईं, उव उवन साह जिन जिनवर सोईं) जो कोई शून्य भावमें रमणता करके साधन करता है वह साध्यको प्रगट कर जिनेन्द्र होजाता है ॥ २३ ॥

(उव सब्द सुन्न सोइ दरसै सोईं, उव चरन सुन्न जिन समय सु सोईं) जो कोई शब्दोंको छोड़कर शब्दोंसे अतीत आत्माका अनुभव करता है वह चारित्रके विकल्पसे शून्य होकर जिनेन्द्र परमात्मा होजाता है ॥ २४ ॥

(अवयास उवन सुन सुन्न समेईं, उव उवन अवयास जिन जिनवर सोईं) आत्मज्ञानको प्रगट कर जो शून्य भावमें समा जाता है, निर्विकल्प होजाता है वह केवलज्ञानको प्रगट कर जिनेन्द्र होजाता है ॥ २५ ॥

(प्रकट कलन सुइ कमल रमेईं, सुइ कलन कमल जिन मुक्ति लहेईं) स्वात्मानुभव प्रगट करके जो शुद्धात्मा कमलमें रम जाता है, वह कमल समान प्रगट हो, जिनराज होकर मोक्ष पाता है ॥ २६ ॥

(कलन सु कलन सु सुन्न रमेईं, सुन्न सुन्न उव कलन समेईं) जो अभ्यास करते करते वीतराग भावमें रम जाता है, वह परम वीतरागताको प्रगट कर उसीके अनुभवमें समा जाता है ॥ २७ ॥

(सुन्न प्रवेस अर्क जिन होईं, दिसि अंग सुन्न जिन मुक्ति लहेईं) जो कोई शुक्लध्यानरूपी शून्य ध्यानमें प्रवेश करता है, वह जिनेन्द्र सूर्य होजाता है। फिर दिगम्बर शरीरको छोड़कर सिद्ध होजाता है ॥ २८ ॥

(वत्तीस चौक सु सुयं सुइ होईं, पय पयोग रमन सुन मुक्ति लहेईं) जो कोई साधुके बाईस मूलगुण धारी होकर सिद्धोंके आत्मगुण स्वयं ध्याता है अर्थात् छत्तीस गुणोंसे तन्मय होजाता है, वह शुद्धोपयोगमें रमण करके कर्मसे शून्य हो, मोक्षको पाता है ॥ २९ ॥

(सुइ उवन वत्तीस पयोग सुन सोईं, कलन प्रवेस उवन जिन होईं) जो कोई अट्ठाईस मूलगुण धारी साधु अनन्त-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानादि चार चतुष्टयमें उपयोग रमाकर अर्थात् बत्तीस गुणोंको धरके निर्विकल्प होजाता है, वह स्वात्मामें रमण कर जिनेन्द्र होजाता है ॥ ३० ॥

(अष्ट प्रवेस कलन कलि सोई, कलन रमन जिन समय सिधि होई) जो सिद्धोंके आठ गुणोंमें प्रवेश कर उनका मनन कर अभ्यास करता है, वह इस रमणसे परमात्मा जिनराज हो, सिद्ध होजाता है ॥ ३१ ॥

(सुइ उवन स्रेनि जिन स्रेनि सु सोई, सुइ कलन कमल जिन मुक्ति लहेई) ऐसा शून्य ध्यानी गुणस्थानोंके द्वारा चढ़कर जिनराजकी श्रेणीपर आजाता है, वहां शुद्धात्मा कमलका अनुभव करता हुआ फिर मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ ३२ ॥

(सुइ तारन तरन सुइ कलन कलेई, सुइ कलन कमल जिन मुक्ति लहेई) वही तारणतरण स्वानुभवी अरहन्त होकर आत्म कमलमें रमता हुआ मोक्ष प्राप्त कर लेता है ॥ ३३ ॥

(सुइ स्रेनि कलन तर कमल सु सोई, सुइ तार समय जिन मुक्ति लहेई) वही उस तेरहवें गुणस्थानको पारकर कमल समान परमात्मा अपनेको तारकर मोक्षको प्राप्त कर लेता है ॥ ३४ ॥

(सै पंच बहत्तर सुन्न समेई, सुइ सुन्न कलन जिन जिनवर सोई) एकसौ सतहत्तरसे शून्य होकर आपमें रमते हुए निर्विकल्प ध्यानसे यह आत्मा जिनेन्द्र होजाता है। यहां एकसौ बीस बन्धयोग्य कर्म प्रकृतियोंसे या ५७ आस्रव भावोंसे मतलब है। इन आस्रव व बन्धसे रहित ही आत्मा शून्य है। १४८ प्रकृतियोंमें २८ कम करनेसे १२० प्रकृतिएँ बन्धमें गिनी गई हैं। ५ बन्धन + ५ संघात + १६ वर्णादि + २ दर्शनमोहकी मिश्र व सम्यक्त=इस तरह २८ कम करके १२० का बन्ध गोम्मटसारमें गिना है। ५७ आस्रव भाव हैं। ५ मिथ्यात्व + १२ अविरति + २५ कषाय + १५ योग=५७ इनका विस्तार तत्वार्थसूत्रकी टीका व गोम्मट-सारसे जानना योग्य है ॥ ३५ ॥

भावार्थ—इस शून्य रमण चौतीसीकी भावनामें यही झलकाया है कि आत्मा निज स्वभावसे सर्व प्रकार कर्मके बन्धोंसे व आस्रव भावोंसे व कर्मोंके फलोंसे रहित बिलकुल शुद्ध है। आत्मा वास्तवमें अनुभवगम्य है, निर्विकल्प है। इसमें गुण व गुणीके भेद भी नहीं हैं। जो कोई रागादि भावोंको छोड़कर अनेक प्रकार शब्दोंके द्वारा व जिनेन्द्रके स्वरूप व गुणोंके द्वारा फिर ध्यानमें सर्व विकल्पोंसे शून्य होता है वही स्वात्मानुभवको पाता है। यही वास्तवमें मोक्षमार्ग है, यही कर्म नाशका उपाय है। इस स्तोत्रमें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुतसे अङ्क हैं उनका भाव जैसा समझमें आया है लिखा है। विशेष बुद्धिमान विचार कर लें व और योग्य भाव भासे तो ठीक कर लेवें। वास्तवमें सिद्धपद भी अनुभवगम्य है अर्थात् परसे शून्य है। इसका मार्ग भी अनुभवगम्य है, परसे शून्य है। जो इस तत्वको पाता है, वही वास्तवमें जैनी है। वही स्वानुभवरूपी जैनधर्मको पालकर जिन हो जाता है।

समयसारकलशमें कहा है—

य एव मुक्त्वानयपक्षपातं स्वरूपगुप्ता निवसन्ति नित्यं। विकल्पजालच्युतशान्तचित्तास्त एव साक्षादमृतं पिबन्ति ॥ २४—३ ॥
आक्रामन्नविकल्पभावमचलं पक्षैर्नयानां विना, सारो यः समयस्य भाति निभृतैरास्वाद्यमानः स्वयम्।
विज्ञानैकरसः स एष भगवान् पुण्यः पुराणः पुमान्, ज्ञानं दर्शनमप्ययं किमथवा यत्किंचनैकोऽप्ययम् ॥ ४८—३ ॥

भावार्थ—जो कोई निश्चय व्यवहारके पक्षपातको छोड़कर अपने स्वरूपमें गुप्त हो जाते हैं वे नित्य ही विकल्पोंसे शून्य हो व शांतचित्त हो साक्षात् आत्मानन्दामृतका पान करते हैं। सर्व नयोंके पक्षको छोड़कर जो एक निर्विकल्प शून्य भावका आश्रय लेते हैं उनके भीतर समयसार या शुद्धात्मा ऐसा झलकता है कि यह स्वयं ज्ञानियोंके द्वारा अनुभवगोचर है। वही ज्ञानमई एक स्वभावका धारी है, वही भगवान है, वही पवित्र है, वही सनातन आत्मा है। उसका ज्ञान कहो या दर्शन कहो जो कुछ कहो वह एकरूप ही अनुभवगम्य है।

(१५३) जयनाले गाथा ३११२ से ३११५ तक।

जय जयनाले, जैं जयो जिनेंद जै नाले। उव उवन समय जिन परमानंद, जैनाले।
कलि कलन कलिय सुइ कलन जिनेंद जैनाले। कलि कमल उवन सुइ जिनय जिनेंदा जैनाले ॥१॥
जिनयाले जिन जिनवर राउ जैनाले। मुक्ति रमन सम समय सहाउ, जयनाले (आचरी) ॥२॥
चरनाले चर चंरन सहाउ, चरनाले। चरन कमल ध्रुव उवन सहाउ, चरनाले।
कमल उवन ध्रुव उवन सुभाव, ध्रुवनाले। ध्रुव उवन कमल सम कर्न सहाउ, ध्रुवनाले ॥जिन०॥ ३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम समय समय सम सुवन सहाउ, सुवनाले। सुव सुवन समय सम हियन सुभाउ, हियनाले।
हिय उवन उवन हुव उवन सहाउ, हियनाले। हुव हुवन हुवन अवयास सुभाउ, हुवनाले ॥जिन०॥ ४॥

अन्वय सहित अर्थ—(जय जयनाले, जै जयो जिनेन्द जैनाले) श्री जैनधर्मकी जय हो, श्री जिनेन्द्रदेवकी जय हो (उव उवन समय जिनय रमानंद जैनाले) परमात्मपदके प्रकाश करनेवाले परमानन्दी जिनेन्द्रकी जय हो (कलि कलन कलिय सुइ कमल जिनेन्द) वे जिनेन्द्र कमल समान अपने आत्माकी अनुभूतिमें मगन हैं (कलि कमल उवन सुइ जिनय जिनेन्द) आत्मारूपी कमलके प्रकाशसे ही जिनेन्द्र होते हैं ॥ १ ॥

(जिनयाले जिन जिनवर राउ जैनाले, मुक्ति रमन समय सहाउ) श्री जिनेन्द्रदेव कर्मविजयी व वीतराग भगवान हैं व उनका स्वभाव मोक्षमें रमण करनेका है तथा समभाव सहित परमात्मारूप रहनेका है ॥ २ ॥

(चरनाले चर चरन सहाउ) वे जिनेन्द्र स्वरूपमें आचरण करते हैं, उनका स्वभाव ही वीतराग चारित्र रूप है (चरन कमल धुव उवन सहाउ) वे शुद्धात्मारूपी कमलमें आचरण करके अपने ध्रुव अविनाशी स्वभावको प्रगट कर चुके हैं (कमल उवन धुव उवन सुभावे, धुवनाले) उनके आत्मारूपी कमलसे ध्रुव ज्योतिस्वरूप स्वभाव सदा बना रहता है (धुव उवन कमल सम कर्न सहाउ) उनका स्वभाव समभाव है, जो ध्रुवरूपसे कमलको प्रकाश रखता है ॥ ३ ॥

(सम समय समय सम सुवन सहाउ सुवनाले) समभावधारी आत्माका स्वभाव समभावमई आत्मामें निरन्तर परिणमन करनेका है (सुव सुवन समय सम हियन सुभाउ, हियनाले) आत्माके भीतर परिणमन करते ही उनका हितकारी सम स्वभाव सदा बना रहता है (हिय उवन उवन हुव उवन सहाउ) हितकारी आत्मज्ञानके मननसे उनमें ध्यानका प्रकाश प्रगट करनेका स्वभाव है (हुव हुवन हुवन अवयास सुभाउ हुवनाले) आत्मध्यान करते करते अनन्त ज्ञानमई स्वभाव प्रगट होजाता है ॥ ४ ॥

भावार्थ—यह एक छोटीसी स्तुति है। भाव यही है कि स्वात्मानुभवसे ही वीतराग सर्वज्ञका पद प्रगट होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१६४) परमानन्द विलासी फूलना गाथा ३११६ से ३१२१ तक।

नेय अनेय सहज सुइ रमन सु, परमानन्द विलासी।
निहचल अगम अथह कोमल सुइ, उव उवन प्रवेस प्रसिए॥ १॥
जिन अपनो विगसि मिलिये स्वामी अपनो, विलसि रमिये जिनवर अपनो।
उव प्रवेश प्रसिए, धुव जिन अपनो (आचरी)॥ २॥
भेय अभेय अभय भय विलयतु, विगत अविगत अविनासी।
पिय अपिय पियं पिय रमन सु, सुइ रयन रमन प्रसिए॥ जिन०॥ ३॥
सेय असेय सेय सुइ सुवन सु, उव लोय लोय प्रवेसी।
नन्त अनन्त नंत सुइ सुवन सु, सुइ सुवन सहज प्रसिए॥ जिन०॥ ४॥
संख्य असंख्य संख्य सुइ लवन सु, लष अलष उलष सुइ परसी।
दिष्ठु सब्द उव विलय सु उवन सु, उव उवन प्रवेस प्रसिए॥ जिन०॥ ५॥
रंज रमन नंद सुवन जिन सेनि सु, जिन वीर समय सुइ परसी।
तर तार कमल उवन कमल रमन जिन, सह समय मुक्ति प्रवेस प्रसीए॥जि०॥ ६॥

अन्वय सहित अर्थ—(नेय अनेय सहज सुइ रमन सु परमानंद विलासी) वे परमात्मा एक व अनेक रूप अपने सहज स्वभावमें रमण करते हुए परमानन्दमें मगन हैं (निहचल अगम अथह कोमल सुइ उव उवन प्रवेस प्रसिए) वे ही स्वभावमें थिर हैं। मन, वचन, कायसे अगोचर अनुभवगम्य हैं, अथाह हैं, परम मृदु व शांत हैं तथा अपने ज्योतिस्वरूपमें प्रवेश किये हुए हैं॥ १॥

(जिन अपनो, विगसि मिलिये स्वामी अपनो, विलसि रमिये, स्वामी अपनो, उव प्रवेस प्रसिए, धुव जिन अपनो) हे भाई! वे जिनेन्द्र अपने ही हैं, उत्साहके साथ उनसे मिलो, वे अपने स्वामी हैं। आनन्दके साथ उनके साथ रमण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करो, वे अपने स्वामी हैं। उनके स्वभावमें प्रवेश करके मिलो वे अविनाशी जिनेन्द्र अपने ही हैं ॥ २ ॥

(मेय अमेय अभय भय विलयतु, विगत अविगत अविनाशी) वे परमात्मा गुणोंकी अपेक्षा भेदरूप हैं, द्रव्यकी अपेक्षा अभेद रूप है। वे अभय हैं, उनमें कोई भय नहीं हैं। वे सूक्ष्म तत्वके ज्ञाता हैं, वे अविनाशी हैं (पिय अपिय पियं पिय रमन सु, सुइ रमन रमना प्रसिए) वे सुन्दर आनन्दामृतका पान करते हुए उसीमें रमण कर रहे हैं, वे रत्नत्रय धर्ममें रमण करते हैं, उनके साथ मिलो ॥ ३ ॥

(सेय असेय सेय सुइ सुवन सु, उवलोय लोय प्रवेसी) वे प्रभु इन्द्रियगोचर तथा अतीन्द्रियगोचर सबको जानते हुए लोक अलोकके ज्ञाता हैं, मानों सबमें व्याप्त हैं (नन्तानन्त नन्त सुइ सुवन सु, सुइ सुवन सहज प्रसिए) उनके ज्ञानसे अनन्तानन्त पदार्थ अनन्त काल तक झलकते रहते हैं, वे सहज स्वभावमें परिणमन करनेवाले हैं, उनसे मिलो ॥ ४ ॥

(संख्य असंख्य संख्य सुई लवन सु, लषं अलष उलष सुइ परसी) श्री जिनेन्द्रने संख्यात भेदरूप व असंख्यात भेदरूप कर्मोंको नाश कर दिया है, वे आत्माके अतीन्द्रिय लक्षणको प्रत्यक्ष जानकर उसीमें मगन होरहे हैं (दिष्टु शब्द उव विलय सु उवन सु, उव उवन प्रवेस प्रसिए) आंख व कानका विषय जहां नहीं पहुँचता है उस स्वभावको प्रगट कर वे उसीमें थिर हैं, उनसे मिलो ॥ ५ ॥

(रञ्ज रमन नंद सुवन जिन स्रेनि सु, जिन वीर समय सुइ परसी) वे जिनेन्द्र अपने पदमें परिणमन न करते हुए अनन्त आनन्दमें मगन हैं, वे बड़े वीर हैं, वे आत्माहीमें मगन हैं (तर तार कमल उवन कमल रमन जिन, सह समय मुक्ति प्रवेस प्रसीए) वे ही तारण तरण प्रफुल्लित कमल समान अपने ही आत्मारूपी कमलमें मगन श्री अरहन्त जिन हैं, वे ही परमात्मापदके साथ मोक्षमें जाते हैं, उनसे मिलो ॥ ६ ॥

भावार्थ—यह एक ऐसी भक्ति है जिसके पढ़नेसे परमात्मासे गाढ़ भक्ति पैदा होती है और यही भाव झलकता है कि उनके स्वरूपका ध्यान करनेसे यह भक्त उनके समान अविनाशी, परमानन्दी, ज्ञाता-दृष्टा, तारण तरण होकर सिद्धगतिको प्राप्त कर सक्ता है। आत्माके अनुभवके लिये परमात्माकी भावना सहकारी है। कल्याण तो आत्मानुभवसे ही होता है।

समयसार कलशमें कहा है—

पदमिदं ननु कर्मदुरासदं सहजबोधकलासुलभं किल । तत इदं निजबोधकलाबलात् कलयितुं यततां सततं जगत् ॥ ११—५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ—यह मोक्षपद व्यवहार क्रियाकांडसे नहीं प्राप्त होसक्ता है, किन्तु सहज ज्ञानकी कलासे पाना सुगम है। इसलिये अपने आत्मज्ञानकी कलाके बलसे हे जगतके प्राणियो! निरन्तर उसके अनुभवका अभ्यास करो।

(१६६) मुक्ति विलास गाथा ३१२२ से ३१२७ तक।

अपर परम पय परम रमन जिन, परम समय सुइ राए।
परम उवन जिन परम ध्रुवं जिन, सह समय सिधि विलसाए॥ १ ॥
नयन मेरे ममल मयं, ऐ जिन, देखत तरन विवान।
नयन मेरे ममल पयं, पर परसत उवन विवान, नयन जिन ध्रुव रमनं॥
उव उवन प्रवेस विवान, परम पय पर्म पयं।
रम रमयति उवन विवान, उवन सम मुक्ति जयं (आचरी)॥ २ ॥
जय जयं जयं जिन जय उवन रमन जिन, जय जयो जयं जिनु पाए।
जय जयो लोय अवलोय लोय जिन, जय समय मुक्ति विलसाए॥ नयन०॥ ३ ॥
पय पयं पयं जिन पय उवन रमन जिन, पय पम अलष जिन पाए।
पय अलष अगम पय अथह समय जय, जय जयो मुक्ति विलसाए॥ नयन०॥ ४ ॥
जिन जिनयति जिनय जिनय जिन स्वामी, जिन अवल बली जिन पाए।
जिन तारन तरन उवन जिन उवनं, सह समय सिद्धि विलसाए॥ नयन०॥ ५ ॥
जिन जिनय सेनि जिन कलन सेनि जिन, जिन वीर समय पर्स पाए।
जिन तारन तरन उव कमल रमन जिन, उव समय मुक्ति विलसाए॥ नयन०॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—(अन्वय सरल है) अनुपम परमात्मापदमें रमण करनेवाले जिनेन्द्र हैं। वे ही श्रेष्ठ समयसार हैं, वे परम ज्योतिस्वरूप हैं, परम ध्रुव हैं, वे परमात्मापदके साथ मोक्षका आनन्द लेते हैं ॥ १ ॥

हे जिनेन्द्र ! आप तारण तरण जहाजके समान हैं। आपके दर्शनसे मेरे परिणाम निर्मल होगये हैं। आपके प्रकाशमान स्वरूपके स्मरणसे भाव शुद्ध होगए हैं। आप जिन स्वभावमें ध्रुवरूपसे सदा रमण करते हैं। आप अपने प्रकाशमान ज्योतिस्वरूपमें मगन हैं। आप परमात्मा परम पदके धारी हैं। आप स्व-रूपमें रमण करते हुए मोक्षको जीत लेते हैं ॥ २ ॥

हे जिनेन्द्र ! आपकी जय हो, जय हो। आप अपने प्रगट स्वरूपमें रमण कर रहे हैं। आपकी जय हो। मैंने आपको पालिया है। आप लोकालोकके ज्ञाताद्दष्टा हैं। आप परमात्मापदके साथ मोक्षका आनन्द लेरहे हैं ॥ ३ ॥

आपने क्रम क्रमसे गुणस्थानोंके द्वारा अपने प्रकाशमय पदको पाया है। आप इसीमें रमण करते हैं। आप परम पदमें हैं, अतीन्द्रिय हैं, मैंने आपको पालिया है, आपका पद अलष है, अगम है, अथाह है, आप परमात्माकी जय हो। आप मोक्षका आनन्द लेरहे हैं ॥ ४ ॥

हे स्वामी ! आपने कर्मोंको व रागादिको जीता है इससे आप जिन हैं। आप अनन्त व अनुपम वीर्यधारी हैं। आपको मैंने पालिया है। आप तारणतरण प्रकाशमान हैं। आप परमात्मा सिद्ध स्वभावमें मगन हैं॥ ५ ॥

आप जिनेन्द्र पदमें रहकर उस पदका अनुभव लेरहे हैं। आप वीर आत्मा हैं। आपको मैंने स्पर्श कर लिया है। आप तारणतरण हैं। आत्मारूपी प्रकाशित कमलमें रमण कर रहे हैं। तथा परमात्मा-पदके साथ मोक्षका आनन्द लेरहे हैं ॥ ६ ॥

भावार्थ—यह एक तरहकी भावना है जिससे अपने भावोंसे शुद्धात्माका स्वभाव झलक आता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१९६) रमन प्रवेस गाथा ३१२८ से ३१३५ तक ।

जय जयं जयं अवयास उवन जिन, उव उवन अवयास रलाऊं ।
रलि रलिय उवन सु विस्व पय जिनवर, जिन जिनय मुक्ति विलसाऊं ॥ १ ॥
जिनवर मुक्ति रमाइ स्वामी, उव उवन दिप्ति मिल जाऊं ।
जिनवर उवन रमिय ऐ स्वामी, रलि रलन संक करेइ ॥
जिनवर उवन मिलाए स्वामी, सुइ सुन्न मुक्ति विलसाऊ ।
सो हिए उवन रमाए स्वामी, उव चरन सुन्न चरिराऊ ॥
जिनवर मुक्ति मिलाए स्वामी (आचरी) ॥ २ ॥
पय पयं पयं पय विंद रमन जिन, जिन अर्क सुन्न तिलसाऊं ।
सुइ उवन कमल रमि विंद सुन्न जिन, सुइ अक विंद सुन राऊ ॥ जिन० ॥ ३ ॥
जय जयो जैवन्तु विन्द जिन, जय अक विंद सुन पाऊं ।
जय अर्क कमल उव कमल विंद जिन, सुइ सुन्न सिद्ध विलसाऊ ॥ जिन० ॥ ४ ॥
मय मय मयं मय उवन ममल जिन, सुइ मध्य विंद सुवराऊं ।
सुइ मध्य कमल जिन रमन कमल रम, सुइ सुन्न सिद्ध विलसाऊं ॥ जिन० ॥ ५ ॥
उव उवन सुन्न उव उवन रमन जिन, उव उवन विंद सुनराऊ ।
उव उवन कमल जिन उवन रमन रम, सुइ उवन मुक्ति विलसाऊ ॥ जिन० ॥ ६ ॥
उव उवन सुन्न जिन अक सुन्न जिन, जिन मध्य सुन्न विलसाऊं ।
जिन उवन सुन्न उव उवन सुन्न जिन, सुइ सुन्न मुक्त विलसाऊं ॥ जिन० ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उव उवन वीर जिन उव समय रमन जिन, उव स्नेनि कलन कलिराऊ।
तर तार उवन उव कमल रमन जिन, सह समय सिद्धि विलसाऊ ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ—(अन्वय सहज है) ज्ञान स्वरूप जिनेन्द्रकी जय हो। मैं ज्ञानको प्रगट कर उसमें रमूं। सर्व लोकके ज्ञाता जिनवर अपने ज्योतिमय पदमें रमण कर रहे हैं। श्री जिनेन्द्रके स्वरूपका मनन कर मैं मुक्तिमें आनन्द मानूं॥ १ ॥

श्री जिनेन्द्र मुक्तिमें रमण कर रहे हैं। मैं भी ज्ञानज्योतिको प्रगट करके उसमें मिल जाऊं। श्री जिनेन्द्र ज्ञानमें रमण कर रहे हैं उसमें कोई शंका नहीं करना चाहिये। जिनेन्द्रने ज्ञानको प्रगट कर दिया है। मैं भी रागादिसे शून्य मुक्तिका आनन्द भोगूं। हमारे स्वामी जिनेन्द्र हितकारी साध्यको प्रगट करके उसमें रमणकर रहे हैं। मैं भी चारित्रको प्रगट कर शून्य वीतराग भावमें रहूँ॥ २ ॥

श्री जिनेन्द्रने क्रम क्रमसे जिनपद पाकर उसके अनुभवमें रमणता की है। मैं भी सूर्य समान जिनेन्द्रके द्वारा शून्य वीतराग भावमें आनन्द भोगू। श्री जिनेन्द्र विकसित कमल समान आत्मामें रमण करके शून्य वीतराग भावका अनुभव कर रहे हैं, मैं भी सूर्यसम जिनेन्द्रके स्वरूपका अनुभव करके रहूं॥३॥

अनुभवशील जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो। मैं भी सूर्यसम आत्माका अनुभव करके वीतरागभावमें रहूं। श्री जिनेन्द्र सूर्य व कमलके समान होकर कमल स्वभावका अनुभव कर रहे हैं, मैं भी वीतराग होकर सिद्धपदमें मगन रहूं॥ ४ ॥

श्री जिनेन्द्र ज्ञानके द्वारा शुद्ध केवलज्ञानको प्रगट कर चुके हैं। मैं भी उसी वीतरागमई ज्ञानमें रहूं। श्री जिनेन्द्रकमलके मध्यमें तिष्ठकर कमलके ही भीतर रमण कर रहे हैं, मैं भी वीतराग होकर सिद्धभावका आनन्द लूं॥ ५ ॥

श्री जिनेन्द्रने शुद्ध वीतराग भावसे अपना पद प्रगट कर इसमें रमणता की है। मैं भी ज्ञानपदको प्रगट कर उसका अनुभव लेकर रहूं। श्री जिनेन्द्र कमल समान विकसित हो, उसीमें रमण कर रहे हैं। मैं भी अपनेमें ज्ञान प्रकाश करके मुक्तिका आनन्द लू॥ ६ ॥ ॥३००॥

श्री जिनेन्द्रने वीतराग भावको प्रगट कर अपनेको पर भावोंसे रहित शून्य पदार्थ कर दिया है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं भी श्री जिनेन्द्रमें रमण कर वीतराग भावका आनन्द लूं। श्री जिनेन्द्रने वीतराग भावसे वीतराग पद प्रगट किया है, मैं भी वीतरागी हो मोक्षका आनन्द लूं ॥ ७ ॥

श्री वीर जिनेन्द्र प्रगट हैं। वे परमात्माके स्वभावमें रमण कर रहे हैं। वे अपनी श्रेणीपर स्वानुभव कर रहे हैं। वे तारणतरण आत्मकमलमें रमण करनेवाले जिन हैं। मैं भी परमात्मा होकर सिद्धपदका आनन्द लूं ॥ ८ ॥

(१९७) अर्क फूलना गाथा ३१३६ से ३१३८ तक।

अर्क छती सुइ तार सुभाउ, दुदुही सब्द जिननाथ सहाउ।
जिन ग्रह छुडी उछरी मागधि भाषा, जिनय जिन उत्तु दिव्यधुनी जिननाह सुहाउ ॥
जिननाथ समय सुइ मुक्ति पौ ॥ १ ॥
उव उवन उवन उव उवन समानी, उव उवन साहि सिय अलष लषानी।
उव उवन अर्क ध्रुव विंद समानी, उव उवन मिलन सिधि मुक्ति विवानी ॥ २ ॥
न्यानी हो जिन अगम विवानी, दिप्ति दिष्टि उव सुन्न समानी।
उव उवन उवन दरसावो स्वामी, न्यानी हो तुम अगम विवानी ॥ ३ ॥

अर्थ—सूर्य समान प्रकाशक व भव्य जीवोंके रक्षक व तारण स्वभावधारी श्री जिनेन्द्र हैं। श्री जिनेन्द्रकी वाणी दुदुभीकी गर्जनाके समान निकलती है। जिनेन्द्रके शरीरसे प्रगट हो मागधी भाषा उछलती है। इसीको दिव्यध्वनि कहते हैं। यह जिननाथके स्वभावसे निकलती है। यही जिनेन्द्र परमात्मा मोक्षपद प्राप्त करते हैं ॥ १ ॥

यह जिनवाणी केवलज्ञानके द्वारा प्रगट होनेसे केवलज्ञानके समान पदार्थोंको दिखलानेवाली है, शुद्धोपयोगके साधनको प्रगट करनेवाली है व अतीन्द्रिय आत्मतत्वको झलकानेवाली है। जिससे केवल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान सूर्यका प्रकाश होकर अविनाशी ज्ञान समभाव सहित बना रहे फिर आत्मा पूर्ण शुद्ध होकर सिद्ध-पदमें प्राप्त होजावे ॥ २ ॥

हे ज्ञानो जिनेन्द्र ! आपकी वाणो अनुभवगोचर तत्वको बतानेवाली है। अनंत ज्ञान व अनन्त दर्शन प्रगट करा कराकर शून्य वीतरागभावमें प्रवेश करानेवाली है। हे स्वामी ! आपने अपनी वाणीसे आत्माके प्रकाशका उपाय दर्शाया है। आपकी वाणी अतीन्द्रिय भावको पहुंचानेवाली है ॥ ३ ॥

भावार्थ—यहांपर जिनवाणीका महात्म्य बताया है कि सर्वज्ञ वीतरागी अरहन्तकी वाणी दुन्दुभीकी ध्वनिके समान प्रगट होकर केवलज्ञानसे जैसा पदार्थोंको जाना है वैसा प्रगट करती है, उसको सुननेसे सच्चा मोक्षमार्ग मिलता है, जिसपर चलनेसे वीतराग सर्वज्ञ पद होजावे, अतीन्द्रिय आत्माका अनुभव होजावे। यह वाणी केवलज्ञानी सूर्यके प्रकाशके समान सुमार्ग बताकर उपकार करनेवाली है।

नियमसारमें कहा है—

तस्स मुहागदवयणं पुव्वावर दोस विरहियं सुद्धं। आगम मिदि परिकहियं तेणहु कहिया हवंति तच्चत्था ॥ ८ ॥

भावार्थ—श्री वीतराग सर्वज्ञके मुखारविंदसे प्रगट होनेवाली वाणी पूर्वापर दोषसे रहित है व शुद्ध है उसीको जिनागम कहते हैं, उसके द्वारा जीवादि तत्व दिखलाए गए हैं।

---

(१५८) मिलन समय गाथा ३१३९ से ३१५३ तक।

विलस रमन जिन मो लेजाई, उव उवन स्वाद रस मिलन मिलाई ॥ १ ॥
जिन हो साही जिनय जिना, जिन उवन समय सुइ सिधि रमना (आचरी) ॥ २ ॥
जं सूर उदय सुइ रयन गलाई, तं उवन उदय सुइ सरनि विलाई ॥ जिन हो० ॥ ३
जिन दिप्ति उवन सुइ समय समाई, जिन दिप्ति दिस्टि सुइ रमन रमाई ॥ जिन हो० ॥ ४ ॥
जिन सुवन सुयं सुइ सम विलसाई, सम समय सरन सम मुक्ति लहाई ॥ जि० ॥ ५ ॥
जिन दिष्टि उवन सिधि सम विलसाई, जं सूर कमल जिन सुयं विगसाई ॥ जि० ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिययार उवन सम उवन सुहाई, हिय रमन सुन्न सम मुक्ति लहाई ॥ जि० ॥ ७ ॥
जिन उवन मिलन सुइ काल विलोई, जय जाय नाम गुन सुन्न समाई ॥ जि० ॥ ८ ॥
जिन उवन मिलन सोई मुक्ति मिलाई, जै परस रमन सोई सुन्न समाई ॥ जि० ॥ ९ ॥
जिन उवन अचेत सुइ सुन्न अवेस, जै ममल रमन सुइ सुन्न समाई ॥ जि० ॥ १० ॥
जिन उवन चिंत चिंतित अचिंत, जिन अचेत चिंतामनि मुक्ति मिलंतु ॥ जि० ॥ ११ ॥
जिन उवन अर्क जै अर्क प्रवेस, तं सुन्न साहि जिन मुक्ति मिलंतु ॥ जि० ॥ १२ ॥
जिन उवन साहि सुइ साह सुनंद, सो पर्म नंद जिन जिनय जिनंद ॥ जि० ॥ १३ ॥
जिन पर परचे सुइ उवन जितुत्तु, जिन सत्य साहि जिन मुक्ति मिलंतु ॥ जि० ॥ १४ ॥
उव सेनि सहज जिन कलन रमाई, जिन तार कमल सम मुक्ति मिलाई ॥ जि० ॥ १५ ॥

अर्थ—श्री जिनेन्द्रके गुणोंमें रमण करनेसे आनन्द होता है उससे मैं मोक्षमार्गपर चलता हूं। जब आत्माके ज्ञानका स्वाद आता है तब आनन्द–रसका लाभ होजाता है ॥ १ ॥

श्री जिनेन्द्र कर्मविजयी हैं उनके स्वरूपको साधना चाहिये। जब आत्मामें जिनेन्द्रका स्वभाव प्रगट होजाता है तब समभाव प्रगट होता है और सिद्धके स्वभावमें रमण होता है ॥ २ ॥

जैसे सूर्यके उदयसे रात्रि नहीं रहती है वैसे ज्ञानके प्रकाशसे अज्ञानमई संसार नाश होजाता है ॥ ३ ॥

जब स्वय वीतराग विज्ञानका प्रकाश होता है तब आत्मामें उपयोग समा जाता है और वीतरागमई ज्ञान दर्शनके भीतर रमण होजाता है ॥ ४ ॥

जब आपसे आपमें परिणमन होता है तब समभावमें मगनता होती है। जब आत्मा समभावके प्रवाहमें वहता है तब वह उस समभाव सहित मोक्षको पालेता है ॥ ५ ॥

जब आत्मज्ञानका उदय होता है तब सिद्धके आनन्दके समान आनन्द प्रगट होता है। जैसे सूर्यके उदयसे कमल स्वयं खिल जाता है वैसे वह वीतरागी आत्मा आत्मानुभवके उदयसे आनंदित होजाता है ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हितकारी सम्यग्ज्ञानका उदय समभावके प्रकाशमें सहकारी है। जब हितकारी शून्य स्वभावमें या निर्विकल्प वीतराग स्वभावमें रमण होता है तब मोक्षका लाभ होता है॥ ७॥

जब आत्माका पूर्ण प्रकाश मिल जाता है तब मरणका नाश होजाता है। जाति, नाम व औपाधिक गुण सब मिट जाते हैं। ज्ञानके शून्यभावमें यह समा जाता है॥ ८॥

जब जिनेन्द्रकासा प्रकाश मिल जाता है तब मोक्षका लाभ होजाता है। जो जिनेन्द्रके स्वभावको स्मरण करके अपनेमें रमण करता है वह शून्य निर्विकल्प भावमें समा जाता है॥ ९॥

जब वीतरागीके भावोंमें सिवाय आपके और किसीका अनुभव नहीं होता है तब शून्य या निर्विकल्प भावमें प्रवेश होजाता है। जब वीतराग शुद्ध भावमें रमण होता है तब ही शून्यभावमें रमण होता है॥ १०॥

जब मनमें अचिन्त्य तत्व या अनुभवगोचर तत्वका ध्यान किया जाता है, तब वीतराग सहित स्वानुभव प्रगट होनेसे चिंतामणि रत्नके समान मुक्ति मिल जाती है॥ ११॥

जब सूर्यके समान केवलज्ञानका प्रकाश होजाता है और यह आत्मा उसी सूर्यमें प्रवेश करता है तब शून्य या निर्विकल्प भावका साधक होजाता है और मोक्ष मिल जाता है॥ १२॥

जब साधनेयोग्य शुद्ध पद प्रगट होजाता है तब आनन्दको साध लिया जाता है, तब श्री जिनेन्द्र परमानन्दमें मगन रहते हैं॥ १३॥

जो उत्कृष्ट वीतरागी जिनेन्द्र परमात्माको यह मान लेता है उसमें जिनोक्त ज्ञान प्रगट होजाता है, वही वीतराग विज्ञानमई सत्यको साधन करके मोक्ष प्राप्त कर लेता है॥ १४॥

जब जिनराजकी श्रणीपर आकर जिनेन्द्र स्वानुभवमें रमण करते हैं तब वे संसारसे पार होकर कमलके समान प्रफुल्लित व समभाव पूर्ण मुक्तिको प्राप्त कर लेते हैं॥ १५॥

भावार्थ—यह पुरानी हिंदीका आध्यात्मिक भजन है। इनमें यही बताया है कि परमात्माके शुद्ध स्वभावको पहचान कर उसका निश्चय करके उसीमें रमण करना चाहिये, तब मिथ्या श्रद्धा व मिथ्याज्ञान मिट जायगा। और सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानका उदय होजायगा। फिर स्वानुभवकी कला प्रगट होजायगी। जब इसी स्वानुभवका अभ्यास किया जायगा, तब आनन्दमई ध्यानके होनेसे कर्मोंका क्षय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होगा, अरहन्तपद प्रगट होजायगा, पूर्ण समभाव होजायगा, वही सिद्ध होजायगा। स्वानुभव ही मोक्ष-मार्ग है या शून्यभाव ही मोक्षमार्ग है, तथा शून्यभाव ही मोक्ष है। जाति, नाम, रागादि सब कर्मोंके व पुद्गलके सम्बन्धसे हैं। शून्य ध्यानमें इनका काम नहीं। मोक्षमें भी इनका काम नहीं है। गुप्त ही साधन है, गुप्त ही साध्य है, साधन व साध्य दोनों अनुभवगोचर हैं।

समयसार कलशके अन्तमें कहा है—

ये ज्ञानमात्रनिजभावमयीमकम्पां भूमिं श्रयन्ति कथमप्यपनीतमोहाः। ते साधकत्वमधिगम्य भवंति सिद्धाः मूढास्त्वमूमनुपलभ्य परिभ्रमन्ति ॥३॥

भावार्थ—जो कोई ज्ञानमई अपने शुद्ध भावको निश्चल भूमिपर किसी भी तरह मोहको दूर करके तिष्ठते हैं वे स्वानुभवरूप साधनको पाकर सिद्ध होजाते हैं। मूढ़ मानव इस तत्वको न पाकर संसारमें भ्रमण करते हैं।

(१५९) तारकमल गाथा ३१५४ से ३१५८ तक।

जिन तुम्हरे हो उवन साहि उव उवन सुरमना।
उव उवन साहि जिन जिनवर मुक्ति सुई मिलना ॥ १ ॥
जिन जिनवर रमना, उव उवन रमन बिन नाहि मुक्ति सुइ मिलना (आचरी) ॥ २ ॥
जिन दर्सन सुयं विवान, स्वामी समय सुइ मिलना।
जिन समय उवन मुक्ति, निल निलय सुई रमना ॥जिन०॥ ३ ॥
जिन जिनय स्रेनि सुई अर्क सुई रमना।
तर तार समय सिधि मुक्ति सुई मिलना ॥जिन०॥ ४ ॥
उव तार कमल नन्तानन्त सुई रमना।
जिन नन्त प्रवेस स्वामी मुक्ति सुई मिलना ॥जिन०॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ—हे जिनेन्द्र ! आपका प्रकाशमान ज्ञान साधने योग्य है, उसी ज्ञानको प्रगटकर या अनुभव कर उसमें रमण करना चाहिये। इसीसे पूर्ण ज्ञानका साधन होकर जिनेन्द्र पद होगा, फिर मोक्षका लाभ होगा ॥ १ ॥

हे भाई ! श्री जिनेन्द्रके भीतर रमण करो। जबतक आत्मज्ञानमें रमण नहीं होगा तबतक मोक्षका लाभ नहीं होगा ॥ २ ॥

श्री जिनेन्द्रके स्वभावका दर्शन या अनुभव वही मोक्षके लिये जहाज है। उसीपर चढ़कर आत्माको जिन भगवान मिल जाते हैं। परमात्माके स्वभावका प्रकाश यही मोक्ष है। उसी मोक्षके स्वरूपके भीतर ठहरना यही मोक्षमें रमण है ॥ ३ ॥

जिनराजके पदमें जाना यही सूर्यका प्रकाश है। उसीमें रमण करना चाहिये। वही अरहन्त अनेकोंको तारकर स्वयं तरते हैं, सिद्ध परमात्मा हो मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं ॥ ४ ॥

ऐसे तारण तरण अरहन्त कमल सम विकसित हो अनन्त गुणोंमें रमण करते हैं। जब वही जिनेन्द्र अनन्तकालके लिये शुद्ध स्वभावमें प्रवेश कर जाते हैं तब ही स्वयं मुक्ति होजाती है ॥ ५ ॥

(१६०) जिन तार फूलना गाथा ३१५९ से ३१६५ तक।

जिन जिनयति जिनय जिन रमन सु, उव उवन साहि सम साहि।
जय जय जय जयो जयो जय जिनवर, जय ममल मुक्ति ध्रुव साहि ॥ १ ॥
अहो जिन उक्त ये षिउ रे साही, मुक्ति रमन जिन समय समाही ॥ २ ॥
जय जय ध्रुव अवयासं जिनय जिनेसं, जिन लोय लोय प्रवेस परे।
पर परम रमन जिन उवन उवन समय रे, जिन सिद्धि मुक्ति जिन बिलसाहिया रे ॥ ३ ॥
जिन विंद उवन रे, सुन्न समय रे, जिन जिनयति जिनय जिनाली रे।
जिन विंद सुन्न सम उवन उवन जिन, सह समय मुक्ति रलि रलिया रे ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन सुयं सुयं जिन हो सोहं, उवन समय ।
जिन सोहं सोहं सोजि हंउं, हं सो सुवन रमै ॥ ५ ॥
जिन तार पियारे हो, स्वामी रमन रमै ।
तित्थयर पियारे हो, स्वामी मुक्ति रमै ॥ ६ ॥
जिन स्वेनि सोइ, स्वेनि सुयं तित्थयर समय ।
तर तार कमल सोइ समय, कलन कलि मुक्ति रमै ॥ ७ ॥

अर्थ—श्री जिनेन्द्रकी जय हो, जो अपने जिन स्वभावमें रमण करते हैं, जिन्होंने अपने ज्ञानको और समभावको साधन किया है। श्री जिनेन्द्रकी जय हो, जय हो, जिन्होंने शुद्ध हो, अविनाशी मुक्तिको साधन कर लिया है ॥ १ ॥

हे साधन करनेवाले! जिनेन्द्रके कहे हुए मार्गको देखो। जो मुक्तिके स्वभावमें रमण करेगा वह वीतरागी होकर आत्माकी समाधि प्राप्त करेगा ॥ २ ॥

अविनाशी केवलज्ञानको रखनेवाले जिनेन्द्रकी जय हो, जिनके ज्ञानमें लोक अलोक झलक रहा है। परमात्माके पदमें रमण करनेसे आत्माका प्रकाश होजाता है, तब वह जिनराज होकर मुक्तिकी सिद्धि करके वीतरागताका आनन्द लेता है ॥ ३ ॥

जो जिनेन्द्रके स्वभावका अनुभव करता है वह आत्मा शून्य या निर्विकल्प भावमें पहुँच जाता है। वह सर्व कर्मोंको व रागादिको जीत लेता है। वह इस वीतराग स्वानुभवमई शून्य भावसे जिनराज हो जाता है। फिर वह परमात्मा पदके साथ मुक्तिको प्राप्त कर लेता है ॥ ४ ॥

वीतरागी आत्मा स्वय ही सोहं पदका अभ्यास करके जिनराज होजाता है। जो जिनेन्द्र हैं सो मैं हू, जो मैं हूँ सो जिनेन्द्र हैं। इस तरह मनन कर वह हंसके समान शुद्ध स्वभावमें रमण करता है ॥ ५ ॥

श्री जिनेन्द्र तारनेवाले हैं, मुझे प्रिय हैं, वे आपमें रमण करते हैं। मुझे तीर्थंकर प्यारे हैं, जो मुक्तिमें विराजित हैं ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणस्थानोंके द्वारा आत्मा स्वयं जिनराज तीर्थंकर होजाता है। वही तारणतरण अरहन्त हो, कमल समान विकसित होजाता है। वह निज आत्माका अनुभव करता हुआ मोक्षमें पधारता है॥ ७ ॥

(१६१) जै जै नंदिनी गाथा ३१६६ से ३१७४ तक।

लोय अलोय बंध पद मिलने, द्दग सुख यह चित लाई।
बंध विलय सु उवन पद रमने, सुइ ध्रुव सुख मुक्ति मिलाइ ॥ १ ॥
जय जय नंदिनी हो, बंध उवन विलय, सोइ कलन कमल जिन जिनय मिले (आचरी) ॥ २ ॥
आदि अनादि सुयं सिध उवने, नंत प्रवेस समाई।
सुयं सुबंध लोय अलोय सु, उव उवन सहज सु विलाई ॥ जै० ॥ ३ ॥
लोय बंध स नंत बंध मनुवा, पुग्गल भवन सहाई।
सुयं सिद्ध सुइ अषय निरालंब, सुइ सहजै मुक्ति मिलाई ॥ जै० ॥ ४ ॥
अगम अथह सु नन्त प्रवेसी, नन्तानन्त जिनेइ।
नन्त मिलन सुइ समय रमन जिन, उव उवन मुक्ति सु रमेई ॥ जै० ॥ ५ ॥
उव उवन समय सु प्रवेस रमन जिन, साह साह चित चिंतेई।
जं परिचय तं सुयं प्रवेसी, मन विलय सहज सु रमेई ॥ जै० ॥ ६ ॥
जं परिचय तं पद प्रवेसी, सह साह गमन सु गमेई।
सह सुय गमन सुइ परचै उवने, दह आठ उनतालसए ॥ जै० ॥ ७ ॥
नन्तानन्त काल सुइ षिपनिक, सुइ समय सुयं सु रमेई।
तर तार कमल सुइ सहज मिलन मिले, अन्मोय मुक्ति सु रमेई ॥ जै० ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सह साह समय सह गमन सुवन जिन, जय रमन जयं जिन सोई।
रै रंज रमन सु रमन जिन उवने, सह समय सिद्धि विलसेई ॥ जै० ॥ ९ ॥

अर्थ—जब आत्माके कर्मका बन्ध होता है तब अपने प्रगट परमात्मपदका लोप रहता है। वह पद छिपा रहता है, तब यह मिथ्यादृष्टी अवस्थामें इंद्रियोंके सुखोंमें ही मनको लगाता है। जब बन्धका क्षय होजाता है तब आत्माका प्रकाश होता है और तब उसीमें रमण होता है। तब वह अविनाशी सुख सहित मोक्षको प्राप्त कर लेता है॥ १ ॥

आत्मानन्दकी परिणतिकी जय हो, जिसके प्रतापसे बन्ध और आस्रवका लोप होजाता है, तब कमल समान आत्माका अनुभव करनेसे श्री जिनपद मिल जाता है ॥ २ ॥

सिद्ध भगवान कर्मोंके क्षय करनेकी अपेक्षा सादि हैं। प्रवाहकी सन्ततिकी अपेक्षा सिद्ध अनादि हैं। जितने सिद्ध होजाते हैं वे अनन्त सिद्धोंकी अवगाहनामें समा जाते हैं, क्योंकि सिद्धक्षेत्र ढाईद्वीप प्रमाण ४५ लाख योजन चौड़ा है। यहींसे सिद्ध होते हैं। इतने क्षेत्रमें अनन्त सिद्ध परस्पर अवगाह देते हुए भी भिन्न २ सत्ता रखते हैं, क्योंकि किसीकी सत्ताका लोप नहीं होता है। सिद्ध होते ही सर्व बन्ध जो स्वरूपको छिपानेवाला है स्वयं ही विला जाता है ॥ ३ ॥

स्व रूपको आच्छादनेवाला बन्ध अनन्त शक्तिको रखनेवाला है, जो इस प्राणीके बारबार शरीर पानेमें व पुद्गलके ग्रहणमें सहाई है। जहां बन्ध है वहीं बन्ध होता है। इस बन्धको क्षय कर जो कोई स्वयं ही सिद्ध होता है वह अतीन्द्रिय व स्वाधीन रहता है, सहज ही मुक्तिमें रहता है ॥ ४ ॥

श्री जिनेन्द्र अगम हैं, मनसे अगोचर हैं, अपार हैं, तथा अनन्त गुणोंके धारी हैं। वे अनन्तानन्त कर्मोंको जीतकर अनन्त गुणोंको प्रगट कर रत्नत्रयमई आत्मा होकर सिद्ध हो मुक्तिमें रमण करते हैं ॥५॥

जब आत्माका प्रकाश होजाता है तब वह अपने ही भीतर रमण करता है। साध्यको सिद्ध कर लेनेपर आत्मा शुद्ध चेतनामें रहता है। जिसका निश्चय पूर्वक ज्ञान होजाता है उसीमें मन प्रवेश कर जाता है। तब मनका तो नाश होजाता है आत्मा सहज ही रमण करता रहता है ॥ ६ ॥

जिस पदका गाढ़ श्रद्धान व ज्ञान होजाता है उसीमें मन झुक जाता है। उसीके ज्ञानका साधन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करते हुए ज्ञानको बढ़ाता है। आप आपमें रमण करनेसे केवलज्ञान प्रगट होजाता है। तब सत्तावन आस्रव रुक जाते हैं। चौदहवें अयोग गुणस्थानमें बिलकुल नहीं रहते हैं ॥ ७ ॥

तब वह क्षायिक भावधारी परमात्मा अनन्तानन्त कालतक अपने ही आत्मामें रमण करता है। तारणतरण अरहन्त कमल समान आत्मा अपने स्वभावसे सहज ही मिलता हुआ अनन्तसुख सहित मोक्षमें रमण करता है ॥ ८ ॥

आत्माका साधन करके परमात्मा जिन अपनेहीमें परिणमन करते हैं, अपनेमें ही रमण करते हैं वे ही जिनेन्द्र हैं। रत्नत्रय धर्मके भीतर मगन होनेसे जिनपदका प्रकाश होता है। परमात्मा पदके साथ शुद्धात्मा सिद्धपदका आनन्द भोगता है ॥ ९ ॥

भावार्थ—यह छन्द बहुत ही उपयोगी है–इसमें बताया है कि यह संसार अनादि है, अनादिकालसे ही संसार है, अनादिहीसे मोक्ष है। आत्माका स्वभाव यद्यपि शुद्ध है तथापि प्रवाह अपेक्षा अनादि बन्ध होनेसे इसका स्वभाव छिप रहा है। जैसे आत्मामें अनन्त शक्ति है वैसे ही कर्मोंमें अनन्त शक्ति है। कर्मबन्ध सहित आत्मामें रागद्वेषादिमई सत्तावन आस्रव होते हैं, इनसे ही कर्मोंका आस्रव होकर बन्ध होता रहता है, बन्ध प्राप्त आत्मा ही बन्धको करता है। बन्धके क्षयका उपाय अपने शुद्ध स्व रूपका सच्चा ज्ञान व श्रद्धान है। जो अपने स्वरूपका रुचिवान होजाता है वह अवश्य ही स्व रूपमें रमण करने लगता है। मन द्वारा आत्माकी भावना होती है।

जब मन भिज जाता है तब सहज ही स्वसंवेदन ज्ञान सहित स्वानुभव होता है तब मन विला जाता है तब ही आत्मानन्दमें परिणति रमण करती है, तब ही इंद्रिय सुखकी श्रद्धा चली जाती है। यही आत्मानुभव रत्नत्रय धर्म है, यही परमात्माके स्वभावमें प्रवेश है, इसीके अभ्याससे जैसे वीतरागता बढ़ती है कर्मका क्षय होते होते यह अरहन्त होकर अनन्तसुखको प्रगट करता है, फिर शरीर रहित सिद्ध होजाता है और सिद्धक्षेत्रमें अनन्तकाल स्वरूपमें रमण करता हुआ स्वात्मानन्द लेता है। सिद्ध यद्यपि पहलेके अनन्त सिद्धोंकी अवगाहनामें समा जाते हैं तथापि सत्ताका नाश नहीं होता है। अमूर्तीक पदार्थ किसीसे बन्धता नहीं न उसके खण्ड होते हैं। यह आत्मा आप ही अपने साधनसे सिद्ध होता है। सिद्धोंकी सत्ता भी प्रवाहकी अपेक्षा अनादि है। आत्मानन्दकी परिणति ही सिद्धपद दिलाती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्वार्थसारमें मोक्षतत्व प्रकरणमें श्री अमृतचन्द्राचार्य कहते हैं—

कृत्स्नकर्मक्षयादूर्ध्वं निर्वाणमधिगच्छति । यथा दग्धेन्धनो वह्निर्निरुपादानसन्ततिः ॥ २६ ॥
अल्पक्षेत्रे तु सिद्धानामनन्तानां प्रसज्यते । परस्परोपरोधोऽपि नावगाहनशक्तितः ॥ १३ ॥
आकारभावतोऽभावो न च तस्य प्रसज्यते । अनन्तरपरित्यक्तशरीराकारधारिणः ॥ १५ ॥

भावार्थ—सर्व कर्मोंके क्षयसे सिद्ध जीव ऊपरको जाता है। जैसे ईंधनके न रहनेसे आग स्वयं बुझ जाती है। थोड़े क्षेत्रमें अनंत सिद्धोंके रहनेका विरोध नहीं है, उनमें परस्पर अवगाहना शक्ति है, तौभी सिद्धोंका आकार नहीं मिटता है। अंतिम शरीरके आकार समान आकार रहता है।

(१६२) शून्य उवन फूलना गाथा ३१७५ से ३१८१ तक।

उव उवन विंद विंद जिन होई, सुइ विंद सुन्न सुन विंद समेई ॥ १ ॥
असमय उवन जिनवर बन्ध विलेइ, कमल कलन जिन जिनवर सोइ (आचरी) ॥ २ ॥
उवन उवन सुन्न सुन सुन जिन होई, सुइ सुन्न उवन जिन सुन्न समेई ॥ अस० ॥ ३ ॥
सुइ सुन्न समय सुइ सुन्न विंद सोई, विंद सुन्न सम जिनवर होई ॥ अस० ॥ ४ ॥
जिन नंत सुन्न सुइ नत विंद सोई, सुइ नंत नंत सुन विंद समेई ॥ अस० ॥ ५ ॥
सुइ स्रेनि विंद सुन कलन जिन होइ, सुइ कलन सुन्न जिन सुन्न समेई ॥ अस० ॥ ६ ॥
सुइ कलन स्रेनि जिन कलन समेइ, सुइ तार कमल जिन जिनवर सोई ॥ अस० ॥ ७ ॥

अर्थ—जब आत्मज्ञान प्रगट होता है तब वही स्वानुभवी जिन होजाता है, वह स्वानुभव निर्विकल्प है, उसी अनुभवमें ज्ञान समा जाता है ॥ १ ॥

स्वात्मरमणका विरोधी बन्ध तब विला जाता है और यह आत्मा आत्मारूपी कमलका स्वाद लेता हुआ जिनेन्द्र होजाता है ॥ २ ॥

जब साधकोंके भावोंमें शून्य भाव या वीतराग भाव प्रगट होता है, तब ही वीतरागी परभावोंसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शून्य जिनेन्द्र होता है। तब निर्विकल्प शून्य भाव सदा बना रहता है उसीमें जिनेन्द्र समा जाते हैं ॥३॥

वीतरागी शून्य आत्मा ही शून्य भावका अनुभव करता है। निर्विकल्प अनुभवके होते होते समभाव प्रगट होता है, तब आत्मा जिनेन्द्र होजाता है ॥ ४ ॥

जिनेन्द्र शून्य भावमें अनन्त कालतक रहते हुए शून्य स्वभावका अनुभव करते रहते हैं। वे अनन्तानन्त शक्तिधारी शून्य भावोंमें समा जाते हैं ॥ ५ ॥

इसी निर्विकल्प वीतराग भावसे क्षपकश्रेणी चढ़कर शून्य भावके अनुभवी जिनेन्द्र होते हैं। वे इसी शून्य भावका स्वाद लेते हुए शून्य भावमें समा जाते हैं ॥ ६ ॥

जिनराज अपने पद्में स्वानुभवमें समाए रहते हैं। वे ही तारणतरण कमल समान जिनेन्द्र हैं ॥७॥

भावार्थ—यहां शून्य भावकी महिमा बताई है। शून्य भाव ही साधक है, शून्य भाव ही साधन है। वीतराग निर्विकल्प आत्मस्थ स्वानुभवको ही शून्य भाव कहते हैं। यही वास्तवमें मोक्षमार्ग है इसीसे परमात्माका पद होता है वह भी शून्यरूप है। वहां भी एक स्व समयरूप भाव है।

समयसार कलशमें कहा है—

अन्येभ्यो व्यतिरिक्तमात्मनियतं बिभ्रत् पृथक वस्तुतामादानोज्झनशून्यमेतदमलं ज्ञानं तथावस्थितम्।
मध्याद्यन्तविभागमुक्तसहजस्फारप्रभाभासुरः शुद्धज्ञानघनो यथास्य महिमा नित्योदितस्तिष्ठति ॥ ४२–१० ॥

भावार्थ—शुद्ध ज्ञान, ग्रहण त्यागके विकल्पसे शून्य होकर भावोंसे छूटकर अपनेमें निश्चल ठहरा हुआ, अपने भिन्न वस्तुपनेको रखता हुआ ऐसा स्थिर होजाता है कि फिर उसमें आदि मध्य अन्तकी कल्पना नहीं होती है, सहज तेजमें चमकता है व अपनी शुद्ध ज्ञानसमूहकी महिमामें सदा प्रकाश करता है।

(१६३) शून्य प्रवेश गाथा ३१८२ से ३१९४ तक।

उव उवन जयंता या सुन्न प्रवेसा, सुइ सुन्न सुयं सिधि नंत गमेसा ॥ १ ॥
जिनके रंज रमन मन भानै, प्यारे हो जिनाला,
सुइ नंद नंद परम नंद सुन मुक्ति वियाला (आचरी) ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जयन जयं जय जयो जिनेसा, उव उवन उव सुन्न सुन्न प्रवेसा ॥ जिन० ॥ ३ ॥
गम गमन गमन सुन नंत गमेसा, सुन सुन्न सुयं अगमा सुन्न प्रवेसा ॥ जिन० ॥ ४ ॥
सह सहज सहं नंत सुन्न सहेसा, सुइ असह सहं अगमा सुन्न प्रवेसा ॥ जिन० ॥ ५ ॥
सुइ साह साह नंता सुन्न सहेसा, सुइ विंद सुन्न नामा सुन्न प्रवेसा ॥ जिन० ॥ ६ ॥
उव उवन सुन्न विंद नंता उवन प्रवेसा, उव उवन सहावे नंता सुन्न गमेसा ॥ जिन० ॥ ७ ॥
जं जान जयं नंता सुन्न जैवंता, जय जयं जान जिन सुन विंद प्रवेसा ॥ जिन० ॥ ८ ॥
मय ममल मान सुन्न मान प्रवेसा, मय ममल मान विंद सुन्न अगम प्रवेसा ॥ जिन० ॥ ९ ॥
दर्स दान दान नंता सुन्न दमेसा, जय दान सुन्न गम अगम प्रवेसा ॥ जिन० ॥ १० ॥
रम रमन रमिय सुन्न विंद रमेसा, सुइ सुन्न सहावे रमन मुक्ति प्रवेसा ॥ जिन० ॥ ११ ॥
सुन उवन स्नेनि जिन स्नेनि जैवंता, सुइ कलन कलिय नंत लोय प्रवेसा ॥ जिन० ॥ १२ ॥
तर तार कमल सम समय समंता, सुइ तार कमल सम मुक्ति विलसंता ॥ जिन० ॥ १३ ॥

अर्थ—आत्मज्ञानकी जय हो। जब वह वीतराग शून्यभावमें प्रवेश करता है तब वह स्वयं वीतरागी व शून्य होकर सिद्ध स्वभावका अनन्त कालतक अनुभव करता रहता है ॥ १ ॥

जिनके मनमें आत्माकी मगनता भाती है, जिनराज प्यारे लगते हैं, वही आनन्दका भोग करता हुआ परमानन्दी होकर शून्य मुक्तिमें पहुँच जाता है ॥ २ ॥

जैनधर्मकी जय हो! जिनेन्द्र भगवानकी जय हो! जैनधर्मके प्रतापसे शून्यभावको उत्पन्न करके वे शून्य निर्विकल्प भावमें प्रवेश पारहे हैं ॥ ३ ॥

आत्मज्ञानमें ज्ञानको जमाते जमाते शून्य व वीतराग अनन्तज्ञानका लाभ होता है। वह स्वयं शून्य है वह अतीन्द्रिय व शून्य आत्मामें प्रवेश करे रहता है ॥ ४ ॥ ॥३१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वरूपमें स्थिर होते होते अनन्त शून्य निर्विकल्प भावमें स्थिरता होजाती है। दुर्लभसे दुर्लभ चारित्रमें स्थिर रहते हुए वह आत्मा अतीन्द्रिय शून्य आत्मामें प्रवेश करे रहता है ॥ ५ ॥

शून्य निर्विकल्प भावका साधन करते करते अनन्त शून्यभावका साधन होजाता है तब शून्य भावका अनुभव अतीन्द्रिय शून्य आत्मामें झलकता है ॥ ६ ॥

शून्यभावके अनुभवका प्रकाश होते होते अनन्तज्ञानमें प्रवेश होजाता है। इस प्रकाशमय स्वभावमें अनन्त कालतक रहकर शून्यभावका ही अनुभव रहता है ॥ ७ ॥

शून्य मोक्षमार्गकी जय हो, अनन्त शून्य पदकी जय हो, जिस मोक्षमार्गके द्वारा जिनराज शून्य भावके अनुभवमें प्रवेश पालेते हैं ॥ ८ ॥

निर्मल ज्ञान शून्य निर्विकल्प ज्ञानमें प्रवेश करता है, तब उस निर्मल ज्ञानका अनुभव करते हुए निर्विकल्प शून्यभावमें प्रवेश बना रहता है ॥ ९ ॥

आत्माको आत्माका दर्शन देते देते शून्य अनन्त दानमें रमण होजाता है। इस शून्य अनन्त दानसे ज्ञान अतीन्द्रिय आत्मामें प्रवेश बनाए रखता है ॥ १० ॥

आत्मामें रमण करते करते शून्यभावके अनुभवमें रमण होता है। तब शून्य स्वभावमें रमण करता हुआ आत्मा मोक्षमें प्रवेश कर जाता है ॥ ११ ॥

शून्यभावके द्वारा ही जिनराजका पद प्रगट होता है, जिस जिनपदकी जय हो। उसीका अनुभव करते हुए अनन्त लोकालोकके ज्ञानमें प्रवेश होजाता है ॥ १२ ॥

वे ही जिनेन्द्र तारणतरण कमलके समान समभावके धारी आत्मा कहे गये हैं। वे ही तारणतरण कमलरूप आत्मा मोक्षका आनन्द लेते हैं ॥ १३ ॥

भावार्थ—इसमें शून्यभावकी अच्छी महिमा बताई है। इसके पहलेके छन्दमें भी यही बात है। वास्तवमें जनधर्ममें सर्वथा शून्यपना नहीं है। किसी अपेक्षासे कथंचित् शून्यपना है, कथंचित् अशून्यपना है। स्याद्वादके द्वारा हरएक द्रव्यमें दोनों स्वभाव सिद्ध किये जाते हैं। आत्मा अपने द्रव्यकी अपेक्षा अशून्य है, परन्तु परद्रव्योंके, परद्रव्योंके गुणोंके व परगुणोंकी पर्यायोंसे शून्य है। अपने गुण पर्यायोंसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शून्य नहीं है। आत्मामें हरएक गुण अपनी अपेक्षा अशून्य है व अन्य गुणकी अपेक्षा शून्य है। यह भाव या अभावरूप वस्तुका स्वभाव है। यहां कथंचित् शून्यका ही प्रतिपादन मोक्षमार्गमें व मोक्षमें बताया है।

श्री देवसेनाचार्यने आलापपद्धतिमें द्रव्यके ग्यारह सामान्य स्वभाव बताए हैं, उनमें अस्तित्व-नास्तित्व तथा भव्यत्व अभव्यत्व भी है। उनका लक्षण कहा है—

"स्वभावलाभादच्युतत्वादस्तिस्वभावः। परस्वरूपेणाभावान्नास्तिस्वभावः। भाविकाले परस्वरूपाकारभवनाद् भव्यस्वभावः। कालत्रयेऽपि परस्वरूपाकाराभवनादभव्यस्वभावः॥"

भावार्थ—वस्तु अपने स्वभावसे कभी छूटती नहीं है, यह अस्ति स्वभाव है। वस्तुमें परवस्तुके स्वरूपका अभाव है यह नास्ति स्वभाव है। भावी कालमें पर्याय स्वरूप होनेकी शक्ति है सो भव्य स्वभाव है। तीन कालमें भी परभावरूप नहीं होता है यही अभव्य स्वभाव है। यहां यही अभिप्राय है कि केवल आत्माके अनुभवसे ही आत्महित होगा।

योगसारमें योगेन्द्राचार्य कहते हैं—

जे परभाव चएवि मुणी अप्पा अप्पु मुणंति। केवलणाण सरूव लियइं ते संसारु मुच्चंति॥ ६२ ॥

भावार्थ—जो मुनि परभावोंको छोड़कर आत्माके ही द्वारा आत्माका अनुभव करता है वह केवलज्ञानको पाकर संसारसे छूट जाता है। श्री नागसेन मुनि तत्वानुशासनमें कहते हैं—

अत एवान्यशून्योऽपि नात्मा शून्यः स्वरूपतः। शून्याशून्यस्वभावोऽयमात्मनैवोपलभ्यते॥ १७३ ॥

भावार्थ—आत्मा अन्य द्रव्योंसे व भावोंसे शून्य है तौभी अपने निज मूल स्वरूपसे अशून्य है। इसतरह शून्य तथा अशून्य स्वभावरूप आत्माको आत्माके ही द्वारा अनुभव करे।

(१६४) तारनतरन फूलना गाथा ३१९९ से ३२०० तक।

तारन तरन मिलि मुक्ति रमाए, सम समय प्यारे॥ मेरे हो स्वामी॥
केवल वयन तुम्हारे, जैं जिन मेरे हो स्वामी, धुव ज़िन वयन तुम्हारे।
॥ केवल मेरे हो स्वामी॥ १॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुइ इन्द्र धमहि स्रेनि पूरित, सुइ कलन कमल राए ।
तर तार कमल सुनन्द नंदित, सह समय मुक्ति पाए ॥ २ ॥
मैं पायो जिनवर आपनो, मैं पाए स्वामी आपनो ।
सुइ सुन्य साहि समाहि, मैं पाए तरन जिन आपनो ॥ ३ ॥
आयरन जिनुत लाइये, आराधि धरि सम्हारि ।
आलाप जिन सन्मुख भए, तं पात्र नन्त विचारि ॥ ४ ॥ मैं पाए० ॥
सुन्य साहि समाहि, त पात्र साह संजुत्त जिनवर ।
सुन्य साहि समाहि, तं पात्र कमल प्रवेस जिनवर ॥
सुन्य साहि समाहि ॥ ५ ॥ मैं पाए० ॥
जिनवर जै जिन जाई, जै जिन जाइ जिनवर प्यारोरी ।
केवल जै जिन जाई, स्वामी जै जिन जाई ॥
स्वामी प्यारोरी ॥ ६ ॥ मैं पाए० ॥

अर्थ—मुझे तारणतरण स्वामी वीर भगवान मिल गए हैं जो मुक्तिमें रमण कर रहे हैं, जिनको सम-भाव धारी आत्मा ही प्यारा है। वे ही मेरे स्वामी हैं, आपहीके वचन केवलीके वचन हैं, आपके वचन ध्रुव हैं। अनादिकालसे ऐसे ही वचन तीर्थंकरोंके निकलते हैं। हे जिनेन्द्र! केवल आप ही मेरे स्वामी हैं ॥ १॥

इन्द्रको या इन्द्रमूर्ति गौतम गणधरको या श्रेणिक राजाको जो धर्मका उपदेश किया था उस धर्मसे आप पूर्ण हैं। आप आत्मारूपी कमलका अनुभव करते हुए रत हैं। आप तारण तरण कमल हैं व अनन्त आनन्दमें मगन हैं। आपने परमात्मापदके साथ मोक्ष पाया है ॥ २ ॥

आपने प्यारे जिनवरको पा लिया है, अपने स्वामीको पालिया है, उन्होंने शून्य निर्विकल्प भावसे ही समाधिको साधा था। मैंने अपने तारण तरण जिनेन्द्रको पालिया है ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे भाई! जो जिनेन्द्रने कहा है उसको आचरणमें लाओ, उसी वाणीका आराधन करो, सम्हाल-करके जिनवाणी रक्खो। यह मेरा कथन जिनेन्द्रको सामने रख करके हैं, वे अनन्त गुणधारी पात्र हैं उनका मैं विचार करके उनको भक्तिका दान करता हूँ॥ ४॥

उन्होंने शून्य निर्विकल्पभावसे समाधिको साधन किया है, वे पात्र उसी साध्य समाधिमें अब भी लीन हैं, वे ही जिनवर हैं, वे आत्मारूपी कमलमें ही मगन पात्र हैं॥ ५॥

श्री जिनेन्द्रकी जय हो, वे वीतरागी कर्मविजयी जिन हैं, वे ही केवली जिन हैं, वे ही मेरे प्यारे स्वामी हैं॥ ६॥

भावार्थ—इस अंतिम छन्दमें श्री तारणतरणस्वामीने यह साफ साफ प्रगट कर दिया है कि मैंने जो कुछ कहा है वह श्री महावीरस्वामीकी वाणीके अनुसार है। जैसा धर्मका उपदेश उन्होंने सौधर्मेन्द्रको, गौतम गणधरको तथा राजा श्रेणिकको दिया था वैसा ही धर्म मेरे इस कथामें है तथा यह वाणी प्रवाह रूपसे ध्रुव है, सर्व ही तीर्थंकरोंने अनादिकालसे ऐसा ही उपदेश दिया था व आगामी देरहे हैं व देंगे। वह मोक्षमार्ग एक शून्य या निर्विकल्प समाधि है। उसीका सेवन करके श्री वीरप्रभुने मोक्षपद साधा था। यह भी कहा है कि इस तत्वोपदेशको समझो, पढ़ो, मनन करो व इसके अनुसार साधन करो, तथा इसकी रक्षा करो। अपनी गाढ़ भक्ति श्री वीर भगवानमें प्रगट की है।

इति श्री ममलपाहुड़की ३२०० गाथाओंका हिंदी अनुवाद श्री जिनेन्द्र भगवानकी अमोघशक्तिके स्मरणसे व मूल ग्रन्थकर्ता श्री तारणतरणस्वामीकी वाणीके प्रसादसे आत्मबुद्धिके अनुसार पूर्ण किया गया। पाठकगण पढ़ो, सुनो, सुनाओ और आत्मज्ञानका सर्वत्र प्रचार करो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रशस्ति।

दोहा—युक्त प्रान्तमें लखनऊ, राज्यधाम विख्यात। तामें जन्मा दास यह, अग्रवाल कुल गात ॥ १ ॥
पौत्र सु मंगलसैनका, पिता सु मक्खनलाल। गोयल गोत्र भ्राता बड़े, जीवित हैं संतलाल ॥ २ ॥
विक्रम उन्निस पैतिसा, जन्म सु कार्तिक मास। बत्तिस वय अनुमानमें, घर छोड़ा जिनदास ॥ ३ ॥
श्रावक वृष साधत रहे, शीतल जिन परसाद। मध्यप्रांत सागर नगर, रहा धर्महित साध ॥ ४ ॥
चौविस सौ तिरसठ महा, संवत बीर कहाय। विक्रम उन्निस बानवै, सन् छत्तिस बतलाय ॥ ५ ॥
मगसिर मास सुहावना, ठहर वास सुखदाय। श्री मथुरापरसादके, घरमें काल विताय ॥ ६ ॥
ममलपाहुड़ सु ग्रन्थकी, टीका हिन्दी आज। बत्तिस सौ गाथा धरे, पूर्णमई हित काज ॥ ७ ॥
इक्किस दिनके कालमें, निशदिन ध्यान लगाय। कुछ कम एक सहस्त्रकी, टीका लिखी बनाय ॥ ८ ॥
तारणपंथ दिगम्बरी, गुरु हैं तारण वीर। कर्ता ग्रन्थ सुविज्ञ हैं, परम सुधी अति धीर ॥ ९ ॥
मर्म जैनसिद्धांतका, लखा ज्ञान अध्यातम। कूट कूटकर भर दिया, पोषा अनुभव आतम ॥ १० ॥
नाथूराम बसाखिया, मूलचन्द सु बजाज। सर्राफ करोड़ीलाल हैं, मोहनलाल बिराज ॥ ११ ॥
कोरेलाल दयाचन्द, अर दुर्गापरसाद। बाबूलाल सर्राफ हैं, और बिहारीलाल ॥ १२ ॥
जीवनदास आदिक यहां, सज्जन जैन बसाय। पर हितधारी धर्म कर, मथुरापरसादाय ॥ १३ ॥
इनकी संगतिमें रहा, बढ़ा धर्मका प्रेम। काम भया पूरण अभी, विघ्न रहित सुख क्षेम ॥ १४ ॥
मगसिर सुदि नौमी यही, वार सु मंगलवार। दिसम्बर बाईसको, हुआ मंगलचार ॥ १५ ॥
मंगल श्री अरहन्त है, मंगल सिद्ध महान्। आचारज उवझाय अर, परम साधु हितदान ॥ १६ ॥
कर प्रणाम बहुभावसे, यही पाप हरतार। ध्यान इन्हींका कीजिये, हो अध्यातम प्रचार ॥ १७ ॥
सुखकारी सब सिद्ध हैं, परम भाव धरतार। सुखसागर शीतल करण, अनुभवके दातार ॥ १८ ॥

सागर (सी० पी०)
मगसिर सुदी ९
वीर संवत् २४६३, विक्रम सं० १९९३
ता० २२–१२–१९३६

—ब्रह्मचारी सीतलप्रसाद।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री तारणतरणस्वामी विरचित—

ममलपाहुड़ या अमलपाहुड़

तृतीय भाग

समाप्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi